

इस किताब में मुतअद्द अहकाम वोह हैं
जिन का सीखना इस्लामी बहनों के लिये फ़र्ज़ है ।

Islami Bahnon Ki Namaz (Hindi)

इस्लामी बहनों की नमाज़

(ह्नफ़ी)

शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरी रजवी دانش برکتیہ
الکلیہ

वुजू का तरीक़ा 14

ग़ुस्ल का तरीक़ा 50

तयम्मुम का तरीक़ा 68

जवाबे अज़ान का तरीक़ा 76

नमाज़ का तरीक़ा 82

क़ज़ा नमाज़ों का तरीक़ा 153

नवाफ़िल का बयान 176

इस्तिन्ना का तरीक़ा 201

हैज़ व निफ़ास का बयान 219

ज़नानी बीमारियों के
घरेलू इलाज 236

कपड़े पाक़ करने का तरीक़ा 246

इस्लामी बहनों की
23 मदनी बहारे 275

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ
أَبَا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त्रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ
दीनी किताब या इस्लामी सबक पढ़ने से पहले जैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये إِنَّ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اللَّهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِمَمَتَكَ وَأَنْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ

तरजमा : ऐ अल्लाह! عَزَّوَجَلَّ हम पर इल्मो हिकमत के दरवाजे खोल दे और हम पर अपनी रहमत नाज़िल फ़रमा! ऐ अज़मत और बुजुर्गी वाले। (المستطرف ج ١ ص ٤٠ دارالفکر بیروت)

नोट : अब्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

तालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ
व मग़िफ़रत



13 शब्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

क़ियामत के रोज़ हसरत

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : सब से ज़ियादा हसरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुनिया में इल्म हासिल करने का मौक़अ मिला मगर उस ने हासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इल्म हासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़अ उठाया लेकिन इस ने न उठाया (या'नी उस इल्म पर अमल न किया)।

(تاريخ دمشق لابن عساکر ج ٥ ص ١٣٨ دارالفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मतवज्जेह हों

किताब की त्बाअत में नुमायां ख़राबी हो या सफ़हात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो मक्तबतुल मदीना से रुजूअ फ़रमाइये।

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेंट (दा'वते इस्लामी)

येह किताब (इस्लामी बहनों की नमाज़)

शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी हज़रत अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादिरी रज़वी رَضْوِي دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَة ने उर्दू ज़बान में तहरीर फ़रमाया है।

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस किताब को हिन्दी रस्मुल ख़त में तरतीब दे कर पेश किया है और मक्तबतुल मदीना से शाएअ करवाया है।

इस किताब को हिन्दी रस्मुल ख़त में तरतीब देते हुए दर्जे ज़ैल मुआमलात को पेशे नज़र रखने की कोशिश की गई है :

(1) क़रीबुस्सौत (या'नी मिलती जुलती आवाज़ वाले) हुरूफ़ के आपसी इम्तियाज़ (या'नी फ़र्क) को वाजेह करने के लिये हिन्दी के चन्द मख़सूस हुरूफ़ के नीचे डोट (.) लगाने का खुसूसी एहतिमाम किया गया है। मा'लूमात के लिये “हुरूफ़ की पहचान” नामी चार्ट मुलाहज़ा फ़रमाइये।

(2) जहां जहां तलफ़ुज़ के बिगड़ने का अन्देशा था वहां तलफ़ुज़ की दुरुस्त अदाएगी के लिये साकिन हर्फ़ के नीचे खोड़ा (ِ) लगाने का एहतिमाम किया गया है।

(3) उर्दू में लफ़्ज़ के बीच में जहां ع साकिन आता है उस की जगह हिन्दी में सिंगल इन्वर्टेड कोमा (') इस्ति'माल किया गया है। मसलन دَعْوَت، اسْتِغْمَال (दा'वत, इस्ति'माल) वगैरा।

इस किताब में अगर किसी जगह कमी बेशी या ग़लती पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअए मक्तूब, E-mail या SMS) मुत्तलअ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

हुरूफ़ की पहचान

फ = ف	प = پ	भ = ب	ब = ب	अ = ا
स = س	ठ = ث	ट = ت	थ = ث	त = ت
ह = ح	छ = ح	च = ج	झ = ج	ज = ج
ढ = ڈ	ड = ڈ	ध = د	द = د	ख = خ
ज़ = ز	ढ़ = ڈ	ड़ = ڈ	र = ر	ज़ = ز
ज़ = ج	स = س	श = ش	स = س	ज़ = ج
फ = ف	ग = غ	अ = ع	ज़ = ج	त = ط
घ = گ	ग = گ	ख = ک	क = ک	क = ق
ह = ه	व = و	न = ن	म = م	ल = ل
ई = ی	इ = ا	ऐ = ا	ए = ا	य = ی

राबिता : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की

मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा, अहमदआबाद-1, गुजरात

MO. 98987 32611 • E-mail : hind.printing92@gmail.com

इस किताब में मुतअद्द अहकाम वोह हैं
जिन का सीखना इस्लामी बहनों के लिये फ़र्ज़ है ।

(हज़नफ़ी)

इस्लामी बहनों की नमाज़

मुअल्लिफ़

शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा 'वते

इस्लामी हज़रत अल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुहम्मद इल्य़ास अत्तार कादिरि रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ

नाशिर :

मक्तबतुल मदीना

नाम किताब : इस्लामी बहनों की नमाज़ (हनफी)

मुअल्लिफ़ : शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते
इस्लामी हज़रत अल्लामा मौलाना अबू बिलाल
मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरि रज़वी دانش بركاتهم العالیہ

सिने त़बाअत : (1) शा'बान सि. 1444 हि. / मार्च 2023 सि.ई.

-: मक्तबतुल मदीना (इन्डिया) की मुख़्तलिफ़ शाख़ें :-

- ❁..... अजमेर : मक्तबतुल मदीना, 19 / 216 रगतिया गली, फ़्लाहे दारैन मस्जिद, स्टेशन रोड, दरगाह अजमेर शरीफ़, राजस्थान, फ़ोन : 7426860534
- ❁..... बरेली : मक्तबतुल मदीना, महल्ला सौदागरान, रज़ा नगर, बरेली शरीफ़, यू.पी. फ़ोन : 8881250136
- ❁..... वाराणसी : मक्तबतुल मदीना, सी. के. 68/26 मुस्लिम मुसाफ़िर खाने के सामने, कच्ची सराय, दालमन्डी, वाराणसी, यू.पी. फ़ोन : 8840383812
- ❁..... कानपुर : मक्तबतुल मदीना, मस्जिद मख़्दूमे सिमनानी, 89/333 गुर्बत पार्क, डिपटी पडाव, कानपुर, यू.पी. फ़ोन : 9616214045
- ❁..... कोलकता : मक्तबतुल मदीना, 22 मौलाना शौकत अली स्ट्रीट (कुलूटोला स्ट्रीट), कोलकता फ़ोन : 8282868438
- ❁..... नागपुर : मक्तबतुल मदीना, ग़रीब नवाज़ मस्जिद के सामने, सैफ़ी नगर, मोमिन पुरा, नागपुर, फ़ोन : 9326310099
- ❁..... सुरत : मक्तबतुल मदीना, जामिअतुल मदीना फ़ैज़ाने ख़्वाजा दाना सजावट फ़र्नीचर के सामने, ख़्वाजा दाना मैन रोड, सुरत, फ़ोन : 9377869225
- ❁..... मुम्बई : 19/20 मुहम्मद अली बिल्डिंग, मुहम्मद अली रोड, मान्डवी पोस्ट ऑफ़िस के सामने, मुम्बई. Mo.9320558372,9022177997
- ❁..... बेंगलूरु : मक्तबतुल मदीना, दरगाह हज़रत तवक्कल मस्तान के करीब, 6 2nd क्रोस लाइन उप्परपेट, चिकपेट, बेंगलूरु 560 फ़ोन : 9108607925
- ❁..... हुबली : मक्तबतुल मदीना, ए. जे. मुढोल कोम्पलेक्स, ओल्ड हुबली, ओल्ड हुबली ब्रीज़ के पास, हुबली 580024, फ़ोन : 9380407864

मदनी इल्तिजा : किसी और को येह किताब छापने की इजाज़त नहीं है।

फ़ेहरिस्त

उन्वान	स.	उन्वान	स.
कुछ फ़र्ज उलूम के बारे में.....	10	पाक और नापाक रतूबत	35
किताब पढ़ने की 16 निय्यतें	13	छाला और फुड़िया	36
वुजू का तरीका	14	कैसे से कब वुजू टूटता है ?	36
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	14	दूध पीते बच्चे का पेशाब और कै	37
अगले पिछले गुनाह मुआफ़ करवाने का नुस्खा	14	वुजू में शक आने के 5 अहकाम	37
गुनाह झड़ने की हिक़ायत	15	पान खाने वालियां मुतवज्जेह हों	37
क़ब्र में आग भड़क उठी	16	सोने से वुजू टूटने और न टूटने का बयान	38
बा वुजू रहने के 15 मदनी फूल	17	सोने के वोह दस अन्दाज़ जिन	40
इस्लामी बहनों के वुजू का तरीका (हिनफ़ी)	18	से वुजू नहीं टूटता	
वुजू के बा'द येह दुआ पढ़ लीजिये	21	सोने के वोह दस अन्दाज़ जिन से वुजू टूट जाता है	41
जन्नत के आठों दरवाज़े खुल जाते हैं	21	हंसने के अहकाम	42
वुजू के बा'द सूए क़द्र पढ़ने के फ़ज़ाइल	22	सात मुतफ़रिकात	43
नज़र कभी कमज़ोर न हो	22	गुस्ल का वुजू काफ़ी है	44
तसव्वुफ़ का अज़ीम मदनी नुस्खा	22	जिन का वुजू न रहता हो उन	
वुजू के चार फ़राइज़	23	के लिये 9 अहकाम	44
धोने की ता'रीफ़	24	वुजू के बारे में 20 निय्यतें	48
वुजू की 13 सुन्नतें	24	गुस्ल का तरीका	50
वुजू के 29 मुस्तहब्बात	25	दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	50
वुजू के 15 मक्रूहात	27	फ़र्ज गुस्ल में एहतियात की ताकीद	50
धूप के गर्म पानी की वज़ाहत	28	क़ब्र का बिल्ला	51
मुस्ता'मल पानी के मुतअल्लिक 27 मदनी फूल		गुस्ले जनाबत में ताख़ीर कब ह़राम है	51
ज़छ्म वग़ैरा से खून निकलने के 5 अहकाम	29	जनाबत की हालत में सोने के अहकाम	52
थूक में खून से कब वुजू टूटेगा	33	गुस्ल का तरीका (हिनफ़ी)	53
खून वाले मुंह की कुल्ली की एहतियातें	34	गुस्ल के तीन फ़राइज़	54
इन्जेक्शन लगाने से वुजू टूटेगा या नहीं ?	34	इस्लामी बहनों के लिये गुस्ल	
दुखती आंख के आंसू	35	की 23 एहतियातें	55

ज़ुम की पट्टी	57	अज़ान का जवाब देने वाला जन्ती हो गया	77
गुस्ल फ़र्ज़ होने के 5 अस्बाब	58	अज़ान का जवाब इस तरह दीजिये	78
वोह सूरतें जिन में गुस्ल फ़र्ज़ नहीं	58	जवाबे अज़ान के 8 मदनी फूल	80
बहते पानी में गुस्ल का तरीका	58	किब्ला रुख़ बैठने से बीनाई	
फ़व्वारा जारी पानी के हुक्म में है	59	तेज़ होती है	81
फ़व्वारे की एहतियातें	60	नमाज़ का तरीका	82
गुस्ल के 5 सुन्नत मवाकेअ	60	दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	82
गुस्ल के 24 मुस्तहब मवाकेअ	60	क़ियामत का सब से पहला सुवाल	83
एक गुस्ल में मुख़ल्लिफ़ निय्यतें	61	नमाज़ी के लिये नूर	83
गुस्ल से नज़्ला बढ़ जाता हो तो ?	62	कौन, किस के साथ उठेगा !	84
बाल्टी से नहाते वक़्त एहतियात	62	शदीद ज़ुख़्मी हालत में नमाज़	85
बाल की गिरह	62	हज़ारों साल अज़ाबे नार का हक़दार	85
बे वुजू दीनी किताबें छूना	62	नमाज़ पर नूर या तारीकी के अस्बाब	86
नापाकी की हालत में दुरूद शरीफ़ पढ़ना	63	बुरे ख़ातिमे का एक सबब	87
उंगली में (INK) की तह जमी हुई हो तो ?	63	नमाज़ का चोर	87
बच्ची कब बालिगा होती है ?	63	चोर की दो किस्में	88
वस्वसों का एक सबब	64	इस्लामी बहनों की नमाज़ का तरीका (हनफ़ी)	89
इत्तिबाए सुन्नत की बरकत से		मुतवज्जेह हों !	95
मग़िफ़रत की बिशारत मिली	65	नमाज़ की 6 शराइत	95
तहबन्द बांध कर नहाने की एहतियातें	66	3 अवकाते मकरूहा	98
तयम्मुम का तरीका	68	नमाज़े अ़स् के दौरान मकरूहा	
तयम्मुम के फ़राइज़	68	वक़्त आ जाए तो ?	98
तयम्मुम की 10 सुन्नतें	69	नमाज़ के 7 फ़राइज़	101
तयम्मुम का तरीका (हनफ़ी)	69	हुरूफ़ की सहीह अदाएगी ज़रूरी है	104
तयम्मुम के 26 मदनी फूल	71	ख़बरदार ! ख़बरदार ! ख़बरदार !	105
जवाबे अज़ान का तरीका	76	मद्रसतुल मदीना	106
मोतियों का ताज	76	कारपेट के नुक्सानात	107
अज़ान के जवाब की फ़ज़ीलत	76	कारपेट पाक करने का तरीका	108

25 वाजिबात	109	नमाज़ में कंकरीयां हटाना	125
तक्बीरे तहरीमा की 6 सुन्नतें	112	उंगलियां चटखाना	126
क़ियाम की 11 सुन्नतें	112	कमर पर हाथ रखना	127
रुकूअ की 4 सुन्नतें	113	आस्मान की तरफ़ देखना	127
कौमा की 3 सुन्नतें	114	नमाज़ी की तरफ़ देखना	128
सच्चे की 18 सुन्नतें	114	नमाज़ और तसावीर	129
जल्से की 4 सुन्नतें	115	नमाज़ के 30 मकरूहाते तन्ज़ीहा	130
दूसरी रकअत के लये उठने की 2 सुन्नतें	115	ज़ोहर के आखिरी दो ² नफ़ल	
का'दह की 8 सुन्नतें	115	के भी क्या कहने	132
सलाम फैरने की 4 सुन्नतें	116	नमाज़े वित्र के 12 मदनी फूल	133
सुन्नते बा'दिया की 3 सुन्नतें	116	दुआए कुनूत	134
नमाज़ के तक्बीरबन 14 मुस्तहब्बात	117	वित्र का सलाम फैरने के	
सय्यिदुना उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ का अमल	118	बा'द की एक सुन्नत	135
गर्द आलूद पेशानी की फ़ज़ीलत	118	सज्दए सह्व के 14 मदनी फूल	135
नमाज़ तोड़ने वाली 29 बातें	119	हिकायत	137
नमाज़ में रोना	120	सज्दए सह्व का तरीका	138
नमाज़ में खांसना	120	सज्दए तिलावत और शैतान की शामत	138
दौराने नमाज़ देख कर पढ़ना	121	إِنْ شَاءَ اللَّهُ ﷻ मुराद पूरी हो	138
अमले कसीर की ता'रीफ़	121	सज्दए तिलावत के 11 मदनी फूल	139
दौराने नमाज़ लिबास पहनना	122	सज्दए तिलावत का तरीका	141
नमाज़ में कुछ निगलना	122	सज्दए शुक्र का बयान	141
दौराने नमाज़ क़िल्से से इन्हिराफ़	123	नमाज़ी के आगे से गुज़रना	
नमाज़ में सांप मारना	123	सख़्त गुनाह है	142
नमाज़ में खुजाना	123	नमाज़ी के आगे से गुज़रने के	
اللَّهُ كَهْنَةٍ مِّنْ غُلَّتِيَاं कहने में ग़लतियां	124	बारे में 15 अहकाम	142
नमाज़ के 26 मकरूहाते तहरीमा	124	तरावीह के 17 मदनी फूल	145
कन्धों पर चादर लटकाना	125	नमाज़े पन्जगाना की तफ़्सील	148
तर्ब्द हाज़त की शिद्दत	125	नमाज़ के बा'द पढ़े जाने वाले अवरद	149

मिनटों में चार ख़त्मे		उम्र भर की नमाज़ें दोबारा पढ़ना	164
कुरआने पाक का सवाब	152	क़ज़ा का लफ़्ज़ कहना भूल गईं	
शैतान से महफूज़ रहने का अमल	152	तो कोई हरज नहीं	164
क़ज़ा नमाज़ों का तरीक़ा	153	नवाफ़िल की जगह क़ज़ाए उम्री पढ़िये	165
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	153	फ़ज़्र व अस्र के बा'द नवाफ़िल	
जहन्म की ख़ौफ़नाक वादी	154	नहीं पढ़ सकते	165
पहाड़ गरमी से पिघल जाएं	154	जोहर की चार सुन्तें रह जाएं तो क्या करें ?	165
एक नमाज़ क़ज़ा करने वाला भी फ़सिक है	154	क्या मगरिब का वक़्त थोड़ा सा होता है ?	166
सर कुचलने की सज़ा	155	तरावीह की क़ज़ा का क्या हुक्म है ?	167
क़ब्र में आग के शौ'ले	155	नमाज़ का फ़िदया	167
अगर नमाज़ पढ़ना भूल जाए तो...?	156	मर्हूमा के फ़िदये का एक मस्अला	169
मजबूरी में अदा का सवाब मिलेगा या नहीं ?	157	100 कोड़ों का हीला	170
रात के आख़िरी हिस्से में सोना कैसा	157	गोशत का तोहफ़ा	172
रात देर तक जागना	158	ज़कात का शर्इ हीला	172
अदा, क़ज़ा और इआदा की ता'रीफ़ात	159	100 अफ़ाद को बराबर बराबर	
तौबा के तीन रुक्न हैं	160	सवाब मिले	173
सोते को नमाज़ के लिये		फ़कीर की ता'रीफ़	174
जगाना कब वाजिब है	160	मिस्कीन की ता'रीफ़	174
जल्द से जल्द क़ज़ा कर लीजिये	161	तरह तरह के फ़िदये और कफ़ारे	175
छुप कर क़ज़ा कीजिये	161	इन फ़िदयों की अदाएगी की सूरतें	175
जुमुअतुल वदाअ में क़ज़ाए उम्री !	161	नवाफ़िल का बयान	176
उम्र भर की क़ज़ा का हिसाब	162	दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	176
क़ज़ा करने में तरतीब	162	अल्लाह का प्यारा बनने का नुस्खा	176
क़ज़ाए उम्री का तरीक़ा (हनफ़ी)	162	सलातुल्लैल	177
नमाज़ क़स्र की क़ज़ा	163	तहज्जुद और रात में नमाज़	
ज़मानए इरतिदाद की नमाज़ें	163	पढ़ने का सवाब	177
बच्चे की पैदाइश के वक़्त नमाज़	164	तहज्जुद गुज़ार के लिये जन्नत के	
मरीज़ा को नमाज़ कब मुआफ़ है ?	164	आलीशान बालाख़ाने	178

नेक बन्दों और बन्दियों की 8 हिकायात	179	भी क्या कहने	200
(1) सारी रात नमाज़ पढ़ते रहते	179	इस्तिन्जा का तरीका (हनफ़ी)	201
(2) शहद की मक्खी की भिन-भिनाहट की सी आवाज़ !	179	दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	201
		इस्तिन्जा का तरीका	202
(3) मैं जन्नत कैसे मांगू !	180	आबे ज़मज़म से इस्तिन्जा करना कैसा ?	205
(4) तुम्हारा बाप ना-गहानी अज़ाब से डरता है ?	181	इस्तिन्जा खाने का रुख़ दुरुस्त रखिये	205
(5) इबादत के लिये जागने का अजीब अन्दाज़	181	इस्तिन्जा के बा'द कदम धो लीजिये	206
(6) रोते रोते नाबीना हो जाने वाली ख़ातून	182	बिल में पेशाब करना	206
(7) मौत की याद में भूकी रहने वाली ख़ातून	183	जिन्न ने शहीद कर दिया	206
(8) गिर्या व ज़ारी करने वाला ख़ानदान	184	हम्माम में पेशाब करना	207
नमाज़े इश्राक़	185	इस्तिन्जा के ढेलों के अहकाम	208
नमाज़े चाशत की फ़ज़ीलत	186	मिट्टी का ढेला और साइन्सी तहक़ीक़	210
सलातुत्तस्बीह	186	बुढ़े काफ़िर डॉक्टर का इन्किशाफ़	210
सलातुत्तस्बीह पढ़ने का तरीका	187	रफ़ू हाजत के लिये बैठने का तरीका	211
इस्तिख़ारा	188	बाएं पाउं पर वज़न डालने की हिकमत	212
नमाज़े इस्तिख़ारा में कौन सी सूरतें पढ़ें	189	कुर्सी नुमा कमोड	212
सलातुल अव्वाबीन की फ़ज़ीलत	190	पदों की जगह का केन्सर	212
नमाज़े अव्वाबीन का तरीका	191	टॉयलेट पेपर से पैदा होने वाले अमराज़	213
तहिय्यतुल बुजू	191	टॉयलेट पेपर और गुर्दों के अमराज़	213
सलातुल असरार	192	सख़्त ज़मीन पर क़ज़ाए	
सलातुल हाजात	193	हाजत के नुक्सानात	214
नाबीना को आंखें मिल गईं	195	आक़ा <small>صلى الله تعالى عليه وآله وسلم</small> दूर तशरीफ़ ले जाते	215
गहन की नमाज़	197	क़ज़ाए हाजत से क़ब्ल चलने के फ़वाइद	215
गहन की नमाज़ पढ़ने का तरीका	197	बैतुल ख़ला जाने की 47 नियतें	216
नमाज़े तौबा	198	अवामी इस्तिन्जा खाने में जाते	
इशा के बा'द दो नफ़ल का सवाब	199	हुए येह नियतें भी कीजिये	218
सुन्नते अ़सर के बारे में दो फ़रामी ने मुस्तफ़ा	199	हैज़ व निफ़ास का बयान	219
जोहर के आख़िरी दो नफ़ल के		दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	219

हैज़ किसे कहते हैं ?	220	हसीन और अक़्ल मन्द औलाद के लिये	242
इस्तिहाज़ा किसे कहते हैं ?	221	अय्यामे हम्ल के लिये बेहतरीन अमल	242
हैज़ के रंग	221	हम्ल में ताखीर	242
हैज़ की हिकमत	222	अगर पेट में बच्चा टेढ़ा हो गया तो...	242
हैज़ की मुद्दत	222	सफ़ेद पानी	243
कैसे मा'लूम हो कि इस्तिहाज़ा है	222	हम्ल की हिफ़ाज़त के 7 इलाज	243
हैज़ की कम अज़ कम और इन्तिहाई उम्र	223	लीकोरिया का इलाज	245
दो हैज़ के दरमियान कम अज़ कम फ़सिला	223	इर्कुन्सिा के दो ^२ इलाज	245
अहम मस्अला	224	कपड़े पाक करने का तरीका	246
निफ़ास का बयान	224	दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	246
निफ़ास की ज़रूरी वज़ाहत	224	नजासत की अक्साम	246
निफ़ास के मुतअल्लिक कुछ ज़रूरी मसाइल	225	नजासते ग़लीज़ा	246
हम्ल साक़ित हो जाए तो.....?	226	दूध पीते बच्चों का पेशाब नापाक है	248
चन्द ग़लत फ़हमियों का इज़ाला	226	नजासते ग़लीज़ा का हुक्म	248
इस्तिहाज़ा के अहक़ाम	227	दिरहम की मिक्दार की वज़ाहत	249
हैज़ व निफ़ास के 21 अहक़ाम	227	नजासते ख़फ़ीफ़ा	250
हैज़ और निफ़ास के मुतअल्लिक		नजासते ख़फ़ीफ़ा का हुक्म	250
आठ मदनी फूल	233	जुग़ाली का हुक्म	250
ज़नानी बीमारियों के घरेलू इलाज	236	पित्ते का हुक्म	251
बीमारियों से हिफ़ाज़त के लिये...	237	जानवरों की कै	251
हैज़ की ख़राबी के नुक्सानात	237	दूध या पानी में नजासत पड़ जाए तो...?	252
हैज़ की ख़राबी और डरावने ख़्वाब	237	दीवार, ज़मीन, दरख़्त वगैरा	
कस्रते हैज़ के दो इलाज	238	कैसे पाक हों ?	252
माहवारी की ख़राबियों के तीन इलाज	238	खून आलूद ज़मीन पाक करने का तरीका	253
हैज़ बन्द होने के 6 इलाज	238	गोबर से लीपी हुई ज़मीन	254
हैज़ के दर्द का इलाज	239	जिन परिन्दों की बीट पाक है	254
"बांझपन के 5 इलाज	239	मछली का खून पाक है	254
हामिला की तकलीफ़ के 6 इलाज	241	पेशाब की बारीक छींटें	255

गोश्त में बचा हुआ खून	255	चमड़ा कैसे पाक हो	263
जानवरों की सूखी हड्डियां	255	बकरे की खाल पर बैठने से	
हराम जानवर का दूध	255	आजिजी पैदा होती है	263
चूहे की मेंगनी	255	गाढ़ी नजासत वाला कपड़ा किस तरह धोए	263
गुलाज़त पर बैठने वाली मख़ख़यां	256	अगर नजासत का रंग कपड़े	
बारिश के पानी के अहक़ाम	256	पर बाक़ी रह जाए तो ?	264
गलियों में खड़ा हुआ बारिश का पानी	257	पतली नजासत वाला कपड़ा पाक करने	
सड़क पर छिड़के जाने वाले पानी के छींटे	258	के मुतअल्लिक 6 मदनी फूल	264
ढेलों से पाक़ी लेने के बा'द आने वाला पसीना	258	बहते नल के नीचे धोने में	
कुत्ता बदन से छू जाए	258	निचोड़ना शर्त नहीं	266
कुत्ता आटे में मुंह डाल दे तो ?	258	बहते पानी में पाक करने में निचोड़ना शर्त नहीं	266
कुत्ता बरतन में मुंह डाल दे	259	पाक नापाक कपड़े साथ धोने का मस्अला	266
बिल्ली पानी में मुंह डाल दे तो ?	259	नापाक कपड़े पाक करने का आसान तरीक़ा	267
तीन मदनी मुन्नियों की मौत का		वोशिंग मशीन में कपड़े पाक करने का तरीक़ा	268
अलमनाक वाकिआ	259	नल के नीचे कपड़े पाक करने का तरीक़ा	268
जानवरों का पसीना	260	कारपेट पाक करने का तरीक़ा	269
गधे का पसीना पाक है	260	नापाक मेंहदी से रंगा हुआ हाथ कैसे पाक हो ?	270
खून वाले मुंह से पानी पीना	260	नापाक तेल वाला कपड़ा धोने का मस्अला	270
औरत के पर्दे की जगह की रतूबत	261	अगर कपड़े का थोड़ा सा हिस्सा नापाक हो जाए	270
सड़ा हुआ गोश्त	261	दूध से कपड़ा धोना कैसा ?	271
खून की शीशी	261	मनी वाले कपड़े पाक करने के 6 अहक़ाम	271
मय्यित के मुंह का पानी	261	रूई पाक करने का तरीक़ा	272
नापाक बिछोना	261	बरतन पाक करने का तरीक़ा	272
गीली रूमाली	262	छुरी चाकू वगैरा पाक करने का तरीक़ा	273
इन्सानी खाल का टुकड़ा	262	आईना पाक करने का तरीक़ा	273
उपला (सूखा हुआ गोबर)	262	जूते पाक करने का तरीक़ा	273
तवे पर नापाक पानी छिड़क दिया तो ?	262	काफ़िनों के इस्ति'माल शुदा स्वेटर वगैरा	274
हराम जानवर का गोश्त और	263	इस्लामी बहनों की 23 मदनी बहारे	275

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ
 أَمَا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

कुछ फ़र्ज उलूम के बारे में.....

मेरे आका आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ फ़रमाते हैं : इल्मे दीन सीखना इस क़दर कि मज़हबे हक़ से आगाह, वुजू गुस्ल नमाज़ रोज़े वगैरहा ज़रूरिय्यात के अहक़ाम से मुत्तलअ हो । ताजिर तिजारत, मुज़ारेअ (किसान) ज़राअत, अजीर (मजदूर, मुलाज़िम) इजारे, गरज़ हर शख़्स जिस हालत में है उस के मुतअल्लिक अहक़ामे शरीअत से वाकिफ़ हो, फ़र्जे ऐन है जब तक येह हासिल न करे जुग़राफ़िया, तारीख़ वगैरा में वक़्त ज़ाएअ करना जाइज़ नहीं । जो फ़र्ज छोड़ कर नफ़ल में मशगूल हो हदीसों में उस की सख़्त बुराई आई और उस का वोह नेक काम मरदूद क़रार पाया न कि फ़र्ज छोड़ कर फुज़ूलियात में वक़्त गंवाना ।

(फ़तावा रज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 23, स. 647, 648)

अफ़सोस ! आज हमारी ग़ालिब अक्सरिय्यत सिर्फ़ व सिर्फ़ दुन्यवी उलूम के हुसूल में मशगूल है, अगर किसी को कुछ मज़हबी जौक़ मिला भी तो अक्सर उस का ध्यान मुस्तहब उलूम ही की तरफ़ गया । अफ़सोस ! सद करोड़ अफ़सोस ! **फ़र्ज** उलूम की जानिब मुसल्मानों की तवज्जोह न होने के बराबर है, और हालत येह है कि नमाज़ियों की भी भारी ता'दाद नमाज़ के ज़रूरी मसाइल से ना आशना है । हालां कि इन मसाइल को सीखना फ़र्ज और न जानना सख़्त

गुनाह है। मेरे आका आ'ला हज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعَزَّتِ फ़रमाते हैं :
 “नमाज़ के ज़रूरी मसाइल न जानना फ़िस्क़ है।” (ऐज़न, जि. 6, स. 523)
 الْحَمْدُ لِلَّهِ عَزَّوَجَلَّ किताबे मुस्तताब “इस्लामी बहनों की नमाज़ (ह्नफ़ी)” उन बे शुमार अहक़ाम पर मुहीत है जिन का सीखना इस्लामी बहनों के लिये फ़र्ज़ है। लिहाज़ा इस्लामी बहनें इस को सिर्फ़ एक बार नहीं बार बार पढ़ें, लिखे हुए मसाइल को याद करें, अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ दूसरी इस्लामी बहनों को भी पढ़ कर सुनाएं अगर कोई मस्अला किसी सुनने वाली को समझ में न आए तो महज़ अपनी अटकल से वज़ाहत करने के बजाए उलमाए अहले सुन्नत से मा'लूमात हासिल करे। इस का तरीक़ा बयान करते हुए सदरुशशरीअह, बदरुत्तरीक़ह हज़रते अल्लामा मौलाना मुफ़ती मुहम्मद अमजद अली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْفَرِي बहारे शरीअत हिस्सा 7 सफ़हा 89 (मत्बूआ मक्तबए रज़विय्या) सतर 12 पर फ़रमाते हैं : औरत को मस्अला पूछने की ज़रूरत हो तो अगर शोहर अल्लिम हो तो उस से पूछ ले और अल्लिम नहीं तो उस से कहे वोह पूछ आए और इन सूरतों में उसे खुद अल्लिम के यहां जाने की इजाज़त नहीं और येह सूरतें न हों तो जा सकती है।

(عائلي ج 1 ص 341)

अल्लाह عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعَزَّتِ दा'वते इस्लामी की “मजलिसे इफ़ता” और मजलिसे “अल मदीनतुल इल्मिय्या” के उलमाए किराम كَرَاهُمُ اللَّهُ السَّلَام को अज़े अज़ीम अता फ़रमाए कि उन्हों ने किताबे हाज़ा के मुनदरजात की बड़ी अरक़ रेज़ी के साथ तफ़तीश (छानबीन) फ़रमाई और बा'ज

मक़ामात पर अहम रिवायात व जुज़्ज़य्यात का इज़ाफ़ा कर के इस की इफ़ादिय्यत दोबाला कर दी ! बिना ख़ौफ़े लौमते लाइम इस हकीक़त का ए'तिराफ़ करता हूं कि येह किताब इन्हीं की खुसूसी रहनुमाई और फ़ैज़ाने नज़र का समर है । **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** इस किताब के मुअल्लिफ़, इस का मुतालआ करने वालियों और वालों (कि इस्लामी भाइयों के लिये भी इस में काफ़ी कारआमद मदनी फूल हैं) का हाफ़िज़ा ख़ूब क़वी करे कि इन को सहीह मसाइल याद रहें और अमल करने और दूसरों तक पहुंचाने की सअ़ादत नसीब हो । अल्लाहु शकूर **عَزَّوَجَلَّ** सगे मदीना **عَفَى عَنْهُ** की इस नाचीज़ सअूय को मशकूर फ़रमाए और इख़्लास की ला ज़वाल दौलत से माला माल करे ।

मेरा हर अमल बस तेरे वासिते हो कर इख़्लास ऐसा अता या इलाही

दुआए अत्तार : या **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** ! जो इस किताब को अपने अज़ीजों के ईसाले सवाब के लिये नीज़ दीगर अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ शादी ग़मी की तक़रीबात व इज्तिमाअत वग़ैरा में तक़सीम करवाए, महल्ले में घर घर पहुंचाए उस का और उस के तुफ़ैल मेरा भी दोनों² जहां में बेड़ा पार कर दे ।

امين بجاهِ النَّبِيِّ الْأَمِينِ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

तालिबे ग़मे मदीना
व बकीअ
व मग़िफ़रत



27 रजबुल मुरज्जब 1429 सि.हि.

29-7-2008

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ أَمَا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

“आओ नमाज़ सीखते हैं” के सोलह हुरूप की निस्बत से येह किताब पढ़ने की 16 निय्यतें

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : يَا نَبِيَّ الْمُؤْمِنِ خَيْرٌ مِنْ عَمَلِهِ :
“मुसलमान की निय्यत उस के अमल से बेहतर है।”

(المعجم الكبير للطبراني، الحديث: ٥٩٤٢، ج ٦، ص ١٨٥)

दो मदनी फूल : (1) बिगैर अच्छी निय्यत के किसी भी अमले ख़ैर का सवाब नहीं मिलता (2) जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा।

﴿1﴾ इख़लास के साथ मसाइल सीख कर रिज़ाए इलाही عَزَّ وَجَلَّ की हक़दार बनूंगी

﴿2﴾ हत्तल वसअ़ इस का बा वुज़ू और ﴿3﴾ क़िब्ला रू मुतालाअ़ करूंगी ﴿4﴾

इस के मुतालाए के ज़रीए फ़र्ज़ उलूम सीखूंगी ﴿5﴾ अपना वुज़ू गुस्ल और नमाज़

वग़ैरा दुरुस्त करूंगी ﴿6﴾ जो मस्अला समझ में नहीं आएगा उस के लिये आयते

करीमा ﷻ : “तो ऐ लोगो

इल्म वालों से पूछो अगर तुम्हें इल्म नहीं” (النحل: ٤٣) पर अमल करते हुए

उलमा से रुजूअ़ करूंगी ﴿7﴾ (अपने ज़ाती नुस्खे पर) इन्दज़रूरत ख़ास ख़ास

मक़ामात अन्दर लाइन करूंगी ﴿8﴾ (ज़ाती नुस्खे के) याद दाश्त वाले सफ़हे

पर ज़रूरी निकात लिखूंगी ﴿9﴾ जिस मस्अले में दुश्वारी होगी उस को बार बार

पढ़ूंगी ﴿10﴾ ज़िन्दगी भर अमल करती रहूंगी ﴿11﴾ जो इस्लामी बहनें नहीं

जानतीं उन्हें सिखाऊंगी ﴿12﴾ जो इल्म में बराबर होगी उस से मसाइल में तक्रार

करूंगी ﴿13﴾ दूसरी इस्लामी बहनों को येह किताब पढ़ने की तरगीब दिलाऊंगी

﴿14﴾ (कम अज़ कम 12 अ़दद या हस्बे तौफ़ीक़) येह किताब ख़रीद कर दूसरों

को तोहफ़तन दूंगी ﴿15﴾ इस किताब के मुतालाए का सवाब सारी उम्मत को

ईसाल करूंगी ﴿16﴾ किताबत वग़ैरा में शर्ई ग़लती मिली तो नाशिरीन को

लिख कर मुत्तलअ़ करूंगी (ज़बानी कहना या कहलवाना ख़ास मुफ़ीद नहीं

होता)

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ
 مَا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

वुजू का तरीका (हनफ़ी)

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

अल्लाह **عَزَّوَجَلَّ** के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अनिल उयूब **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** का इशदि मुशकबार है : “जिस ने मुझ पर सो¹⁰⁰ मर्तबा दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह तअ़ाला उस की दोनों आंखों के दरमियान लिख देता है कि येह निफ़ाक़ और जहन्म की आग से आज़ाद है और उसे बरोजे क़ियामत शुहदा के साथ रखेगा ।”

(مَجْمَعُ الزَّوَائِدِ، ج ١٠ ص ٢٥٣ حديث ١٧٢٩٨)

صَلُّوا عَلَيَّ الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ عَلَى مُحَمَّدٍ

अगले पिछले गुनाह मुअ़ाफ़ करवाने का नुस्ख़ा

हज़रते सय्यिदुना हुमरान **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** से रिवायत है कि हज़रते सय्यिदुना उस्माने ग़नी **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** ने वुजू के लिये पानी मंगवाया जब कि आप एक सर्द रात में नमाज़ के लिये बाहर जाना चाहते थे, मैं उन के लिये पानी ले कर हाज़िर हुवा तो आप **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** ने अपना चेहरा और दोनों हाथ धोए । (येह देख कर) मैं ने अर्ज़ की : “अल्लाह **عَزَّوَجَلَّ** आप को क़िफ़ायत करे रात तो बहुत ठन्डी है ।” तो

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : उस शख्स को नाक खाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पड़े । (ترمذی)

आप फ़रमाया : “मैंने नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को फ़रमाते हुए सुना कि “जो बन्दा कामिल वुजू करता है उस के अगले पिछले गुनाह मुआफ़ कर दिये जाएंगे ।”

(التَّرْغِيبُ وَالتَّرْهِيْبُ لِلْمُنْدَرِيِّ ج ١ ص ٩٣ حديث ١١)

गुनाह झड़ने की हिकायत

वुजू करने वाले के गुनाह झड़ते हैं, इस जिम्म में एक ईमान अफ़रोज़ हिकायत नक्ल करते हुए हज़रते अल्लामा अब्दुल वहहाब शा'रानी قُدْسُ سِرْمَةُ السُّورَانِي फ़रमाते हैं, एक मर्तबा सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू हनीफ़ा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ जामेअ मस्जिद कूफ़ा के वुजूख़ाने में तशरीफ़ ले गए तो एक नौ जवान को वुजू बनाते हुए देखा, उस से वुजू (में इस्ति'माल शुदा पानी) के क़तरे टपक रहे थे । आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने इर्शाद फ़रमाया : “ऐ बेटे ! मां बाप की ना फ़रमानी से तौबा कर ले ।” उस ने अज़र्ज़ की, “मैं ने तौबा की ।” एक और शख्स के वुजू (में इस्ति'माल होने वाले पानी) के क़तरे टपक्ते देखे, आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने उस शख्स से इर्शाद फ़रमाया, “ऐ मेरे भाई ! तू जिना से तौबा कर ले ।” उस ने अज़र्ज़ की, “मैं ने तौबा की ।” एक और शख्स के वुजू के क़तरात टपक्ते देखे तो उसे फ़रमाया, “शराब नोशी और गाने बाजे सुनने से तौबा कर ले ।” उस ने अज़र्ज़ की : “मैं ने तौबा की ।” सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू हनीफ़ा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ पर कश्फ़ के बाइस चूँकि लोगों के उयूब ज़ाहिर हो जाते थे लिहाज़ा आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुझ पर दस मरतबा दुरूदे पाक पढ़े अल्लाह (طربانی)। उस पर सो रहमतें नाज़िल फ़रमाता है।

बारगाहे खुदा वन्दी عَزَّوَجَلَّ में इस कश्फ़ के ख़त्म हो जाने की दुआ मांगी, अल्लाह رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ को बुजू करने वालों के गुनाह झड़ते नज़र आना बन्द हो गए।

(الميزان الكبرى ج ١ ص ١٢٠)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

क़ब्र में आग भड़क उठी !

हज़रते सय्यिदुना अम्र बिन शुरहूबील رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि एक शख्स इन्तिकाल कर गया जिस को लोग मुत्तकी और परहेज़ गार समझते थे। जब उसे क़ब्र में दफ़न किया गया तो फ़िरिशतों ने फ़रमाया : “हम तुझ को अल्लाह तआला के अज़ाब के 100 कोड़े मारेंगे।” उस ने पूछा : “क्यूं मारोगे ? मैं तो तक्वा व परहेज़ गारी को इख़्तियार किये हुए था।” तो फ़िरिशतों ने फ़रमाया : “चलो पचास⁵⁰ कोड़े ही मार देंगे।” इस पर वोह शख्स बराबर बहूस करता रहा यहां तक कि वोह फ़िरिशते एक कोड़े पर आ गए और उन्होंने ने अज़ाबे इलाही का एक कोड़ा मारा जिस से तमाम क़ब्र में आग भड़क उठी ! तो उस ने पूछा कि तुम ने मुझे कोड़ा क्यूं मारा ? फ़िरिशतों ने जवाब दिया : “तूने एक दिन जान बूझ कर बे बुजू नमाज़ पढ़ी थी। और एक मरतबा एक मज़्लूम तेरे पास फ़रियाद ले कर आया मगर तूने उस की मदद न की।” (شرح الصّادور ص ١٦٥، جلية الاولياء ج ٤ ص ٥٧ رقم ٥١٠١)

इस्लामी बहनो ! बे बुजू नमाज़ पढ़ना सख़्त ज़ुरअत की

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा तहकीक वोह बद बख़्त हो गया । (अब्दु)

बात है । फुक़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَامُ यहां तक फ़रमाते हैं : बिला उज़्र जान बूझ कर जाइज़ समझ कर या इस्तिहज़ाअन (या'नी मज़ाक़ उड़ाते हुए) बिग़ैर वुजू के नमाज़ पढ़ना कुफ़्र है । (منح الروض الازهر للفقارى ص ६१८)

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ عَلَى مُحَمَّد

“बा वुजू रहना सवाब है” के पन्दरह हुरूफ़ की निस्बत से 15 मदनी फूल

﴿1﴾ नमाज़ ﴿2﴾ सज्दए तिलावत और ﴿3﴾ कुरआने अज़ीम छूने के लिये वुजू करना फ़र्ज़ है । (نُورُ الْإِيضَاحِ ص 18) ﴿4﴾ तवाफ़े बैतुल्लाह शरीफ़ के लिये वुजू करना वाजिब है (ايضاً) ﴿5﴾ गुस्ले जनाबत से पहले और ﴿6﴾ जनाबत से नापाक होने वाली को खाने, पीने और सोने के लिये और ﴿7﴾ हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के रौजए मुबारका की ज़ियारत और ﴿8﴾ वुकूफ़े अरफ़ा और ﴿9﴾ सफ़ा व मर्वह के दरमियान सअय के लिये वुजू करना सुन्नत है । (बहारे शरीअत, हिस्सा : 2, स. 24) ﴿10﴾ सोने के लिये और ﴿11﴾ नींद से बेदार होने पर ﴿12﴾ जिमाअ से पहले और ﴿13﴾ जब गुस्सा आ जाए उस वक़्त और ﴿14﴾ ज़बानी कुरआने अज़ीम पढ़ने के लिये और ﴿15﴾ दीनी कुतुब छूने के लिये वुजू करना मुस्तहब है । (ايضاً، نُورُ الْإِيضَاحِ ص 19)

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ عَلَى مُحَمَّد

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर सुबह व शाम दस दस बार दुरूदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअत मिलेगी। (مَحْذُومَاتُ)

इस्लामी बहनों के वुजू का तरीका (हनफ़ी)

का 'बतुल्लाह शरीफ़ की तरफ़ मुंह कर के ऊंची जगह बैठना मुस्तहब है। वुजू के लिये निय्यत करना सुन्नत है। निय्यत दिल के इरादे को कहते हैं, दिल में निय्यत होते हुए ज़बान से भी कह लेना अफ़ज़ल है। लिहाज़ा ज़बान से इस तरह निय्यत कीजिये कि मैं हुक्मे इलाही عَزَّوَجَلَّ बजा लाने और पाकी हासिल करने के लिये वुजू कर रही हूँ। बिस्मिल्लाह कह लीजिये कि येह भी सुन्नत है। बल्कि بِسْمِ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ कह लीजिये कि जब तक बा वुजू रहेंगी फ़िरिश्ते नेकियां लिखते रहेंगे। (مَحْذُومَاتُ الرَّوَاةِ، ج ۱ ص ۵۱۳ حدیث ۱۱۱۲) अब दोनों हाथ तीन तीन बार पहुंचों तक धोइये, (नल बन्द कर के) दोनों हाथों की उंगलियों का ख़िलाल भी कीजिये। कम अज़ कम तीन बार दाएं बाएं ऊपर नीचे के दांतों में मिस्वाक कीजिये और हर बार मिस्वाक को धो लीजिये। हुज्जतुल इस्लाम हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद बिन मुहम्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِي फ़रमाते हैं, “मिस्वाक करते वक़्त नमाज़ में कुरआने मजीद की क़िराअत और ज़िक्रुल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये मुंह पाक करने की निय्यत करनी चाहिये।” (إِحْيَاءُ الْعُلُومِ ج ۱ ص ۱۸۲) अब सीधे हाथ के तीन चुल्लू पानी से (हर बार नल बन्द कर के) इस तरह तीन कुल्लियां कीजिये कि हर बार मुंह के हर पुर्जे पर पानी बह जाए अगर रोज़ा न हो तो ग़र ग़रा भी कर लीजिये। फिर सीधे ही हाथ के तीन चुल्लू (अब हर बार आधा चुल्लू पानी काफ़ी है) से (हर बार नल बन्द कर के) तीन बार नाक में नर्म गोश्त तक पानी चढ़ाइये और अगर

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़ा उस ने जफ़ा की। (عبدالرزاق)

रोज़ा न हो तो नाक की जड़ तक पानी पहुंचाइये, अब (नल बन्द कर के) उल्टे हाथ से नाक साफ़ कर लीजिये और छोटी उंगली नाक के सूराखों में डालिये। **तीन बार सारा चेहरा** इस तरह धोइये कि जहां से आदतन सर के बाल उगना शुरू होते हैं वहां से ले कर ठोड़ी के नीचे तक और एक कान की लौ से दूसरे कान की लौ तक हर जगह पानी बह जाए। फिर पहले **सीधा हाथ** उंगलियों के सिरे से धोना शुरू कर के कोहनियों समेत तीन बार धोइये। इसी तरह फिर **उल्टा हाथ** धो लीजिये। दोनों हाथ आधे बाजू तक धोना मुस्तहब है। अगर चूड़ी, कंगन या कोई से भी ज़ेवरात पहने हुए हों तो उन को हिला लीजिये ताकि पानी उन के नीचे की जिल्द पर बह जाए। अगर उन के हिलाए बिगैर पानी बह जाता है तो हिलाने की हाजत नहीं और अगर बिगैर हिलाए या बिगैर उतारे पानी नहीं पहुंचेगा तो पहली सूरत में हिलाना और दूसरी सूरत में उतारना ज़रूरी है। **अक्सर इस्लामी बहनें चुल्लू में पानी ले कर पहुंचे से तीन³ बार छोड़ देती हैं कि कोहनी तक बहता चला जाता है इस तरह करने से कोहनी और कलाई की करवटों पर पानी न पहुंचने का अन्देशा है लिहाज़ा बयान कर्दा तरीके पर हाथ धोइये। अब चुल्लू भर कर कोहनी तक पानी बहाने की हाजत नहीं बल्कि (बिगैर इजाज़ते सहीहा ऐसा करना) येह पानी का इसराफ़ है। अब (नल बन्द कर के) **सर का मसह** इस तरह कीजिये कि दोनों अंगूठों और कलिमे की उंगलियों को छोड़ कर दोनों हाथ की तीन तीन उंगलियों के सिरे एक दूसरे से मिला लीजिये और**

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुझ पर रोज़े जुमुआ दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअत करूंगा। (جمع الجوامع)

पेशानी के बाल या खाल पर रख कर ज़रा सा दबा कर खींचते हुए गुद्दी तक इस तरह ले जाइये कि इस दौरान उन उंगलियों का कोई हिस्सा बालों से जुदा न रहे मगर हथेलियां सर से जुदा रहें, सिर्फ़ उन बालों पर मसह कीजिये जो सर के ऊपर हैं। फिर गुद्दी से हथेलियां खींचते हुए पेशानी तक ले आइये, कलिमे की उंगलियां और अंगूठे इस दौरान सर पर बिल्कुल मस नहीं होने चाहिए, फिर कलिमे की उंगलियों से कानों की अन्दरूनी सतह का और अंगूठों से कानों की बाहरी सतह का मसह कीजिये और छुंगिलया (या'नी छोटी उंगलियां) कानों के सूराखों में दाख़िल कीजिये और उंगलियों की पुश्त से गरदन के पिछले हिस्से का मसह कीजिये, बा'ज इस्लामी बहनें गले का और धुले हुए हाथों की कोहनियों और कलाइयों का मसह करती हैं येह सुन्नत नहीं है। सर का मसह करने से क़ब्बल टॉटी अच्छी तरह बन्द करने की आदत बना लीजिये बिला वज्ह नल खुला छोड़ देना या अधूरा बन्द करना कि पानी टपक कर ज़ाएअ होता रहे इसराफ़ है। अब पहले सीधा फिर उल्टा पाउं हर बार उंगलियों से शुरूअ कर के टख़्नों के ऊपर तक बल्कि मुस्तहब है कि आधी पिंडली तक तीन तीन बार धो लीजिये। दोनों पाउं की उंगलियों का ख़िलाल करना सुन्नत है। (ख़िलाल के दौरान नल बन्द रखिये) इस का मुस्तहब तरीका येह है कि उल्टे हाथ की छुंगिलया (छोटी उंगली) से सीधे पाउं की छुंगिलया का ख़िलाल शुरूअ कर के अंगूठे पर ख़त्म कीजिये और उल्टे ही हाथ की छुंगिलया से उल्टे पाउं के अंगूठे से शुरूअ कर के छुंगिलया पर ख़त्म कर लीजिये। (عامه كُتب)

फ़रमाने मुस्त्फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा उस ने जन्नत का रास्ता छोड़ दिया। (طبرانی)

हुज्जतुल इस्लाम इमाम मुहम्मद बिन मुहम्मद गज़ाली फ़रमाते हैं, “हर उज़्ज धोते वक़्त येह उम्मीद करता रहे कि मेरे इस उज़्ज के गुनाह निकल रहे हैं।” (أَحْيَاءُ الْعُلُومِ ج ١ ص ١٨٣ مُلَخَّصًا)

वुजू के बा'द येह दुआ पढ़ लीजिये (अव्वल व आख़िर दुरूद शरीफ़)

اللَّهُمَّ اجْعَلْنِي مِنَ التَّوَابِينَ
وَاجْعَلْنِي مِنَ الْمُتَطَهِّرِينَ
(سُنَنُ التِّرْمِذِيِّ ج ١ ص ١٢١ حَدِيث ٥٥)

तरजमा : ऐ अल्लाह मुझे कसरत से तौबा करने वालों में बना दे और मुझे पाकीज़ा रहने वालों में शामिल कर दे।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

जन्नत के आठों दरवाज़े खुल जाते हैं

“أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ يَا نَبِيَّ كَلِمَاتُ شَهَادَتِكَ يَا نَبِيَّ كَلِمَاتُ شَهَادَتِكَ يَا نَبِيَّ كَلِمَاتُ شَهَادَتِكَ” भी पढ़ लीजिये कि हदीसे पाक में है : “जिस ने अच्छी तरह वुजू किया और कलिमए शहादत पढ़ा उस के लिये जन्नत के आठों दरवाज़े खोल दिये जाते हैं जिस से चाहे अन्दर दाख़िल हो।” (صَحِيحُ مُسْلِمٍ، ص ١٤٤-١٤٥-١٤٦ حَدِيث ٢٣٤)

जो वुजू करने के बा'द येह कलिमात पढ़े : سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ ! وَعَزَّوَجَلَّ اَللّٰهُمَّ ! وَبِحَمْدِكَ اَشْهَدُ اَنْ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ اَسْتَغْفِرُكَ وَ اَتُوبُ اِلَيْكَ ! तू पाक है और तेरे लिये ही तमाम खूबियां हैं मैं गवाही देता (देती) हूं कि तेरे सिवा कोई मा'बूद नहीं, मैं तुझ से बख़्शिश चाहता (चाहती) हूं और तेरी

فَرَمَانَهُ مُسْتَفَاً صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत करो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे लिये पाकीज़गी का बाइस है। (बोस्न)।

बारगाह में तौबा करता (करती) हूँ।” तो उस पर मोहर लगा कर अर्श के नीचे रख दिया जाएगा और क़ियामत के दिन इस पढ़ने वाले को दे दिया जाएगा। (شُعْبَةُ الْإِيمَانِ ج ٣ ص ٢١ رقم ٢٧٠٤)

वुजू के बा'द सूराए क़द्र पढ़ने के फ़ज़ाइल

हदीसे मुबारक में है: “जो वुजू के बा'द एक मर्तबा सूराए क़द्र पढ़े तो वोह सिद्दीकीन में से है और जो दो मर्तबा पढ़े तो शुहदा में शुमार किया जाए और जो तीन मर्तबा पढ़ेगा तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मैदाने महशर में उसे अपने अम्बिया के साथ रखेगा।”

(كنز العمال ج ٩ ص ٣٢ رقم ٢٦٠٨٥، الحاوی للفتاوی للسبوطی ج ١ ص ٤٠٢-٤٠٣)

नज़र कभी कमज़ोर न हो

जो वुजू के बा'द आस्मान की तरफ़ देख कर (एक बार) सूराए
إِنَّا أَنْزَلْنَاهُ पढ़ लिया करे إِنَّ شَاءَ اللهُ تَعَالَى उस की नज़र कभी कमज़ोर न
होगी। (मसाइलुल कुरआन, स. 291)

तसव्वुफ़ का अज़ीम मदनी नुस्खा

हुज्जतुल इस्लाम हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद बिन मुहम्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِي फ़रमाते हैं: “वुजू से फ़रागत के बा'द जब आप नमाज़ की तरफ़ मुतवज्जेह हों उस वक़्त येह तसव्वुर कीजिये कि जिन ज़ाहिरी आ'ज़ा पर लोगों की नज़र पड़ती है वोह तो ब ज़ाहिर ताहिर (या'नी पाक) हो चुके मगर दिल को पाक किये बिगैर बारगाहे इलाही عَزَّوَجَلَّ में मुनाजात करना हया के ख़िलाफ़ है क्यूं कि अल्लाह

फरमाने मुस्फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़े तो वोह लोगों में से कन्जूस तरीन शख्स है। (مسند احمد)

दिलों को भी देखने वाला है।” मज़ीद फ़रमाते हैं, ज़ाहिरी वुजू कर लेने वाले को येह बात याद रखनी चाहिये कि दिल की त़हारत (या’नी सफ़ाई) तौबा करने और गुनाहों को छोड़ने और उम्दा अख़्लाक अपनाने से होती है। जो शख्स दिल को गुनाहों की आलूदगियों से पाक नहीं करता फ़क़त ज़ाहिरी त़हारत (या’नी सफ़ाई) और ज़ैबो ज़ीनत पर इक्तिफ़ा करता है उस की मिसाल उस शख्स की सी है जो बादशाह को मद्दु करता है और अपने घरबार को बाहर से ख़ूब चमकाता है और रंगो रोग़न करता है मगर मकान के अन्दरूनी हिस्से की सफ़ाई पर कोई तवज्जोह नहीं देता। चुनान्चे जब बादशाह उस के मकान के अन्दर आ कर गन्दगियां देखेगा तो वोह नाराज़ होगा या राज़ी, येह हर ज़ी शुऊर खुद समझ सकता है।

(أَحْيَاءُ الْعُلُومِ ج ١ ص ١٨٥ مُلَخَّصًا)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

“अल्लाह” के चार हुरूफ़ की निस्बत से
वुजू के चार फ़राइज़

﴿1﴾ चेहरा धोना : या’नी चेहरे का लम्बाई में पेशानी जहां से बाल उमूमन उगते हैं वहां से ले कर ठोड़ी के नीचे तक और चौड़ाई में एक कान की लौ से ले कर दूसरे कान की लौ तक एक मर्तबा धोना।

﴿2﴾ कोहनियों समेत दोनों हाथ धोना : या’नी दोनों हाथों का कोहनियों समेत इस तरह धोना कि उंग्लियों के नाखुनों से ले कर कोहनियों समेत एक बाल भी खुश्क न रहे।

فَرَمَانَةٌ مُسْتَفَاةٌ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : تُوْمَ جِهَآءِ هَآءِ هُوَ مُؤِذِنٌ عَلَى دُرُودِ طَوَّافٍ كَيْ تُوْمَّحَارَا دُرُودَ مُؤِذِنٍ تَتَكَ طَهَّرَآءَ هَآءِ (طَرَاةٌ)

﴿3﴾ चौथाई सर का मस्ह करना : या'नी हाथ तर कर के सर के चौथाई बालों पर मस्ह करना ।

﴿4﴾ टख़्नों समेत दोनों पाउं धोना : या'नी दोनों पाउं को टख़्नों समेत इस तरह धोना कि कोई जगह खुश्क न रहे ।

(عَالَمَكِرَى، ج 1، ص 10، 11، 12، 13، 14، 15، 16، 17، 18، 19، 20، 21، 22، 23، 24، 25، 26، 27، 28، 29، 30، 31، 32، 33، 34، 35، 36، 37، 38، 39، 40، 41، 42، 43، 44، 45، 46، 47، 48، 49، 50، 51، 52، 53، 54، 55، 56، 57، 58، 59، 60، 61، 62، 63، 64، 65، 66، 67، 68، 69، 70، 71، 72، 73، 74، 75، 76، 77، 78، 79، 80، 81، 82، 83، 84، 85، 86، 87، 88، 89، 90، 91، 92، 93، 94، 95، 96، 97، 98، 99، 100)

मदनी फूल : इन चार फ़र्जों में से अगर एक फ़र्ज भी रह गया तो वुजू न होगा और जब वुजू न होगा तो नमाज़ भी न होगी ।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

धोने की ता'रीफ़

किसी उज़्ब को धोने के येह मा'ना हैं कि उस उज़्ब के हर हिस्से पर कम अज़ कम दो क़तरे पानी बह जाए । सिर्फ़ भीग जाने या पानी को तेल की तरह चुपड़ लेने या एक क़तरा बह जाने को धोना नहीं कहेंगे न इस तरह वुजू या गुस्ल अदा होगा ।

(फ़तावा रज़विय्या, जि. 1, स. 218, बहारे शरीअत, हिस्सा : 2, स. 10)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

“या रहूमतलिल अलमीन” के तेरह हुरूफ़ की निस्बत से वुजू की 13 सुन्नतें

“वुजू का तरीका” (हनफ़ी) में बा'ज सुन्नतों और मुस्तहब्बात का बयान हो चुका है इस की मज़ीद वज़ाहत मुलाहज़ा कीजिये ।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो लोग अपनी मजलिस से अल्लाह के जिक्र और नबी पर दुरूद शरीफ़ पढ़े बिगैर उठ गए तो वोह बदबूदार मुर्दार से उठे । (شعب الإيمان)

﴿1﴾ नियत करना ﴿2﴾ बिस्मिल्लाह पढ़ना । अगर वुजू से क़ब्ल लिखते रहेंगे । ﴿3﴾ दोनों हाथ पहुँचों तक तीन बार धोना ﴿4﴾ तीन बार मिस्वाक करना ﴿5﴾ तीन चुल्लू से तीन बार कुल्ली करना ﴿6﴾ रोज़ा न हो तो ग़र ग़रा करना ﴿7﴾ तीन चुल्लू से तीन बार नाक में पानी चढ़ाना ﴿8﴾ हाथ और ﴿9﴾ पाउं की उंगलियों का खिलाल करना ﴿10﴾ पूरे सर का एक ही बार मस्ह करना ﴿11﴾ कानों का मस्ह करना ﴿12﴾ फ़राइज़ में तरतीब काइम रखना (या'नी फ़र्ज आ'ज़ा में पहले मुंह फिर हाथ कोहनियों समेत धोना फिर सर का मस्ह करना और फिर पाउं धोना) और ﴿13﴾ पै दर पै वुजू करना या'नी एक उज़्व सूखने न पाए कि दूसरा उज़्व धो लेना ।

(बहारे शरीअत, हिस्सा : 2, स. 14, 18, मुलख़ब़सन)

صَلُّوْا عَلَي الْحَبِيْبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

“या रशूलल्लाह तेरे दर की फ़ज़ाअों को सलाम”
के उन्तीस हुरूफ़ की निस्बत से वुजू के 29 मुस्तहब्बात

﴿1﴾ क़िल्ला रू ﴿2﴾ ऊंची जगह ﴿3﴾ बैठना ﴿4﴾ पानी बहाते वक़्त आ'ज़ा पर हाथ फैरना ﴿5﴾ इत्मीनान से वुजू करना ﴿6﴾ आ'ज़ाए वुजू पर पहले पानी चुपड़ लेना खुसूसन सर्दियों में ﴿7﴾ वुजू करने में बिगैर ज़रूरत किसी से मदद न लेना ﴿8﴾ सीधे हाथ से कुल्ली करना ﴿9﴾ सीधे हाथ से नाक में पानी चढ़ाना ﴿10﴾ उल्टे हाथ से नाक साफ़ करना ﴿11﴾ उल्टे हाथ की छुंगलिया नाक में डालना ﴿12﴾ उंगलियों

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर रोज़े जुमुआ दो सो बार दुरुदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआफ़ होंगे । (جمع الجوامع)

की पुश्त से गरदन की पुश्त का मस्ह करना ﴿13﴾ कानों का मस्ह करते वक़्त भीगी हुई छुंग्लियां (या'नी छोटी उंग्लियां) कानों के सूराखों में दाख़िल करना ﴿14﴾ अंगूठी को हरकत देना जब कि ढीली हो और येह यक़ीन हो कि इस के नीचे पानी बह गया है अगर सख़्त हो तो हरकत दे कर अंगूठी के नीचे पानी बहाना फ़र्ज़ है ﴿15﴾ मा'जूरे शर्ई (इस के तफ़सीली अहकाम इसी रिसाले के सफ़हा 44 ता 48 पर मुलाहज़ा फ़रमा लीजिये) न हो तो नमाज़ का वक़्त शुरू होने से पहले ही वुजू कर लेना ﴿16﴾ इस्लामी बहन जो कामिल तौर पर वुजू करती है या'नी जिस की कोई जगह पानी बहने से न रह जाती हो उस का कूओं (या'नी नाक की तरफ़ आंखों के कोने) टख़्नों, एड़ियों, तल्वों, कूंचों (या'नी एड़ियों के ऊपर मोटे पट्टे), घाइयों (उंग्लियों के दरमियान वाली जगहों) और कोहनियों का खुसूसिय्यत के साथ ख़याल रखना और बे ख़याली करने वालियों के लिये तो फ़र्ज़ है कि इन जगहों का ख़ास ख़याल रखें कि अक्सर देखा गया है कि येह जगहें खुशक रह जाती हैं और येह बे ख़याली ही का नतीजा है ऐसी बे ख़याली हराम है और ख़याल रखना फ़र्ज़ । ﴿17﴾ वुजू का लोटा उल्टी तरफ़ रखिये अगर तश्त या पतीली वग़ैरा से वुजू करें तो सीधी जानिब रखिये ﴿18﴾ चेहरा धोते वक़्त पेशानी पर इस तरह फैला कर पानी डालना कि ऊपर का कुछ हिस्सा भी धुल जाए ﴿19﴾ चेहरे और ﴿20﴾ हाथ पाउं की रोशनी वसीअ करना या'नी जितनी जगह पानी बहाना फ़र्ज़ है उस के अतराफ़ में कुछ बढ़ाना मसलन हाथ कोहनी से ऊपर आधे बाजू तक

فَرَمَانَهُ مُسْتَفَاةً صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : مُزَّجًا عَلَى دُرُوْدِ شَرِيْفِ پَدْوِ اَللّٰهْ عَزَّ وَجَلَّ تُوْمَ پَر رَهْمَتَ بَهْجِيَا । (ابن عمری)

और पाउं टख़्नों से ऊपर आधी पिंडली तक धोना ﴿21﴾ दोनों हाथों से मुंह धोना ﴿22﴾ हाथ पाउं धोने में उंगलियों से शुरू करना ﴿23﴾ हर उज़्व धोने के बा'द उस पर हाथ फैर कर बूंदें टपका देना ताकि बदन या कपड़े पर न टपकें ﴿24﴾ हर उज़्व के धोते वक्त और मस्ह करते वक्त निय्यते वुजू का हाज़िर रहना ﴿25﴾ इब्तिदा में बिस्मिल्लाह के साथ साथ दुरूद शरीफ़ और कलिमाए शहादत पढ़ लेना ﴿26﴾ आ'जाए वुजू बिला ज़रूरत न पोंछें अगर पोंछना हो तब भी बिला ज़रूरत बिल्कुल ख़ुश्क न करें कुछ तरी बाकी रखें कि बरोजे क़ियामत नेकियों के पलड़े में रखी जाएगी ﴿27﴾ वुजू के बा'द हाथ न झटके कि शैतान का पंखा है ﴿28﴾ बा'दे वुजू मियानी (या'नी पाजामा का वोह हिस्सा जो पेशाब गाह के करीब होता है) पर पानी छिड़कना । (पानी छिड़कते वक्त मियानी को कुर्ते के दामन में छुपाए रखना मुनासिब है नीज़ वुजू करते वक्त भी बल्कि हर वक्त पर्दे में पर्दा करते हुए मियानी को कुर्ते के दामन या चादर वगैरा के ज़रीए छुपाए रखना हया के करीब है) ﴿29﴾ अगर मक्रूह वक्त न हो तो दो रक्अत नफ़ल अदा करना जिसे तहिय्यतुल वुजू कहते हैं ।

(बहारे शरीअत, हिस्सा : 2, स. 18, 22)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِيْبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَی مُحَمَّدٍ

“बा वुजू रहना सवाब है” के पन्दरह हुरूफ़ की
निस्बत से वुजू के 15 मक्रूहात

﴿1﴾ वुजू के लिये नापाक जगह पर बैठना ﴿2﴾ नापाक जगह वुजू का पानी गिराना ﴿3﴾ आ'जाए वुजू से लोटे वगैरा में क़तरे

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग़िफ़रत है। (ابن عساکر)

टपकाना (मुंह धोते वक़्त भरे हुए चुल्लू में उमूमन चेहरे से पानी के क़तरे गिरते हैं इस का ख़याल रखिये) ﴿4﴾ क़िब्ले की तरफ़ थूक या बलाम डालना या कुल्ली करना ﴿5﴾ ज़ियादा पानी ख़र्च करना (सदरुशशरीअह हज़रते अल्लामा मौलाना मुफ़्ती अमजद अली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي "बहारे शरीअत" हिस्सा ए दुवुम सफ़हा नम्बर 24 में फ़रमाते हैं : नाक में पानी डालते वक़्त आधा चुल्लू काफ़ी है तो अब पूरा चुल्लू लेना इसराफ़ है) ﴿6﴾ इतना कम पानी ख़र्च करना कि सुन्नत अदा न हो (टोंटी न इतनी ज़ियादा खोलें कि पानी हाज़त से ज़ियादा गिरे न इतनी कम खोलें कि सुन्नत भी अदा न हो बल्कि मुतवस्सित हो) । ﴿7﴾ मुंह पर पानी मारना ﴿8﴾ मुंह पर पानी डालते वक़्त फूंकना ﴿9﴾ एक हाथ से मुंह धोना कि रवाफ़िज़ और हिन्दूओं का शिआर है ﴿10﴾ गले का मसह करना ﴿11﴾ उल्टे हाथ से कुल्ली करना या नाक में पानी चढ़ाना ﴿12﴾ सीधे हाथ से नाक साफ़ करना ﴿13﴾ तीन जदीद पानियों से तीन बार सर का मसह करना ﴿14﴾ धूप के गर्म पानी से वुजू करना ﴿15﴾ होंट या आंखें जोर से बन्द करना और अगर कुछ सूखा रह गया तो वुजू ही न होगा । वुजू की हर सुन्नत का तर्क मक्रूह है इसी तरह हर मक्रूह का तर्क सुन्नत ।

(बहारे शरीअत, हिस्सा : 2, स. 22, 23)

धूप के गर्म पानी की वज़ाहत

सदरुशशरीअह, बदरुत्तरीकह हज़रते अल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद अमजद अली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي मक्तबतुल मदीना की मत्बूआ बहारे शरीअत हिस्सा 2 सफ़हा 23 के हाशिये पर लिखते

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने किताब में मुझ पर दुरूदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फिरिश्ते उस के लिये इस्तिफ़ार (या'नी बख़्शिश की दुआ) करते रहेंगे। (طبرانی)

हैं : “जो पानी धूप से गर्म हो गया उस से वुजू करना मुल्लक़न मक्रूह नहीं बल्कि इस में चन्द कुयूद हैं, जिन का ज़िक्र पानी के बाब में आएगा और उस से वुजू की कराहत, तन्ज़ीही है तहरीमी नहीं।” पानी के बाब में सफ़हा 56 पर लिखते हैं : “जो पानी गर्म मुल्क में गर्म मौसिम में सोने चांदी के सिवा किसी और धात के बरतन में धूप में गर्म हो गया, तो जब तक गर्म है उस से वुजू और गुस्ल न चाहिये, न उस को पीना चाहिये बल्कि बदन को किसी तरह पहुंचना न चाहिये, यहां तक कि अगर उस से कपड़ा भीग जाए तो जब तक ठन्डा न हो ले उस के पहनने से बचें कि उस पानी के इस्ति'माल में अन्देशए बरस (या'नी कोढ़ का ख़तरा) है, फिर भी अगर वुजू या गुस्ल कर लिया तो हो जाएगा।”

(बहारे शरीअत, हिस्सा : 2, स. 23, 56)

“मुस्ता'मल पानी से वुजू व गुस्ल नहीं होता”
के सत्ताईस हुरूफ़ की निस्बत से

मुस्ता'मल पानी के मुतअल्लिक 27 मदनी फूल

﴿1﴾ जो पानी वुजू या गुस्ल करने में बदन से गिरा वोह पाक है मगर चूंकि अब मुस्ता'मल (या'नी इस्ति'माल शुदा) हो चुका है लिहाज़ा इस से वुजू और गुस्ल जाइज़ नहीं ﴿2﴾ यूंही अगर बे वुजू शख़्स का हाथ या उंगली या पोरा या नाखुन या बदन का कोई टुकड़ा जो वुजू में धोया जाता हो ब क़स्द (या'नी जान बूझ कर) या बिला क़स्द (या'नी बे ख़याली में) दह दर दह (10x10) से कम पानी में बे धोए हुए पड़ जाए तो वोह पानी वुजू और गुस्ल के लाइक़ न रहा ﴿3﴾ इसी तरह जिस

फ़रमाने मुस्ताफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुझ पर एक दिन में 50 बार दुरूदे पाक पढ़े क़ियामत के दिन मैं उस से मुसाफ़हा करूँ (या'नी हाथ मिलाऊँ)गा। (ابن بشكوال)

शख्स पर नहाना फ़र्ज़ है उस के जिस्म का कोई बे धुला हुवा हिस्सा दह दर दह से कम पानी से छू जाए तो वोह पानी वुजू और गुस्ल के काम का न रहा ﴿4﴾ अगर धुला हुवा हाथ या बदन का कोई हिस्सा पड़ जाए तो हरज नहीं ﴿5﴾ हाएज़ा (या'नी हैज़ वाली) हैज़ से या निफ़ास वाली निफ़ास से पाक तो हो चुकी हो मगर अभी गुस्ल न किया हो तो उस के जिस्म का कोई उज़्व या हिस्सा धोने से क़ब्ल अगर दह दर दह (10x10) से कम पानी में पड़ा तो वोह पानी मुस्ता'मल (या'नी इस्ति'माल शुदा) हो जाएगा ﴿6﴾ जो पानी कम अज़ कम दह दर दह हो वोह बहते पानी और जो दह दर दह से कम हो वोह ठहरे पानी के हुक्म में होता है ﴿7﴾ उमूमन हम्माम के टब, घरेलू इस्ति'माल के डोल, बाल्टी पतीले, लोटे वगैरा दह दर दह से कम होते हैं इन में भरा हुवा पानी ठहरे पानी के हुक्म में होता है ﴿8﴾ आ'जाए वुजू में से अगर कोई उज़्व धो लिया था और इस के बा'द वुजू टूटने वाला कोई अमल न हुवा था तो वोह धुला हुवा हिस्सा ठहरे पानी में डालने से पानी मुस्ता'मल न होगा ﴿9﴾ जिस शख्स पर गुस्ल फ़र्ज़ नहीं उस ने अगर कोहनी समेत हाथ धो लिया हो तो पूरा हाथ हत्ता कि कोहनी के बा'द वाला हिस्सा भी ठहरे पानी में डालने से पानी मुस्ता'मल न होगा ﴿10﴾ बा वुजू ने या जिस का हाथ धुला हुवा है उस ने अगर फिर धोने की निय्यत से डाला और येह धोना सवाब का काम हो मसलन खाना खाने या वुजू की निय्यत से ठहरे पानी में डाला तो मुस्ता'मल हो जाएगा ﴿11﴾ हैज़ या निफ़ास वाली का जब तक हैज़ या निफ़ास बाकी है ठहरे पानी में बे धुला हाथ

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : बरोज़े क़ियामत लोगों में से मेरे क़रीब तर वोह होगा जिस ने दुन्या में मुज़ पर ज़ियादा दुरूदे पाक पढ़े होंगे । (ترمذی)

या बदन का कोई हिस्सा डालेगी पानी मुस्ता'मल नहीं होगा हां अगर येह भी सवाब की निय्यत से डालेगी तो मुस्ता'मल हो जाएगा । मसलन इस के लिये मुस्तहब है कि पांचों नमाज़ों के अवक़ात में और अगर इशराक़, चाशत व तहज्जुद की अ़दत रखती हो तो इन वक़्तों में बा वुजू कुछ देर ज़िक्रो दुरूद कर लिया करे ताकि इबादत की अ़दत बाकी रहे तो अब इन के लिये ब निय्यते वुजू बे धुला हाथ ठहरे पानी में डालेगी तो पानी मुस्ता'मल हो जाएगा ﴿12﴾ पानी का गिलास, लोटा या बाल्टी वगैरा उठाते वक़्त एहतियात ज़रूरी है ताकि बे धुली उंगलियां पानी में न पड़ें ﴿13﴾ दौराने वुजू अगर हृदस हुवा या'नी वुजू टूटने वाला कोई अ़मल हुवा तो जो आ'ज़ा पहले धो चुके थे वोह बे धुले हो गए यहां तक कि अगर चुल्लू में पानी था तो वोह भी मुस्ता'मल हो गया ﴿14﴾ अगर दौराने गुस्ल वुजू टूटने वाला अ़मल हुवा तो सिर्फ़ आ'ज़ाए वुजू बे धुले हुए जो जो आ'ज़ाए गुस्ल धुल चुके हैं वोह बे धुले न हुए ﴿15﴾ ना बालिग़ या ना बालिगा का पाक बदन अगर चे ठहरे पानी मसलन पानी की बाल्टी या टब वगैरा में मुकम्मल डूब जाए तब भी पानी मुस्ता'मल न हुवा ﴿16﴾ समझदार बच्ची या समझदार बच्चा अगर सवाब की निय्यत से मसलन वुजू की निय्यत से ठहरे पानी में हाथ की उंगली या उस का नाखुन भी अगर डालेगा तो मुस्ता'मल हो जाएगा ﴿17﴾ गुस्ले मथ्यित का पानी मुस्ता'मल है जब कि उस में कोई नजासत न हो ﴿18﴾ अगर ब ज़रूरत ठहरे पानी में हाथ डाला तो पानी मुस्ता'मल न हुवा मसलन देग या बड़े मटके या बड़े पीपे (DRUM)

फ़रमाने मुस्ताफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर एक मरतबा दुरूद पढ़ा अल्लाह उस पर दस रहमतें भेजता और उस के नामए आ'माल में दस नेकियां लिखता है। (ترمذی)

में पानी है इसे झुका कर नहीं निकाल सकते न ही कोई छोटा बरतन है कि उस से निकाल लें तो ऐसी मजबूरी की सूरत में ब क़दरे ज़रूरत बे धुला हाथ पानी में डाल कर उस से पानी निकाल सकते हैं ﴿19﴾ अच्छे पानी में अगर मुस्ता'मल पानी मिल जाए और अगर अच्छ पानी ज़ियादा है तो सब अच्छ हो गया मसलन वुजू या गुस्ल के दौरान लोटे या घड़े में क़तरे टपके तो अगर अच्छ पानी ज़ियादा है तो यह वुजू और गुस्ल के काम का है वरना सारा ही बेकार हो गया ﴿20﴾ पानी में बे धुला हाथ पड़ गया या किसी तरह मुस्ता'मल हो गया और चाहें कि यह काम का हो जाए तो जितना मुस्ता'मल पानी है उस से ज़ियादा मिक्दार में अच्छ पानी उस में मिला लीजिये, सब काम का हो जाएगा नीज़ ﴿21﴾ एक तरीका यह भी है कि उस में एक तरफ़ से पानी डालें कि दूसरी तरफ़ बह जाए सब काम का हो जाएगा ﴿22﴾ मुस्ता'मल पानी पाक होता है अगर इस से नापाक बदन या कपड़े वगैरा धोएंगे तो पाक हो जाएंगे ﴿23﴾ मुस्ता'मल पानी पाक है इस का पीना या इस से रोटी खाने के लिये आटा गूंधना मकरूहे तन्ज़ीही है ﴿24﴾ होंटों का वोह हिस्सा जो आदतन बन्द करने के बा'द जाहिर रहता है वुजू में इस का धोना फ़र्ज़ है लिहाज़ा कटोरे या गिलास से पानी पीते वक़्त एहतियात की जाए कि होंटों का मज़क़ूरा हिस्सा ज़रा सा भी पानी में पड़ेगा पानी मुस्ता'मल हो जाएगा ﴿25﴾ अगर बा वुजू है या कुल्ली कर चुका है या होंटों का वोह हिस्सा धो चुका है और इस के बा'द वुजू तोड़ने वाला कोई अमल वाक़ेअ नहीं हुवा तो अब पड़ने से पानी मुस्ता'मल न होगा

फ़रमाने मुस्ताफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : शबे जुमुआ और रोज़े मुझ पर दुरुद की कसरत कर लिया करो जो ऐसा करेगा क़ियामत के दिन मैं उस का शफ़ीअ व गवाह बनूंगा । (شعب الایمان)

﴿26﴾ दूध, कोफ़ी, चाय, फलों के रस वग़ैरा मशरूबात में बे धुला हाथ वग़ैरा पड़ने से येह मुस्ता'मल नहीं होते और इन से तो वैसे भी वुजू या गुस्ल नहीं होता ﴿27﴾ पानी पीते हुए मूँछों के बे धुले बाल गिलास के पानी में लगे तो पानी मुस्ता'मल हो गया इस का पीना मक्रूह है। अगर बा वुजू था या मूँछें धुली हुई थीं तो शरअन हरज नहीं।

(मुस्ता'मल पानी के बारे में तफ़सीली मा'लूमात के लिये फ़तावा रजविय्या जिल्द 2 सफ़हा 37 ता 248, बहारे शरीअत हिस्सा 2 सफ़हा 55 ता 56 और फ़तावा अमजदिय्या जि. 1 सफ़हा 14 ता 15 मुलाहज़ा फ़रमाइये)

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْبُ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

“अब कर” के पांच हुरूफ़ की निस्बत से
जख़्म वग़ैरा से ख़ून निकलने के 5 अहक़ाम

﴿1﴾ ख़ून, पीप या ज़र्द पानी कहीं से निकल कर बहा और उस के बहने में ऐसी जगह पहुंचने की सलाहियत थी जिस जगह का वुजू या गुस्ल में धोना फ़र्ज़ है तो वुजू जाता रहा। (बहारे शरीअत, हिस्सा : 2, स. 26) ﴿2﴾ ख़ून अगर चमका या उभरा और बहा नहीं जैसे सूई की नोक या चाकू का कनारा लग जाता है और ख़ून उभर या चमक जाता है या ख़िलाल किया या मिस्वाक की या उंगली से दांत मांझे या दांत से कोई चीज़ मसलन सेब वग़ैरा काटा उस पर ख़ून का असर ज़ाहिर हुवा या नाक में उंगली डाली इस पर ख़ून की सुर्खी आ गई मगर वोह ख़ून बहने के क़ाबिल न था वुजू नहीं टूटा। (ऐज़न) ﴿3﴾ अगर बहा

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुझ पर एक बार दुरूद पढ़ता है अल्लाह उस के लिये एक क़ीरात अन्न लिखता है और क़ीरात उहुद पहाड़ जितना है। (मैरुज़)

मगर बह कर ऐसी जगह नहीं आया जिस का गुस्ल या वुजू में धोना फ़र्ज़ हो मसलन आंख में दाना था और टूट कर अन्दर ही फैल गया बाहर नहीं निकला या पीप या खून कान के सूराखों के अन्दर ही रहा बाहर न निकला तो इन सूरतों में वुजू न टूटा। (ऐज़न, स. 27) ﴿4﴾ ज़ख़्म बेशक बड़ा है रतूबत चमक रही है मगर जब तक बहेगी नहीं वुजू नहीं टूटेगा। (ऐज़न) ﴿5﴾ ज़ख़्म का खून बार बार पोंछती रहें कि बहने की नौबत न आई तो गौर कर लीजिये कि अगर इतना खून पोंछ लिया है कि अगर न पोंछती तो बह जाता तो वुजू टूट गया नहीं तो नहीं। (ऐज़न)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

थूक में खून से कब वुजू टूटेगा

मुंह से खून निकला अगर थूक पर ग़ालिब है तो वुजू टूट जाएगा वरना नहीं। ग़लबे की शनाख़्त यह है कि अगर थूक का रंग सुर्ख़ हो जाए तो खून ग़ालिब समझा जाएगा और वुजू टूट जाएगा यह सुर्ख़ थूक नापाक भी है। अगर थूक ज़र्द हो तो खून पर थूक ग़ालिब माना जाएगा लिहाज़ा न वुजू टूटेगा न यह ज़र्द थूक नापाक।

(बहारे शरीअत, हिस्सा : 2, स. 27)

खून वाले मुंह की कुल्ली की एहतियातें

मुंह से इतना खून निकला कि थूक सुर्ख़ हो गया और लोटे या गिलास से मुंह लगा कर कुल्ली के लिये पानी लिया तो लोटा गिलास और कुल पानी नजिस हो गया लिहाज़ा ऐसे मौक़अ पर चुल्लू में पानी

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जब तुम रसूलों पर दुरुद पढ़ो तो मुझ पर भी पढ़ो, बेशक मैं तमाम जहानों के रब का रसूल हूँ। (جمع الجوامع)

ले कर एहतियात से कुल्ली कीजिये और येह भी एहतियात फ़रमाइये कि छींटे उड़ कर आप के कपड़ों वगैरा पर न पड़ें।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

इन्जेक्शन लगाने से वुजू टूटेगा या नहीं ?

﴿1﴾ गोशत में इन्जेक्शन लगाने में सिर्फ़ उसी सूरत में वुजू टूटेगा जब कि बहने की मिक्दार में खून निकले ﴿2﴾ जब कि नस का इन्जेक्शन लगा कर पहले खून ऊपर की तरफ़ खींचते हैं जो कि बहने की मिक्दार में होता है लिहाज़ा वुजू टूट जाता है। ﴿3﴾ इसी तरह ग्लूकोज़ वगैरा की ड्रिप नस में लगवाने से वुजू टूट जाएगा क्यूं कि बहने की मिक्दार में खून निकल कर नल्की में आ जाता है। हां अगर बहने की मिक्दार में खून नल्की में न आए तो वुजू नहीं टूटेगा।

दुखती आंख के आंसू

﴿1﴾ दुखती आंख से जो आंसू बहा वोह नापाक है और वुजू भी तोड़ देगा। (बहारे शरीअत, हिस्सा : 2, स. 32) अफ़सोस अक्सर इस्लामी बहनें इस मस्अले से ना वाकिफ़ होती हैं और दुखती आंख से ब वज्हे मरज़ बहने वाले आंसू को और आंसूओं की मानिन्द समझ कर आस्तीन या कुर्ते के दामन वगैरा से पोंछ कर कपड़े नापाक कर डालती हैं। ﴿2﴾ नाबीना की आंख से जो रतूबत ब वज्हे मरज़ निकलती है वोह नापाक है और उस से वुजू भी टूट जाता है। येह याद रहे कि खौफ़े खुदा عَزَّوَجَلَّ या इश्के मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ में या

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुझ पर दुरूद पढ़ कर अपनी मजालिस को आरास्ता करो कि तुम्हारा दुरूद पढ़ना बरोज़े क़ियामत तुम्हारे लिये नूर होगा । (फ़रदुस अलख़ैर)

वैसे ही आंसू निकलें तो वुजू नहीं टूटता ।

पाक और नापाक रतूबत

जो रतूबत इन्सानी बदन से निकले और वुजू न तोड़े वोह नापाक नहीं । मसलन खून या पीप बह कर न निकले या थोड़ी कै कि मुंह भर न हो पाक है । (बहारे शरीअत, हिस्सा : 2, स. 31)

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَيِّبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ عَلَى مُحَمَّدٍ

छाला और फुड़िया

﴿1﴾ छाला नोच डाला अगर उस का पानी बह गया तो वुजू टूट गया वरना नहीं । (ऐज़न, स. 27) ﴿2﴾ फुड़िया बिल्कुल अच्छी हो गई उस की मुर्दा खाल बाकी है जिस में ऊपर मुंह और अन्दर ख़ला है अगर उस में पानी भर गया और दबा कर निकाला तो न वुजू जाए न वोह पानी नापाक । हां अगर उस के अन्दर कुछ तरी खून वगैरा की बाकी है तो वुजू भी जाता रहेगा और वोह पानी भी नापाक है । (फ़तावा रज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 1, स. 355, 356) ﴿3﴾ ख़ारिश या फुड़ियों में अगर बहने वाली रतूबत न हो सिर्फ़ चिपक हो और कपड़ा उस से बार बार छू कर चाहे कितना ही सन जाए पाक है । (बहारे शरीअत, हिस्सा : 2, स. 32) ﴿4﴾ नाक साफ़ की उस में से जमा हुवा खून निकला वुजू न टूटा, अन्सब (या'नी ज़ियादा मुनासिब) येह है कि वुजू करे ।

(फ़तावा रज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 1, स. 281)

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَيِّبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ عَلَى مُحَمَّدٍ

फ़रमाने मुस्फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत करो बेशक यह तुम्हारे लिये त्हा रत है । (ابو یس)।

कै से वुजू कब टूटता है ?

मुंह भर कै खाने, पानी या सफ़रा (या'नी पीले रंग का कड़वा पानी) की वुजू तोड़ देती है। जो कै तकल्लुफ़ के बिगैर न रोकी जा सके उसे मुंह भर कहते हैं। मुंह भर कै पेशाब की तरह नापाक होती है उस के छींटों से अपने कपड़े और बदन को बचाना ज़रूरी है।

(बहारे शरीअत, हिस्सा : 2, स. 28, 112 वगैरा)

दूध पीते बच्चे का पेशाब और कै

﴿1﴾ एक दिन के दूध पीते बच्चे का पेशाब भी इसी तरह नापाक है जिस तरह आम लोगों का। (ऐज़न, स. 112) ﴿2﴾ दूध पीते बच्चे ने दूध डाल दिया और वोह मुंह भर है तो (येह भी पेशाब ही की तरह) नापाक है हां अगर येह दूध मे'दे तक नहीं पहुंचा सिर्फ़ सीने तक पहुंच कर पलट आया तो पाक है। (ऐज़न, स. 32)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

“मदीना” के पांच हुरूफ़ की निस्बत से

वुजू में शक आने के 5 अहकाम

﴿1﴾ अगर दौराने वुजू किसी उज़्व के धोने में शक वाक़ेअ हो और अगर येह ज़िन्दगी का पहला वाक़िआ है तो इस को धो लीजिये और अगर अक्सर शक पड़ा करता है तो उस की तरफ़ तवज्जोह न दीजिये। इसी तरह अगर बा'दे वुजू भी शक पड़े तो इस का कुछ ख़याल मत

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुझ पर रोज़े जुमुआ़ा दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा मैं कियामत के दिन उस की शफ़ाअत करूंगा । (कोशिस)

कीजिये । (बहारे शरीअत, हिस्सा : 2, स. 32) ﴿2﴾ आप बा वुजू थीं अब शक आने लगा कि पता नहीं वुजू है या नहीं, ऐसी सूरत में आप बा वुजू हैं क्यूं कि सिर्फ़ शक से वुजू नहीं टूटता । (ऐज़न, स. 33) ﴿3﴾ वस्वसे की सूरत में एहतियातन वुजू करना एहतियात नहीं इत्तिबाए शैतान है । (ऐज़न) ﴿4﴾ यकीनन आप उस वक़्त तक बा वुजू हैं जब तक वुजू टूटने का ऐसा यकीन न हो जाए कि क़सम खा सकें ﴿5﴾ येह याद है कि कोई उज़्व धोने से रह गया है मगर येह याद नहीं कौन सा उज़्व था तो बायां (या'नी उल्टा) पाउं धो लीजिये । (दुर्मुख्तार, ज 1, स 310)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

पान खाने वालियां मुतवज्जेह हों

मेरे आका आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, वलिय्ये ने'मत, अज़ीमुल बरकत, अज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्ए रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, हामिये सुन्नत, माहिये बिद्अत, आलिमे शरीअत, पीरे तरीक़त, बाइसे खैरो बरकत, हज़रते अल्लामा मौलाना अलहाज अल हाफ़िज़ अल क़ारी शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : पानों के कसरत से आदी खुसूसन जब कि दांतों में फ़ज़ा (गेप) हो तजरिबे से जानते हैं कि छालिया के बारीक रेज़े और पान के बहुत छोटे छोटे टुकड़े इस तरह मुंह के अतराफ़ व अक्नाफ़ में जा गीर होते हैं (या'नी मुंह के कोनों और दांतों के खांचों में घुस जाते हैं) कि तीन बल्कि कभी दस बारह कुल्लियां भी

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : उस शख्स की नाक ख़ाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पड़े । (१७)

उन के तस्फ़ियाए ताम (या'नी मुकम्मल सफ़ाई) को काफ़ी नहीं होती, न ख़िलाल उन्हें निकाल सकता है न मिस्वाक, सिवा कुल्लियों के कि पानी मनाफ़िज़ (या'नी सूराखों) में दाख़िल होता और जुम्बिशें देने (या'नी हिलाने) से उन जमे हुए बारीक ज़रों को ब तदरीज छुड़ा छुड़ा कर लाता है, इस की भी कोई तहूदीद (हृद बन्दी) नहीं हो सकती और येह कामिल तस्फ़िया (या'नी मुकम्मल सफ़ाई) भी बहुत मुअक्कद (या'नी इस की सख़्त ताकीद) है मुतअद्द अहादीस में इर्शाद हुवा है कि जब बन्दा नमाज़ को खड़ा होता है फ़िरिश्ता उस के मुंह पर अपना मुंह रखता है येह जो कुछ पढ़ता है इस के मुंह से निकल कर फ़िरिश्ते के मुंह में जाता है उस वक़्त अगर खाने की कोई शै उस के दांतों में होती है मलाएका को उस से ऐसी सख़्त ईज़ा होती है कि और शै से नहीं होती ।

हुज़ूरे अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम, रसूले मुहूतशम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया, जब तुम में से कोई रात को नमाज़ के लिये खड़ा हो तो चाहिये कि मिस्वाक कर ले क्यूं कि जब वोह अपनी नमाज़ में क़िराअत करता है तो फ़िरिश्ता अपना मुंह उस के मुंह पर रख लेता है और जो चीज़ उस के मुंह से निकलती है वोह फ़िरिश्ते के मुंह में दाख़िल हो जाती है । (شُعَبُ الْإِيمَانِ ج ٢ ص ٢٨١ رقم ٢١١٧) और त़बरानी ने कबीर में हज़रते सय्यिदुना अबू अय्यूब अन्सारी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत की है कि दोनों फ़िरिश्तों पर इस से ज़ियादा कोई चीज़ गिरा नहीं कि वोह अपने साथी को नमाज़ पढ़ता देखें और उस के दांतों में

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा! अल्लाह (س)। उस पर दस रहमतें भेजता है। (حدیث ۱۷۷ ص ۴۰۶)

खाने के रेज़े फंसे हों। (फतावा रज़विय्या मुखर्रजा, जि. 1, स. 624, 625,

المُعْتَمَدُ الكَبِيرُ ج ۴ ص ۱۷۷ حدیث ۴۰۶)

सोने से वुजू टूटने और न टूटने का बयान

नींद से वुजू टूटने की दो शर्तें हैं :- «1» दोनों सुरीन अच्छी तरह जमे हुए न हों। «2» ऐसी हालत पर सोई जो ग़ाफ़िल हो कर सोने में रुकावट न हो। जब दोनों शर्तें जम्अ हों या'नी सुरीन भी अच्छी तरह जमे हुए न हों नीज ऐसी हालत में सोई हो जो ग़ाफ़िल हो कर सोने में रुकावट न हो तो ऐसी नींद वुजू को तोड़ देती है। अगर एक शर्त पाई जाए और दूसरी न पाई जाए तो वुजू नहीं टूटेगा।

सोने के वोह दस¹⁰ अन्दाज़ जिन से वुजू नहीं टूटता

«1» इस तरह बैठना कि दोनों सुरीन ज़मीन पर हों और दोनों पाउं एक तरफ़ फैलाए हों। (कुरसी, रेल और बस की सीट पर बैठने का भी येही हुक्म है) «2» इस तरह बैठना कि दोनों सुरीन ज़मीन पर हों और पिंडलियों को दोनों हाथों के हल्के में ले ले ख़्वाह हाथ ज़मीन वगैरा पर या सर घुटनों पर रख ले «3» चार ज़ानू या'नी पालती (चोकड़ी) मार कर बैठे ख़्वाह ज़मीन या तख़्त या चारपाई वगैरा पर हो «4» दो ज़ानू सीधी बैठी हो «5» घोड़े या ख़च्चर वगैरा पर ज़ीन रख कर सुवार हो «6» नंगी पीठ पर सुवार हो मगर जानवर चढ़ाई पर चढ़ रहा हो या रास्ता हमवार हो «7» तक्ये से टेक लगा कर इस तरह बैठी

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : उस शख्स को नाक खाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पड़े । (ترمذی)

हो कि सुरीन जमे हुए हों अगर्चे तक्या हटाने से येह गिर पड़े ﴿8﴾ खड़ी हो ﴿9﴾ रुकूअ की हालत में हो ﴿10﴾ सुन्नत के मुताबिक जिस तरह मर्द सज्दा करता है इस तरह सज्दा करे कि पेट रानों और बाजू पहलूओं से जुदा हों । मज़कूरा सूरतें नमाज़ में वाक़ेअ हों या इलावा नमाज़, वुजू नहीं टूटेगा और नमाज़ भी फ़ासिद न होगी अगर्चे क़स्दन सोए, अलबत्ता जो रुकन बिल्कुल सोते हुए अदा किया उस का इआदा (या'नी दोबारा अदा करना) ज़रूरी है और जागते हुए शुरूअ किया फिर नींद आ गई तो जो हिस्सा जागते अदा किया वोह अदा हो गया बक़िय्या अदा करना होगा ।

सोने के वोह दस¹⁰ अन्दाज़ जिन से वुजू टूट जाता है

﴿1﴾ उकड़ूं या'नी पाउं के तल्वों के बल इस तरह बैठी हो कि दोनों घुटने खड़े रहें ﴿2﴾ चित या'नी पीठ के बल लैटी हो ﴿3﴾ पट या'नी पेट के बल लैटी हो ﴿4﴾ दाई या बाई करवट लैटी हो । ﴿5﴾ एक कोहनी पर टेक लगा कर सो जाए ﴿6﴾ बैठ कर इस तरह सोई कि एक करवट झुकी हो जिस की वज्ह से एक या दोनों सुरीन उठे हुए हों ﴿7﴾ नंगी पीठ पर सुवार हो और जानवर पस्ती की जानिब उतर रहा हो ﴿8﴾ पेट रानों पर रख कर दो ज़ानू इस तरह बैठे सोई कि दोनों सुरीन जमे न रहें ﴿9﴾ चार ज़ानू या'नी चोकड़ी मार कर इस तरह बैठे कि सर रानों या पिंडलियों पर रखा हो ﴿10﴾ जिस तरह औरत सज्दा करती है इस तरह सज्दे के अन्दाज़ पर सोई कि पेट रानों और बाजू पहलूओं

فَرَمَانَهُ مُسْتَفَاً صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : جَوِ مُؤَلِّجًا پَر دَس مَرَتَبَا دُرُودِ پَاك پَدَّ اَللّٰهَ عَزَّ وَجَلَّ
 उस पर सो रहमतें नाज़िल फ़रमाता है। (طبرانی)

से मिले हुए हों या कलाइयां बिछी हुई हों। मज़कूरा सूरतें नमाज़ में वाक़ेअ हों या नमाज़ के इलावा वुजू टूट जाएगा। फिर अगर इन सूरतों में क़स्दन सोई तो नमाज़ फ़ासिद हो गई और बिला क़स्द सोई तो वुजू टूट जाएगा मगर नमाज़ बाक़ी है। बा'दे वुजू (मख़सूस शराइत के साथ) बक़िय्या नमाज़ उसी जगह से पढ़ सकती है जहां नींद आई थी। शराइत न मा'लूम हों तो नए सिरे से पढ़ ले।

(माख़ूज़ अज़ फ़तावा रज़विyyा मुख़र्रजा, जि. 1, स. 365 ता 367)

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَيِّبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ عَلَى مُحَمَّدٍ

हंसने के अहक़ाम

﴿1﴾ रुकूअ व सुजूद वाली नमाज़ में बालिगा ने क़हक़हा लगा दिया या'नी इतनी आवाज़ से हंसी कि आस पास वालों ने सुना तो वुजू भी गया और नमाज़ भी गई, अगर इतनी आवाज़ से हंसी कि सिर्फ़ खुद सुना तो नमाज़ गई वुजू बाक़ी है, मुस्कुराने से न नमाज़ जाएगी न वुजू। (مَرَاقِي الْفَلَاحِ مَعَ حَاشِيَةِ الطَّحْطَاوِي ص 91) मुस्कुराने में आवाज़ बिल्कुल नहीं होती सिर्फ़ दांत ज़ाहिर होते हैं। ﴿2﴾ बालिग़ ने नमाज़े जनाज़ा में क़हक़हा लगाया तो नमाज़ टूट गई वुजू बाक़ी है। ﴿3﴾ नमाज़ के इलावा क़हक़हा लगाने से वुजू नहीं जाता मगर दोबारा कर लेना मुस्तहब है। (مَرَاقِي الْفَلَاحِ ص 84) हमारे मीठे मीठे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने कभी भी क़हक़हा नहीं लगाया लिहाज़ा हमें भी कोशिश करनी चाहिये कि येह सुन्नत भी जिन्दा हो और हम

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पड़ा तहकीक वोह बद बख़्त हो गया । (١٠٤)

जोर जोर से न हंसें । फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : يَا نِي كَهْكُهَا شَيْتَانُ كِي تَرْفُ سِي هَيْ وَأَيُّرُ مُسْكُرَانَا ائَلَلَاهُ عَزَّوَجَلَّ كِي تَرْفُ सऱ है । (ج ٢، ص ١٠٤)

सात मुतफ़रिकात

﴿1﴾ पेशाब, पाख़ाना, मनी, कीड़ा या पथरी मर्द या औरत के आगे या पीछे से निकलीं तो वुजू जाता रहेगा । (عالمگیری، ج ١ ص ٩)

﴿2﴾ मर्द या औरत के पीछे से मा'मूली सी हवा भी ख़ारिज हुई वुजू टूट गया । मर्द या औरत के आगे से हवा ख़ारिज हुई वुजू नहीं टूटेगा ।

﴿3﴾ बेहोश हो जाने से वुजू टूट जाता है । (عالمگیری، ج ١ ص ١٢) ﴿4﴾ बा'ज लोग कहते हैं कि खिन्ज़ीर का

नाम लेने से वुजू टूट जाता है येह ग़लत है । ﴿5﴾ दौराने वुजू अगर रीह ख़ारिज हो या किसी सबब से वुजू टूट जाए तो नए सिरे से वुजू कर

लीजिये पहले धुले हुए आ'जा बे धुले हो गए । (माख़ूज़ अज़ : फ़तावा रज़विख्या मुख़र्रजा, जि. 1, स. 255) ﴿6﴾ बे वुजू को कुरआन शरीफ़ या

किसी आयत का छूना हराम है । (बहारे शरीअत, हिस्सा : 2, स. 48) कुरआने पाक का तरजमा फ़ारसी या उर्दू या किसी दूसरी ज़बान में

हो उस को भी पढ़ने या छूने में कुरआने पाक ही का सा हुक्म है । (बहारे शरीअत, हिस्सा : 2, स. 49) ﴿7﴾ आयत को बे छूए देख कर या ज़बानी

बे वुजू पढ़ने में हरज नहीं ।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर सुबह व शाम दस दस बार दुरूदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअत मिलेगी। (مُعْتَبَرَات)

गुस्ल का वुजू काफ़ी है

गुस्ल के लिये जो वुजू किया था वोही काफ़ी है ख़्वाह बरहना नहाए। अब गुस्ल के बा'द दोबारा वुजू करना ज़रूरी नहीं बल्कि अगर वुजू न भी किया हो तो गुस्ल कर लेने से आ'जाए वुजू पर भी पानी बह जाता है लिहाज़ा वुजू भी हो गया, कपड़े तब्दील करने या अपना या किसी दूसरे का सित्र देखने से भी वुजू नहीं जाता।

जिन का वुजू न रहता हो उन के लिये 9 अहक़ाम

﴿1﴾ क़तरा आने, पीछे से रीह ख़ारिज होने, ज़ख़्म बहने, दुखती आंख से ब वज्हे मरज़ आंसू बहने, कान, नाफ़, पिस्तान से पानी निकलने, फोड़े या नासूर से रतूबत बहने और दस्त आने से वुजू टूट जाता है। अगर किसी को इस तरह का मरज़ मुसल्लसल जारी रहे और शुरूअ से आख़िर तक पूरा एक वक़्त गुज़र गया कि वुजू के साथ नमाज़े फ़र्ज़ अदा न कर सकी वोह शरअन मा'ज़ूर है। एक वुजू से उस वक़्त में जितनी नमाज़ें चाहे पढ़े। उस का वुजू उस मरज़ से नहीं टूटेगा।

(बहारे शरीअत, हिस्सा : 2, स. 107, ००३, ००४, ००५, ००६, ००७, ००८, ००९, ०१०, ०११, ०१२, ०१३, ०१४, ०१५, ०१६, ०१७, ०१८, ०१९, ०२०, ०२१, ०२२, ०२३, ०२४, ०२५, ०२६, ०२७, ०२८, ०२९, ०३०, ०३१, ०३२, ०३३, ०३४, ०३५, ०३६, ०३७, ०३८, ०३९, ०४०, ०४१, ०४२, ०४३, ०४४, ०४५, ०४६, ०४७, ०४८, ०४९, ०५०, ०५१, ०५२, ०५३, ०५४, ०५५, ०५६, ०५७, ०५८, ०५९, ०६०, ०६१, ०६२, ०६३, ०६४, ०६५, ०६६, ०६७, ०६८, ०६९, ०७०, ०७१, ०७२, ०७३, ०७४, ०७५, ०७६, ०७७, ०७८, ०७९, ०८०, ०८१, ०८२, ०८३, ०८४, ०८५, ०८६, ०८७, ०८८, ०८९, ०९०, ०९१, ०९२, ०९३, ०९४, ०९५, ०९६, ०९७, ०९८, ०९९, १००, १०१, १०२, १०३, १०४, १०५, १०६, १०७, १०८, १०९, ११०, १११, ११२, ११३, ११४, ११५, ११६, ११७, ११८, ११९, १२०, १२१, १२२, १२३, १२४, १२५, १२६, १२७, १२८, १२९, १३०, १३१, १३२, १३३, १३४, १३५, १३६, १३७, १३८, १३९, १४०, १४१, १४२, १४३, १४४, १४५, १४६, १४७, १४८, १४९, १५०, १५१, १५२, १५३, १५४, १५५, १५६, १५७, १५८, १५९, १६०, १६१, १६२, १६३, १६४, १६५, १६६, १६७, १६८, १६९, १७०, १७१, १७२, १७३, १७४, १७५, १७६, १७७, १७८, १७९, १८०, १८१, १८२, १८३, १८४, १८५, १८६, १८७, १८८, १८९, १९०, १९१, १९२, १९३, १९४, १९५, १९६, १९७, १९८, १९९, २००, २०१, २०२, २०३, २०४, २०५, २०६, २०७, २०८, २०९, २१०, २११, २१२, २१३, २१४, २१५, २१६, २१७, २१८, २१९, २२०, २२१, २२२, २२३, २२४, २२५, २२६, २२७, २२८, २२९, २३०, २३१, २३२, २३३, २३४, २३५, २३६, २३७, २३८, २३९, २४०, २४१, २४२, २४३, २४४, २४५, २४६, २४७, २४८, २४९, २५०, २५१, २५२, २५३, २५४, २५५, २५६, २५७, २५८, २५९, २६०, २६१, २६२, २६३, २६४, २६५, २६६, २६७, २६८, २६९, २७०, २७१, २७२, २७३, २७४, २७५, २७६, २७७, २७८, २७९, २८०, २८१, २८२, २८३, २८४, २८५, २८६, २८७, २८८, २८९, २९०, २९१, २९२, २९३, २९४, २९५, २९६, २९७, २९८, २९९, ३००, ३०१, ३०२, ३०३, ३०४, ३०५, ३०६, ३०७, ३०८, ३०९, ३१०, ३११, ३१२, ३१३, ३१४, ३१५, ३१६, ३१७, ३१८, ३१९, ३२०, ३२१, ३२२, ३२३, ३२४, ३२५, ३२६, ३२७, ३२८, ३२९, ३३०, ३३१, ३३२, ३३३, ३३४, ३३५, ३३६, ३३७, ३३८, ३३९, ३४०, ३४१, ३४२, ३४३, ३४४, ३४५, ३४६, ३४७, ३४८, ३४९, ३५०, ३५१, ३५२, ३५३, ३५४, ३५५, ३५६, ३५७, ३५८, ३५९, ३६०, ३६१, ३६२, ३६३, ३६४, ३६५, ३६६, ३६७, ३६८, ३६९, ३७०, ३७१, ३७२, ३७३, ३७४, ३७५, ३७६, ३७७, ३७८, ३७९, ३८०, ३८१, ३८२, ३८३, ३८४, ३८५, ३८६, ३८७, ३८८, ३८९, ३९०, ३९१, ३९२, ३९३, ३९४, ३९५, ३९६, ३९७, ३९८, ३९९, ४००, ४०१, ४०२, ४०३, ४०४, ४०५, ४०६, ४०७, ४०८, ४०९, ४१०, ४११, ४१२, ४१३, ४१४, ४१५, ४१६, ४१७, ४१८, ४१९, ४२०, ४२१, ४२२, ४२३, ४२४, ४२५, ४२६, ४२७, ४२८, ४२९, ४३०, ४३१, ४३२, ४३३, ४३४, ४३५, ४३६, ४३७, ४३८, ४३९, ४४०, ४४१, ४४२, ४४३, ४४४, ४४५, ४४६, ४४७, ४४८, ४४९, ४५०, ४५१, ४५२, ४५३, ४५४, ४५५, ४५६, ४५७, ४५८, ४५९, ४६०, ४६१, ४६२, ४६३, ४६४, ४६५, ४६६, ४६७, ४६८, ४६९, ४७०, ४७१, ४७२, ४७३, ४७४, ४७५, ४७६, ४७७, ४७८, ४७९, ४८०, ४८१, ४८२, ४८३, ४८४, ४८५, ४८६, ४८७, ४८८, ४८९, ४९०, ४९१, ४९२, ४९३, ४९४, ४९५, ४९६, ४९७, ४९८, ४९९, ५००, ५०१, ५०२, ५०३, ५०४, ५०५, ५०६, ५०७, ५०८, ५०९, ५१०, ५११, ५१२, ५१३, ५१४, ५१५, ५१६, ५१७, ५१८, ५१९, ५२०, ५२१, ५२२, ५२३, ५२४, ५२५, ५२६, ५२७, ५२८, ५२९, ५३०, ५३१, ५३२, ५३३, ५३४, ५३५, ५३६, ५३७, ५३८, ५३९, ५४०, ५४१, ५४२, ५४३, ५४४, ५४५, ५४६, ५४७, ५४८, ५४९, ५५०, ५५१, ५५२, ५५३, ५५४, ५५५, ५५६, ५५७, ५५८, ५५९, ५६०, ५६१, ५६२, ५६३, ५६४, ५६५, ५६६, ५६७, ५६८, ५६९, ५७०, ५७१, ५७२, ५७३, ५७४, ५७५, ५७६, ५७७, ५७८, ५७९, ५८०, ५८१, ५८२, ५८३, ५८४, ५८५, ५८६, ५८७, ५८८, ५८९, ५९०, ५९१, ५९२, ५९३, ५९४, ५९५, ५९६, ५९७, ५९८, ५९९, ६००, ६०१, ६०२, ६०३, ६०४, ६०५, ६०६, ६०७, ६०८, ६०९, ६१०, ६११, ६१२, ६१३, ६१४, ६१५, ६१६, ६१७, ६१८, ६१९, ६२०, ६२१, ६२२, ६२३, ६२४, ६२५, ६२६, ६२७, ६२८, ६२९, ६३०, ६३१, ६३२, ६३३, ६३४, ६३५, ६३६, ६३७, ६३८, ६३९, ६४०, ६४१, ६४२, ६४३, ६४४, ६४५, ६४६, ६४७, ६४८, ६४९, ६५०, ६५१, ६५२, ६५३, ६५४, ६५५, ६५६, ६५७, ६५८, ६५९, ६६०, ६६१, ६६२, ६६३, ६६४, ६६५, ६६६, ६६७, ६६८, ६६९, ६७०, ६७१, ६७२, ६७३, ६७४, ६७५, ६७६, ६७७, ६७८, ६७९, ६८०, ६८१, ६८२, ६८३, ६८४, ६८५, ६८६, ६८७, ६८८, ६८९, ६९०, ६९१, ६९२, ६९३, ६९४, ६९५, ६९६, ६९७, ६९८, ६९९, ७००, ७०१, ७०२, ७०३, ७०४, ७०५, ७०६, ७०७, ७०८, ७०९, ७१०, ७११, ७१२, ७१३, ७१४, ७१५, ७१६, ७१७, ७१८, ७१९, ७२०, ७२१, ७२२, ७२३, ७२४, ७२५, ७२६, ७२७, ७२८, ७२९, ७३०, ७३१, ७३२, ७३३, ७३४, ७३५, ७३६, ७३७, ७३८, ७३९, ७४०, ७४१, ७४२, ७४३, ७४४, ७४५, ७४६, ७४७, ७४८, ७४९, ७५०, ७५१, ७५२, ७५३, ७५४, ७५५, ७५६, ७५७, ७५८, ७५९, ७६०, ७६१, ७६२, ७६३, ७६४, ७६५, ७६६, ७६७, ७६८, ७६९, ७७०, ७७१, ७७२, ७७३, ७७४, ७७५, ७७६, ७७७, ७७८, ७७९, ७८०, ७८१, ७८२, ७८३, ७८४, ७८५, ७८६, ७८७, ७८८, ७८९, ७९०, ७९१, ७९२, ७९३, ७९४, ७९५, ७९६, ७९७, ७९८, ७९९, ८००, ८०१, ८०२, ८०३, ८०४, ८०५, ८०६, ८०७, ८०८, ८०९, ८१०, ८११, ८१२, ८१३, ८१४, ८१५, ८१६, ८१७, ८१८, ८१९, ८२०, ८२१, ८२२, ८२३, ८२४, ८२५, ८२६, ८२७, ८२८, ८२९, ८३०, ८३१, ८३२, ८३३, ८३४, ८३५, ८३६, ८३७, ८३८, ८३९, ८४०, ८४१, ८४२, ८४३, ८४४, ८४५, ८४६, ८४७, ८४८, ८४९, ८५०, ८५१, ८५२, ८५३, ८५४, ८५५, ८५६, ८५७, ८५८, ८५९, ८६०, ८६१, ८६२, ८६३, ८६४, ८६५, ८६६, ८६७, ८६८, ८६९, ८७०, ८७१, ८७२, ८७३, ८७४, ८७५, ८७६, ८७७, ८७८, ८७९, ८८०, ८८१, ८८२, ८८३, ८८४, ८८५, ८८६, ८८७, ८८८, ८८९, ८९०, ८९१, ८९२, ८९३, ८९४, ८९५, ८९६, ८९७, ८९८, ८९९, ९००, ९०१, ९०२, ९०३, ९०४, ९०५, ९०६, ९०७, ९०८, ९०९, ९१०, ९११, ९१२, ९१३, ९१४, ९१५, ९१६, ९१७, ९१८, ९१९, ९२०, ९२१, ९२२, ९२३, ९२४, ९२५, ९२६, ९२७, ९२८, ९२९, ९३०, ९३१, ९३२, ९३३, ९३४, ९३५, ९३६, ९३७, ९३८, ९३९, ९४०, ९४१, ९४२, ९४३, ९४४, ९४५, ९४६, ९४७, ९४८, ९४९, ९५०, ९५१, ९५२, ९५३, ९५४, ९५५, ९५६, ९५७, ९५८, ९५९, ९६०, ९६१, ९६२, ९६३, ९६४, ९६५, ९६६, ९६७, ९६८, ९६९, ९७०, ९७१, ९७२, ९७३, ९७४, ९७५, ९७६, ९७७, ९७८, ९७९, ९८०, ९८१, ९८२, ९८३, ९८४, ९८५, ९८६, ९८७, ९८८, ९८९, ९९०, ९९१, ९९२, ९९३, ९९४, ९९५, ९९६, ९९७, ९९८, ९९९, १०००)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़ा उस ने जफ़ा की। (عبدالرزاق)

अगर इतनी मोहलत नहीं मिल पाती, वोह इस तरह कि कभी तो दौराने वुजू ही उज़्र लाहिक़ हो जाता है और कभी वुजू मुकम्मल कर लेने के बा'द नमाज़ अदा करते हुए, हत्ता कि आख़िरी वक़्त आ गया तो अब उन्हें इजाज़त है कि वुजू कर के नमाज़ अदा करें नमाज़ हो जाएगी। अब चाहे दौराने अदाएगिये नमाज़, बीमारी के बाइस नजासत बदन से ख़ारिज ही क्यूं न हो रही हो। फुक़हाए किराम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِمُ फ़रमाते हैं कि : किसी शख्स की नक्सीर फूट गई या उस का ज़ख़्म बह निकला तो वोह आख़िरी वक़्त का इन्तिज़ार करे अगर खून मुन्क़तअ़ न हो (बल्कि मुसल्लसल या वक्फ़े वक्फ़े से जारी रहे) तो वक़्त निकलने से पहले वुजू कर के नमाज़ अदा करे। (الْبَحْرُ الرَّائِقُ ج ۱ ص ۳۷۳-۳۷۴)

﴿2﴾ फ़र्ज़ नमाज़ का वक़्त जाने से मा'ज़ूर का वुजू टूट जाता है जैसे किसी ने अ़स् के वक़्त वुजू किया था तो सूरज गुरुब होते ही वुजू जाता रहा और अगर किसी ने आप़ताब निकलने के बा'द वुजू किया तो जब तक ज़ोहर का वक़्त ख़तम न हो वुजू न जाएगा कि अभी तक किसी फ़र्ज़ नमाज़ का वक़्त नहीं गया। फ़र्ज़ नमाज़ का वक़्त जाते ही मा'ज़ूर का वुजू जाता रहता है और येह हुक्म उस सूरत में होगा जब मा'ज़ूर का उज़्र दौराने वुजू या बा'दे वुजू ज़ाहिर हो, अगर ऐसा न हो और दूसरा कोई हदस (या'नी वुजू तोड़ने वाला मुआमला) भी लाहिक़ न हो तो फ़र्ज़ नमाज़ का वक़्त जाने से वुजू नहीं टूटेगा।

(बहारे शरीअत, हिस्सा : 2, स. 108, ००० ص १, १, ردّالمحتار, ج १, १, १)

﴿3﴾ जब उज़्र साबित हो गया तो जब तक नमाज़ के एक पूरे वक़्त में

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुझ पर रोज़े जुमुआ दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क्रियामत के दिन उस की शफ़ाअत करूंगा। (جمع الجوامع)

एक बार भी वोह चीज़ पाई जाए मा'ज़ूर ही रहेगी। मसलन किसी के ज़ख़्म से सारा वक़्त खून बहता रहा और इतनी मोहलत ही न मिली कि वुजू कर के फ़र्ज़ अदा कर ले तो मा'ज़ूर हो गई। अब दूसरे अवकात में इतना मौक़अ मिल जाता है कि वुजू कर के नमाज़ पढ़ ले मगर एकआध दफ़आ ज़ख़्म से खून बह जाता है तो अब भी मा'ज़ूर है। हां अगर पूरा एक वक़्त ऐसा गुज़र गया कि एक बार भी खून न बहा तो मा'ज़ूर न रही फिर जब कभी पहली हालत आई (या'नी सारा वक़्त मुसल्सल मरज़ हुवा) तो फिर मा'ज़ूर हो गई। (बहारे शरीअत, हिस्सा : 2, स. 107)

﴿4﴾ मा'ज़ूर का वुजू अगर्चे उस चीज़ से नहीं जाता जिस के सबब मा'ज़ूर है मगर दूसरी कोई चीज़ वुजू तोड़ने वाली पाई गई तो वुजू जाता रहा मसलन जिस को रीह ख़ारिज होने का मरज़ है, ज़ख़्म बहने से उस का वुजू टूट जाएगा। और जिस को ज़ख़्म बहने का मरज़ है उस का रीह ख़ारिज होने से वुजू जाता रहेगा। (ऐज़न, स. 108)

﴿5﴾ मा'ज़ूर ने किसी ह़दस (या'नी वुजू तोड़ने वाले अमल) के बा'द वुजू किया और वुजू करते वक़्त वोह चीज़ नहीं है जिस के सबब मा'ज़ूर है फिर वुजू के बा'द वोह उज़्र वाली चीज़ पाई गई तो वुजू टूट गया (येह हुक्म इस सूरत में होगा जब मा'ज़ूर ने अपने उज़्र के बजाए किसी दूसरे सबब की वज्ह से वुजू किया हो अगर अपने उज़्र की वज्ह से वुजू किया तो बा'दे वुजू उज़्र पाए जाने की सूरत में वुजू न टूटेगा।) मसलन जिस का ज़ख़्म बहता था उस की रीह ख़ारिज हुई और उस ने वुजू किया और वुजू करते वक़्त ज़ख़्म नहीं बहा और वुजू करने के बा'द बहा तो

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा उस ने जन्नत का रास्ता छोड़ दिया। (ब्रह्म)

वुजू टूट गया। हां अगर वुजू के दरमियान बहना जारी था तो न गया।

(फ़रुम्मतु, रदुलमुहत्तार, ज १, स १०९, ००७, ५५८)

«6» मा'ज़ूर के एक नथने से खून आ रहा था वुजू के बा'द दूसरे नथने से आया वुजू जाता रहा, या एक ज़ख़्म बह रहा था अब दूसरा बहा यहां तक कि चेचक के एक दाने से पानी आ रहा था अब दूसरे दाने से आया वुजू टूट गया।

(ऐज़न, ५५८, ५५८)

«7» मा'ज़ूर को ऐसा उज़्र हो कि जिस के सबब कपड़े नापाक हो जाते हैं तो अगर एक दिरहम से ज़ियादा नापाक हो गए और जानती है कि इतना मौक़अ है कि इसे धो कर पाक कपड़ों से नमाज़ पढ़ लूंगी तो पाक कर के नमाज़ पढ़ना फ़र्ज़ है और अगर जानती है कि नमाज़ पढ़ते पढ़ते फिर उतना ही नापाक हो जाएगा तो अब धोना ज़रूरी नहीं। इसी से पढ़े अगर्चे मुसल्ला भी आलूदा हो जाए तब भी उस की नमाज़ हो जाएगी।

(बहारे शरीअत, हिस्सा : 2, स. 109)

«8» अगर कपड़ा वगैरा रख कर (या सूराख में रूई डाल कर) इतनी देर तक खून रोक सकती है कि वुजू कर के फ़र्ज़ पढ़ ले तो उज़्र साबित न होगा। (या'नी येह मा'ज़ूर नहीं क्यूं कि येह उज़्र दूर करने पर कुदरत रखती है)

(ऐज़न, स. 107)

«9» अगर किसी तरकीब से उज़्र जाता रहे या उस में कमी हो जाए तो उस तरकीब का करना फ़र्ज़ है, मसलन खड़े हो कर पढ़ने से खून बहता है और बैठ कर पढ़े तो न बहेगा तो बैठ कर पढ़ना फ़र्ज़ है।

(फ़रुम्मतु, रदुलमुहत्तार, ज १, स १०९, ००८, ५५८)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुझ पर दुरुदे पाक की कसरत करो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरुदे पाक पढ़ना तुम्हारे लिये पाकीज़गी का बाइस है। (अबुयूसुफ़)

(मा'जूर के वुजू के तफ़्सीली मसाइल फ़तावा रज़विय्या मुख़र्रजा जिल्द 4 सफ़हा 367 ता 375, बहारे शरीअत हिस्सा 2 सफ़हा 107 ता 109 से मा'लूम कर लीजिये)

इस्लामी बहनो ! जहां जहां मुम्किन हो वहां अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये अच्छी अच्छी निय्यतें कर लेनी चाहिएं, जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा उतना सवाब भी ज़ियादा और अच्छी निय्यत के सवाब की तो क्या बात है ! मीठे मीठे आका, मक्की मदनी मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने जन्नत निशान है :

“अच्छी निय्यत इन्सान को जन्नत में दाख़िल करेगी।” (أَلْحَامِعُ الصَّغِيرُ لِلْسُّبُوطِيِّ، ص ٥٥٧ حديث ٩٣٢٦)

वुजू की निय्यत नहीं होगी तब भी फ़िक्हे हनफ़ी के मुताबिक़ वुजू हो जाएगा मगर सवाब नहीं मिलेगा। उमूमन वुजू की तय्यारी करने वाली के ज़ेहन में होता है कि मैं वुजू करने वाली हूं येही निय्यत काफ़ी है। ताहम मौक़अ की मुनासबत से मज़ीद निय्यतें भी की जा सकती हैं :

“हर वक़्त बा वुजू रहना सवाब है” के बीस हुरूफ़ की निस्बत से वुजू के बारे में 20 निय्यतें

﴿1﴾ बे वुजूई दूर करूंगी ﴿2﴾ जो बा वुजू हो वोह दोबारा वुजू करते वक़्त यूं निय्यत करे : सवाब के लिये वुजू पर वुजू करूंगी ﴿3﴾ بِسْمِ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ ﴿4﴾ फ़राइज़ व ﴿5﴾ सुनन और ﴿6﴾ मुस्तहब्बात

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़े तो वोह लोगों में से कन्जूस तरीन शख्स है। (مسند احمد)

का ख़याल रखूंगी ﴿7﴾ पानी का इस्राफ़ नहीं करूंगी ﴿8﴾ मक्रूहात से बचूंगी ﴿9﴾ मिस्वाक करूंगी ﴿10﴾ हर उज़्व धोते वक़्त दुरूद शरीफ़ और ﴿11﴾ يَا قَادِرُ पढ़ूंगी (वुजू में हर उज़्व धोने के दौरान يَا قَادِرُ पढ़ने वाली को إِنَّ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ दुश्मन इग़्वा नहीं कर सकेगा) ﴿12﴾ फ़राग़त के बा'द आ'जाए वुजू पर तरी बाकी रहने दूंगी ﴿13,14﴾ वुजू के बा'द दो दुआए पढ़ूंगी (الف) اَللّٰهُمَّ اجْعَلْنِي مِنَ التَّوَّابِيْنَ وَاَجْعَلْنِي مِنَ الْمُتَطَهِّرِيْنَ (ب) سُبْحٰنَكَ اَللّٰهُمَّ وَبِحَمْدِكَ اَشْهَدُ اَنْ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ اَسْتَغْفِرُكَ وَ اَتُوْبُ اِلَيْكَ (15 ता 17) आस्मान की तरफ़ देख कर कलिमाए शहादत और सूरतुल क़द्र पढ़ूंगी मज़ीद तीन बार सूरतुल क़द्र पढ़ूंगी ﴿18﴾ (मक्रूह वक़्त न हुवा तो) तहिय्यतुल वुजू अदा करूंगी ﴿19﴾ हर उज़्व धोते वक़्त गुनाह झड़ने की उम्मीद करूंगी ﴿20﴾ बातिनी वुजू भी करूंगी (या'नी जिस तरह पानी से ज़ाहिरी आ'जा का मैल कुचैल दूर किया है इसी तरह तौबा के पानी से गुनाहों की गन्दगी धो कर आयिन्दा गुनाहों से बचने का अहद करूंगी)

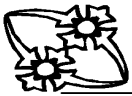
या रब्बल मुस्तफ़ा عَزَّوَجَلَّ ! हमें इस्राफ़ से बचते हुए शर्ई वुजू के साथ हर वक़्त बा वुजू रहना नसीब फ़रमा ।

اٰمِيْنَ بِجَاہِ النَّبِيِّ الْاَمِيْنَ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ
مَا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

गुस्ल का तरीका



(हनफी)

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

खातमुल मुरसलीन, रहूमतुल्लिल आलमीन, शफ़ीज़ल मुज़्ज़िबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, महबूबे रब्बुल आलमीन, जनाबे सादिको अमीन صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने दिल नशीन है : जब जुमा'रात का दिन आता है अल्लाह तआला फ़िरिशतों को भेजता है जिन के पास चांदी के काग़ज़ और सोने के क़लम होते हैं वोह लिखते हैं, कौन यौमे जुमा'रात और शबे जुमुआ (या'नी जुमा'रात और जुमुआ की दरमियानी शब) मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ता है।

(كُنْزُ الْعَمَالِ ج ١ ص ٢٥٠ - حدیث ٢١٧٤)

صَلُّوا عَلَيَّ الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ عَلَى مُحَمَّدٍ

फ़र्ज गुस्ल में एहतियात की ताकीद

रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ फ़रमाते हैं : “जो शख्स गुस्ले जनाबत में एक बाल की जगह बे धोए छोड़ देगा उस के साथ आग से ऐसा ऐसा किया जाएगा।” (या'नी अज़ाब दिया जाएगा)।

(سُنَنُ أَبِي دَاوُدَ، ج ١ ص ١١٧ - حدیث ٢٤٩)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो लोग अपनी मजलिस से अल्लाह के जिक्र और नबी पर दुरूद शरीफ़ पढ़े बिगैर उठ गए तो वोह बदबूदार मुदाँर से उठे। (شعب الايمان)

क़ब्र का बिल्ला

हज़रते सय्यिदुना अबान बिन अब्दुल्लाह बज्ली फ़रमाते हैं : हमारा एक पड़ोसी मर गया तो हम कफ़न व दफ़न में शरीक हुए। जब क़ब्र खोदी गई तो उस में बिल्ले की मिस्ल एक जानवर था, हम ने उस को मारा मगर वोह न हटा। चुनान्वे दूसरी क़ब्र खोदी गई तो उस में भी वोही बिल्ला मौजूद था ! उस के साथ भी वोही किया गया जो पहले के साथ किया गया था लेकिन वोह अपनी जगह से न हिला। इस के बा'द तीसरी क़ब्र खोदी गई तो उस में भी येही मुआमला हुवा, आख़िर लोगों ने मश्वरा दिया कि अब इस को इसी क़ब्र में दफ़न कर दो, जब उस को दफ़न कर दिया गया तो क़ब्र में से एक ख़ौफ़नाक आवाज़ सुनी गई ! तो हम उस शख़्स की बेवा के पास गए और उस से मरने वाले के बारे में दरयाफ़्त किया कि उस का अमल क्या था ? बेवा ने बताया : “वोह गुस्ले जनाबत (या'नी फ़र्ज़ गुस्ल) नहीं करता था।” (شرح الصدور بشرح حال الموتى والقبور، ص 179)

गुस्ले जनाबत में ताख़ीर कब हाराम है

इस्लामी बहनो ! देखा आप ने ! वोह बद नसीब गुस्ले जनाबत करता ही नहीं था। गुस्ले जनाबत में देर कर देना गुनाह नहीं अलबत्ता इतनी ताख़ीर हाराम है कि नमाज़ का वक़्त निकल जाए। चुनान्वे बहारे शरीअत में है : “जिस पर गुस्ल वाजिब है वोह अगर इतनी देर कर चुकी कि नमाज़ का आख़िर वक़्त आ गया तो अब फ़ौरन नहाना फ़र्ज़ है, अब ताख़ीर करेगी गुनहगार होगी।” (बहारे शरीअत, हिस्सा : 2, स. 47, 48)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर रोज़े जुमुआ दो सो बार दुरूदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआफ़ होंगे। (جمع الجوامع)

जनाबत की हालत में सोने के अहकाम

हज़रते सय्यिदुना अबू सलमह رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ कहते हैं, उम्मुल मुअमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीका رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا से पूछा, क्या नबिय्ये रहमत, शफ़ीए उम्मत, शहन्शाहे नुबुव्वत, ताजदारे रिसालत صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ जनाबत की हालत में सोते थे ? उन्होंने ने बताया : “हां और वुजू फ़रमा लेते थे।” (صَحِيحُ الْبُخَارِيِّ ج ١ ص ١١٧ حديث ٢٨٦) हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन उमर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने बयान किया कि अमीरुल मुअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़रूके आ'ज़म رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम, नबिय्ये मुहूतशम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ से तज़िकरा किया : रात में कभी जनाबत हो जाती है (तो क्या किया जाए ?) रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया : (ابيضاً ص ١١٨ حديث ٢٩٠) वुजू कर के उज़्जे ख़ास को धो कर सो जाया करो।

शारेहे बुख़ारी हज़रते अब्दुल्लाह मुफ़ती मुहम्मद शरीफ़ुल हक़ अमजदी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي मज़कूरा अहादीसे मुबारका के तहूत फ़रमाते हैं : जुनुबी होने (या'नी गुस्ल फ़र्ज़ होने) के बा'द अगर सोना चाहे तो मुस्तहब है कि वुजू करे, फ़ौरन गुस्ल करना वाजिब नहीं अलबत्ता इतनी ताख़ीर न करे कि नमाज़ का वक़्त निकल जाए। येही इस हदीस का महूमल¹ है। हज़रते अबू दावूद رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से अबू दावूद व नसाई वग़ैरा में मरवी है कि फ़रमाया : उस घर में फ़िरिश्ते नहीं

ادينه

1. या'नी इस हदीस से मुराद येही है।

فَرَمَانَهُ مُسْتَفَا : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : مُجَزَّ عَلَى دُرُودِ شَرِيفِ طَهْرٍ اَللّٰهُ اَكْبَرُ a

जाते जिस में तस्वीर या कुत्ता या जुनुबी (या'नी बे गुस्ला) हो ।
(سُنَنُ أَبِي كَلْبَةَ ج ١ ص ١٠٩ حَدِيث ٢٢٧) इस हदीस से मुराद येही है कि इतनी देर तक गुस्ल न करे कि नमाज़ का वक़्त निकल जाए और वोह जुनुबी (या'नी बे गुस्ला) रहने का आदी हो और येही मतलब बुजुर्गों के इस इर्शाद का है कि हालते जनाबत में खाने पीने से रिज़क़ में तंगी होती है ।
(نُزْهَةُ الْقَارِي ج ١ ص ٧٧٠-٧٧١)

गुस्ल का तरीका (हनफ़ी)

बिगैर ज़बान हिलाए दिल में इस तरह निय्यत कीजिये कि मैं पाकी हासिल करने के लिये गुस्ल करती हूँ । पहले दोनों हाथ पहुंचों तक तीन तीन बार धोइये, फिर इस्तिन्जे की जगह धोइये ख़्वाह नजासत हो या न हो, फिर जिस्म पर अगर कहीं नजासत हो तो उस को दूर कीजिये फिर नमाज़ का सा वुजू कीजिये अगर पाउं रखने की जगह पर पानी जम्अ है तो पाउं न धोइये, और अगर सख़्त ज़मीन है जैसा कि आज कल उमूमन गुस्ल ख़ानों की होती है या चौकी वगैरा पर गुस्ल कर रही हैं तो पाउं भी धो लीजिये, फिर बदन पर तेल की तरह पानी चुपड़ लीजिये, खुसूसन सर्दियों में (इस दौरान साबुन भी लगा सकती हैं) फिर तीन बार सीधे कन्धे पर पानी बहाइये, फिर तीन बार उल्टे कन्धे पर, फिर सर पर और तमाम बदन पर तीन बार, फिर गुस्ल की जगह से अलग हो जाइये, अगर वुजू करने में पाउं नहीं धोए थे तो अब धो लीजिये । बहारे शरीअत हिस्सा 2 सफ़हा 42 पर है : “सित्र खुला हो

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग़िफ़रत है। (ابن عساکر)

तो क़िब्ले को मुंह करना न चाहिये, और तहबन्द बांधे हो तो हरज नहीं।” तमाम बदन पर हाथ फैर कर मल कर नहाइये, ऐसी जगह नहाइये कि किसी की नज़र न पड़े, दौराने गुस्ल किसी क़िस्म की गुफ्तगू मत कीजिये, कोई दुआ भी न पढ़िये, नहाने के बा’द तोलिया वगैरा से बदन पोंछने में हरज नहीं। नहाने के बा’द फ़ौरन कपड़े पहन लीजिये। अगर मक्रूह वक़्त न हो तो दो रकअत नफ़ल अदा करना मुस्तहब है।

(आम्माए कुतुबे फ़िक्हे हनफ़ी)

गुस्ल के तीन फ़राइज़

﴿1﴾ कुल्ली करना ﴿2﴾ नाक में पानी चढ़ाना ﴿3﴾ तमाम ज़ाहिरी बदन पर पानी बहाना।

(फ़तावुय् عالمग़िरी ज १ व १३)

﴿1﴾ कुल्ली करना

मुंह में थोड़ा सा पानी ले कर पिच कर के डाल देने का नाम कुल्ली नहीं बल्कि मुंह के हर पुर्जे, गोशे, होंट से हल्क़ की जड़ तक हर जगह पानी बह जाए। इसी तरह दाढ़ों के पीछे गालों की तह में, दांतों की खिड़कियों और जड़ों और ज़बान की हर करवट पर बल्कि हल्क़ के कनारे तक पानी बहे। रोज़ा न हो तो ग़र ग़रा भी कर लीजिये कि सुन्नत है। दांतों में छलिया के दाने या बोटी के रेशे वगैरा हों तो उन को छुड़ाना ज़रूरी है। हां अगर छुड़ाने में ज़रर (या’नी नुक़सान) का अन्देशा हो तो मुआफ़ है। गुस्ल से क़ब्ल दांतों में रेशे वगैरा महसूस न हुए और रह गए नमाज़ भी पढ़ ली बा’द को मा’लूम होने पर छुड़ा कर

फ़रमाने मुस्फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने किताब में मुझ पर दुरूदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फ़िरिश्ते उस के लिये इस्तिफ़र (या'नी बख़्शाश की दुआ) करते रहेंगे। (طبرانی)

पानी बहाना फ़र्ज़ है, पहले जो नमाज़ पढ़ी थी वोह हो गई। जो हिलता दांत मसाले से जमाया गया या तार से बांधा गया और तार या मसाले के नीचे पानी न पहुंचता हो तो मुआफ़ है।

(बहारे शरीअत, हिस्सा : 2, स. 38, फ़तावा रजविय्या, जि. 1, स. 439, 440)

﴿2﴾ नाक में पानी चढ़ाना

जल्दी जल्दी नाक की नोक पर पानी लगा लेने से काम नहीं चलेगा बल्कि जहां तक नर्म जगह है या'नी सख़्त हड्डी के शुरूअ तक धुलना लाज़िमी है। और येह यूं हो सकेगा कि पानी को सूंघ कर ऊपर खींचिये। येह ख़याल रखिये कि बाल बराबर भी जगह धुलने से न रह जाए वरना गुस्ल न होगा। नाक के अन्दर अगर रींठ सूख गई है तो उस का छुड़ाना फ़र्ज़ है। नीज़ नाक के बालों का धोना भी फ़र्ज़ है।

(ऐज़न, ऐज़न, स. 442, 443)

﴿3﴾ तमाम ज़ाहिरी बदन पर पानी बहाना

सर के बालों से ले कर पाउं के तल्वों तक जिस्म के हर पुर्जे और हर रोंगटे पर पानी बह जाना ज़रूरी है, जिस्म की बा'ज जगहें ऐसी हैं कि अगर एह्तियात न की तो वोह सूखी रह जाएंगी और गुस्ल न होगा।

(बहारे शरीअत, हिस्सा : 2, स. 39)

"صَلَوَاتُ اللَّهِ عَلَيْكَ يَا رَسُولَ اللَّهِ" के तेईस हुरूफ़ की निस्बत से इस्लामी बहनों के लिये गुस्ल की 23 एह्तियातें

﴿1﴾ अगर इस्लामी बहन के सर के बाल गुंधे हुए हों तो सिर्फ़

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुझ पर एक दिन में 50 बार दुरूदे पाक पढ़े क़ियामत के दिन मैं उस से मुसाफ़हा करूँ (या'नी हाथ मिलाऊँ)गा। (ابن بشكوال)

जड़ तर कर लेना ज़रूरी है खोलना ज़रूरी नहीं। हां अगर चोटी इतनी सख़्त गुंधी हुई हो कि बे खोले जड़ें तर न होंगी तो खोलना ज़रूरी है।

﴿2﴾ अगर कानों में बाली या नाक में नथ का छेद (सूराख) हो और वोह बन्द न हो तो उस में पानी बहाना फ़र्ज है। वुजू में सिर्फ़ नाक के नथ के छेद में और गुस्ल में अगर कान और नाक दोनों में छेद हों तो दोनों में पानी बहाइये ﴿3﴾ भवों, और उन के नीचे की खाल का धोना ज़रूरी है ﴿4﴾ कान का हर पुर्जा और उस के सूराख का मुंह धोइये ﴿5﴾ कानों के पीछे के बाल हटा कर पानी बहाइये ﴿6﴾ ठोड़ी और गले का जोड़ कि मुंह उठाए बिगैर न धुलेगा ﴿7﴾ हाथों को अच्छी तरह उठा कर बगलें धोइये ﴿8﴾ बाजू का हर पहलू धोइये ﴿9﴾ पीठ का हर ज़रा धोइये ﴿10﴾ पेट की बल्टें उठा कर धोइये ﴿11﴾ नाफ़ में भी पानी डालिये अगर पानी बहने में शक हो तो नाफ़ में उंगली डाल कर धोइये ﴿12﴾ जिस्म का हर रोंगटा जड़ से नोक तक धोइये ﴿13﴾ रान और पेडू (नाफ़ से नीचे के हिस्से) का जोड़ धोइये ﴿14﴾ जब बैठ कर नहाएं तो रान और पिंडली के जोड़ पर भी पानी बहाना याद रखिये ﴿15﴾ दोनों सुरीन के मिलने की जगह का खयाल रखिये, खुसूसन जब खड़े हो कर नहाएं ﴿16﴾ रानों की गोलाई और ﴿17﴾ पिंडलियों की करवटों पर पानी बहाइये ﴿18﴾ ढल्की हुई पिस्तान को उठा कर पानी बहाइये ﴿19﴾ पिस्तान और पेट के जोड़ की लकीर धोइये ﴿20﴾ फ़र्जे ख़ारिज (या'नी औरत की शर्मगाह के बाहर के हिस्से) का हर गोशा हर टुकड़ा ऊपर नीचे ख़ूब एहतियात से धोइये ﴿21﴾ फ़र्जे दाख़िल (या'नी शर्मगाह के अन्दरूनी

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : बरोज़े क़ियामत लोगों में से मेरे क़रीब तर वोह होगा जिस ने दुन्या में मुज़ पर ज़ियादा दुरूदे पाक पढ़े होंगे । (ترمذی)

हिस्से) में उंगली डाल कर धोना फ़र्ज़ नहीं मुस्तहब है ﴿22﴾ अगर हैज़ या निफ़ास से फ़ारिग़ हो कर गुस्ल करें तो किसी पुराने कपड़े से फ़र्जे दाख़िल के अन्दर से ख़ून का असर साफ़ कर लेना मुस्तहब है (बहारे शरीअत, हिस्सा : 2, स. 39,40) ﴿23﴾ अगर नेल पोलिश नाख़ुनों पर लगी हुई है तो उस का भी छुड़ाना फ़र्ज़ है वरना वुजू व गुस्ल नहीं होगा, हां मेंहदी के रंग में हरज नहीं ।

ज़ख़्म की पट्टी

ज़ख़्म पर पट्टी वग़ैरा बंधी हो और उसे खोलने में नुक़सान या हरज हो तो पट्टी पर ही मस्ह कर लेना काफ़ी है नीज़ किसी जगह मरज़ या दर्द की वज्ह से पानी बहाना नुक़सान देह हो तो उस पूरे उज़्व पर मस्ह कर लीजिये । पट्टी ज़रूरत से ज़ियादा जगह को घेरे हुए नहीं होनी चाहिये वरना मस्ह काफ़ी न होगा । अगर ज़रूरत से ज़ियादा जगह घेरे बिग़ैर पट्टी बांधना मुम्किन न हो मसलन बाजू पर ज़ख़्म है मगर पट्टी बाजूओं की गोलाई में बांधी है जिस के सबब बाजू का अच्छा हिस्सा भी पट्टी के अन्दर छुपा हुआ है, तो अगर खोलना मुम्किन हो तो खोल कर उस हिस्से को धोना फ़र्ज़ है । अगर ना मुम्किन है या खोलना तो मुम्किन है मगर फिर वैसी न बांध सकेगी और यूं ज़ख़्म वग़ैरा को नुक़सान पहुंचने का अन्देशा है तो सारी पट्टी पर मस्ह कर लेना काफ़ी है । बदन का वोह अच्छा हिस्सा भी धोने से मुआफ़ हो जाएगा ।

(बहारे शरीअत, हिस्सा : 2, स. 40)

फ़रमाने मुस्फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर एक मरतबा दुरूद पढ़ा अल्लाह उस पर दस रहमतें भेजता और उस के नामए आ'माल में दस नेकियां लिखता है। (ترمذی)

गुस्ल फ़र्ज होने के 5 अस्बाब

﴿1﴾ मनी का अपनी जगह से शहवत के साथ जुदा हो कर मख़्ज से निकलना ﴿2﴾ एहतिलाम या'नी सोते में मनी का निकल जाना ﴿3﴾ हश्फ़ा या'नी सरे ज़कर (सुपारी) का औरत के आगे या पीछे या मर्द के पीछे दाख़िल हो जाना ख़्वाह शहवत हो या न हो, इन्ज़ाल हो या न हो, दोनों पर गुस्ल फ़र्ज करता है। बशर्ते कि दोनों मुकल्लफ़ हों और अगर एक बालिग़ है तो उस बालिग़ पर फ़र्ज है और ना बालिग़ पर अगरचे गुस्ल फ़र्ज नहीं मगर गुस्ल का हुक्म दिया जाएगा ﴿4﴾ हैज से फ़ारिग़ होना ﴿5﴾ निफ़ास (या'नी बच्चा जनने पर जो खून आता है उस) से फ़ारिग़ होना। (बहारे शरीअत, हिस्सा : 2, स. 43,45,46, मुलतक़तन)

वोह सूरतें जिन में गुस्ल फ़र्ज नहीं

﴿1﴾ मनी शहवत के साथ अपनी जगह से जुदा न हुई बल्कि बोझ उठाने या बुलन्दी से गिरने या फुज़्ला ख़ारिज करने के लिये जोर लगाने की सूरत में ख़ारिज हुई तो गुस्ल फ़र्ज नहीं। वुजू बहर हाल टूट जाएगा। ﴿2﴾ अगर मनी पतली पड़ गई और पेशाब के वक़्त या वैसे ही बिला शहवत इस के क़तरे निकल आए गुस्ल फ़र्ज न हुवा वुजू टूट जाएगा। ﴿3﴾ अगर एहतिलाम होना याद है मगर इस का कोई असर कपड़े वगैरा पर नहीं तो गुस्ल फ़र्ज नहीं। (बहारे शरीअत, हिस्सा : 2, स. 43)

बहते पानी में गुस्ल का तरीका

अगर बहते पानी मसलन दरिया या नहर में नहाया तो थोड़ी

फ़रमाने मुस्त्फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : शबे जुमुआ और रोज़े मुझ पर दुरूद की कसरत कर लिया करो जो ऐसा करेगा क़ियामत के दिन मैं उस का शफ़ीअ व गवाह बनूंगा। (شعب الايمان)

देर उस में रुकने से तीन बार धोने, तरतीब और वुजू येह सब सुन्नतें अदा हो गईं। इस की भी ज़रूरत नहीं कि आ'ज़ा को तीन बार हरकत दे। अगर तालाब वगैरा ठहरे पानी में नहाया तो आ'ज़ा को तीन बार हरकत देने या जगह बदलने से तस्लीस या'नी तीन बार धोने की सुन्नत अदा हो जाएगी। बरसात में (या नल या फ़व्वारे के नीचे) खड़ा होना बहते पानी में खड़े होने के हुक्म में है। बहते पानी में वुजू किया तो वोही थोड़ी देर उस में उज़्व को रहने देना और ठहरे पानी में हरकत देना तीन बार धोने के काइम मक़ाम है। (बहारे शरीअत, हिस्सा : 2, स. 42, ۳۲۱-۳۲۰) (ذُرْمُخْتَارٌ، رَدُّ الْمَخْتَارِ، ج ۱، ص ۳۲۰-۳۲۱) वुजू और गुस्ल की इन तमाम सूरतों में कुल्ली करना और नाक में पानी चढ़ाना होगा। गुस्ल में कुल्ली करना और नाक में पानी चढ़ाना फ़र्ज है जब कि वुजू में सुन्नते मुअक्कदा है।

फ़व्वारा जारी पानी के हुक्म में है

फ़तावा अहले सुन्नत (गैर मत्बूआ) में है, फ़व्वारे (या नल) के नीचे गुस्ल करना जारी पानी में गुस्ल करने के हुक्म में है लिहाज़ा इस के नीचे गुस्ल करते हुए वुजू और गुस्ल करते वक़्त की मुद्दत (या'नी थोड़ी देर) तक ठहरी तो तस्लीस (या'नी तीन बार धोने) की सुन्नत अदा हो जाएगी चुनान्चे दुर्रे मुख़्तार में है : “अगर जारी पानी, बड़े हौज़ या बारिश में वुजू और गुस्ल करने के वक़्त की मुद्दत तक ठहरी तो उस

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुझ पर एक बार दुरूद पढ़ता है अल्लाह उस के लिये एक क़ीरात अज़्र लिखता है और क़ीरात उहुद पहाड़ जितना है। (عبدالقادر)

ने पूरी सुन्नत अदा की।” (در مختار مع رد المحتار ج 1 ص 320) याद रहे गुस्ल या वुजू में कुल्ली करना और नाक में पानी भी चढ़ाना है।

फ़व्वारे की एहतियातें

अगर आप के हम्माम में फ़व्वारा (SHOWER) हो तो उस का रुख़ देख लीजिये कि उस की तरफ़ मुंह कर के नंगे नहाने में मुंह या पीठ क़िब्ला शरीफ़ की तरफ़ न हो। इस्तिन्जा ख़ाने में इस की ज़ियादा एहतियात फ़रमाइये। क़िब्ले की तरफ़ मुंह या पीठ होने का मा'ना यह है कि 45 दरजे के ज़ाविये के अन्दर अन्दर हो। लिहाज़ा ऐसी तरकीब बनाइये कि 45 डिग्री के ज़ाविये के बाहर हो जाए।

“मदीना” के पांच 5 हुरूफ़ की निस्बत से

गुस्ल के 5 सुन्नत मवाक़ेअ़

﴿1﴾ जुमुअ़ा ﴿2﴾ ईदुल फ़ित्र ﴿3﴾ बक़र ईद ﴿4﴾ अरफ़ा के दिन (या'नी 9 जुल हिज्जतुल हराम) और ﴿5﴾ एहराम बांधते वक़्त नहाना सुन्नत है। (बहारे शरीअ़त, हिस्सा : 2, स. 46, 341-339 ص 1 (در مختار ج 1))

“मुस्तह़ब पर अमल करना बाइसे शवाब है” के चौबीस हुरूफ़ की निस्बत से गुस्ल के 24 मुस्तह़ब मवाक़ेअ़

﴿1﴾ वुकूफ़े अरफ़ात ﴿2﴾ वुकूफ़े मुज्दलिफ़ा ﴿3﴾ हाज़िरिये हरम ﴿4﴾ हाज़िरिये सरकारे आ'ज़म صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ﴿5﴾ तवाफ़

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जब तुम रसूलों पर दुरूद पढ़ो तो मुझ पर भी पढ़ो, बेशक मैं तमाम जहानों के रब का रसूल हूँ। (جمع الجوامع)

﴿6﴾ दुखूले मिना ﴿7﴾ जम्रों (शैतानों) पर कंकरियां मारने के लिये तीनों दिन ﴿8﴾ शबे बराअत ﴿9﴾ शबे क़द्र ﴿10﴾ अरफ़ा की रात (या'नी 9 जुल हिज्जतिल हराम के गुरूबे आफ़ताब ता 10 की सुब्ह) ﴿11﴾ मजलिसे मीलाद शरीफ़ ﴿12﴾ दीगर मजालिसे ख़ैर के लिये ﴿13﴾ मुर्दा नहलाने के बा'द ﴿14﴾ मजनून (पागल) को जुनून जाने के बा'द ﴿15﴾ ग़शी से इफ़ाका (या'नी बेहोशी ख़त्म होने) के बा'द ﴿16﴾ नशा जाते रहने के बा'द ﴿17﴾ गुनाह से तौबा करने ﴿18﴾ नए कपड़े पहनने के लिये ﴿19﴾ सफ़र से आने वाले के लिये ﴿20﴾ इस्तिहाज़ा¹ का खून बन्द होने के बा'द ﴿21﴾ नमाज़े कुसूफ़ (सूरज गहन) व खुसूफ़ (चांद गहन) ﴿22﴾ इस्तिस्का (तलबे बारिश) और ﴿23﴾ ख़ौफ़ व तारीकी और सख़्त आंधी के लिये ﴿24﴾ बदन पर नजासत लगी और येह मा'लूम न हुवा कि किस जगह लगी है।

(बहारे शरीअत, हिस्सा : 2, स. 46, 47, ३४२ - ३४१) ص 1، تَوْبِيرُ الْأَبْصَارِ، دُرُومُخْتَارِجِ، 1، ص 46، 47، 342 - 341

एक गुस्ल में मुख़लिफ़ निय्यतें

जिस पर चन्द गुस्ल हों मसलन एहतिलाम भी हुवा, ईद भी है और जुमुआ का दिन भी, तो तीनों की निय्यत कर के एक गुस्ल कर लिया, सब अदा हो गए और सब का सवाब मिलेगा।

(बहारे शरीअत, हिस्सा : 2, स. 47)

لینه

1 : या'नी औरत को मरज़ की वजह से आने वाला खून।

فَرَمَانَهُ مُسْتَفَا حَسَى اللّٰهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : مُذِجْ بِرِ دُرُودِ طَهْرٍ كَرِ اِطْنَى مَجَالِيسِ كَوِ اَرَااسْتَا
 كَرُو كِي تُمَّهْرَا دُرُودِ طَهْرِنَا بَرُوؤِ كِيْيَاْمَتِ تُمَّهْرَا لِيْيَ نُوْرٌ هُوْجَا । (فَرُوْسِ الْاَعْمَالِ)

गुस्ल से नज़ला बढ़ जाता हो तो ?

जुकाम या आशोबे चश्म वगैरा हो और येह गुमाने सहीद हो कि सर से नहाने में मरज बढ़ जाएगा या दीगर अम्राज पैदा हो जाएंगे तो कुल्ली कीजिये, नाक में पानी चढ़ाइये और गरदन से नहाइये । और सर के हर हिस्से पर भीगा हुवा हाथ फैर लीजिये गुस्ल हो जाएगा । बा'दे सिहहत सर धो डालिये पूरा गुस्ल नए सिरे से करना जरूरी नहीं ।

(बहारे शरीअत, हिस्सा : 2, स. 40)

बाल्टी से नहाते वक़्त एहतियात

अगर बाल्टी के ज़रीए गुस्ल करें तो एहतियातन उसे तिपाई (STOOL) वगैरा पर रख लीजिये ताकि बाल्टी में छींटें न आएं । नीज गुस्ल में इस्ति'माल करने का मग भी फ़र्श पर न रखिये ।

बाल की गिरह

बाल में गिरह पड़ जाए तो गुस्ल में उसे खोल कर पानी बहाना जरूरी नहीं ।

(बहारे शरीअत, हिस्सा : 2, स. 40)

बे वुजू दीनी किताबें छूना

बे वुजू या वोह जिस पर गुस्ल फ़र्ज़ हो उन को फ़िक्ह, तफ़सीर व हदीस की किताबों का छूना मक्रूह है । और अगर इन को किसी कपड़े से छुवा अगर्चे इस को पहने या ओढ़े हुए हो तो मुजायका नहीं । मगर आयते कुरआनी या इस के तरजमे पर इन किताबों में भी हाथ रखना हराम है ।

(बहारे शरीअत, हिस्सा : 2, स. 49)

फ़रमाने मुस्फ़ा : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुझ पर दुरूद पाक की कसरत करो बेशक यह तुम्हारे लिये त्हा़रत है । (ابو یونس)

नापाकी की हालत में दुरूद शरीफ़ पढ़ना

जिन पर गुस्ल फ़र्ज़ हो उन को दुरूद शरीफ़ और दुआएं पढ़ने में हरज नहीं । मगर बेहतर येह है कि वुजू या कुल्ली कर के पढ़ें । (बहारे शरीअत, हिस्सा : 2, स. 49) अज़ान का जवाब देना उन को जाइज़ है ।

(فتاوى عالمگیری ج 1 ص 38)

उंगली में INK की तह जमी हुई हो तो ?

पकाने वाली के नाखुन में आटा, लिखने वाली के नाखुन वगैरा पर सियाही (INK) का जिर्म, अ़ाम इस्लामी बहनों के लिये मख़्खी, मच्छर की बीट लगी हुई रह गई और तवज्जोह न रही तो गुस्ल हो जाएगा । हां मा'लूम हो जाने के बा'द जुदा करना और उस जगह का धोना ज़रूरी है पहले जो नमाज़ पढ़ी वोह हो गई ।

(बहारे शरीअत, हिस्सा : 2, स. 41, मुलख़ब़सन)

बच्ची कब बालिगा होती है ?

लड़की नव बरस और लड़का बारह साल से कम उम्र तक हरगिज़ बालिगा व बालिग़ न होंगे और लड़का लड़की दोनों (हिजरी सिन के ए'तिबार से) 15 बरस की कामिल उम्र में ज़रूर शरअन बालिग़ व बालिगा हैं, अगर्चे आसारे बुलूग़ (या'नी बालिग़ होने की अ़लामते) ज़ाहिर न हों । इन उम्रों के अन्दर अगर आसार पाए जाएं, या'नी ख़्वाह लड़के ख़्वाह लड़की को सोते ख़्वाह जागते में इन्ज़ाल हो

फरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुझ पर रोजे जुमुआं दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क्रियामत के दिन उस की शफ़ाअत करूंगा। (क़ुरआन)

(या'नी मनी निकले).... या... लड़की को हैज़ आए.... या... जिमाअ से लड़का (किसी लड़की को) हामिला कर दे... या... (जिमाअ की वजह से) लड़की को हम्मल रह जाए तो यकीनन बालिग़ व बालिगा हैं। और अगर आसार न हों, मगर वोह खुद कहें कि हम बालिग़ व बालिगा हैं और ज़ाहिर हाल उन के क़ौल की तकज़ीब न करता (या'नी झुटलाता न) हो तो भी बालिग़ व बालिगा समझे जाएंगे और तमाम अहकाम, बुलूग़ के निफ़ाज़ पाएंगे और (लड़के के) दाढ़ी मूँछ निकलना या लड़की के पिस्तान (छाती) में उभार पैदा होना कुछ मो'तबर नहीं।

(फ़तावा रज़विख्या, जि. 19, स. 630)

वस्वसों का एक सबब

गुस्ल ख़ाने में पेशाब करने से वस्वसे पैदा होते हैं। हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन मुग़फ़ल رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि रसूले करीम, رُوْفِرْهِمِ عَلَيْهِ أَفْضَلُ الصَّلَاةِ وَالسَّلَامِ ने इर्शाद फ़रमाया : कोई शख्स गुस्ल ख़ाने में पेशाब न करे, जिस में फिर वोह नहाए या वुजू करे क्यूं कि अक्सर वस्वसे इसी से होते हैं।" (سُنَنِ أَبِي كَلْبَةَ، ج ١، ص ٤٤٤-٤٤٥ حديث ٢٧) अगर हम्माम की ढलवान (SLOPE) बेहतर है और इत्मीनान है कि पेशाब करने के बा'द पानी बहने से अच्छी तरह फ़र्श पाक हो जाएगा तो हरज नहीं। फिर भी बेहतर येही है कि वहां पेशाब न करे।

(मिरआत, जि. 1, स. 266 मुलख़़सन)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझे पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह (स्)। उस पर दस रहमतें भेजता है।

इत्तिबाए सुन्नत की बरकत से मग़िफ़रत की बिशारत मिली

बरहना नहाना सुन्नत नहीं चुनान्चे इस जिम्न में एक ईमान अफ़रोज़ हिकायत मुलाहज़ा फ़रमाइये : हज़रते सय्यिदुना इमाम अहमद बिन हम्बल رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं कि एक मर्तबा मैं लोगों के साथ था। इस दौरान हमारे बा'ज रुफ़का गुस्ल के लिये कपड़े उतार कर पानी में उतर गए लेकिन मुझे सरकारे दो अलम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम, रसूले मुहूतशम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की वोह हदीसे पाक याद थी जिस में आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया है कि “जो अल्लाह तआला और उस के रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पर ईमान रखता हो उसे चाहिये कि बरहना हम्माम में दाख़िल न हो बल्कि तहबन्द बांधे।” लिहाज़ा मैं ने इस हदीसे मुबारका पर अमल किया। रात को जब मैं सोया तो मैं ने ख़्वाब में देखा कि एक हातिफ़े ग़ैबी मुझे निदा कर के कह रहा है : ऐ अहमद ! तुझे बिशारत हो कि अल्लाहु रब्बुल इज़ज़त ने नबिय्ये रहमत صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की सुन्नत पर अमल करने की वजह से तुम्हारी मग़िफ़रत फ़रमा दी है और तुम्हें लोगों का इमाम व पेशवा भी बना दिया है। हज़रते सय्यिदुना इमाम अहमद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْأَحَد फ़रमाते हैं कि मैं ने उस हातिफ़े ग़ैबी से

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुझ पर दस मरतबा दुरूदे पाक पढ़े अल्लाह (طرائف)। उस पर सो रहमतें नाज़िल फ़रमाता है।

दरयाफ़्त किया कि आप कौन हैं ? तो आवाज़ आई : मैं जिब्रील की (عَزَّوَجَلَّ رَبُّوْهُ اِذْجَزَّتْ الشَّفَاهُ، الْجُزْءُ الثَّانِي ص 16) हूँ। (عَلَيْهِ السَّلَام) उन पर रहमत हो और उन के सदके हमारी मग़िफ़रत हो।

اٰمِيْنَ بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْنَ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

तहबन्द बांध कर नहाने की एह्तियातें

शारेहे बुख़ारी हज़रते अल्लामा मुफ़्ती शरीफ़ुल हक़ अमजदी फ़रमाते हैं : तन्हाई में बरहना नहाना जाइज़ है मगर अफ़ज़ल येह है कि बरहना न नहाए। तहबन्द बांध कर (या पाजामा या शलवार पहन कर) नहाने में खुसूसिय्यत से दो बातों का ख़याल रखे, अव्वल जो तहबन्द (या पाजामा वगैरा) बांध कर नहाए वोह (तहबन्द वगैरा) पाक हो उस में नजासत न हो। दूसरे येह कि रान वगैरा जिस्म के किसी हिस्से पर नजासत लगी हो तो उसे पहले धो ले वरना जनाबत तो दूर हो जाएगी (या'नी फ़र्ज़ गुस्ल तो अदा हो जाएगा) मगर बदन या तहबन्द की नजासत क्या दूर होगी फैल कर दूसरी जगहों पर भी लग जाएगी। इस से अ़वाम तो अ़वाम, ख़वास तक ग़ाफ़िल हैं। (नुज़्हतुल क़ारी, जि. 1, स. 761) हां इतना पानी बहाया कि अगर्चे नजासत इब्तिदाअन फैली मगर बिल आख़िर अच्छी तरह धुल गई और पाक करने का शरूई तकाज़ा पूरा हो गया तो तहबन्द पाक हो जाएगा।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा तहक़ीक़ वोह बद बख़्त हो गया । (अबुनूर)

या रब्बे मुस्तफ़ा عَزَّوَجَلَّ ! हमें बार बार गुस्ल के मसाइल पढ़ने, समझने और दूसरों को समझाने और सुन्नतों के मुताबिक़ गुस्ल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा ।

اَوَّيْنِ بِجَاوِ النَّبِيِّ الْأَمِينِ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

صَلُّوا عَلَيَّ الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ عَلَى مُحَمَّدٍ

रोज़ी का सबब

नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के दौरे अक्दस में दो भाई थे, जिन में एक तो नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की खिदमते बा बरकत में (इल्मे दीन सीखने के लिये) आता था, (एक रोज़) कारीगर भाई ने नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ से अपने भाई की शिकायत की (या'नी इस ने सारा बोझ मुझ पर डाल दिया है, इस को मेरे कामकाज में हाथ बटाना चाहिये) तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अनिल उयूब صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इर्शाद फ़रमाया : शायद ! “तुझे इस की बरकत से रोज़ी मिल रही है ।”

(سُنَنُ التِّرْمِذِيِّ ج ٤ ص ١٥٤ حديث ٢٣٥٢)

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

तयम्मूम का तरीका (हनुफी)

दुरूद शरीफ की फ़ज़ीलत

इमामुस्साबिरीन, सय्यिदुश्शाकिरीन, सुल्तानुल मुतवक्कलीन

(عَلَيْهِ السَّلَام) का फ़रमाने दिल नशीन है : जिब्रईल (عَلَيْهِ السَّلَام)

ने मुझ से अज़्र की, कि रब तआला फ़रमाता है : ऐ मुहम्मद !

(عَلَيْهِ السَّلَام) क्या तुम इस बात पर राज़ी नहीं कि तुम्हारा उम्मी तुम

पर एक बार दुरूद भेजे, मैं उस पर दस¹⁰ रहमतें नाज़िल करूँ और आप

की उम्मत में से जो कोई एक सलाम भेजे, मैं उस पर दस¹⁰ सलाम

भेजूँ ।

(مشكاة المصابيح، ج ١ ص ١٨٩، حديث ٩٢٨، دارالكتب العلمية بيروت)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

तयम्मूम के फ़राइज़

तयम्मूम में तीन फ़र्ज़ हैं ﴿1﴾ निय्यत ﴿2﴾ सारे मुंह पर हाथ

फेरना ﴿3﴾ कोहनियों समेत दोनों हाथों का मस्ह करना ।

(बहारे शरीअत, हिस्सा : 2, स. 75, 77)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़ा उस ने जफ़ा की। (عبدالرزاق)

“तयम्मूम शीख़ लो” के दस हुरूफ़ की निस्बत से तयम्मूम की 10 सुन्नतें

﴿1﴾ बिस्मिल्लाह शरीफ़ कहना ﴿2﴾ हाथों को ज़मीन पर मारना ﴿3﴾ ज़मीन पर हाथ मार कर लौट देना (या'नी आगे बढ़ाना और पीछे लाना) ﴿4﴾ उंगलियां खुली हुई रखना ﴿5﴾ हाथों को झाड़ लेना या'नी एक हाथ के अंगूठे की जड़ को दूसरे हाथ के अंगूठे की जड़ पर मारना न इस तरह कि ताली की सी आवाज़ निकले ﴿6﴾ पहले मुंह फिर हाथों का मस्ह करना ﴿7﴾ दोनों का मस्ह पै दर पै होना ﴿8﴾ पहले सीधे फिर उल्टे हाथ का मस्ह करना ﴿9﴾ (मर्द के लिये) दाढ़ी का ख़िलाल करना ﴿10﴾ उंगलियों का ख़िलाल करना जब कि गुबार पहुंच गया हो। अगर गुबार न पहुंचा हो मसलन पथ्थर वगैरा किसी ऐसी चीज़ पर हाथ मारा जिस पर गुबार न हो तो ख़िलाल फ़र्ज़ है ख़िलाल के लिये दोबारा ज़मीन पर हाथ मारना ज़रूरी नहीं।

(बहारे शरीअत, हिस्सा : 2, स. 78)

तयम्मूम का तरीका (हनफ़ी)

तयम्मूम की निय्यत कीजिये (निय्यत दिल के इरादे का नाम है, ज़बान से भी कह लें तो बेहतर है। मसलन यूं कहिये बे वुजूई या बे गुस्ली या दोनों से पाकी हासिल करने और नमाज़ जाइज़ होने के लिये तयम्मूम करती हूं) बिस्मिल्लाह पढ़ कर दोनों हाथों की उंगलियां कुशादा कर के

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुझ पर रोजे जुमुआ दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क्रियामत के दिन उस की शफ़ाअत करूंगा। (جمع الجوامع)

किसी ऐसी पाक चीज़ पर जो ज़मीन की किस्म (मसलन पथर, चूना, ईट, दीवार, मिट्टी वगैरा) से हो मार कर लौट लीजिये (या'नी आगे बढ़ाइये और पीछे लाइये)। और अगर ज़ियादा गर्द लग जाए तो झाड़ लीजिये और उस से सारे मुंह का इस तरह मसह कीजिये कि कोई हिस्सा रह न जाए अगर बाल बराबर भी कोई जगह रह गई तो तयम्मूम न होगा। फिर दूसरी बार इसी तरह हाथ ज़मीन पर मार कर दोनों हाथों का नाखुनों से ले कर कोहनियों समेत मसह कीजिये, कंगन चूड़ियां जितने ज़ेवर हाथ में पहने हों सब को हटा कर या उतार कर जिल्द के हर हिस्से पर हाथ पहुंचाइये, अगर ज़र्ज़ा बराबर भी कोई जगह रह गई तो तयम्मूम न होगा। तयम्मूम के मसह का बेहतर तरीका ये है कि उल्टे हाथ के अंगूठे के इलावा चार उंगलियों का पेट सीधे हाथ की पुश्त पर रखिये और उंगलियों के सिरों से कोहनियों तक ले जाइये और फिर वहां से उल्टे ही हाथ की हथेली से सीधे हाथ के पेट को मस करते हुए गिट्टे तक लाइये और उल्टे अंगूठे के पेट से सीधे अंगूठे की पुश्त का मसह कीजिये। इसी तरह सीधे हाथ से उल्टे हाथ का मसह कीजिये। और अगर एक दम पूरी हथेली और उंगलियों से मसह कर लिया तब भी तयम्मूम हो गया चाहे कोहनी से उंगलियों की तरफ़ लाए या उंगलियों से कोहनी की तरफ़ ले गए मगर सुन्नत के ख़िलाफ़ हुवा। तयम्मूम में सर और पाउं का मसह नहीं है। (बहारे शरीअत, हिस्सा : 2, स. 76, 78 वगैरा)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा उस ने जन्नत का रास्ता छोड़ दिया। (ज़रान)

“सरक़रे आ'ला हज़रत की पच्चीसवीं शरीफ़” के छब्बीस हुरूफ़ की निस्बत से तयम्मूम के 26 मदनी फूल

❶ जो चीज़ आग से जल कर न राख होती है न पिघलती है न नर्म होती है वोह ज़मीन की जिन्स (या'नी किस्म) से है इस से तयम्मूम जाइज़ है। रैता, चूना, सुरमा, गन्धक, पथर, ज़बर जद, फ़ीरोज़ा, अक्कीक, वगैरा जवाहिर से तयम्मूम जाइज़ है चाहे इन पर गुबार हो या न हो। (बहारे शरीअत, हिस्सा : 2, स. 79, २०७, ص १, ج १)

❷ पक्की ईट, चीनी या मिट्टी के बरतन से तयम्मूम जाइज़ है। हां अगर इन पर किसी ऐसी चीज़ का जिर्म (या'नी जिस्म या तह) हो जो जिन्से ज़मीन से नहीं मसलन कांच का जिर्म हो तो तयम्मूम जाइज़ नहीं। (बहारे शरीअत, हिस्सा : 2, स. 80)

❸ जिस मिट्टी, पथर वगैरा से तयम्मूम किया जाए उस का पाक होना ज़रूरी है या'नी न उस पर किसी नजासत का असर हो न येह हो कि सिर्फ़ खुश्क होने से नजासत का असर जाता रहा हो। (ऐज़न, स. 79) ज़मीन, दीवार और वोह गर्द जो ज़मीन पर पड़ी रहती है अगर नापाक हो जाए फिर धूप या हवा से सूख जाए और नजासत का असर ख़त्म हो जाए तो पाक है और उस पर नमाज़ जाइज़ है मगर उस से तयम्मूम नहीं हो सकता।

❹ येह वहम कि कभी नजिस हुई होगी फुज़ूल है इस का ए'तिबार नहीं। (ऐज़न, स. 79)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत करो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे लिये पाकीज़गी का बाइस है। (अबुसल)

«5» अगर किसी लकड़ी, कपड़े, या दरी वगैरा पर इतनी गर्द है कि हाथ मारने से उंगलियों का निशान बन जाए तो उस से तयम्मूम जाइज़ है।

«6» चूना, मिट्टी या ईंटों की दीवार ख़्वाह घर की हो या मस्जिद की इस से तयम्मूम जाइज़ है। मगर उस पर ओइल पेइन्ट, प्लास्टिक पेइन्ट और मेट फ़िनिश या वोल पेपर वगैरा कोई ऐसी चीज़ नहीं होनी चाहिये जो जिन्से ज़मीन के इलावा हो, दीवार पर मार्बल हो तो कोई हरज नहीं।

«7» जिस का वुजू न हो या नहाने की हाजत हो और पानी पर कुदरत न हो वोह वुजू और गुस्ल की जगह तयम्मूम करे।

(बहारे शरीअत, हिस्सा : 2, स. 68)

«8» ऐसी बीमारी कि वुजू या गुस्ल से इस के बढ़ जाने या देर में अच्छी होने का सहीह अन्देशा हो या खुद अपना तजरिबा हो कि जब भी वुजू या गुस्ल किया बीमारी बढ़ गई या यूं कि कोई मुसल्मान अच्छा क़ाबिल तबीब जो ज़ाहिरी तौर पर फ़ासिक न हो वोह कह दे कि पानी नुक्सान करेगा। तो इन सूरतों में तयम्मूम कर सकती हैं।

(बहारे शरीअत, हिस्सा : 2, स. 68, ६६२ - ६६१ ص ١ رُدُّ الْمُحْتَارِ، رُدُّ الْمُحْتَارِ ١ ص ١)

«9» अगर सर से नहाने में पानी नुक्सान करता हो तो गले से नहाइये और पूरे सर का मस्ह कीजिये। (बहारे शरीअत, हिस्सा : 2, स. 69)

«10» जहां चारों तरफ़ एक एक मील तक पानी का पता न हो वहां भी तयम्मूम कर सकती हैं। (ऐज़न)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़े तो वोह लोगों में से कन्ज़ूस तरीन शख्स है। (مسند احمد)

«11» अगर इतना आबे ज़मज़म शरीफ़ पास है जो वुजू के लिये काफ़ी है तो तयम्मूम जाइज़ नहीं। (ऐज़न)

«12» इतनी सर्दी हो कि नहाने से मर जाने या बीमार हो जाने का क़वी अन्देशा है और नहाने के बा'द सर्दी से बचने का कोई सामान भी न हो तो तयम्मूम जाइज़ है। (ऐज़न, स. 70)

«13» कैदी को कैदख़ाने वाले वुजू न करने दें तो तयम्मूम कर के नमाज़ पढ़ ले बा'द में इआदा करे और अगर वोह दुश्मन या कैदख़ाने वाले नमाज़ भी न पढ़ने दें तो इशारे से पढ़े और बा'द में इआदा करे। (ऐज़न, स. 71)

«14» अगर येह गुमान है कि पानी तलाश करने में (या पानी तक पहुंच कर वुजू करने तक) काफ़िला नज़रों से गाइब हो जाएगा “या ट्रेन छूट जाएगी।” तो तयम्मूम जाइज़ है। (बहारे शरीअत, हिस्सा : 2, स. 72) फ़तावा रज़विyyा मुख़र्रजा जिल्द 3 सफ़हा 417 पर है : अगर रेल चले जाने का अन्देशा हो तब भी तयम्मूम करे और इआदा नहीं।

«15» वक़्त इतना तंग हो गया कि वुजू या गुस्ल करेगी तो नमाज़ क़ज़ा हो जाएगी तो तयम्मूम कर के नमाज़ पढ़ ले फिर वुजू या गुस्ल कर के नमाज़ का इआदा करे। (माख़ूज़ अज़ फ़तावा रज़विyyा, जि. 3, स. 307)

«16» औरत हैज़ व निफ़ास से पाक हो गई और पानी पर कादिर नहीं तो तयम्मूम करे। (बहारे शरीअत, हिस्सा : 2, स. 74)

«17» अगर कोई ऐसी जगह है जहां न पानी मिलता है न ही तयम्मूम

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : तुम जहाँ भी हो मुझ पर दुरूद पढ़ो कि तुम्हारा दुरूद मुझ तक पहुँचता है। (طبرانی)

के लिये पाक मिट्टी तो उसे चाहिये कि वक़्ते नमाज़ में नमाज़ की सी सूरत बनाए या'नी तमाम ह-रकाते नमाज़ बिला निय्यते नमाज़ बजा जाए। (बहारे शरीअत, हिस्सा : 2, स. 75) मगर पाक पानी या मिट्टी पर कादिर होने पर वुजू या तयम्मूम कर के नमाज़ पढ़नी होगी।

﴿18﴾ वुजू और गुस्ल दोनों के तयम्मूम का एक ही तरीका है।

(الْحَوْهْرَةُ النَّبِيَّةُ، الجزء الأول ص 28)

﴿19﴾ जिस पर गुस्ल फ़र्ज़ है उस के लिये येह ज़रूरी नहीं कि वुजू और गुस्ल दोनों के लिये दो तयम्मूम करे बल्कि दोनों में एक ही निय्यत कर ले दोनों हो जाएंगे और अगर सिर्फ़ गुस्ल या वुजू की निय्यत की जब भी काफी है। (बहारे शरीअत, हिस्सा : 2, स. 76)

﴿20﴾ जिन चीज़ों से वुजू टूट जाता है या गुस्ल फ़र्ज़ हो जाता है उन से तयम्मूम भी टूट जाता है और पानी पर कादिर होने से भी तयम्मूम टूट जाता है। (ऐज़न, स. 82)

﴿21﴾ इस्लामी बहन ने अगर नाक में फूल वगैरा पहने हों तो निकाल ले वरना फूल की जगह मस्ह नहीं हो सकेगा। (ऐज़न, स. 77)

﴿22﴾ होंटों का वोह हिस्सा जो अ़ादतन मुंह बन्द होने की हालत में दिखाई देता है इस पर मस्ह होना ज़रूरी है अगर मुंह पर हाथ फैरते वक़्त किसी ने होंटों को ज़ोर से दबा लिया कि कुछ हिस्सा मस्ह होने से रह गया तो तयम्मूम नहीं होगा। (ऐज़न)

﴿23﴾ इसी तरह ज़ोर से आंखें बन्द कर लीं जब भी न होगा। (ऐज़न)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो लोग अपनी मजलिस से अल्लाह के जिक्र और नबी पर दुरूद शरीफ़ पढ़े बिगैर उठ गए तो वोह बदबूदार मुर्दार से उठे । (شعب الايمان)

﴿24﴾ अंगूठी, घड़ी वगैरा पहने हों तो उतार कर या हटा कर उन के नीचे हाथ फेरना फ़र्ज है । चूड़ियां वगैरा हटा कर उन के नीचे मस्ह कीजिये । तयम्मूम की एह्तियातें वुजू से बढ़ कर हैं । (ऐज़न)

﴿25﴾ बीमार या बे दस्तो पा खुद तयम्मूम नहीं कर सकती तो कोई दूसरी करवा दे इस में तयम्मूम करवाने वाली की निय्यत का ए'तिबार नहीं, जिस को तयम्मूम करवाया जा रहा है उस को निय्यत करनी होगी ।

(عالمگیری ج ۱ ص ۲۶, 76, ऐज़न, स. 76, २६)

﴿26﴾ अगर औरत को वुजू करना है और वहां कोई ना महरम मर्द मौजूद है जिस से छुपा कर हाथों का धोना और सर का मस्ह नहीं कर सकती तयम्मूम करे । (फ़तावा रज़विख्या मुखर्रजा, जि. 3, स. 416)

या रब्बे मुस्तफ़ा! عَزَّوَجَلَّ हमें बार बार तयम्मूम के मसाइल पढ़ने, समझने और दूसरों को समझाने और सुन्नतों के मुताबिक़ तयम्मूम करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा ।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

गला बैठ गया हो तो.....

प्याज़ का रस एक तोला (तक़ीबन 12 ग्राम), शहद दो तोला (तक़ीबन 25 ग्राम) मिला कर गर्म कर के पीने से إِنَّ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ बैठे हुए आवाज़ साफ़ हो जाएगी, मगर आतिशक (एक जिन्सी बीमारी) और जुज़ाम (या'नी कोढ़) के मरीज़ को इस से फ़ाएदा नहीं होगा । (अपने तबीब के मशवरे बिगैर येह इलाज न कीजिये)

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ
 أَمَا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

जवाबे अज़ान का तरीका

मोतियों का ताज

अल कौलुल बदीअ में है इन्तिकाल के बा'द हज़रते सय्यिदुना अबुल अब्बास अहमद बिन मन्सूर عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْغَفُورُ को अहले शीराज में से किसी ने ख़्वाब में देखा कि वोह सर पर मोतियों का ताज सजाए जन्नती लिबास में मलबूस “शीराज” की जामेअ मस्जिद की मेहराब में खड़े हैं। ख़्वाब देखने वाले ने अर्ज की : مَا فَعَلَ اللَّهُ بِكَ ؟ या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआमला फ़रमाया ? फ़रमाया : الْحَمْدُ لِلَّهِ عَزَّوَجَلَّ मैं कसरत से दुरूद शरीफ़ पढ़ा करता था येही अमल काम आ गया कि अल्लाहु रब्बुल इज़्जत عَزَّوَجَلَّ ने मेरी मग़िफ़रत कर दी और मुझे ताज पहना कर दाख़िले जन्नत फ़रमाया ।

(الْقَوْلُ الْبَدِيعِ، ص २०६)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

अज़ान के जवाब की फ़ज़ीलत

अमीरुल मुअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर बिन ख़त्ताब رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया : “जब मुअज़्ज़िन

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुझ पर दुरूद शरीफ़ पढ़ो अल्लाह عزّ وجلّ तुम पर रहमत भेजेगा । (अनसरी)

اللهُ أَكْبَرُ اللهُ أَكْبَرُ اللهُ أَكْبَرُ اللهُ कहते तो तुम में से कोई اللهُ أَكْبَرُ اللهُ कहते, फिर اللهُ أَكْبَرُ اللهُ أَكْبَرُ اللهُ أَكْبَرُ اللهُ कहते तो वोह शख्स اللهُ أَكْبَرُ اللهُ أَكْبَرُ اللهُ أَكْبَرُ اللهُ कहते तो वोह शख्स اللهُ أَكْبَرُ اللهُ أَكْبَرُ اللهُ أَكْبَرُ اللهُ कहते तो वोह शख्स اللهُ أَكْبَرُ اللهُ أَكْبَرُ اللهُ أَكْبَرُ اللهُ कहते तो वोह शख्स اللهُ أَكْبَرُ اللهُ أَكْبَرُ اللهُ أَكْبَرُ اللهُ कहते और जब اللهُ أَكْبَرُ اللهُ أَكْبَرُ اللهُ أَكْبَرُ اللهُ कहते और येह शख्स सिद्क़ दिल से اللهُ أَكْبَرُ اللهُ أَكْبَرُ اللهُ أَكْبَرُ اللهُ कहते तो जन्नत में दाख़िल होगा ।” (صحيح مسلم، ص ۲۰۳ حديث ۳۸۵)

मुफ़स्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن इस हदीसे पाक के तहत फ़रमाते हैं : “जाहिर येह है कि مِنْ قَلْبِهِ (या’नी सिद्क़ दिल से कहने) का तअल्लुक़ सारे जवाब से है या’नी अज़ान का पूरा जवाब सच्चे दिल से दे क्यूं कि बिग़ैर इख़लास कोई इबादत क़बूल नहीं ।” (मिरआतुल मनाजीह, जि. 1, स. 412)

अज़ान का जवाब देने वाला जन्नती हो गया

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं कि एक साहिब जिन का ब जाहिर कोई बहुत बड़ा नेक अमल न था, वोह फ़ौत हो गए तो رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने सहाबए किराम الرِّضْوَان عَلَيْهِمُ

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग़िफ़रत है। (ابن عساکر)

की मौजूदगी में फ़रमाया : क्या तुम्हें मा'लूम है कि अल्लाह तआला ने उसे जन्नत में दाख़िल कर दिया है। इस पर लोग मुतअज़्जिब हुए क्यूं कि ब ज़ाहिर उन का कोई बड़ा अमल न था। चुनान्चे एक सहाबी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ उन के घर गए और उन की बेवा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا से पूछा कि उन का कोई ख़ास अमल हमें बताइये, तो उन्होंने ने जवाब दिया : और तो कोई ख़ास बड़ा अमल मुझे मा'लूम नहीं, सिर्फ़ इतना जानती हूं कि दिन हो या रात, जब भी वोह अज़ान सुनते तो जवाब ज़रूर देते थे। (تاریخ دمشق لابن عساکر ج ٤٠ ص ٤١٢، ٤١٣ ملخصاً)।

عَزَّوَجَلَّ की उन पर रहमत हो और उन के सदके हमारी मग़िफ़रत हो।

اٰمِيْنَ بِجَاہِ النَّبِيِّ الْاَمِيْنَ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

गुनहे गदा का हिसाब क्या वोह अगर्चे लाख से हैं सिवा

मगर ऐ अफू तेरे अफ़व का तो हिसाब है न शुमार है

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَيِّبُ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٌ

अज़ान का जवाब इस तरह दीजिये

मुअज़्जिन साहिब को चाहिये कि अज़ान के कलिमात ठहर ठहर कर कहें। اللهُ اَكْبَرُ اللهُ اَكْبَرُ दोनों मिल कर (बिगैर सक्ता किये एक साथ पढ़ने के ए'तिबार से) एक कलिमा हैं दोनों के बा'द सक्ता करे (या'नी चुप हो जाए) और सक्ते की मिक्दार येह है कि जवाब देने

फ़रमाने मुस्ताफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने किताब में मुझ पर दुरूद पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फिरिश्ते उस के लिये इस्तिफ़ार (या'नी बख़्शिश की दुआ) करते रहेंगे। (प्रान्)

वाला जवाब दे ले, (دُرْمُخَار، رَدُّ الْمُحَارَجِ ٢ ص ٦٦) जवाब देने वाली इस्लामी बहन को चाहिये कि जब मुअज़्ज़िन साहिब اللهُ أَكْبَرُ اللهُ أَكْبَرُ कह कर सकता करें या'नी ख़ामोश हों उस वक़्त اللهُ أَكْبَرُ اللهُ أَكْبَرُ कहे। इसी तरह दीगर कलिमात का जवाब दे। जब मुअज़्ज़िन पहली बार اللهُ أَكْبَرُ اللهُ أَكْبَرُ कहे तो येह कहे :-

ترجمہ : آپ پر دुरूد ہو یا رسूल اللہ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ (رَدُّ الْمُحَارَجِ ٢ ص ٨٤)

जब दोबारा कहे तो येह कहे :-

قُرَّةُ عَيْنِي بِكَ يَا رَسُولَ اللهِ (أَيْضًا) या रसूलल्लाह ! आप से मेरी आंखों की ठन्डक है।

और हर बार अंगूठों के नाखुन आंखों से लगा ले आख़िर में कहे :- اللَّهُمَّ مَتِّعْنِي بِالسَّمْعِ وَالْبَصَرِ मेरी सुनने और देखने की कुव्वत से मुझे नफ़अ अता फ़रमा। (أَيْضًا)

जो ऐसा करे सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ उसे अपने पीछे पीछे जन्नत में ले जाएंगे। (أَيْضًا)

حَتَّى عَلَى الْفَلَاحِ وَأُورَى حَتَّى عَلَى الصَّلَاةِ के जवाब में (चारों बार) اللهُ أَكْبَرُ اللهُ أَكْبَرُ कहे और बेहतर येह है कि दोनों कहे (या'नी मुअज़्ज़िन ने जो कहा वोह भी कहे और लाहौल भी) बल्कि मज़ीद येह भी मिला ले :-

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुझ पर एक दिन में 50 बार दुरुदे पाक पढ़े क़ियामत के दिन मैं उस से मुसाफ़हा करूँ (या'नी हाथ मिलाऊँ)गा । (ابن بشكوال)

مَا شَاءَ اللهُ كَانَ وَمَا لَمْ يَشَأْ لَمْ يَكُنْ तरजमा : अल्लाह ने जो चाहा हुवा, जो नहीं चाहा नहीं हुवा ।

(دُرِّمُخْتَارٌ وَرَدُّ الْمُخْتَارِ ج ٢ ص ٨٢، عالمگیری ج ١ ص ٥٧)

الصَّلَاةُ خَيْرٌ مِنَ التَّوْمِ के जवाब में कहे :-

صَدَقْتَ وَبَرِّتَ وَبِالْحَقِّ نَطَقْتَ तरजमा : तू सच्चा और नेकूकार है और तूने हक़ कहा है ।

(دُرِّمُخْتَارٌ، رَدُّ الْمُخْتَارِ ج ٢ ص ٨٣)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

“अज़ाने बिलाल” के आठ हुरूफ़ की निस्बत से

जवाबे अज़ान के 8 मदनी फूल

﴿1﴾ अज़ाने नमाज़ के इलावा दीगर अज़ानों का जवाब भी दिया जाएगा मसलन बच्चा पैदा होते वक़्त की अज़ान । (رَدُّ الْمُخْتَارِ ج ٢ ص ٨٢)

﴿2﴾ अज़ान सुनने वाले के लिये अज़ान का जवाब देने का हुक़म है ।

(عالمگیری ج ١ ص ٥٧)

﴿3﴾ जुनुब (या'नी जिसे जिमाअ या एहतिलाम की वजह से गुस्ल की हाज़त हो) भी अज़ान का जवाब दे । अलबत्ता हैज़ व निफ़ास वाली औरत, जिमाअ में मशगूल या जो क़ज़ाए हाज़त में हों उन पर जवाब नहीं । (دُرِّمُخْتَارِ ج ٢ ص ٨١)

﴿4﴾ जब अज़ान हो तो उतनी देर के लिये सलाम व कलाम और

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : बरोज़े क़ियामत लोगों में से मेरे क़रीब तर वोह होगा जिस ने दुन्या में मुझ पर ज़ियादा दुरूदे पाक पढ़े होंगे। (ترمذی)

जवाबे सलाम और तमाम काम मौकूफ़ कर दीजिये यहां तक कि तिलावत भी, अज़ान को गौर से सुनिये और जवाब दीजिये।

(دُرْمُخْتَار ج ۲ ص ۸۶، عالمگیری ج ۱ ص ۵۷ مُلَخَّصًا)

﴿5﴾ अज़ान के दौरान चलना, फिरना, बरतन, गिलास वगैरा कोई सी चीज़ उठाना, खाना वगैरा रखना, छोटे बच्चों से खेलना, इशारों में गुफ़्तू करना वगैरा सब कुछ मौकूफ़ कर देना ही मुनासिब है।

﴿6﴾ जो अज़ान के वक़्त बातों में मशगूल रहे उस पर مَعَاذَ اللهِ عَزَّ وَجَلَّ ख़ातिमा बुरा होने का ख़ौफ़ है।

(बहारे शरीअत, हिस्सा : 3, स. 41 मक्तबतुल मदीना)

﴿7﴾ अगर चन्द अज़ानें सुने तो इस पर पहली ही का जवाब है और बेहतर येह है कि सब का जवाब दे। (دُرْمُخْتَار وَرَدُّ الْمُخْتَار ج ۲ ص ۸۲)

﴿8﴾ अगर ब वक़्ते अज़ान जवाब न दिया तो अगर ज़ियादा देर न गुज़री हो तो जवाब दे ले। (دُرْمُخْتَار ج ۲ ص ۸۳، ۸۴)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

क़िब्ला रुख़ बैठने से बीनाई तेज़ होती है

हज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي فَرَمَاتे हैं : चार चीज़ें आंखों की (बीनाई की) तक्विवत का बाइस हैं : ﴿1﴾ क़िब्ला रुख़ बैठना ﴿2﴾ सोते वक़्त सुरमा लगाना ﴿3﴾ सब्जे की तरफ़ नज़र करना और ﴿4﴾ लिबास को पाक व साफ़ रखना।

(احياء العلوم، ج ۲ ص ۲۷ دار صادر بيروت)

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةَ وَالسَّلَامَ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ
 آمَنَّا بِعَدُوِّ قَوْمِنَا بِإِذْنِ اللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

(हनफी)

नमाज़ का तरीका

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम, रहमते आलम, शाहे बनी आदम, रसूले मुहूतशम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने रहमत निशान है : क़ियामत के रोज़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के अर्श के सिवा कोई साया नहीं होगा, तीन शख्स अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के अर्श के साए में होंगे। अर्ज की गई : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ वोह कौन लोग होंगे ? इशाद फ़रमाया (1) वोह शख्स जो मेरे उम्मत की परेशानी को दूर करे (2) मेरी सुन्नत को ज़िन्दा करने वाला (3) मुझ पर कसरत से दुरूद शरीफ़ पढ़ने वाला।

(البدور السافرة في امور الاخرة للسيوطي ص ۱۳۱ حديث ۳۶۶)

صَلُّوا عَلَيَّ الْحَيِّبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ عَلَى مُحَمَّدٍ

इस्लामी बहनो ! कुरआनो हदीस में नमाज़ पढ़ने के बे शुमार फ़ज़ाइल और न पढ़ने की सख़्त सज़ाएं वारिद हैं, चुनान्चे पारह 28 सूरतुल मुनाफ़िकून की आयत नम्बर 9 में इशादि रब्बानी है :

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर एक मरतबा दुरुद पढ़ा अल्लाह उस पर दस रहमतें भेजता और उस के नामए आ'माल में दस नेकियां लिखता है। (ترمذی)

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تُلْهِكُمْ
أَمْوَالَكُمُ وَلَا أَوْلَادَكُمُ عَنْ
ذِكْرِ اللَّهِ وَمَنْ يَفْعَلْ ذَلِكَ
فَأُولَئِكَ هُمُ الْخَاسِرُونَ ①

(पारः २८, المنافقون : ९)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो ! तुम्हारे माल न तुम्हारी औलाद कोई चीज़ तुम्हें अल्लाह के जिक्र से गाफ़िल न करे और जो ऐसा करे तो वोही लोग नुक़सान में हैं।

हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद बिन अहमद ज़हबी नक़ल करते हैं, मुफ़स्सिरीने किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَامُ फ़रमाते हैं कि इस आयते मुबारका में अल्लाह तआला के जिक्र से पांच नमाज़ें मुराद हैं, पस जो शख़्स अपने माल या'नी ख़रीदो फ़रोख़्त, मईशत व रोज़गार, साज़ो सामान और औलाद में मसरूफ़ रहे और वक़्त पर नमाज़ न पढ़े वोह नुक़सान उठाने वालों में से है। (کتاب الكبائر ص २०)

क़ियामत का सब से पहला सुवाल

सरकारे मदीना, सुल्ताने बा क़रीना, क़रारे क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का इशादि हक़ीक़त बुन्याद है, “क़ियामत के दिन बन्दे के आ'माल में सब से पहले नमाज़ का सुवाल होगा। अगर वोह दुरुस्त हुई तो उस ने काम्याबी पाई और अगर उस में कमी हुई तो वोह रुस्वा हुवा और उस ने नुक़सान उठाया।” (مَكْرُؤُ الْعَمَالِ، ج ७ ص ११० رقم १८८८३)

नमाज़ी के लिये नूर

सरकारे दो आ़लम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम, रसूले

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : शबे जुमुआ और रोज़े मुझ पर दुरूद की कसरत कर लिया करो जो ऐसा करेगा क़ियामत के दिन मैं उस का शफ़ीअ व गवाह बनूंगा । (شعب الایمان)

मुहूतशम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का इशादि मुअज़्ज़म है, “जो शख़्स नमाज़ की हिफ़ाज़त करे, उस के लिये नमाज़ क़ियामत के दिन नूर, दलील और नजात होगी और जो इस की हिफ़ाज़त न करे, उस के लिये बरोजे क़ियामत न नूर होगा और न दलील और न ही नजात । और वोह शख़्स क़ियामत के दिन फ़िरअौन, क़ारून, हामान और उबय बिन ख़लफ़ के साथ होगा ।”

(مَحْمَعُ الزَّوَالِد ج ٢ ص ٢١ حديث ١٦١١)

कौन, किस के साथ उठेगा !

इस्लामी बहनो ! हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद बिन अहमद ज़हबी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي नक्ल करते हैं, बा'ज उलमाए किराम رَحْمَتُهُمُ اللهُ السَّلَام फ़रमाते हैं कि **बे नमाज़ी** को इन चार (फ़िरअौन, क़ारून, हामान, और उबय बिन ख़लफ़) के साथ इस लिये उठाया जाएगा कि लोग उमूमन दौलत, हुकूमत, वज़ारत और तिजारत की वजह से नमाज़ को तर्क करते हैं । जो हुकूमत की मशगूलियत के सबब नमाज़ नहीं पढ़ेगा उस का ह़शर (या'नी उठाया जाना) **फ़िरअौन** के साथ होगा, जो दौलत के बाइस नमाज़ तर्क करेगा तो उस का **क़ारून** के साथ ह़शर होगा, अगर तर्क नमाज़ का सबब **वज़ारत** होगी तो फ़िरअौन के वज़ीर **हामान** के साथ ह़शर होगा और अगर **तिजारत** की मस्कूफ़ियत की वजह से नमाज़ छोड़ेगा तो उस को मक्कए मुकर्रमा के बहुत बड़े काफ़िर ताजिर उबय बिन ख़लफ़ के साथ बरोजे क़ियामत उठाया जाएगा ।

(کتابُ الکبائر ص ٢١)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुझ पर एक बार दुरुद पढ़ता है अल्लाह उस के लिये एक क़ीरात अन्न लिखता है और क़ीरात उहुद पहाड़ जितना है। (عبدالرزاق)

शदीद ज़ख़्मी हालत में नमाज़

जब हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ पर कातिलाना हम्ला हुवा तो अर्ज़ की गई, ऐ अमीरुल मुअमिनीन ! नमाज़ (का वक़्त है) फ़रमाया : “जी हां, सुनिये ! जो शख़्स नमाज़ को ज़ाएअ करता है उस का इस्लाम में कोई हिस्सा नहीं।” और हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़े رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने शदीद ज़ख़्मी होने के बा वुजूद नमाज़ अदा फ़रमाई। (ऐज़न, स. 22)

हज़ारों साल अज़ाबे नार का हक़दार

मेरे आका आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़तावा रज़विyyा जिल्द 9 सफ़हा 158 ता 159 पर फ़रमाते हैं : ईमान व तस्हीहे अक़ाइद के बा'द जुम्ला हुकूकुल्लाह में सब से अहम व आ'ज़म नमाज़ है। जुमुआ व ईदैन या बिला पाबन्दी पन्जगाना पढ़ना हरगिज़ नजात का जिम्मादार नहीं। जिस ने क़स्दन एक वक़्त की छोड़ी हज़ारों बरस जहन्नम में रहने का मुस्तहक़ हुवा, जब तक तौबा न करे और उस की क़ज़ा न कर ले, मुसल्मान अगर उस की जिन्दगी में उसे यक लख़्त (या'नी बिल्कुल) छोड़ दें उस से बात न करें, उस के पास न बैठें, तो ज़रूर वोह इस का सज़ावार है। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है :

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जब तुम रसूलों पर दुरूद पढ़ो तो मुझे पर भी पढ़ो, बेशक मैं तमाम जहानों के रब का रसूल हूँ। (جمع الجوامع)

وَأَمَّا يُنْسِيَنَّكَ الشَّيْطَانُ فَلَا تَقْعُدْ
بَعْدَ الذِّكْرِ مَعَ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ﴿١٥﴾

(पारह : ८، الانعام : २८)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और जो कहीं तुझे शैतान भुलावे तो याद आए पर ज़ालिमों के पास न बैठ।

नमाज़ पर नूर या तारीकी के अस्बाब

हज़रते सय्यिदुना उबादा बिन सामित رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि नबिय्ये रहमत, शफ़ीए उम्मत, शहन्शाहे नुबुव्वत, ताजदारे रिसालत صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने अलीशान है, “जो शख्स अच्छी तरह वुजू करे, फिर नमाज़ के लिये खड़ा हो, इस के रुकूअ, सुजूद और क़िराअत को मुकम्मल करे तो नमाज़ कहती है, अल्लाह तआला तेरी हिफ़ाज़त करे जिस तरह तूने मेरी हिफ़ाज़त की। फिर उस नमाज़ को आस्मान की तरफ़ ले जाया जाता है और उस के लिये चमक और नूर होता है। पस उस के लिये आस्मान के दरवाज़े खोले जाते हैं हत्ता कि उसे अल्लाह तआला की बारगाह में पेश किया जाता है और वोह नमाज़ उस नमाज़ी की शफ़ाअत करती है, और अगर वोह इस का रुकूअ, सुजूद और क़िराअत मुकम्मल न करे तो नमाज़ कहती है, अल्लाह तआला तुझे जाएअ कर दे जिस तरह तूने मुझे जाएअ किया। फिर उस नमाज़ को इस तरह आस्मान की तरफ़ ले जाया जाता है कि उस पर तारीकी (अंधेरा) छाई होती है और उस पर आस्मान के दरवाज़े बन्द कर दिये जाते हैं फिर उस को पुराने कपड़े की तरह लपेट कर उस नमाज़ी के मुंह पर मारा जाता है.”

(كُنُزُ الْعُمَالِ، ج ٧، ص ١٢٩، رقم ١٩٠٤٩)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुझ पर दुरूद पढ़ कर अपनी मजालिस को आरास्ता करो कि तुम्हारा दुरूद पढ़ना बरोज़े क़ियामत तुम्हारे लिये नूर होगा । (فردوس الاحبار)

बुरे ख़ातिमे का एक सबब

हज़रते सय्यिदुना इमाम बुख़ारी رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِي عَلَيْهِ فَرَمَاتे हैं, हज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा बिन यमान رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने एक शख़्स को देखा जो नमाज़ पढ़ते हुए रकूअ और सुजूद पूरे अदा नहीं करता था । तो उस से फ़रमाया : “तुम ने जो नमाज़ पढ़ी अगर इसी नमाज़ की हालत में इन्तिक़ाल कर जाओ तो हज़रते सय्यिदुना मुहम्मदे मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के तरीके पर तुम्हारी मौत वाक़ेअ नहीं होगी । (صَحِيحُ الْبُخَارِيِّ ج ١ ص ٢٨٤ حدیث ٨٠٨) सुनने नसाई की रिवायत में यह भी है कि आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने पूछा : “तुम कब से इस तरह नमाज़ पढ़ रहे हो ?” उस ने कहा : “चालीस साल से ।” फ़रमाया : “तुम ने चालीस साल से बिल्कुल नमाज़ ही नहीं पढ़ी और अगर इसी हालत में तुम्हें मौत आ गई तो दीने मुहम्मदी عَلَى صَاحِبِهَا الصَّلَاةُ وَالسَّلَام पर नहीं मरोगे ।”

(سُنَنِ النَّسَائِيِّ ص ٢٢٥ حدیث ١٣٠٩)

नमाज़ का चोर

हज़रते सय्यिदुना अबू क़तादा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि सरकारे मदीना, करारे क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गन्जीना, साहिबे मुअत्तर पसीना صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने बा क़रीना है : “लोगों में बद तरीन चोर वोह है जो अपनी नमाज़ में चोरी करे ।” अर्ज़ की गई, “या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ! नमाज़ में चोरी कैसे होती है ?”

फ़रमाने मुस्त्फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुझ पर दुरूदे पाक को कसरत करो बेशक यह तुम्हारे लिये त्हा रत है । (अबुसल्लि)

फ़रमाया : “ (इस तरह कि) रुकूअ और सज्दे पूरे न करे ।”

(مُسْنَدُ إِمَامِ أَحْمَدَ بْنِ حَنْبَلٍ، ج ٨، ص ٣٨٦، حَدِيث ٢٢٧٠٥)

चोर की दो किस्में

मुफ़स्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰنِ इस हदीस के तहत फ़रमाते हैं, “मा’लूम हुवा माल के चोर से नमाज़ का चोर बदतर है क्योंकि माल का चोर अगर सज़ा भी पाता है तो कुछ न कुछ नफ़अ भी उठा लेता है मगर नमाज़ का चोर सज़ा पूरी पाएगा इस के लिये नफ़अ की कोई सूरत नहीं। माल का चोर बन्दे का हक़ मारता है जब कि नमाज़ का चोर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का हक़, येह हालत उन की है जो नमाज़ को नाक़िस पढ़ते हैं इस से वोह लोग दर्से इब्रत हासिल करें जो सिरे से नमाज़ पढ़ते ही नहीं।

(मिरआतुल मनाजीह, जि. 2, स. 78)

इस्लामी बहनो ! अव्वल तो लोग नमाज़ पढ़ते ही नहीं हैं और जो पढ़ते हैं उन की अक्सरियत सुन्नतों सीखने के ज़ब्बे की कमी के बाइस आज कल सहीह तरीके से नमाज़ पढ़ने से महरूम रहती है। यहां मुख़्तसरन नमाज़ पढ़ने का तरीका पेश किया जाता है। बराए मेहरबानी ! बहुत ज़ियादा गौर से पढ़िये और अपनी नमाज़ों की इस्लाह फ़रमाइये :

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुझ पर रोजे जुमुआ दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअत करूंगा। (कोशिश)

इस्लामी बहनों की नमाज़ का तरीका (हनफी)

बा वुजू क़िब्ला रू इस तरह खड़ी हों कि दोनों पाउं के पन्जों में चार उंगल का फ़ासिला रहे और दोनों हाथ कन्धों तक उठाइये और चादर से बाहर न निकालिये। हाथों की उंगलियां न मिली हुई हों न ख़ूब खुली बल्कि अपनी हालत पर (NORMAL) रखिये और हथेलियां क़िब्ले की तरफ़ हों नज़र सज़्दे की जगह हो। अब जो नमाज़ पढ़नी है उस की निय्यत या'नी दिल में उस का पक्का इरादा कीजिये साथ ही ज़बान से भी कह लीजिये कि ज़ियादा अच्छा है (मसलन निय्यत की मैं ने आज की जोहर की चार रक़अत फ़र्ज़ नमाज़ की) अब तक्बीरे तहरीमा या'नी اللهُ أَكْبَرُ (या'नी अल्लाह सब से बड़ा है) कहते हुए हाथ नीचे लाइये और उल्टी हथेली सीने पर छाती के नीचे रख कर उस के ऊपर सीधी हथेली रखिये। अब इस तरह सना पढ़िये :

سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ وَبِحَمْدِكَ पाक है तू ऐ अल्लाह और मैं
وَتَبَارَكَ اسْمُكَ وَتَعَالَى جَدُّكَ तेरी हम्द करता (करती) हूं, तेरा नाम
وَلَا إِلَهَ غَيْرُكَ ۝ बरकत वाला है और तेरी अज़मत बुलन्द
है और तेरे सिवा कोई मा'बूद नहीं।

फिर तअव्वुज़ पढ़िये :

أَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ मैं अल्लाह तआला की पनाह में आता
(आती) हूं शैतान मरदूद से।

फिर तस्मिया पढ़िये :

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : उस शख्स को नाक खाक आलूद हो जिस के पास मेरा चिक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पड़े । (१/६)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नाम से शुरूअ़ जो बहुत मेहरबान रहमत वाला ।

फिर मुकम्मल सूरा फ़ातिहा पढ़िये :

الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ ۝
الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ۝ یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ
اٰمَنُوْا لَا تَتَّبِعُوْا السَّوْءِیَّاتِ
الَّذِیْنَ هُنَّ لَیْسَ لَهُنَّ اِلٰهٌ
غَیْرُ اللّٰهِ ۚ سَوَّیْنَ
لَهُنَّ سَبِیْلٌ وَّ لَهُنَّ اٰلٰهٌ
غَیْرُ اللّٰهِ ۚ سَوَّیْنَ ۝

तरजमए कन्जुल ईमान : सब खूबियां अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को जो मालिक सारे जहान वालों का । बहुत मेहरबान रहमत वाला, रोज़े जज़ा का मालिक । हम तुझी को पूजें और तुझी से मदद चाहें । हम को सीधा रास्ता चला, रास्ता उन का जिन पर तूने एहसान किया, न उन का जिन पर ग़ज़ब हुवा और न बहके हुआ का ।

सूरा फ़ातिहा ख़त्म कर के आहिस्ता से आमीन कहिये ।

फिर तीन आयत या एक बड़ी आयत जो तीन छोटी आयतों के बराबर हो या कोई सूरात मसलन सूरा इख़लास पढ़िये ।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ
قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ ۝
اللّٰهُ الصَّمَدُ ۝ لَمْ یَلِدْ
وَلَمْ یُوَلَدْ ۝ وَلَمْ یَكُنْ
لَهُ کُفُوًا اَحَدٌ ۝

तरजमए कन्जुल ईमान : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नाम से शुरूअ़ जो बहुत मेहरबान रहमत वाला । तुम फ़रमाओ वोह अल्लाह है वोह एक है । अल्लाह बे नियाज़ है । न उस की कोई औलाद और न वोह किसी से पैदा हुवा । और न उस के जोड़ का कोई ।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह (स) उस पर दस रहमतेँ भेजता है।

अब اللهُ الْكَبِيرُ कहते हुए रुकूअ में जाइये। रुकूअ में थोड़ा झुकिये या'नी इतना कि घुटनों पर हाथ रख दें जोर न दीजिये और घुटनों को न पकड़िये और उंगलियां मिली हुई और पाउं झुके हुए रखिये मर्दों की तरह खूब सीधे मत कीजिये। (फ़ावय़ عالمگیری ج ۱ ص ۷۴) कम अज़ कम तीन बार रुकूअ की तस्बीह या'नी سُبْحَانَ رَبِّيَ الْعَظِيمِ (या'नी पाक है मेरा अज़मत वाला परवर्द गार) कहिये। फिर तस्मीअ या'नी سَمِعَ اللهُ لِنَدَائِكَ (या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उस की सुन ली जिस ने उस की ता'रीफ़ की) कहते हुए बिल्कुल सीधी खड़ी हो जाइये, इस खड़े होने को क़ौमा कहते हैं। इस के बा'द कहिये :- اَللّٰهُمَّ رَبَّنَا وَآلِكَ الْحَمْدُ (ऐ अल्लाह ! ऐ हमारे परवर्द गार ! सब खूबियां तेरे ही लिये हैं) फिर اللهُ الْكَبِيرُ कहते हुए इस तरह सज्दे में जाइये कि पहले घुटने ज़मीन पर रखिये फिर हाथ फिर दोनों हाथों के बीच में इस तरह सर रखिये कि पहले नाक फिर पेशानी और येह खास ख़याल रखिये कि नाक की सिर्फ़ नोक नहीं बल्कि हड्डी लगे और पेशानी ज़मीन पर जम जाए, नज़र नाक पर रहे, सज्दा सिमट कर कीजिये या'नी बाज़ू करवटों से, पेट रान से, रान पिंडलियों से और पिंडलियां ज़मीन से मिला दीजिये, और दोनों पाउं सीधी तरफ़ निकाल दीजिये। अब कम

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : उस शख्स की नाक खाक आलूद हो जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पड़े । (ترمذی)

अज़ कम तीन बार सज्दे की तस्बीह या'नी **سُبْحَانَ رَبِّيَ الْأَعْلَى** (पाक है मेरा परवर्द गार सब से बुलन्द) पढ़िये फिर सर इस तरह उठाइये कि पहले पेशानी फिर नाक फिर हाथ उठें। दोनों पाउं सीधी तरफ़ निकाल दीजिये और उल्टी सुरीन पर बैठिये और सीधा हाथ सीधी रान के बीच में और उल्टा हाथ उल्टी रान के बीच में रखिये। दोनों सज्दों के दरमियान बैठने को **जल्सा** कहते हैं। फिर कम अज़ कम एक बार **اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِي** या'नी ऐ **अल्लाह** मेरी मग़िफ़रत फ़रमा कह लेना मुस्तहब है) फिर **اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِي** कहते हुए पहले सज्दे ही की तरह **दूसरा सज्दा** कीजिये। अब उसी तरह पहले सर उठाइये फिर हाथों को घुटनों पर रख कर पन्जों के बल खड़ी हो जाइये। उठते वक़्त बिगैर मजबूरी ज़मीन पर हाथ से टेक मत लगाइये। येह आप की एक रकअत पूरी हुई। अब दूसरी रकअत में **بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ** पढ़ कर अल हम्द और सूह पढ़िये और पहले की तरह **रुकूअ** और सज्दे कीजिये **दूसरे सज्दे** से सर उठाने के बा'द दोनों पाउं सीधी तरफ़ निकाल दीजिये और उल्टी सुरीन पर बैठिये और सीधा हाथ सीधी रान के बीच में और उल्टा हाथ उल्टी रान के बीच में रखिये। दो रकअत के दूसरे सज्दे के बा'द बैठना **का'दह** कहलाता है। अब का'दह में **तशहहुद** पढ़िये :

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुझ पर दस मरतबा दुरूदे पाक पढ़े अल्लाह (परान) है। उस पर सो रहमतें नाज़िल फ़रमाता है।

التَّحِيَّاتُ لِلَّهِ وَالصَّالُوتُ
وَالطَّيِّبَاتُ السَّلَامُ عَلَيْكَ
إِيهَا النَّبِيُّ وَرَحْمَةُ اللَّهِ
وَبَرَكَاتُهُ السَّلَامُ عَلَيْنَا
وَعَلَى عِبَادِ اللَّهِ الصَّالِحِينَ
أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ
وَأَشْهَدُ أَنَّكَ مُحَمَّدٌ
عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ

तमाम कौली, फ़े'ली और माली इबादतें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ही के लिये हैं। सलाम हो आप पर ऐ नबी और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रहमतें और बरकतें। सलाम हो हम पर और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नेक बन्दों पर। मैं गवाही देता (देती) हूँ कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं और मैं गवाही देता (देती) हूँ मुहम्मद صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ उस के बन्दे और रसूल हैं।

जब तशहहुद में लफ़्ज़ لا के करीब पहुंचें तो सीधे हाथ की बीच की उंगली और अंगूठे का हल्का बना लीजिये और छुंग्लिया (या'नी छोटी उंगली) और बिन्सर या'नी उस के बराबर वाली उंगली को हथेली से मिला दीजिये और (أَشْهَدُ أَنْ) के फ़ौरन बा'द) लफ़्ज़े لا कहते ही कलिमे की उंगली उठाइये मगर उस को इधर उधर मत हिलाइये और लफ़्ज़े لا पर गिरा दीजिये और फ़ौरन सब उंग्लियां सीधी कर लीजिये। अब अगर दो से ज़ियादा रकअतें पढ़नी हैं तो अल्लाह أَكْبَرُ कहती हुई खड़ी हो जाइये। अगर फ़र्ज़ नमाज़ पढ़ रही हैं तो तीसरी और चौथी रकअत के कियाम में بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ और अल हम्द शरीफ़ पढ़िये, सूरात मिलाने की ज़रूरत नहीं। बाकी अफ़आल इसी तरह बजा

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा तहकीक़ वोह बद बख़्त हो गया । (अनन)

लाइये और अगर सुन्नत व नफ़ल हों तो सूराए फ़ातिहा के बा'द सूरात भी मिलाइये फिर चार रकअतें पूरी कर के का'दए अखीरह में तशहहुद के बा'द दुरूदे इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام पढ़िये :-

اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِ مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّيْتَ عَلَى إِبْرَاهِيمَ وَعَلَى آلِ إِبْرَاهِيمَ إِنَّكَ حَمِيدٌ مَجِيدٌ

ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ दुरूद भेज (हमारे सरदार) मुहम्मद पर और उन की आल पर जिस तरह तूने दुरूद भेजा (सय्यिदुना) इब्राहीम पर और उन की आल पर । बेशक तू सराहा हुवा बुजुर्ग है ।

اللَّهُمَّ بَارِكْ عَلَى مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِ مُحَمَّدٍ كَمَا بَارَكْتَ عَلَى إِبْرَاهِيمَ وَعَلَى آلِ إِبْرَاهِيمَ إِنَّكَ حَمِيدٌ مَجِيدٌ

ऐ अल्लाह ! عَزَّوَجَلَّ बरकत नाज़िल कर (हमारे सरदार) मुहम्मद पर और उन की आल पर जिस तरह तूने बरकत नाज़िल की (सय्यिदुना) इब्राहीम और उन की आल पर बेशक तू सराहा हुवा बुजुर्ग है ।

फिर कोई सी दुआए मासूरा (कुरआनो हदीस की दुआ को दुआए मासूरा कहते हैं) पढ़िये, मसलन येह दुआ पढ़ लीजिये :

(اللَّهُمَّ) رَبَّنَا آتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَفِي الْآخِرَةِ حَسَنَةً وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ

(ऐ अल्लाह ! عَزَّوَجَلَّ) तरजमए कन्जुल ईमान : ऐ रब हमारे हमें दुन्या में भलाई दे और हमें आखिरत में भलाई दे और हमें अज़ाबे दोज़ख़ से बचा ।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर सुबह व शाम दस दस बार दुरूदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअत मिलेगी । (मुँजिअरुअह)

फिर नमाज़ ख़त्म करने के लिये पहले दाएं (सीधे) कन्धे की तरफ़ मुंह कर के اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ कहिये और इसी तरह बाएं (उल्टे) तरफ़ । अब नमाज़ ख़त्म हुई ।

(माख़ूज़ अज़ बहारे शरीअत, हिस्सा : 3, स. 72,75 वगैरा)

मुतवज्जेह हों !

इस्लामी बहनो ! दिये हुए इस तरीक़ाए नमाज़ में बा'ज बातें फ़र्ज़ हैं कि इस के बिगैर नमाज़ होगी ही नहीं, बा'ज वाजिब कि इस का जानबूझ कर छोड़ना गुनाह और तौबा करना और नमाज़ का फिर से पढ़ना वाजिब और भूल कर छूटने से सज्दए सहव वाजिब और बा'ज सुन्नते मुअक्कदा हैं कि जिस के छोड़ने की आदत बना लेना गुनाह है और बा'ज मुस्तहब हैं कि जिस का करना सवाब और न करना गुनाह नहीं ।

(ऐज़न, स. 75)

“या अल्लाह” के छ हुरूफ़ की निस्बत से नमाज़ की 6 शराइत

﴿1﴾ तह़ारत : नमाज़ी का बदन, लिबास और जिस जगह नमाज़ पढ़ रही है उस जगह का हर किस्म की नजासत से पाक होना ज़रूरी है ।

(श़रूअुल-व़ाफ़ी, ज 1, स 106)

﴿2﴾ सित्रे औरत : ❁ इस्लामी बहन के लिये इन पांच⁵ आ'ज़ा : मुंह की टिक्ली, दोनों हथेलियां और दोनों पाउं के तल्वों के इलावा सारा जिस्म छुपाना लाज़िमी है (दु'इसतार, ज 2, स 90)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़ा उस ने जफ़ा की। (عبدالرزاق)

(गिट्टों तक), पाउं (टख्खों तक) मुकम्मल ज़ाहिर हों तो एक मुफ़ता बिही क़ौल पर नमाज़ दुरुस्त है ❁ अगर ऐसा बारीक कपड़ा पहना जिस से बदन का वोह हिस्सा जिस का नमाज़ में छुपाना फ़र्ज़ है नज़र आए या जिल्द (या'नी चमड़ी) का रंग ज़ाहिर हो नमाज़ न होगी। (बहारे शरीअत, हिस्सा : 3, स. 48, ०८, ०९) ❁ आज कल बारीक कपड़ों का खाज बढ़ता जा रहा है, ऐसा कपड़ा पहनना जिस से सित्रे औरत न हो सके इलावा नमाज़ के भी हुराम है। (बहारे शरीअत, हिस्सा : 3, स. 48) ❁ दबीज़ (या'नी मोटा) कपड़ा जिस से बदन का रंग न चमक्ता हो मगर बदन से ऐसा चिपका हुवा हो कि देखने से उज़्व की हैअत (या'नी शक्लो सूरत और गोलाई वगैरा) मा'लूम होती हो। ऐसे कपड़े से अगर्चे नमाज़ हो जाएगी मगर उस उज़्व की तरफ़ दूसरों को निगाह करना जाइज़ नहीं। (رَدُّ الْمَحْتَرَجِ ج २ ص १०३) ऐसा लिबास लोगों के सामने पहनना मन्अ है और औरतों के लिये ब दरजए औला मुमानअत। (बहारे शरीअत, हिस्सा : 3, स. 48) ❁ बा'ज इस्लामी बहनें मलमल वगैरा की बारीक चादर नमाज़ में ओढ़ती हैं जिस से बालों की सियाही (कालक) चमक्ती है या ऐसा लिबास पहनती हैं जिस से आ'ज़ा का रंग नज़र आता है ऐसे लिबास में भी नमाज़ नहीं होती।

❁ 3 ❁ इस्तिक्बाले क़िब्ला : या'नी नमाज़ में क़िब्ला (का'बा) की तरफ़ मुंह करना। ❁ नमाज़ी ने बिला उज़्रे शर्ई जानबूझ कर क़िब्ले से सीना फेर दिया अगर्चे फ़ौरन ही क़िब्ले की तरफ़ हो गई नमाज़

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुझ पर रोजे जुमुआ दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअत करूंगा। (جمع الجوامع)

फ़ासिद हो गई (या'नी टूट गई) और अगर बिला क़स्द (या'नी बिला इरादा) फिर गई और ब क़दर तीन बार "سُبْحَانَ اللَّهِ" कहने के वक़फ़े से पहले वापस क़िब्ला रुख़ हो गई तो फ़ासिद न हुई। (या'नी न टूटी)

❁ अगर सिर्फ़ मुंह क़िब्ले से फ़िरा तो वाजिब है कि फ़ौरन क़िब्ले की तरफ़ मुंह कर ले और नमाज़ न जाएगी मगर बिला उज़्र (या'नी बिग़ैर मजबूरी के) ऐसा करना मक्रूहे तहरीमी है। (المرجع السابق) ❁ अगर ऐसी जगह पर हैं जहां क़िब्ले की शनाख़्त (या'नी पहचान) का कोई ज़रीआ नहीं है न कोई ऐसा मुसल्मान है जिस से पूछ कर मा'लूम किया जा सके तो तहरीरी कीजिये या'नी सोचिये और जिधर क़िब्ला होना दिल पर जमे उधर ही रुख़ कर लीजिये आप के हक़ में वोही क़िब्ला है।

❁ तहरीरी कर के नमाज़ पढ़ी बा'द में मा'लूम हुवा कि क़िब्ले की तरफ़ नमाज़ नहीं पढ़ी, नमाज़ हो गई लौटाने की हाज़त नहीं। (تَسْوِيرُ الْأَبْصَارِ ج ٢ ص ١٤٣) ❁ एक इस्लामी बहन तहरीरी कर के (सोच कर) नमाज़ पढ़ रही हो दूसरी उस की देखा देखी उसी सम्त नमाज़ पढ़ेगी तो नहीं होगी दूसरी के लिये भी तहरीरी करने का हुक्म है। (رَدُّ الْمَحْضَرِ، ج ٢، ص ١٤٣)

❁ 4 वक़्त : या'नी जो नमाज़ पढ़नी है उस का वक़्त होना ज़रूरी है। मसलन आज की नमाज़े अ़स् अदा करनी है तो येह ज़रूरी है कि अ़स् का वक़्त शुरूअ हो जाए अगर वक़्ते अ़स् शुरूअ होने से पहले ही पढ़ ली तो नमाज़ न होगी। ❁ निज़ामुल अवक़ात के

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरुदे पाक न पढ़ा उस ने जन्नत का रास्ता छोड़ दिया । (طبرانی)

नक़शे उमूमन मिल जाते हैं उन में जो मुस्तनद तौकीत दां (या'नी वक़्त का इल्म रखने के माहिर) के मुरत्तब कर्दा और उलमाए अहले सुन्नत के मुसद्क़ा (तस्दीक़ शुदा) हों उन से नमाज़ों के अवक़ात मा'लूम करने में सहूलत रहती है । الْحَمْدُ لِلَّهِ عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी की वेब साइट पर नमाज़ों और सहरी व इफ़्तार का निज़ामुल अवक़ात मौजूद है । ❁
इस्लामी बहनों के लिये अब्बल वक़्त में नमाज़े फ़ज़्र अदा करना मुस्तहब है और बाक़ी नमाज़ों में बेहतर येह है कि इस्लामी भाइयों की जमाअत का इन्तिज़ार करें जब जमाअत हो चुके फिर पढ़ें ।

(ذُرْمُخْتَار، ج ۲، ص ۳۰)

तीन³ अवक़ाते मक्रूहा : (1) तुलूए आप़ताब से ले कर कम अज़ कम बीस मिनट बा'द तक (2) गुरूबे आप़ताब से कम अज़ कम बीस मिनट पहले ❁ निस्फुन्नहार या'नी ज़हूवए कुब्रा से ले कर ज़वाले आप़ताब तक । इन तीनों अवक़ात में कोई नमाज़ जाइज़ नहीं न फ़र्ज़ न वाजिब न नफ़ल न क़ज़ा । हां अगर इस दिन की नमाज़े अ़स्स नहीं पढ़ी थी और मक्रूह वक़्त शुरूअ हो गया तो पढ़ ले अलबत्ता इतनी ताख़ीर करना ह़राम है ।

(عالمگیری ج ۱ ص ۵۲، ذُرْمُخْتَار، رَدُّ الْمُخْتَار ج ۲ ص ۳۷، 22، 3، स. 22, हिस्सा : 3, बहारे शरीअत, हिस्सा :

नमाज़े अ़स्स के दौरान मक्रूह वक़्त आ जाए तो ?

गुरूबे आप़ताब से कम से कम 20 मिनट क़ब्ल नमाज़े अ़स्स

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत करो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे लिये पाकीज़गी का बाइस है। (अबुयुसुफ़)

का सलाम फिर जाना चाहिये जैसा के मेरे आका आ'ला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : “नमाज़े अस्स में जितनी ताख़ीर हो अफ़ज़ल है जब कि वक्ते कराहत से पहले पहले ख़त्म हो जाए।” (फ़तावा रज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 5, स. 156) फिर अगर उस ने एहतियात की और नमाज़ में तत्वील की (या'नी तूल दिया) कि वक्ते कराहत वस्ते (या'नी दौराने) नमाज़ में आ गया जब भी इस पर ए'तिराज़ नहीं।” (ऐज़न, स. 139)

﴿5﴾ **निय्यत** : निय्यत दिल के पक्के इरादे का नाम है।

﴿1﴾ ज़बान से **निय्यत** करना ज़रूरी नहीं अलबत्ता दिल में **निय्यत** हाज़िर होते हुए ज़बान से कह लेना बेहतर है।

﴿2﴾ अरबी में कहना भी ज़रूरी नहीं उर्दू वगैरा किसी भी ज़बान में कह सकते हैं। (ملخص از دُرِّ مُخْتَار، ج ۲، ص ۱۱۳) ﴿3﴾

निय्यत में ज़बान से कहने का ए'तिबार नहीं या'नी अगर दिल में मसलन जोहर की **निय्यत** हो और ज़बान से लफ़्जे अस्स निकला तब भी जोहर की नमाज़ हो गई। (أَيْضاً ص ۱۱۲) ﴿4﴾

निय्यत का अदना दरजा यह है कि अगर उस वक्ते कोई पूछे कि कौन सी नमाज़ पढ़ती हो ? तो फ़ौरन बता दे। अगर हालत ऐसी है कि सोच कर बताएगी तो नमाज़ न हुई। (أَيْضاً ص ۱۱۳) ﴿5﴾

फ़र्ज़ नमाज़ में **निय्यते फ़र्ज़** भी ज़रूरी है मसलन दिल में यह **निय्यत** हो कि आज की जोहर की फ़र्ज़ नमाज़ पढ़ती हूँ। (دُرِّ مُخْتَار، رَدُّ الْمُخْتَار ج ۲ ص ۱۱۷) ﴿6﴾

﴿7﴾

﴿8﴾

﴿9﴾

﴿10﴾

﴿11﴾

﴿12﴾

﴿13﴾

﴿14﴾

﴿15﴾

﴿16﴾

﴿17﴾

﴿18﴾

﴿19﴾

﴿20﴾

﴿21﴾

﴿22﴾

﴿23﴾

﴿24﴾

﴿25﴾

﴿26﴾

﴿27﴾

﴿28﴾

﴿29﴾

﴿30﴾

﴿31﴾

﴿32﴾

﴿33﴾

﴿34﴾

﴿35﴾

﴿36﴾

﴿37﴾

﴿38﴾

﴿39﴾

﴿40﴾

﴿41﴾

﴿42﴾

﴿43﴾

﴿44﴾

﴿45﴾

﴿46﴾

﴿47﴾

﴿48﴾

﴿49﴾

﴿50﴾

﴿51﴾

﴿52﴾

﴿53﴾

﴿54﴾

﴿55﴾

﴿56﴾

﴿57﴾

﴿58﴾

﴿59﴾

﴿60﴾

﴿61﴾

﴿62﴾

﴿63﴾

﴿64﴾

﴿65﴾

﴿66﴾

﴿67﴾

﴿68﴾

﴿69﴾

﴿70﴾

﴿71﴾

﴿72﴾

﴿73﴾

﴿74﴾

﴿75﴾

﴿76﴾

﴿77﴾

﴿78﴾

﴿79﴾

﴿80﴾

﴿81﴾

﴿82﴾

﴿83﴾

﴿84﴾

﴿85﴾

﴿86﴾

﴿87﴾

﴿88﴾

﴿89﴾

﴿90﴾

﴿91﴾

﴿92﴾

﴿93﴾

﴿94﴾

﴿95﴾

﴿96﴾

﴿97﴾

﴿98﴾

﴿99﴾

﴿100﴾

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़े तो वोह लोगों में से कन्ज़ूस तरीन शख्स है। (مسند احمد)

येह है कि नफ़ल, सुन्नत और तरावीह में मुत्लक़ नमाज़ की निय्यत काफ़ी है मगर एहतियात येह है के तरावीह में तरावीह या सुन्नते वक़्त की निय्यत करे और बाक़ी सुन्नतों में सुन्नत या मुस्तफ़ा जाने रहमत صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की मुताबअत (या'नी पैरवी) की निय्यत करे, इस लिये कि बा'ज मशाइखे किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام इन में मुत्लक़ नमाज़ की निय्यत को नाकाफ़ी क़रार देते हैं। (مُنِيَةُ الْمُصَلِّي ص २२०) ❁ नमाजे नफ़ल में मुत्लक़ नमाज़ की निय्यत काफ़ी है अगर्चे नफ़ल निय्यत में न हो। (دُرُ الْمُخْتَار، رَدُّ الْمُخْتَار ج २، ص ११६) ❁ येह निय्यत कि मुंह मेरा क़िब्ला शरीफ़ की तरफ़ है शर्त नहीं। (دُرُ الْمُخْتَار، ج २، ص १२९) ❁ वाजिब में वाजिब की निय्यत करना ज़रूरी है और उसे मुअय्यन भी कीजिये मसलन नज़्र, नमाजे बा'दे तवाफ़ (वाजिबुत्तवाफ़) या वोह नफ़ल नमाज़ जिस के टूट जाने से या जिस को तोड़ डालने से उस की क़ज़ा वाजिब हो जाती है। ❁ सज्दए शुक्र अगर्चे नफ़ल है मगर उस में भी निय्यत ज़रूरी है मसलन दिल में येह निय्यत हो कि मैं सज्दए शुक्र करती हूँ। (دُرُ الْمُخْتَار ج २، ص १२०) ❁ सज्दए सहव में भी “साहिबे नहरुल फ़ाइक़” के नज़दीक निय्यत ज़रूरी है। (إِيضًا) या'नी उस वक़्त दिल में येह निय्यत हो कि मैं सज्दए सहव करती हूँ।

❁ 6 ❁ तक्बीरे तहरीमा : या'नी नमाज़ को “الله أكبر” कह कर शुरूअ करना ज़रूरी है। (बहारे शरीअत, हिस्सा : 3, स. 77)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : तुम जहाँ भी हो मुझ पर दुरूद पढ़ो कि तुम्हारा दुरूद मुझ तक पहुँचता है। (طبرانی)

“बिस्मिल्लाह” के सात हुरूफ़ की निस्बत से नमाज़ के 7 फ़राइज़

﴿1﴾ तक्बीरे तहरीमा ﴿2﴾ क़ियाम ﴿3﴾ क़िराअत ﴿4﴾ रुकूअ ﴿5﴾ सुजूद ﴿6﴾ का'दए अख़ीरह ﴿7﴾ खुरूजे बिसुन्द्ही ।

(दुर्मुख्तार, ज २, स १०८-१०९)

﴿1﴾ तक्बीरे तहरीमा : दर हकीकत तक्बीरे तहरीमा (या'नी तक्बीरे ऊला) शराइते नमाज़ में से है मगर नमाज़ के अफ़आल से बिल्कुल मिली हुई है इस लिये इसे नमाज़ के फ़राइज़ से भी शुमार किया गया है । ﴿عَلِيٍّ ر ١٥٦﴾ जो इस्लामी बहन तक्बीर के तलफ़फ़ुज़ पर क़ादिर न हो मसलन गूंगी हो या किसी और वजह से ज़बान बन्द हो गई हो उस पर तलफ़फ़ुज़ लाज़िम नहीं, दिल में इरादा काफ़ी है । ﴿दुर्मुख्तार, ज २, स २२०﴾ लफ़जे अल्लाह को “आल्लाह” या अक्बर को “आक्बर” या “अक्बार” कहा नमाज़ न होगी बल्कि अगर इन के मा'नए फ़ासिदा समझ कर जानबूझ कर कहे तो काफ़िर है ।

(दुर्मुख्तार, ज २, स २१८)

﴿2﴾ क़ियाम : ﴿كَمِيٍّ﴾ कमी की जानिब क़ियाम की हद यह है कि हाथ बढ़ाए तो घुटनों तक न पहुँचें और पूरा क़ियाम यह है कि सीधी खड़ी हो । ﴿دُورُ الْمُخْتَارِ، رُدُّ الْمُخْتَارِ ج ٢ ص ١٦٣﴾ क़ियाम इतनी देर तक है जितनी देर तक क़िराअत है । ब क़दरे क़िराअते फ़र्ज़ क़ियाम भी फ़र्ज़, ब क़दरे वाजिब वाजिब, और ब क़दरे सुन्नत सुन्नत । ﴿أَيْضًا﴾ फ़र्ज़,

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो लोग अपनी मजलिस से अल्लाह के जिक्र और नबी पर दुरूद शरीफ़ पढ़े बिगैर उठ गए तो वोह बदबूदार मुर्दार से उठे । (شعب الايمان)

वित्र और सुन्नते फ़ज़्र में क़ियाम फ़र्ज़ है । अगर बिला उज़्रे सहीह कोई येह नमाज़ें बैठ कर अदा करेगी तो न होंगी । (أَيْضاً) ❁ खड़ी होने से महज़ कुछ तकलीफ़ होना उज़्र नहीं बल्कि क़ियाम उस वक़्त साक़ित होगा कि खड़ी न हो सके या सज्दा न कर सके या खड़ी होने या सज्दा करने में ज़ख़्म बहता है या सित्र खुलता है या क़िराअत से मजबूरे महज़ हो जाती है । यूंही खड़ी हो सकती है मगर उस से मरज़ में ज़ियादती होती है या देर में अच्छी होगी या ना क़ाबिले बरदाशत तकलीफ़ होगी तो बैठ कर पढ़े । (عَنْهُ) ❁ अगर अ़सा (या बैसाखी) ख़ादिमा या दीवार पर टेक लगा कर खड़ी होना मुम्किन है तो फ़र्ज़ है कि खड़ी हो कर पढ़े । (عَنْهُ) ❁ अगर सिर्फ़ इतना खड़ा होना मुम्किन है कि खड़े खड़े तकबीरे तहरीमा कह लेगी तो फ़र्ज़ है कि खड़ी हो कर اللهُ كَبِيرٌ कह ले और अब खड़े रहना मुम्किन नहीं तो बैठ जाए । (أَيْضاً ص २६२)

ख़बरदार ! बा 'ज़ इस्लामी बहनें मा 'मूली सी तकलीफ़ (या ज़ख़्म) की वजह से फ़र्ज़ नमाज़ें बैठ कर पढ़ती हैं वोह इस हुक्मे शर्इ पर ग़ौर फ़रमाएं, जितनी नमाज़ें कुदरते क़ियाम के बा वुजूद बैठ कर अदा की हों उन को लौटाना फ़र्ज़ है । इसी तरह वैसे ही खड़ी न रह सकती थीं मगर अ़सा या दीवार या ख़ादिमा के सहारे खड़ी होना मुम्किन था मगर बैठ कर पढ़ती रहीं तो उन की भी नमाज़ें न हुईं उन का लौटाना फ़र्ज़ है ।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर रोज़े जुमुआ दो सो बार दुरूदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआफ़ होंगे । (جمع الدعوات)

❁ खड़े हो कर पढ़ने की कुदरत हो जब भी बैठ कर नफ़ल पढ़ सकते हैं मगर खड़े हो कर पढ़ना अफ़ज़ल है कि हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन अम्र رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है, रहमते आलम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम, रसूले मुहूतशम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इर्शाद फ़रमाया : बैठ कर पढ़ने वाले की नमाज़ खड़े हो कर पढ़ने वाले की निस्फ़ (या'नी आधा सवाब) है । (صحيح مسلم، ص ۳۷۰ حديث ۷۳۰) और उज़्र (मजबूरी) की वजह से बैठ कर पढ़े तो सवाब में कमी न होगी । येह जो आज कल आम रवाज पड़ गया है कि नफ़ल बैठ कर पढ़ा करते हैं ब ज़ाहिर येह मा'लूम होता है कि शायद बैठ कर पढ़ने को अफ़ज़ल समझते हैं ऐसा है तो उन का खयाल ग़लत है । वित्र के बा'द जो दो रकअत नफ़ल पढ़ते हैं उन का भी येही हुक्म है कि खड़े हो कर पढ़ना अफ़ज़ल है ।

(बहारे शरीअत, हिस्सा : 4, स. 19)

❁ (3) क़िराअत : ❁ क़िराअत इस का नाम है कि तमाम हुरूफ़ मख़ारिज से अदा किये जाएं कि हर हर्फ़ ग़ैर से सहीह तौर पर मुस्ताज़ (नुमायां) हो जाए । (عالمگیری ج ۱ ص ۶۹) ❁ आहिस्ता पढ़ने में भी येह ज़रूरी है कि खुद सुन ले । (أَيْضاً) ❁ अगर हुरूफ़ तो सहीह अदा किये मगर इतने आहिस्ता कि खुद न सुना और कोई रुकावट मसलन शोरो गुल या सिक्ले समाअत (या'नी बहरा पन या ऊंचा सुनने का मरज़) भी नहीं तो नमाज़ न हुई । (أَيْضاً) ❁ अगर्वे खुद सुनना ज़रूरी है मगर येह भी एह्तियात रहे कि सिरी (या'नी आहिस्ता क़िराअत वाली) नमाज़ों में

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुझ पर दुरूद शरीफ़ पढ़ो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम पर रहमत भेजेगा । (अबुसूद)

किराअत की आवाज़ दूसरों तक न पहुंचे, इसी तरह तस्बीहात वगैरा में भी खयाल रखिये ❁ नमाज़ के इलावा भी जहां कुछ कहना या पढ़ना मुक़र्र किया है इस से भी येही मुराद है कि कम अज़ कम इतनी आवाज़ हो कि खुद सुन सके मसलन जानवर ज़ब्ह करने के लिये अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का नाम लेने में इतनी आवाज़ ज़रूरी है कि खुद सुन सके । (अय़ुष) दुरूद शरीफ़ वगैरा अवराद पढ़ते हुए भी कम अज़ कम इतनी आवाज़ होनी चाहिये कि खुद सुन सके जभी पढ़ना कहलाएगा ।

❁ मुत्लक़न एक आयत पढ़ना फ़र्ज़ की दो रकअतों में और वित्र, सुनन और नवाफ़िल की हर रकअत में इमाम व मुन्फ़रिद (या'नी तन्हा नमाज़ पढ़ने वाले) पर फ़र्ज़ है । (मराफ़ी الفّلاح ص २२६) ❁ फ़र्ज़ की किसी रकअत में किराअत न की या फ़क़त एक में की नमाज़ फ़ासिद हो गई । (عالمگیری ج १ ص ६९) ❁ फ़र्ज़ों में ठहर ठहर कर किराअत करे और तरावीह में मुतवस्सित (या'नी दरमियाना) अन्दाज़ पर और रात के नवाफ़िल में जल्द पढ़ने की इजाज़त है मगर ऐसा पढ़े कि समझ में आ सके या'नी कम से कम मद का जो दरजा कारियों ने रखा है उस को अदा करे वरना हराम है, इस लिये कि तरतील से (या'नी ठहर ठहर कर) कुरआन पढ़ने का हुक्म है । (فَرْمُغْنَار، رَدُّ الْمُحْتَار ج २ ص ३२०)

हुरूफ़ की सहीह अदाएगी ज़रूरी है

अक्सर लोग “ض ز ظ” और “ط ت ث س ص ش ء ع ه ح” में कोई फ़र्क नहीं करते । याद रखिये ! हुरूफ़ बदल जाने से अगर मा'ना फ़ासिद हो

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग़िफ़रत है । (ابن عساکر)

गए तो नमाज़ न होगी । (बहारे शरीअत, हिस्सा : 3, स. 125) मसलन जिस ने “سُبْحَانَ رَبِّيَ الْعَظِيمِ” में “عَظِيمِ” को “عَزِيمِ” (ز के बजाए ظ) पढ़ दिया नमाज़ जाती रही लिहाज़ा जिस से “عَظِيمِ” सहीह अदा न हो वोह “سُبْحَانَ رَبِّيَ الْكَرِيمِ” पढ़े ।

(क़ानूने शरीअत, हिस्सा अव्वल, स. 105, २६२ ص २ (ذُالمُحْتَار ج २))

ख़बरदार ! ख़बरदार ! ख़बरदार !

जिस से हुरूफ़ सहीह अदा नहीं होते उस के लिये थोड़ी देर मशक़ कर लेना काफ़ी नहीं बल्कि लाज़िम है कि इन्हें सीखने के लिये रात दिन पूरी कोशिश करे और वोह आयतें पढ़े जिस के हुरूफ़ सहीह अदा कर सकती हो । और येह सूरत ना मुम्किन हो तो ज़मानए कोशिश में उस की नमाज़ हो जाएगी । आज कल काफ़ी लोग इस मरज़ में मुब्तला हैं कि न उन्हें कुरआन सहीह पढ़ना आता है न सीखने की कोशिश करते हैं । याद रखिये ! इस तरह नमाज़ें बरबाद होती हैं । (बहारे शरीअत, हिस्सा : 3, स. 138, 139 मुलख़ब़सन)

जिस ने रात दिन कोशिश की मगर सीखने में नाकाम रही जैसे बा'ज इस्लामी बहनों से सहीह हुरूफ़ अदा होते ही नहीं उस के लिये लाज़िमी है कि रात दिन सीखने की कोशिश करे और ज़मानए कोशिश में वोह मा'ज़ूर है इस की नमाज़ हो जाएगी !

(माखूज़ अज़ फ़तावा रज़विyya, जि. 6, स. 254)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने किताब में मुझ पर दुरुदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फिरिश्ते उस के लिये इस्तिफ़ार (या'नी बख़िश की दुआ) करते रहेंगे। (طبرانی)

मद्रसतुल मदीना

इस्लामी बहनो ! आप ने क़िराअत की अहम्मिय्यत का बख़ूबी अन्दाज़ा लगा लिया होगा। वाक़ेई वोह मुसल्मान बड़े बदनसीब हैं जो दुरुस्त कुरआन शरीफ़ पढ़ना नहीं सीखते। اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ तब्लीगे कुरआनो सुन्नत की ग़ैर सियासी तहरीक “दा'वते इस्लामी” के बे शुमार मदारिस बनाम “मद्रसतुल मदीना” काइम हैं इन में मदनी मुन्नो और मदनी मुन्नियों को कुरआने पाक हिफ़ज़ व नाज़िरा की मुफ़्त ता'लीम दी जाती है। नीज़ बालिगात को हुकूफ़ की सहीह अदाएगी के साथ साथ सुन्नतो की तरबिय्यत भी दी जाती है। काश ! ता'लीमे कुरआन की घर घर धूम पड़ जाए। काश ! हर वोह इस्लामी बहन जो सहीह कुरआन शरीफ़ पढ़ना जानती है वोह दूसरी इस्लामी बहन को सिखाना शुरू कर दे। اِنْ شَاءَ اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ फिर तो हर तरफ़ ता'लीमे कुरआन की बहार आ जाएगी और सीखने सिखाने वालों के लिये اِنْ شَاءَ اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ सवाब का अम्बार लग जाएगा।

येही है आरजू ता'लीमे कुरआं आम हो जाए

तिवालत शौक से करना हमारा काम हो जाए

﴿4﴾ रुकूअ : रुकूअ में थोड़ा झुकिये या'नी इतना कि घुटनों पर हाथ रख दीजिये जोर न दीजिये और घुटनों को न पकड़िये और उंग्लियां मिली हुई और पाउं झुके हुए रखिये इस्लामी भाइयों की तरह ख़ूब सीधे न करें।

(عالمگیری ج ۱ ص ۷۴ وغیره)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुझ पर एक दिन में 50 बार दुरूदे पाक पढ़े क़ियामत के दिन मैं उस से मुसाफ़हा करूँ (या'नी हाथ मिलाऊँ)गा । (ابن بشكوال)

﴿5﴾ **सुजूद** : ﷻ सुलताने मक्कए मुकर्रमा, ताजदारे मदीनाए मुनव्वरह का फ़रमाने अज़मत निशान है : मुझे हुक्म हुवा कि सात हड्डियों पर सज्दा करूँ, मुंह और दोनों हाथ और दोनों घुटने और दोनों पन्जे और येह हुक्म हुवा कि कपड़े और बाल न समेटूँ ।
 (صحيح مسلم ص ٢٥٣ حديث ٤٩٠) ﷻ हर रकअत में दो बार सज्दा फ़र्ज है ।
 (बहारे शरीअत, हिस्सा : 3, स. 81) ﷻ सज्दे में पेशानी जमना ज़रूरी है । जमने के मा'ना येह हैं कि ज़मीन की सख़्ती महसूस हो अगर किसी ने इस तरह सज्दा किया कि पेशानी न जमी तो सज्दा न होगा ।
 (أيضاً ص ٨١, ٨٢) ﷻ किसी नर्म चीज़ मसलन घास (जैसा कि बाग़ की हरियाली) रूई या (फ़ोम के गदले या) क़ालीन (CARPET) वगैरा पर सज्दा किया तो अगर पेशानी जम गई या'नी इतनी दबी कि अब दबाने से न दबे तो सज्दा हो जाएगा वरना नहीं । (عالمگیری ج ١ ص ٧٠) ﷻ कमानीडार (या'नी स्प्रिंग वाले) गद्दे पर पेशानी ख़ूब नहीं जमती लिहाज़ा नमाज़ न होगी ।
 (बहारे शरीअत, हिस्सा : 3, स. 82)

कारपेट के नुक़सानात

कारपेट से एक तो सज्दे में दुश्वारी होती है, नीज़ सहीह मा'नों में इस की सफ़ाई नहीं हो पाती लिहाज़ा धूल वगैरा जम्अ होती और जरासीम परवरिश पाते हैं, सज्दे में सांस के ज़रीए जरासीम, गर्द वगैरा अन्दर दाख़िल हो जाते हैं, कारपेट का रुवां फेफ़ड़ों में जा कर चिपक जाने की सूरत में مَعَادُ اللهِ عَزَّوَجَلَّ केन्सर का ख़तरा पैदा होता है । बसा

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : बरोज़े क़ियामत लोगों में से मेरे क़रीब तर वोह होगा जिस ने दुन्या में मुज़्ज़ पर ज़ियादा दुरूदे पाक पढे होंगे । (ترمذی)

अवकात बच्चे कारपेट पर कै या पेशाब वगैरा कर डालते, बिल्लियां गन्दगी करतीं, चूहे और छिपकलियां मेंगिनयां करते हैं । कारपेट नापाक हो जाने की सूरत में उमूमन पाक करने की ज़हमत भी नहीं की जाती । काश ! कारपेट बिछाने का रवाज ही ख़त्म हो जाए ।

कारपेट पाक करने का तरीका

कारपेट (CARPET) का नापाक हिस्सा एक बार धो कर लटका दीजिये यहां तक कि पानी टपकना मौकूफ़ हो जाए फिर दोबारा धो कर लटकाइये हत्ता कि पानी टपकना बन्द हो जाए फिर तीसरी बार इसी तरह धो कर लटका दीजिये जब पानी टपकना बन्द हो जाएगा तो पाक हो जाएगा । चटाई, चमड़े के चप्पल और मिट्टी के बरतन वगैरा जिन चीजों में पतली नजासत ज़ब्ब हो जाती हो इसी तरीके पर पाक कीजिये । ऐसा नाजुक कपड़ा कि निचोड़ने से फट जाने का अन्देशा हो वोह भी इसी तरह पाक कीजिये । अगर नापाक कारपेट या कपड़ा वगैरा बहते पानी में (मसलन दरिया, नहर में या पाइप या टेंटी के जारी पानी के नीचे) इतनी देर तक रख छोड़ें के ज़न्ने ग़ालिब हो जाए कि पानी नजासत को बहा कर ले गया होगा तब भी पाक हो जाएगा । कारपेट पर बच्चा पेशाब कर दे तो उस जगह पर पानी के छींटे मार देने से वोह पाक नहीं होता । याद रहे ! एक दिन के बच्चे या बच्ची का पेशाब भी नापाक होता है । (तफ़्सीली मा'लूमात के लिये मक्तबतुल मदीना की मत्बूआ बहारे शरीअत, हिस्सा 2 सफ़हा 118 ता 127 का मुतालआ फ़रमा लीजिये ।)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर एक मरतबा दुरूद पढ़ा अल्लाह उस पर दस रहमतें भेजता और उस के नामए आ'माल में दस नेकियां लिखता है। (ترمذی)

﴿6﴾ का 'दए अखीरह : या'नी नमाज़ की रकअतें पूरी करने के बा'द इतनी देर तक बैठना कि पूरी तशहहुद (या'नी पूरी अत्तहिय्यात) रसूलुहू तक पढ़ ली जाए फ़र्ज़ है। (عالمگیری ج ۱ ص ۷۰) चार रकअत वाले फ़र्ज़ में चौथी रकअत के बा'द का 'दह न किया तो जब तक पांचवीं का सज्दा न किया हो बैठ जाए और अगर पांचवीं का सज्दा कर लिया या फ़ज़्र में दूसरी पर नहीं बैठी तीसरी का सज्दा कर लिया या मग़रिब में तीसरी पर न बैठी और चौथी का सज्दा कर लिया इन सब सूरतों में फ़र्ज़ बातिल हो गए। मग़रिब के इलावा और नमाज़ों में एक रकअत मज़ीद मिला ले। (عُنَيْه، ص ۲۹۰)

﴿7﴾ ख़ुरूजे बिसुन्डही : या'नी का'दए अखीरह के बा'द सलाम या बातचीत वगैरा कोई ऐसा फ़े'ल क़स्दन करना जो नमाज़ से बाहर कर दे। मगर सलाम के इलावा कोई फ़े'ल क़स्दन (या'नी इरादतन) पाया गया तो नमाज़ वाजिबुल इआदा होगी। और अगर बिला क़स्द (बिला इरादा) कोई इस तरह का फ़े'ल पाया गया तो नमाज़ बातिल।

(बहारे शरीअत, हिस्सा : 3, स. 84)

“सय्यिदतुना सक्वीना बिन्ते शहन्शाहे क़रबला” के पच्चीस हुरूफ़ की निस्बत से तक्वीबन 25 वाजिबात

﴿1﴾ तक्बीरे तहरीमा में लफ़ज़ “اللَّهُ أَكْبَرُ” कहना। ﴿2﴾ फ़र्ज़ों की तीसरी और चौथी रकअत के इलावा बाकी तमाम नमाज़ों की हर रकअत में अल हम्द शरीफ़ पढ़ना, सूरात मिलाना या कुरआने पाक की

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : शबे जुमुआ और रोज़े मुझ पर दुरूद की कसरत कर लिया करो जो ऐसा करेगा क़ियामत के दिन मैं उस का शफ़ीअ व गवाह बनूंगा । (شعب الايمان)

एक बड़ी आयत जो छोटी तीन आयतों के बराबर हो या तीन छोटी आयतें पढ़ना ﴿3﴾ अल हम्द शरीफ़ का सूत्र से पहले पढ़ना ﴿4﴾ अल हम्द शरीफ़ और सूत्र के दरमियान “आमीन” और “بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ” के इलावा कुछ और न पढ़ना ﴿5﴾ क़िराअत के फ़ौरन बा’द रुकूअ करना ﴿6﴾ एक सज्दे के बा’द बित्तरतीब दूसरा सज्दा करना । ﴿7﴾ ता’दीले अरकान या’नी रुकूअ, सुजूद, क़ौमा और जल्सा में कम अज़ कम एक बार “سُبْحَانَ اللَّهِ” कहने की मिक्दार ठहरना ﴿8﴾ क़ौमा या’नी रुकूअ से सीधी खड़ी होना (बा’ज इस्लामी बहनें कमर सीधी नहीं करतीं इस तरह उन का वाजिब छूट जाता है) ﴿9﴾ जल्सा या’नी दो सज्दों के दरमियान सीधी बैठना (बा’ज इस्लामी बहनें जल्द बाज़ी की वजह से बराबर सीधे बैठने से पहले ही दूसरे सज्दे में चली जाती हैं इस तरह उन का वाजिब तर्क हो जाता है चाहे कितनी ही जल्दी हो सीधा बैठना लाज़िमी है वरना नमाज़ मक्रूहे तहरीमी वाजिबुल इअ़ादा होगी) ﴿10﴾ का’दए ऊला वाजिब है अगरचे नमाज़े नफ़्ल हो (नफ़्ल में चार या इस से ज़ियादा रकअतें एक सलाम के साथ पढ़ना चाहें तब हर दो दो रकअत के बा’द का’दा करना फ़र्ज़ है और हर का’दा “का’दए अख़ीरह” है अगर का’दा न किया और भूल कर खड़ी हो गई तो जब तक उस रकअत का सज्दा न कर लें लौट आएँ और सज्दए सहव करें ।) ﴿11﴾ अगर नफ़्ल की तीसरी रकअत का सज्दा कर लिया तो चार पूरी कर के सज्दए सहव करे । सज्दए सहव इस लिये वाजिब

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुझ पर एक बार दुरुद पढ़ता है अल्लाह उस के लिये एक क़ीरात अन्न लिखता है और क़ीरात उहुद पहाड़ जितना है। (عیبارق)

हुवा कि अगर्चे नफ़ल में हर दो रकअत के बा'द का'दा फ़र्ज़ है मगर तीसरी या पांचवीं (على هذا القياس) या'नी इस पर क़ियास करते हुए) रकअत का सज्दा करने के बा'द का'दए ऊला फ़र्ज़ के बजाए वाजिब हो गया।

﴿12﴾ फ़र्ज़, वित्र और सुन्नते मुअक्कदा में तशह्हुद (या'नी अत्तहिय्यात) के बा'द कुछ न बढ़ाना

﴿13﴾ दोनों का'दों में “तशह्हुद” मुकम्मल पढ़ना। अगर एक लफ़ज़ भी छूटा तो वाजिब तर्क हो जाएगा और सज्दए सहव वाजिब होगा।

﴿14﴾ फ़र्ज़, वित्र और सुन्नते मुअक्कदा के का'दए ऊला में तशह्हुद के बा'द अगर बे ख़याली में “اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ” या “اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى سَيِّدِنَا” कह लिया तो सज्दए सहव वाजिब हो गया और अगर जानबूझ कर कहा तो नमाज़ लौटाना वाजिब है।

﴿15﴾ दोनों तरफ़ सलाम फेरते वक़्त लफ़ज़ “دَرْ مُخْتَار، ج ٢، ص ٢٦٩” कहना दोनों बार वाजिब है। लफ़ज़ “عَلَيْكُمْ” वाजिब नहीं बल्कि सुन्नत है।

﴿16﴾ वित्र में तक्बीरे कुनूत कहना

﴿17﴾ वित्र में दुआए कुनूत पढ़ना।

﴿18﴾ हर फ़र्ज़ व वाजिब का उस की जगह होना

﴿19﴾ रुकूअ हर रकअत में एक ही बार करना

﴿20﴾ सज्दा हर रकअत में दो ही बार करना

﴿21﴾ दूसरी रकअत से पहले का'दा न करना

﴿22﴾ चार रकअत वाली नमाज़ में तीसरी रकअत पर का'दा न करना

﴿23﴾ आयते सज्दा पढ़ी हो तो सज्दए तिलावत करना

﴿24﴾ सज्दए सहव वाजिब हुवा हो तो सज्दए सहव करना

﴿25﴾ दो फ़र्ज़ या दो वाजिब

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जब तुम रसूलों पर दुरूद पढ़ो तो मुझ पर भी पढ़ो, बेशक मैं तमाम जहानों के रब का रसूल हूँ। (جمع الجوامع)

या फ़र्ज़ व वाजिब के दरमियान तीन तस्बीह की क़दर (या'नी तीन बार "سُبْحَانَ اللَّهِ" कहने की मिक्दार) वक़फ़ा न होना।

(बहारे शरीअत, हिस्सा : 3, स. 85, 87, २०३-१८६ص २, رَدُّ الْمُحْتَرَجِ)

“उम्मे हानी” के छ हुरूफ़ की निस्बत से तक्बीरे तहरीमा की 6 सुन्नतें

﴿1﴾ तक्बीरे तहरीमा के लिये हाथ उठाना ﴿2﴾ हाथों की उंगलियां अपने हाल पर (Normal) छोड़ना, या'नी न बिल्कुल मिलाइये न इन में तनाव पैदा कीजिये ﴿3﴾ हथेलियों और उंगलियों का पेट किब्ला रू होना ﴿4﴾ तक्बीर के वक़्त सर न झुकाना ﴿5﴾ तक्बीर शुरूअ करने से पहले ही दोनों हाथ कन्धों तक उठा लेना ﴿6﴾ तक्बीर के फ़ौरन बा'द हाथ बांध लेना सुन्नत है (तक्बीरे ऊला के बा'द फ़ौ'रन बांध लेने के बजाए हाथ लटका देना या कोहनियां पीछे की तरफ़ झुलाना, सुन्नत से हट कर है)

(बहारे शरीअत, हिस्सा : 3, स. 88, 90)

“अ़दीजतुल कुब्रा” के ग्यारह हुरूफ़ की निस्बत से क़ियाम की 11 सुन्नतें

﴿1﴾ उल्टी हथेली सीने पर छाती के नीचे रख कर उस के ऊपर सीधी हथेली रखिये। (غدير، ص ३००) ﴿2﴾ पहले सना ﴿3﴾ फिर तअव्वुज़ या'नी اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ पढ़ना ﴿4﴾ फिर तस्मिया या'नी بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ पढ़ना ﴿5﴾ इन तीनों को एक दूसरे के फ़ौरन बा'द कहना ﴿6﴾ इन सब को आहिस्ता पढ़ना ﴿7﴾ आमीन कहना ﴿8﴾

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुझ पर दुरूद पढ़ कर अपनी मजालिस को आरास्ता करो कि तुम्हारा दुरूद पढ़ना बरोजे क़ियामत तुम्हारे लिये नूर होगा । (فردوس الاعجاز)

इस को भी आहिस्ता कहना ﴿9﴾ तक्बीरे ऊला के फ़ौरन बा'द सना पढ़ना ﴿10﴾ तअव्वुज़ सिर्फ़ पहली रकअत में है और ﴿11﴾ तस्मिया हर रकअत के शुरूअ में सुन्नत है । (बहारे शरीअत, हिस्सा : 3, स. 90, 91)

“मुहम्मद” के चार हुरूफ़ की निस्बत से रुकूअ की 4 सुन्नतें

﴿1﴾ रुकूअ के लिये اللهُ أَكْبَرُ कहना । (बहारे शरीअत, हिस्सा : 3, स. 93)

﴿2﴾ इस्लामी बहन के लिये रुकूअ में घुटनों पर हाथ रखना और उंगलियां कुशादा न करना सुन्नत है (ऐज़न) ﴿3﴾ रुकूअ में थोड़ा झुके या'नी सिर्फ़ इतना कि हाथ घुटनों तक पहुंच जाएं पीठ सीधी न करे और घुटनों पर जोर न दे फ़क़त हाथ रख दे और हाथों की उंगलियां मिली हुई रखे और पाउं झुके हुए रखे इस्लामी भाइयों की तरह ख़ूब सीधे न कर दे (عالمگیری، ج 1 ص 74) ﴿4﴾ बेहतर यह है कि जब रुकूअ के लिये झुकना शुरूअ करे اللهُ أَكْبَرُ कहती हुई रुकूअ को जाए और ख़त्मे रुकूअ पर तक्बीर ख़त्म करे (أيضاً) इस मसाफ़त (या'नी क़ियाम से रुकूअ में पहुंचने के फ़ासिले) को पूरा करने के लिये अल्लाह की “ل” को बढ़ाए अक्बर की “ب” वगैरा किसी हर्फ़ को न बढ़ाए । (बहारे शरीअत, हिस्सा : 3, स. 93) अगर आल्लाहु या आक्बर या अक्बार कहा तो नमाज़ फ़ासिद हो जाएगी । (ذُرْمُخْتَار، رَدُّ الْمُخْتَار، ج 2 ص 218) रुकूअ में तीन बार سُبْحَانَ رَبِّيَ الْعَظِيمِ कहना । (बहारे शरीअत, हिस्सा : 3, स. 93)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत करो बेशक यह तुम्हारे लिये त्हा़रत है। (ابو یسلیٰ)

“शुब्हत” के तीन हुरूफ़ की निस्बत से क़ौमा की 3 सुन्नतें

﴿1﴾ रुकूअ़ से जब उठें तो हाथ लटका दीजिये
और سَمِعَ اللهُ لِمَنْ حَمِدَهُ और (عالمگیری، ج ۱ ص ۷۳)
﴿2﴾ रुकूअ़ से उठने में رَبَّنَا لَكَ الْحَمْدُ कहना (فُرَيْخَتَار، ج ۲ ص ۲۴۷)
﴿3﴾ मुन्फ़रिद (या'नी तन्हा नमाज़ पढ़ने वाले) के लिये दोनों कहना
सुन्नत है। (बहारे शरीअत, हिस्सा : 3, स. 95) رَبَّنَا لَكَ الْحَمْدُ कहने से भी
सुन्नत अदा हो जाती है मगर رَبَّنَا के बा'द ۵ होना बेहतर है اللَّهُمَّ होना
इस से बेहतर, और दोनों होना और ज़ियादा बेहतर है। या'नी
اللَّهُمَّ رَبَّنَا وَلَكَ الْحَمْدُ कहिये। (فُرَيْخَتَار، ج ۲ ص ۲۴۶)

“या फ़ातिमा बिन्ते रशूलुल्लाह” के अच्चारह हुरूफ़ की निस्बत से सज्दे की 18 सुन्नतें

﴿1﴾ सज्दे में जाने के लिये और ﴿2﴾ सज्दे से उठने के लिये
سُبْحَانَ رَبِّيَ الْأَعْلَى कहना। ﴿3﴾ सज्दे में कम अज़ कम तीन बार اللَّهُ أَكْبَرُ
कहना ﴿4﴾ सज्दे में हाथ ज़मीन पर रखना ﴿5﴾ हाथों की उंगलियां
मिली हुई किब्ला रुख़ रखना ﴿6﴾ सिमट कर सज्दा करना या'नी बाजू
करवटों से ﴿7﴾ पेट रानों से ﴿8﴾ रानें पिंडलियों से और ﴿9﴾ पिंडलियां
ज़मीन से मिला देना ﴿10﴾ सज्दे में जाएं तो ज़मीन पर पहले घुटने फिर
﴿11﴾ हाथ फिर ﴿12﴾ नाक, फिर ﴿13﴾ पेशानी रखना ﴿14﴾ जब
सज्दे से उठें तो इस का उलट करना या'नी ﴿15﴾ पहले पेशानी, फिर

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुझ पर रोजे जुमुआं दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअत करूंगा। (क़ुआमल)

﴿16﴾ नाक, फिर ﴿17﴾ हाथ, फिर ﴿18﴾ घुटने उठाना।

(बहारे शरीअत, हिस्सा : 3, स. 96, 98)

“जैनुब” के चार हुरूफ़ की निस्बत से जल्से की 4 सुन्नतें

﴿1﴾ दोनों सज्दों के बीच में बैठना। इसे जल्सा कहते हैं

﴿2﴾ दूसरी रक्अत के सज्दों से फ़ारिग़ हो कर दोनों पाउं सीधी जानिब निकाल देना और ﴿3﴾ उल्टी सुरीन पर बैठना ﴿4﴾ दोनों हाथ रानों पर रखना।

(बहारे शरीअत, हिस्सा : 3, स. 98)

“हक़” के दो हुरूफ़ की निस्बत से दूसरी रक्अत के लिये उठने की 2 सुन्नतें

﴿1﴾ जब दोनों सज्दे कर लें तो दूसरी रक्अत के लिये पन्जों के बल, ﴿2﴾ घुटनों पर हाथ रख कर खड़ा होना सुन्नत है। हां कमजोरी या पाउं में तकलीफ़ वगैरा मजबूरी की वज्ह से ज़मीन पर हाथ रख कर खड़े होने में हरज नहीं।

(رَدُّ الْمُنْتَهَى، ج ٢ ص ٢٦٦)

“बीबी आमिना” के आठ हुरूफ़ की निस्बत से का 'दा की 8 सुन्नतें

﴿1﴾ सीधा हाथ सीधी रान पर और ﴿2﴾ उल्टा हाथ उल्टी रान पर रखना ﴿3﴾ उंगलियां अपनी हालत पर या'नी (NORMAL) छोड़ना कि न ज़ियादा खुली हुई न बिल्कुल मिली हुई। ﴿4﴾ अत्तहिय्यात में शहादत पर इशारा करना। इस का तरीका येह है कि छुंगलिया और पास

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर एक बार दुरूद पाक पढ़ा अल्लाह (स)। उस पर दस रहमतें भेजता है।

वाली को बन्द कर लीजिये, अंगूठे और बीच वाली का हल्का बांधिये और “لَا” पर कलिमे की उंगली उठाइये इस को इधर उधर मत हिलाइये और “لَا” पर रख दीजिये और सब उंगलियां सीधी कर लीजिये ﴿5﴾ दूसरे का’दे में भी इसी तरह बैठिये जिस तरह पहले में बैठी थीं और तशहहुद भी पढ़िये ﴿6﴾ तशहहुद के बा’द दुरूद शरीफ़ पढ़िये (दुरूदे इब्राहीम पढ़ना अफ़ज़ल है) (बहारे शरीअत, हिस्सा : 3, स. 98, 99) ﴿7﴾ नवाफ़िल और सुन्नते ग़ैर मुअक्कदा (अस व इशा की सुन्नते क़ब्लिया) के का’दए ऊला में भी तशहहुद के बा’द दुरूद शरीफ़ पढ़ना सुन्नत है। (رَدُّ الْمُنْتَهَى، ج ٢ ص ٢٨١) ﴿8﴾ दुरूद शरीफ़ के बा’द दुआ पढ़ना। (बहारे शरीअत, हिस्सा : 3, स. 102)

“हफ़्सा” के चार हुरूफ़ की निस्बत से सलाम फ़ैरने की 4 सुन्नतें

﴿1, 2﴾ इन अल्फ़ाज़ के साथ दो² बार सलाम फ़ैरना :
﴿3﴾ اَلْسَّلَامُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ اللهِ
मुंह फ़ैरना। (ऐज़न, 4, स. 103)

“सब्र” के तीन हुरूफ़ की निस्बत से सुन्नते बा’दिया की 3 सुन्नतें

﴿1﴾ जिन फ़र्जों के बा’द सुन्नतें हैं उन में बा’दे फ़र्ज कलाम न करना चाहिये अगर्चे सुन्नतें हो जाएंगी मगर सवाब कम हो जाएगा और सुन्नतों में ताख़ीर भी मक्रूह है इसी तरह बड़े बड़े अवरादो

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : उस शख्स को नाक खाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़े । (ترمذی)

﴿2﴾ (غُيْب، ص ۳۴۳، رَدُّ الْمُحْتَار، ج ۲ ص ۳۰۰) । वज़ाइफ़ की भी इजाज़त नहीं ।

(फ़र्जों के बा'द क़ब्ले सुन्नत मुख़तसर दुआ़ पर क़नाअत चाहिये वरना सुन्नतों का सवाब कम हो जाएगा । (बहारे शरीअत, हिस्सा : 3, स. 107)

﴿3﴾ सुन्नत व फ़र्ज़ के दरमियान कलाम करने से असह्ह (या'नी दुरुस्त तरीन) येही है कि सुन्नत बातिल नहीं होती अलबत्ता सवाब कम हो जाता है । येही हुक्म हर उस काम का है जो मुनाफ़िये तहरीमा¹ है ।

(تَوْبِيرُ الْأَبْصَار، ج ۲ ص ۵०८)

“उम्माहातुल मुअमिनीन” के 14 हुरूफ़ की निस्बत से नमाज़ के तक्रीबन 14 मुस्तहब्बात

﴿1﴾ निय्यत के अल्फ़ाज़ ज़बान से कह लेना । (فَرْمُخْتَار ج २ ص ११३) ।

जब कि दिल में निय्यत हाज़िर हो वरना तो नमाज़ होगी ही नहीं । ﴿2﴾

क़ियाम में दोनों पन्नों के दरमियान चार उंगल का फ़ासिला होना ।

﴿3﴾ क़ियाम की हालत में सज्दे की जगह, (عالمگیری، ج १ ص १३) ।

रुकूअ में दोनों क़दमों की पुशत पर ﴿5﴾ सज्दे में नाक की तरफ़

﴿6﴾ का'दा में गोद की तरफ़ ﴿7﴾ पहले सलाम में सीधे कन्धे की तरफ़

और ﴿8﴾ दूसरे सलाम में उल्टे कन्धे की तरफ़ नज़र करना ।

﴿9,10,11﴾ (تَوْبِيرُ الْأَبْصَار ج २ ص २१६) मुन्फ़रिद को रुकूअ और सज्दों

में तीन बार से ज़ियादा (मगर ताक़ अदद मसलन पांच, सात, नव बार)

तस्बीह कहना । (فَتْحُ الْقَدِير، ج १ ص २०९) ﴿12﴾ जिस को खांसी आए उस

_____ مَدِينَه

1 : जैसा कि खाना पीना या ख़रीदना या बेचना । (حاشية الطحطاوى على الدرالمختار ج १ ص २८६) ।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुझ पर दस मरतबा दुरूदे पाक पढ़े अल्लाह (طربانی)। उस पर सो रहमतें नाज़िल फ़रमाता है।

के लिये मुस्तहब है कि जब तक मुम्किन हो न खांसे। (बहारे शरीअत, हिस्सा : 3, स. 106) ﴿13﴾ जमाही आए तो मुंह बन्द किये रहिये और न रुके तो होंट दांत के नीचे दबाइये। अगर इस तरह भी न रुके तो क़ियाम में सीधे हाथ की पुश्त से और ग़ैर क़ियाम में उल्टे हाथ की पुश्त से मुंह ढांप लीजिये। जमाही रोकने का बेहतरीन तरीका यह है कि दिल में खयाल कीजिये कि सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ और दीगर अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام को जमाही कभी नहीं आती थी। (बहारे शरीअत, हिस्सा : 3, स. 106, 210, 215, 216, 217, 218, 219, 220, 221, 222, 223, 224, 225, 226, 227, 228, 229, 230, 231, 232, 233, 234, 235, 236, 237, 238, 239, 240, 241, 242, 243, 244, 245, 246, 247, 248, 249, 250, 251, 252, 253, 254, 255, 256, 257, 258, 259, 260, 261, 262, 263, 264, 265, 266, 267, 268, 269, 270, 271, 272, 273, 274, 275, 276, 277, 278, 279, 280, 281, 282, 283, 284, 285, 286, 287, 288, 289, 290, 291, 292, 293, 294, 295, 296, 297, 298, 299, 300, 301, 302, 303, 304, 305, 306, 307, 308, 309, 310, 311, 312, 313, 314, 315, 316, 317, 318, 319, 320, 321, 322, 323, 324, 325, 326, 327, 328, 329, 330, 331, 332, 333, 334, 335, 336, 337, 338, 339, 340, 341, 342, 343, 344, 345, 346, 347, 348, 349, 350, 351, 352, 353, 354, 355, 356, 357, 358, 359, 360, 361, 362, 363, 364, 365, 366, 367, 368, 369, 370, 371, 372, 373, 374, 375, 376, 377, 378, 379, 380, 381, 382, 383, 384, 385, 386, 387, 388, 389, 390, 391, 392, 393, 394, 395, 396, 397, 398, 399, 400, 401, 402, 403, 404, 405, 406, 407, 408, 409, 410, 411, 412, 413, 414, 415, 416, 417, 418, 419, 420, 421, 422, 423, 424, 425, 426, 427, 428, 429, 430, 431, 432, 433, 434, 435, 436, 437, 438, 439, 440, 441, 442, 443, 444, 445, 446, 447, 448, 449, 450, 451, 452, 453, 454, 455, 456, 457, 458, 459, 460, 461, 462, 463, 464, 465, 466, 467, 468, 469, 470, 471, 472, 473, 474, 475, 476, 477, 478, 479, 480, 481, 482, 483, 484, 485, 486, 487, 488, 489, 490, 491, 492, 493, 494, 495, 496, 497, 498, 499, 500, 501, 502, 503, 504, 505, 506, 507, 508, 509, 510, 511, 512, 513, 514, 515, 516, 517, 518, 519, 520, 521, 522, 523, 524, 525, 526, 527, 528, 529, 530, 531, 532, 533, 534, 535, 536, 537, 538, 539, 540, 541, 542, 543, 544, 545, 546, 547, 548, 549, 550, 551, 552, 553, 554, 555, 556, 557, 558, 559, 560, 561, 562, 563, 564, 565, 566, 567, 568, 569, 570, 571, 572, 573, 574, 575, 576, 577, 578, 579, 580, 581, 582, 583, 584, 585, 586, 587, 588, 589, 590, 591, 592, 593, 594, 595, 596, 597, 598, 599, 600, 601, 602, 603, 604, 605, 606, 607, 608, 609, 610, 611, 612, 613, 614, 615, 616, 617, 618, 619, 620, 621, 622, 623, 624, 625, 626, 627, 628, 629, 630, 631, 632, 633, 634, 635, 636, 637, 638, 639, 640, 641, 642, 643, 644, 645, 646, 647, 648, 649, 650, 651, 652, 653, 654, 655, 656, 657, 658, 659, 660, 661, 662, 663, 664, 665, 666, 667, 668, 669, 670, 671, 672, 673, 674, 675, 676, 677, 678, 679, 680, 681, 682, 683, 684, 685, 686, 687, 688, 689, 690, 691, 692, 693, 694, 695, 696, 697, 698, 699, 700, 701, 702, 703, 704, 705, 706, 707, 708, 709, 710, 711, 712, 713, 714, 715, 716, 717, 718, 719, 720, 721, 722, 723, 724, 725, 726, 727, 728, 729, 730, 731, 732, 733, 734, 735, 736, 737, 738, 739, 740, 741, 742, 743, 744, 745, 746, 747, 748, 749, 750, 751, 752, 753, 754, 755, 756, 757, 758, 759, 760, 761, 762, 763, 764, 765, 766, 767, 768, 769, 770, 771, 772, 773, 774, 775, 776, 777, 778, 779, 780, 781, 782, 783, 784, 785, 786, 787, 788, 789, 790, 791, 792, 793, 794, 795, 796, 797, 798, 799, 800, 801, 802, 803, 804, 805, 806, 807, 808, 809, 810, 811, 812, 813, 814, 815, 816, 817, 818, 819, 820, 821, 822, 823, 824, 825, 826, 827, 828, 829, 830, 831, 832, 833, 834, 835, 836, 837, 838, 839, 840, 841, 842, 843, 844, 845, 846, 847, 848, 849, 850, 851, 852, 853, 854, 855, 856, 857, 858, 859, 860, 861, 862, 863, 864, 865, 866, 867, 868, 869, 870, 871, 872, 873, 874, 875, 876, 877, 878, 879, 880, 881, 882, 883, 884, 885, 886, 887, 888, 889, 890, 891, 892, 893, 894, 895, 896, 897, 898, 899, 900, 901, 902, 903, 904, 905, 906, 907, 908, 909, 910, 911, 912, 913, 914, 915, 916, 917, 918, 919, 920, 921, 922, 923, 924, 925, 926, 927, 928, 929, 930, 931, 932, 933, 934, 935, 936, 937, 938, 939, 940, 941, 942, 943, 944, 945, 946, 947, 948, 949, 950, 951, 952, 953, 954, 955, 956, 957, 958, 959, 960, 961, 962, 963, 964, 965, 966, 967, 968, 969, 970, 971, 972, 973, 974, 975, 976, 977, 978, 979, 980, 981, 982, 983, 984, 985, 986, 987, 988, 989, 990, 991, 992, 993, 994, 995, 996, 997, 998, 999, 1000)

(बहारे शरीअत, हिस्सा : 3, स. 106)

सय्यिदुना उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ का अमल

हुज्जतुल इस्लाम हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद बिन मुहम्मद गज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِي نक़ल फ़रमाते हैं : “हज़रते सय्यिदुना उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ हमेशा ज़मीन ही पर सज्दा करते या'नी सज्दे की जगह मुसल्ला वगैरा न बिछाते।” (احياء العلوم، ج 1، ص 204)

गर्द आलूद पेशानी की फ़ज़ीलत

हज़रते सय्यिदुना वासिला बिन अस्क़अ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि हुज़ूर सरापा नूर, शाहे ग़यूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने पुर सुरूर है : “तुम में से कोई शख्स जब तक नमाज़ से फ़ारिग़ न हो जाए अपनी पेशानी (की मिट्टी) को साफ़ न करे क्यूं कि जब तक उस की

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा तहकीक़ वोह बद बख़्त हो गया । (अब्दुल)

पेशानी पर नमाज़ के सज्दे का निशान रहता है फ़िरिशते उस के लिये दुआए मग़िफ़रत करते रहते हैं।” (مَجْمَعُ الرُّوَايَةِ، ج ٢ ص ٣١١ حديث ٢٧٦١)

इस्लामी बहनो! दौराने नमाज़ पेशानी से मिट्टी छुड़ाना बेहतर नहीं और مَعَاذَ اللَّهِ عَزَّوَجَلَّ तकब्बुर के तौर पर छुड़ाना गुनाह है। और अगर न छुड़ाने से तक्लीफ़ होती हो या खयाल बटता हो तो छुड़ाने में हरज नहीं। अगर किसी को रियाकारी का खौफ़ हो तो उसे चाहिये कि नमाज़ के बा'द पेशानी से मिट्टी साफ़ कर ले।

“शय्यिदुना इश्माईल की अम्मी क्व नाम हाजिरा था”
के उन्तीस हुरूफ़ की निस्बत से
नमाज़ तोड़ने वाली 29 बातें

﴿1﴾ बात करना (دُرْمَخْتَار، ج ٢ ص ٤٤٥) ﴿2﴾ किसी को सलाम करना ﴿3﴾ सलाम का जवाब देना (عالمگیری، ج ١ ص ٩٨) ﴿4﴾ छींक का जवाब देना (नमाज़ में खुद को छींक आए तो खामोश रहे) अगर खुद को छींक आई और الْحَمْدُ لِلَّهِ कह लिया तब भी हरज नहीं और अगर उस वक़्त हम्द न की तो फ़ारिग़ हो कर कहे। (ایضاً) ﴿5﴾ खुश ख़बरी सुन कर जवाबन الْحَمْدُ لِلَّهِ कहना (ایضاً ص ٩٩) ﴿6﴾ बुरी ख़बर (या किसी की मौत की ख़बर) सुन कर إِذَا لَبَّيْكَ وَإِنَّا لِلَّهِ وَأِنَّا إِلَيْهِ رَاجِعُونَ कहना (ایضاً) ﴿7﴾ अज़ान का जवाब देना (ایضاً ص ١٠٠) ﴿8﴾ اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ का नाम सुन कर जवाबन صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का इस्मे गिरामी ﴿9﴾ سرکارے مदीنا صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का इस्मे गिरामी सुन कर जवाबन दुरूद शरीफ़ पढ़ना मसलान صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर सुबह व शाम दस दस बार दुरुददे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअत मिलेगी। (मुँजिरोल)

कहना (दुर्मुख्तार, ज २, व ६१०) (اگر جَلَّ جَلَالُهُ يَا صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ جवाब की नियत से न कहा तो नमाज़ न टूटी)

नमाज़ में रोना

﴿10﴾ दर्द या मुसीबत की वजह से यह अल्फ़ाज़ “आह”, “ऊह”, “उफ़”, “तुफ़” निकल गए या आवाज़ से रोने में हर्फ़ पैदा हो गए नमाज़ फ़ासिद हो गई। अगर रोने में सिर्फ़ आंसू निकले आवाज़ व हुरूफ़ नहीं निकले तो हरज नहीं।

(عالمگیری ج ۱ ص ۱۰۱، ردّالمُختار ج ۲ ص ۴۵۵)

नमाज़ में खांसना

﴿11﴾ मरीज़ा की ज़बान से बे इख़्तियार आह ! ऊह ! निकला नमाज़ न टूटी यूं ही छींक, जमाही, खांसी, डकार वगैरा में जितने हुरूफ़ मजबूरन निकलते हैं मुअ़ाफ़ हैं। (दुर्मुख्तार, ज १, व ६०६) ﴿12﴾ फूंकने में अगर आवाज़ न पैदा हो तो वोह सांस की मिस्ल है और नमाज़ फ़ासिद नहीं होती मगर क़स्दन फूंकना मक्रूह है और अगर दो हर्फ़ पैदा हों जैसे उफ़, तुफ़ तो नमाज़ फ़ासिद हो गई। (عُنَيْهِ، ص ६०१) ﴿13﴾ खन्कारने में जब दो² हुरूफ़ ज़ाहिर हों जैसे अख़ तो मुफ़िसद है। हां अगर उज़्र या सहीह मक्सद हो मसलन तबीअत का तकाज़ा हो या आवाज़ साफ़ करने के लिये हो या कोई आगे से गुज़र रहा हो उस को मुतवज्जेह करना हो इन वुजूहात की बिना पर खांसने में कोई मुजायका नहीं।

(दुर्मुख्तार, ज २, व ६००, हिस्सा : 3, स. 176, (बहारे शरीअत, हिस्सा : 3, स. 176, ६००, ६००)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़ा उस ने जफ़ा की। (عبدالرزاق)

दौराने नमाज़ देख कर पढ़ना

«14» मुस्हफ़ शरीफ़ से, या किसी कागज़ वगैरा में लिखा हुआ देख कर कुरआन शरीफ़ पढ़ना (हां अगर याद पर पढ़ रही हैं और मुस्हफ़ शरीफ़ वगैरा पर सिर्फ़ नज़र है तो हरज नहीं, अगर किसी कागज़ वगैरा पर आयात लिखी हैं उसे देखा और समझा मगर पढ़ा नहीं इस में भी कोई मुज़ायका नहीं।) (1) (فُرْمُخْتَار، رَدُّ الْمُحْتَار، ج 2 ص 62) «15» इस्लामी किताब या इस्लामी मज़मून दौराने नमाज़ जानबूझ कर देखना और इरादतन समझना मक्रूह है। (बहारे शरीअत, हिस्सा : 3, स. 177) दुन्यवी मज़मून हो तो ज़ियादा कराहिय्यत है, लिहाज़ा नमाज़ में अपने क़रीब किताबें या तहरीर वाले पेकेट और शोपिंग बेग, मोबाइल फ़ोन या घड़ी वगैरा इस तरह रखिये कि उन की लिखाई पर नज़र न पड़े या इन पर रुमाल वगैरा उढ़ा दीजिये, नीज़ दौराने नमाज़ दीवार वगैरा पर लगे हुए स्टीकर्ज़, इश्तिहार और फ़्रेमों वगैरा पर नज़र डालने से भी बचिये।

अमले कसीर की ता 'रीफ़

«16» अमले कसीर नमाज़ को फ़ासिद कर देता है जब कि न नमाज़ के आ'माल से हो न ही इस्लाहे नमाज़ के लिये किया गया हो। जिस काम के करने वाले को दूर से देखने से ऐसा लगे कि यह नमाज़ में नहीं है बल्कि अगर गुमान ग़ालिब हो कि नमाज़ में नहीं तब भी अमले कसीर है। और अगर दूर से देखने वाले को शको शुबा है कि नमाज़ में है या नहीं तो अमले क़लील है और नमाज़ फ़ासिद न होगी।

(فُرْمُخْتَار، ج 2 ص 66)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुझ पर रोज़े जुमुआं दुरुद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअत करूंगा । (جمع الجوامع)

दौराने नमाज़ लिबास पहनना

﴿17﴾ दौराने नमाज़ कुरता या पाजामा पहनना या तहबन्द बांधना (६०२, غُنيّة) ﴿18﴾ दौराने नमाज़ सित्र खुल जाना और इसी हालत में कोई रुकन अदा करना या तीन बार سُبْحَانَ اللَّهِ कहने की मिक्दार वक्फ़ा गुज़र जाना । (فُرْمُخْتَار، ج २ ص ६१७)

नमाज़ में कुछ निगलना

﴿19﴾ मा'मूली सा भी खाना या पीना मसलन तिल बिगैर चबाए निगल लिया । या क़तरा मुंह में गिरा और निगल लिया (فُرْمُخْتَار، رَدُّ الْمُخْتَار ج २ ص ६१२) ﴿20﴾ नमाज़ शुरू करने से पहले ही कोई चीज़ दांतों में मौजूद थी उसे निगल लिया तो अगर वोह चने के बराबर या इस से ज़ियादा थी तो नमाज़ फ़ासिद हो गई और अगर चने से कम थी तो मक्रूह । (عالمگیری ج १ ص १०२) ﴿21﴾ नमाज़ से कब्ल कोई मीठी चीज़ खाई थी अब उस के अज्ज़ा मुंह में बाकी नहीं सिर्फ़ लुआबे दहन में कुछ असर रह गया है उस के निगलने से नमाज़ फ़ासिद न होगी (عالمگیری ج १ ص १०२) ﴿22﴾ मुंह में शकर वगैरा हो कि घुल कर हल्क़ में पहुंचती है नमाज़ फ़ासिद हो गई (البيّنات) ﴿23﴾ दांतों से ख़ून निकला अगर थूक ग़ालिब है तो निगलने से फ़ासिद न होगी वरना हो जाएगी (عالمگیری ج १ ص १०२) (ग़लबे की अ़लामत येह है कि अगर हल्क़ में मज़ा महसूस हुवा तो नमाज़ फ़ासिद हो गई, नमाज़ तोड़ने में जाएके का ए'तिबार है और वुजू टूटने में रंग का लिहाज़ा वुजू उस वक़्त टूटता है जब थूक सुख़ हो जाए और अगर थूक ज़र्द है तो वुजू बाकी है)

فَرَمَانَهُ مُسْتَفَاً صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा उस ने जन्नत का रास्ता छोड़ दिया। (طبرانی)

दौराने नमाज़ क़िब्ले से इन्हिराफ़

﴿24﴾ बिला उज़्र सीने को समते का'बा से 45 दरजा या इस से ज़ियादा फैरना मुफ़्सिदे नमाज़ है, अगर उज़्र से हो तो मुफ़्सिद नहीं।

(ذُرْمُنْخَارِج ٢ ص ٤٦٨, हिस्सा : 3, स. 179, बहारे शरीअत)

नमाज़ में सांप मारना

﴿25﴾ सांप बिच्छू को मारने से नमाज़ नहीं टूटती जब कि न तीन क़दम चलना पड़े न तीन ज़र्ब की हाजत हो वरना फ़ासिद हो जाएगी। (عالمگیری ج ١ ص ١٠٣) सांप बिच्छू को मारना उस वक़्त मुबाह है जब कि सामने से गुज़रें और ईज़ा देने का ख़ौफ़ हो, अगर तकलीफ़ पहुंचाने का अन्देशा न हो तो मारना मक्रूह है। (ایضاً) ﴿26﴾ पै दर पै तीन बाल उखेड़े या तीन जूएं मारें या एक ही जूं को तीन बार मारा नमाज़ जाती रही और अगर पै दर पै न हो तो नमाज़ फ़ासिद न हुई मगर मक्रूह है।

(عالمگیری، ج ١ ص ١٠٣، غنیه، ص ٤٤٨)

नमाज़ में खुजाना

﴿27﴾ एक रुकन में तीन³ बार खुजाने से नमाज़ फ़ासिद हो जाती है या'नी यूं कि खुजा कर हाथ हटा लिया फिर खुजाया फिर हटा लिया येह दो² बार हुआ अगर अब इसी तरह तीसरी³ बार किया तो नमाज़ जाती रहेगी। अगर एक बार हाथ रख कर चन्द बार हरकत दी तो येह एक ही मरतबा खुजाना कहा जाएगा। (ایضاً، ١٠٤، ص ١٠٤) मेरे आका आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن نमाज़ में खुजाने के मुतअल्लिक

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत करो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे लिये पाकीज़गी का बाइस है। (बोस्न)।

फ़रमाते हैं : (नमाज़ में अगर खुजली आए तो) ज़ब्त करे, और न हो सके या इस के सबब नमाज़ में दिल परेशान हो तो खुजा ले मगर एक रुकन मसलन कियाम या कुरुद या रुकूअ या सुजूद में तीन बार न खुजावे, दो बार तक इजाज़त है। (फ़तावा रज़विय्या, जि. 7, स. 384)

कहने में ग़लतियाँ

﴿28﴾ तक्बीराते इन्तिक़ालात में اللهُ أَكْبَرُ के अलिफ़ को दराज़ किया या'नी "आल्लाह" या "आक्बर" कहा या "ب" के बा'द अलिफ़ बढ़ाया या'नी "अक्बार" कहा तो नमाज़ फ़ासिद हो गई और अगर तक्बीरे तहरीमा में ऐसा हुवा तो नमाज़ शुरूअ ही न हुई (فَرْوْمُخْتَار، ج ٢، ص ٤٧٣) ﴿29﴾ क़िराअत या अज़कारे नमाज़ में ऐसी ग़लती जिस से मा'ना फ़ासिद हो जाएं नमाज़ फ़ासिद हो जाती है।

(बहारे शरीअत 4 हिस्सा : 3, स. 182) मसलन عَصَىٰ اٰدَمَ رَبَّيْهُ के येह मा'ना थे (तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और आदम से अपने रब की लग़िश वाकेअ हुई) अब मीम को ज़बर और बे को पेश पढ़ दिया तो येह मा'ना हुए (तरजमा : और रब से आदम की लग़िश वाकेअ हुई) نَعُوذُ بِاللّٰهِ مِنْهَا.

“उम्महातुल मुअमिनीन पर लाखों सलाम” के छब्बीस हुरूफ़ की निस्बत से नमाज़ के 26 मक्रूहाते तहरीमा

﴿1﴾ बदन या लिबास के साथ खेलना (عالمگیری، ج ١، ص ١٠٥) ﴿2﴾ कपड़ा समेटना। (ایضاً) जैसा कि आजकल बा'ज़ लोग सज्दे में जाते वक़्त पाजामा वगैरा आगे या पीछे से उठा लेते हैं। अगर कपड़ा बदन से चिपक जाए तो एक हाथ से छुड़ाने में हरज नहीं।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़े तो वोह लोगों में से कन्जूस तरीन शख्स है। (مسند احمد)

कन्धों पर चादर लटकाना

﴿3﴾ सदल या'नी कपड़ा लटकाना। मसलन सर या कन्धे पर इस तरह से चादर या रुमाल वगैरा डालना कि दोनों कनारे लटक्ते हों हां अगर एक कनारा दूसरे कन्धे पर डाल दिया और दूसरा लटक रहा है तो हरज नहीं। अगर एक ही कन्धे पर चादर डाली कि एक सिरा पीठ पर लटक रहा है और दूसरा पेट पर तो येह भी मक्रूह है।

(बहारे शरीअत, हिस्सा : 3, स. 192)

तर्ब्दु हाजत की शिद्दत

﴿4,6﴾ पेशाब या पाख़ाना या रीह की शिद्दत होना। अगर नमाज़ शुरूअ करने से पहले ही शिद्दत हो तो वक़्त में वुस्अत होने की सूरत में नमाज़ शुरूअ करना ही मम्नूअ व गुनाह है। हां अगर ऐसा है कि फ़रागत और वुजू के बा'द नमाज़ का वक़्त ख़त्म हो जाएगा तो नमाज़ पढ़ लीजिये। और अगर दौराने नमाज़ येह हालत पैदा हुई तो अगर वक़्त में गुन्जाइश हो तो नमाज़ तोड़ देना वाजिब है अगर इसी तरह पढ़ ली तो गुनहगार होंगी।

(رَدُّ الْمُحْتَرَجِ ٢ ص ٤٩٢)

नमाज़ में कंकरियां हटाना

﴿7﴾ दौराने नमाज़ कंकरियां हटाना मक्रूहे तहरीमी है। हां अगर सुन्नत के मुताबिक़ सज्दा अदा न हो सकता हो तो एक बार हटाने की इजाज़त है और अगर बिगैर हटाए वाजिब अदा न होता हो तो हटाना वाजिब है चाहे एक बार से ज़ियादा की हाजत पड़े।

(دُرُ الْمُحْتَرَجِ، رَدُّ الْمُحْتَرَجِ ٢ ص ٤٩٣)

फ़रमाने मुस्त्फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : तुम जहां भी हो मुझ पर दुरुद पढ़ो कि तुम्हारा दुरुद मुझ तक पहुंचता है। (طبرانی)

उंग्लियां चटखाना

﴿8﴾ नमाज़ में उंग्लियां चटखाना। (दُرْمُخْتَار ج ۲ ص ۹۳ ۴)

खातमुल मुहक्किनीन हज़रते अल्लामा इब्ने अ़ाबिदीन शामी फ़रमाते हैं, इब्ने माजह की रिवायत है कि सरकारे मदीना फ़रमाते हैं, इब्ने माजह की रिवायत है कि सरकारे मदीना فَرْمَاتے ہیں، ابن ماجه کی روایت ہے کہ سرکار مدینہ نے فرمایا : “नमाज़ में अपनी उंग्लियां न चटखाया करो।” (سُنَنِ ابْنِ مَاجَهِ ج ۱ ص ۵۱۴ حدیث ۹۶۵) “मुज्तबा” के हवाले से नक्ल किया, सुल्ताने दो जहान, शहन्शाहे कौनो मकान, रहमते अ़ालमिय्यान صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने “इन्तिज़ारे नमाज़ के दौरान उंग्लियां चटखाने से मन्अ़ फ़रमाया।” मज़ीद एक रिवायत में है : “नमाज़ के लिये जाते हुए उंग्लियां चटखाने से मन्अ़ फ़रमाया।” इन अहदीसे मुबारका से येह तीन अहकाम साबित हुए (الف) नमाज़ के दौरान मक्रूहे तहरीमी हैं। और तवाबेए नमाज़ में मसलन नमाज़ के लिये जाते हुए, नमाज़ का इन्तिज़ार करते हुए भी उंग्लियां चटखाना मक्रूह है। (बहारे शरीअत, हिस्सा : 3, स. 193, मक्तबतुल मदीना) (ب) ख़ारिजे नमाज़ में (या’नी तवाबेए नमाज़ में भी न हो) बिगैर हाजत के उंग्लियां चटखाना मक्रूहे तन्ज़ीही है (ج) ख़ारिजे नमाज़ में किसी हाजत के सबब मसलन उंग्लियों को आराम देने के लिये उंग्लियां चटखाना मुबाह (या’नी बिला कराहत जाइज़) है (دُرْمُخْتَار ج ۲ ص ۹۳-۹۴) (۹) तशबीक या’नी एक हाथ की उंग्लियां दूसरे हाथ की उंग्लियों में डालना।

(دُرْمُخْتَار ج ۲ ص ۹۳ ۴)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो लोग अपनी मजलिस से अल्लाह के ज़िक्र और नबी पर दुरूद शरीफ़ पढ़े बिगैर उठ गए तो वोह बदबूदार मुर्दार से उठे । (شعب الايمان)

कमर पर हाथ रखना

﴿10﴾ कमर पर हाथ रखना । नमाज़ के इलावा भी (बिला उज़्र) कमर (या'नी दोनों पहलूओं) पर हाथ नहीं रखना चाहिये ।
 صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के महबूब عَزَّوَجَلَّ (دُرْمُخْتَار، ج ٢ ص ٤٩٤) फ़रमाते हैं : “कमर पर नमाज़ में हाथ रखना जहन्नमियों की राहत है”
 (شَرْحُ السُّنَنِ لِلْبَيْهَوِيِّ، ج ٢ ص ٣١٣ حديث ٧٣١) या'नी येह यहूदियों का फे'ल है कि वोह जहन्नमी हैं वरना जहन्नमियों के लिये जहन्नम में क्या राहत है !
 (हाशिया बहारे शरीअत, हिस्सा : 3, स. 186)

आस्मान की तरफ़ देखना

﴿11﴾ निगाह आस्मान की तरफ़ उठाना (बहारे शरीअत, हिस्सा : 3, स. 194) اَللّٰهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के महबूब عَزَّوَجَلَّ फ़रमाते हैं :
 “क्या हाल है उन लोगों का जो नमाज़ में आस्मान की तरफ़ आंखें उठाते हैं इस से बाज़ रहें या उन की आंखें उचक ली जाएंगी ।”
 (صَحِيحُ الْبُخَارِيِّ، ج ١ ص ٢٦٥ حديث ٧٥٠) ﴿12﴾ इधर उधर मुंह फ़ैर कर देखना, चाहे पूरा मुंह फिरा या थोड़ा । मुंह फ़ैरे बिगैर सिर्फ़ आंखें फिरा कर इधर उधर बे ज़रूरत देखना मक्रूहे तन्ज़ीही है और नादिरन किसी ग़ रजे सहीह के तहत हो तो हरज नहीं । (बहारे शरीअत, हिस्सा : 3, स. 194)
 सरकारे मदीना, सुल्ताने बा करीना, करारे क़ल्बो सीना, फ़ैज गन्जीना
 عَزَّوَجَلَّ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ फ़रमाते हैं, “जो बन्दा नमाज़ में है अल्लाह के तहत
 की रहमते खास्सा उस की तरफ़ मुतवज्जेह रहती है जब तक इधर उधर

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर रोज़े जुमुआ दो सो बार दुरुदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआफ़ होंगे । (جمع الجوامع)

न देखे, जब उस ने अपना मुंह फैरा उस की रहमत भी फिर जाती है ।”

(مُسْنَدُ أَبِي كَلُودٍ، ج ١ ص ٤٤٤-٣٤٤ حديث ٩٠٩)

नमाज़ी की तरफ़ देखना

﴿13﴾ किसी के मुंह के सामने नमाज़ पढ़ना । दूसरे को भी नमाज़ी की तरफ़ मुंह करना ना जाइज़ व गुनाह है । कोई पहले से चेहरा किये हुए हो और अब कोई उस के चेहरे की तरफ़ रुख़ कर के नमाज़ शुरूअ करे तो नमाज़ शुरूअ करने वाला गुनहगार हुवा और इस नमाज़ी पर कराहत आई वरना चेहरा करने वाले पर गुनाह व कराहत है ।

﴿14﴾ बिला ज़रूरत खन्कार (या'नी बलाम वगैरा) निकालना (५११ व ५१२) (دُرِّمُسْتَحَار، ج २، ص ४९६-४९७) ।

﴿15﴾ क़स्दन जमाही लेना । (مَرَاقِي الْفَلَّاح ص ३०४) (अगर खुद ब खुद आए तो हरज नहीं मगर रोकना मुस्तहब है) अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के महबूब صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ फ़रमाते हैं :

“जब नमाज़ में किसी को जमाही आए तो जहां तक हो सके रोके कि शैतान मुंह में दाख़िल हो जाता है ।” (صَحِيحُ مُسْلِمٍ ص १०९७-१०९८ حديث २९९०)

﴿16﴾ उल्टा कुरआने मज़ीद पढ़ना (मसलन पहली रकअत में “تَبَّتْ” पढ़ी और दूसरी में “إِذَا جَاءَ”) ।

﴿17﴾ किसी वाजिब को तर्क करना । मसलन “कौमा” और “जल्सा” में पीठ सीधी होने से पहले ही सज्दे में चला जाना । (बहारे शरीअत, हिस्सा : 3, स. 197) इस गुनाह में

मुसल्मानों की अच्छी खासी ता'दाद मुलव्वस नज़र आती है, याद रखिये ! जितनी भी नमाज़ें इस तरह पढ़ी होंगी सब का लौटाना वाजिब है ।

“कौमा” और “जल्सा” में कम अज़ कम एक बार سُبْحَانَ اللهِ कहने

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुझ पर दुरूद शरीफ़ पढ़ो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम पर रहमत भेजेगा । (ابن عمر)

की मिक्दार ठहरना वाजिब है ﴿18﴾ “क़ियाम” के इलावा किसी और मौक़अ़ पर कुरआने मजीद पढ़ना (बहारे शरीअ़त, हिस्सा : 3, स. 197)

﴿19﴾ क़िराअत रुकूअ़ में पहुंच कर ख़त्म करना (ऐज़न) ﴿20﴾ ज़मीने मग़सूबा (या'नी ऐसी ज़मीन जिस पर ना जाइज़ क़ब्ज़ा किया हो) या

﴿21﴾ पराया खेत जिस में ज़राअ़त मौजूद है (रुम्हताज़ २ व ५) या ﴿22﴾

जुते हुए खेत में (अय़ा) या ﴿23﴾ क़ब्र के सामने जब कि क़ब्र और नमाज़ी के बीच में कोई चीज़ हाइल न हो नमाज़ पढ़ना (२१९ व ५०५)

﴿24﴾ कुफ़र के इबादत ख़ानों में नमाज़ पढ़ना बल्कि इन में जाना भी मम्नूअ़ है । (रुम्हताज़ २ व ५३)

नमाज़ और तसावीर

﴿25﴾ जानदार की तस्वीर वाला लिबास पहन कर नमाज़ पढ़ना मक्रूहे तहरीमी है नमाज़ के इलावा भी ऐसा कपड़ा पहनना जाइज़ नहीं । (बहारे

शरीअ़त, हिस्सा : 3, स. 195) ﴿26﴾ नमाज़ी के सर पर या'नी छत पर या सज्दे की जगह पर या आगे या दाएं या बाएं जानदार की तस्वीर

आवेज़ां होना मक्रूहे तहरीमी है और पीछे होना भी मक्रूह है मगर गुज़शता सूरतों से कम । अगर तस्वीर फ़र्श पर है और उस पर सज्दा नहीं

होता तो कराहत नहीं । अगर तस्वीर ग़ैर जानदार की है जैसे दरिया पहाड़ वग़ैरा तो इस में कोई मुजायका नहीं । इतनी छोटी तस्वीर हो

जिसे ज़मीन पर रख कर खड़े हो कर देखें तो आ'ज़ा की तफ़सील न दिखाई दे (जैसा कि उमूमन तवाफ़े का'बा के मन्ज़र की तस्वीरें बहुत

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मफ़िरत है । (ابن عساکر)

छोटी होती हैं यह तसावीर) नमाज़ के लिये बाइसे कराहत नहीं हैं । (बहारे शरीअत, हिस्सा : 3, स. 195, 196) हां त्वाफ़ की भीड़ में एक भी चेहरा वाजेह हो गया तो मुमानअत बाकी रहेगी । चेहरे के इलावा मसलन हाथ, पाउं, पीठ, चेहरे का पिछला हिस्सा या ऐसा चेहरा जिस की आंखें, नाक, होंट वगैरा सब आ'जा मिटे हुए हों ऐसी तसावीर में कोई हरज नहीं ।

“ख़ुदा के नबी मूसा की मां का नाम यूहानिज़ है”
के तीस हुरूफ़ की निस्बत से नमाज़ के 30 मक्रूहाते तन्ज़ीहा

﴿1﴾ दूसरे कपड़े मुयस्सर होने के बा वुजूद कामकाज के लिबास में नमाज़ पढ़ना । (سُرْحُ الْوَقَايَةِ، ج 1 ص 198) ﴿2﴾ मुंह में कोई चीज़ लिये हुए होना । अगर इस की वजह से किराअत ही न हो सके या ऐसे अल्फ़ाज़ निकलें कि जो कुरआने पाक के न हों तो नमाज़ ही फ़ासिद हो जाएगी । (فُرْمُخْتَارٌ، رَدُّ الْمُخْتَارِ ج 2 ص 491) ﴿3﴾ रुकूअ या सज्दे में बिला ज़रूरत तीन बार से कम तस्बीह कहना (अगर वक़्त तंग हो या ट्रेन चल पड़ने के ख़ौफ़ से हो तो हरज नहीं ।) (बहारे शरीअत, हिस्सा : 3, स. 198) ﴿4﴾ नमाज़ में पेशानी से ख़ाक या घास छुड़ाना । हां अगर इन की वजह से नमाज़ में ध्यान बटता हो तो छुड़ाने में हरज नहीं । (عالمگیری ج 1 ص 100) ﴿5﴾ नमाज़ में हाथ या सर के इशारे से सलाम का जवाब देना (فُرْمُخْتَارِ ج 2 ص 497) ज़बान से जवाब देना मुफ़िसदे नमाज़ है (عالمگیری، ج 1 ص 98) ﴿6﴾ नमाज़ में बिला उज़्र चार ज़ानू या 'नी चोकड़ी

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने किताब में मुझ पर दुरूदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फिरिश्ते उस के लिये इस्तिफ़र (या'नी बख़्शिश की दुआ) करते रहेंगे। (طبرانی)

मार कर बैठना ﴿7﴾ अंगड़ाई लेना और ﴿8,9﴾ इरादतन खांसना, खन्कारना। अगर तबीअत चाहती हो तो हरज नहीं (बहारे शरीअत, हिस्सा : 3, स. 201, 107, 107) (عالمگیری ج 1 ص 107) ﴿10﴾ सज्दे में जाते हुए घुटने से पहले बिला उज़्र हाथ ज़मीन पर रखना ﴿11﴾ (سُنَّةُ الْمُصَلِّي ص 340) उठते वक़्त बिला उज़्र हाथ से कब्ल घुटने ज़मीन से उठाना ﴿12﴾ (أيضاً) नमाज़ में सना, तअव्वुज़, तस्मिया और आमीन जोर से कहना ﴿13﴾ (غُنَيْه ص 302, 302) (عالمگیری ج 1 ص 107) लगाणा ﴿14﴾ (غُنَيْه ص 302) रुकूअ में घुटनों पर और ﴿15﴾ सज्दों में ज़मीन पर हाथ न रखना ﴿16﴾ (عالمگیری ج 1 ص 109) दाएं बाएं झूमना। और तरावुह या'नी कभी दाएं पाउं पर और कभी बाएं पाउं पर जोर देना येह सुन्नत है। (फ़तावा रज़विय्या मुखर्रजा, जि. 7, स. 389, बहारे शरीअत, हिस्सा : 3, स. 202) और सज्दे के लिये जाते हुए सीधी तरफ़ जोर देना और उठते वक़्त उल्टी तरफ़ जोर देना मुस्तहब है ﴿17﴾ नमाज़ में आंखें बन्द रखना। हां अगर खुशूअ आता हो तो आंखें बन्द रखना अफ़ज़ल है। ﴿18﴾ (دُرِّمُخْتَار، رَدُّ الْمُحْتَار ج 2 ص 499) जलती आग के सामने नमाज़ पढ़ना। शम्अ या चराग़ सामने हो तो हरज नहीं। (108) (عالمگیری ج 1 ص 108) ऐसी चीज़ के सामने नमाज़ पढ़ना जिस से ध्यान बटे मसलन जीनत और लहवो लइब वगैरा। ﴿20﴾ नमाज़ के लिये दौड़ना ﴿21﴾ (رَدُّ الْمُحْتَار ج 2 ص 513) अ़म रास्ता ﴿22﴾ कूड़ा डालने की जगह ﴿23﴾ मज़्बह या'नी जहां जानवर जब्ह किये जाते हों वहां ﴿24﴾

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुझ पर एक दिन में 50 बार दुरूदे पाक पढ़े क्रियामत के दिन मैं उस से मुसाफ़हा करूँ (या'नी हाथ मिलाऊँ)गा। (ابن بشكوال)

अस्तबल या'नी घोड़े बांधने की जगह ﴿25﴾ गुस्ल ख़ाना ﴿26﴾ मवेशी ख़ाना खुसूसन जहां ऊंट बांधे जाते हैं ﴿27﴾ इस्तिन्जा ख़ाने की छत और ﴿28﴾ सहरा में बिला सुतरा के जब कि आगे से लोगों के गुज़रने का इम्कान हो। इन जगहों पर नमाज़ पढ़ना। (बहारे शरीअत, हिस्सा : 3, स. 204, 205, ०६-०५) ﴿29﴾ बिगैर उज़्र हाथ से मक्खी मच्छर उड़ाना (عالمگیری ج 1 ص 109) नमाज़ में जूं या मच्छर ईजा देते हों तो पकड़ कर मार डालने में कोई हरज नहीं जब कि अमले कसीर न हो। (बहारे शरीअत, हिस्सा : 3, स. 203) ﴿30﴾ उल्टा कपड़ा पहनना या ओढ़ना।

(फ़तावा रजविय्या जि. 7, स. 358 ता 360, फ़तावा अहले सुन्नत ग़ैर मत्बूआ)

मदनी फूल : वोह अमले कलील जो नमाज़ी के लिये मुफ़ीद हो जाइज़ है और जो मुफ़ीद न हो वोह मकरूह। (عالمگیری ج 1 ص 105)

ज़ोहर के आख़िरी दो नफ़ल के भी क्या कहने

ज़ोहर के बा'द चार रक्अत पढ़ना मुस्तहब है कि हदीसे पाक में फ़रमाया : जिस ने ज़ोहर से पहले चार और बा'द में चार पर मुहाफ़ज़त की अल्लाह तअ़ला उस पर आग ह़राम फ़रमा देगा। (سُنَنُ التِّرْمِذِيِّ ج 1 ص 436-حدیث 428)

अल्लामा सय्यिद तहतावी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي फ़रमाते हैं : सिरे से आग में दाख़िल ही न होगा और उस के गुनाह मिटा दिये जाएंगे और उस पर (बन्दों की हक़ तल्फ़ियों के) जो मुता़लबात हैं अल्लाह तअ़ला उस के फ़रीक़ को राज़ी कर देगा

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : बरोज़े क़ियामत लोगों में से मेरे क़रीब तर वोह होगा जिस ने दुन्या में मुज़ पर ज़ियादा दुरूदे पाक पढ़े होंगे । (ترمذی)

या येह मतलब है कि ऐसे कामों की तौफ़ीक़ देगा जिन पर सज़ा न हो
 قُدَسِ سِرُّهُ السَّمَاوِيّ شَامِي اَبُلّامَا اَوَّلّامَا (حاشية الطحطاوى على الدرالمختار ج 1 ص 284)
 फ़रमाते हैं : उस के लिये बिशारत येह है कि सआदत पर उस का
 खातिमा होगा और दोज़ख़ में न जाएगा । (رَدُّ الْمُحْتَار، ج 2 ص 547)

इस्लामी बहनो ! اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ जहां जोहर की दस¹⁰ रकअत
 नमाज़ पढ़ लेते हैं वहां आख़िर में मज़ीद दो रकअत नफ़ल पढ़ कर
 बारहवीं¹² शरीफ़ की निस्बत से 12 रकअत करने में देर ही कितनी लगती
 है ! इस्तिफ़ामत के साथ दो नफ़ल पढ़ने की निय्यत फ़रमा लीजिये ।

“शय्यिदतुना मैमूना” के बारह हुरूफ़ की निस्बत से नमाज़े वित्र के 12 मदनी फूल

﴿1﴾ नमाज़े वित्र वाजिब है ﴿2﴾ अगर येह छूट जाए तो इस की
 कज़ा लाज़िम है ﴿3﴾ (عالمگیری ج 1 ص 111) वित्र का वक़्त इशा के फ़र्जों
 के बा'द से सुब्हे सादिक तक है ﴿4﴾ जो सो कर उठने पर कादिर हो
 उस के लिये अफ़ज़ल है कि पिछली रात में उठ कर पहले तहज्जुद अदा
 करे फिर वित्र ﴿5﴾ इस की तीन रकअतें हैं (دُرْمُحْتَار ج 2 ص 532) ﴿6﴾ इस
 में का'दए ऊला वाजिब है, सिर्फ़ तशहहुद पढ़ कर खड़ी हो जाइये ﴿7﴾
 तीसरी रकअत में क़िराअत के बा'द तक्बीरे कुनूत (اَللّٰهُ اَكْبَرُ) कहना
 वाजिब है (बहारे शरीअत, हिस्सा : 3, स. 86) ﴿8﴾ जिस तरह तक्बीरे
 तहरीमा कहते हैं इसी तरह तीसरी रकअत में अल हम्द शरीफ़ और
 सूरात पढ़ने के बा'द पहले हाथ कन्धों तक उठाइये फिर اَللّٰهُ اَكْبَرُ
 कहिये ﴿9﴾ फिर हाथ बांध कर दुआए कुनूत पढ़िये ।

फ़रमाने मुस्त्फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर एक मरतबा दुरुद पढ़ा अल्लाह उस पर दस रहमतें भेजता और उस के नामए आ'माल में दस नेकियां लिखता है। (ترمذی)

दुआए कुनूत

اللَّهُمَّ إِنَّا نَسْتَعِينُكَ وَنَسْتَغْفِرُكَ
وَنُؤْمِنُ بِكَ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْكَ وَنُشْفِي
عَلَيْكَ الْخَيْرَ وَنُشْكِرُكَ وَلَا نَكْفُرُكَ
وَنُحْلِعُ وَنَتْرُكُ مَنْ يَفْجُرُكَ
اللَّهُمَّ إِنَّا كَبَدْنَا لَكَ نُسُكِي وَ
نَسْجُدُ وَإِلَيْكَ نَسْعِي وَنَحْفِدُ
وَنَرْجُو رَحْمَتَكَ وَنَخْشَى عَذَابَكَ
إِنَّ عَذَابَكَ بِالْكَفَّارِ مُدْحِقٌ

ऐ अल्लाह हम तुझ से मदद चाहते (चाहती) हैं और तुझ से बख्शिश मांगते (मांगती) हैं और तुझ पर ईमान लाते (लाती) हैं और तुझ पर भरोसा रखते (रखती) हैं और तेरी बहुत अच्छी ता'रीफ़ करते (करती) हैं और तेरा शुक्र करते (करती) हैं और तेरी ना शुक्रा नहीं करते (करती) और अलग करते (करती) हैं और छोड़ते (छोड़ती) हैं उस को जो तेरी ना फ़रमानी करे, ऐ अल्लाह हम तेरी ही इबादत करते (करती) हैं और तेरे ही लिये नमाज़ पढ़ते (पढ़ती) और सज्दा करते (करती) हैं और तेरी ही तरफ़ दौड़ते (दौड़ती) और सअ्य करते (करती) हैं और तेरी रहमत की उम्मीद वार हैं और तेरे अज़ाब से डरते (डरती) हैं बेशक तेरा अज़ाब काफ़िरों को मिलने वाला है।

﴿10﴾ दुआए कुनूत के बा'द दुरुद शरीफ़ पढ़ना बेहतर है।

(बहारे शरीअत, हिस्सा : 4, स. 4, ०३६, २, २)

﴿11﴾ जो दुआए कुनूत न पढ़ सकें वोह येह पढ़ें :

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : शबे जुमुआ और रोज़े मुझ पर दुरूद की कसरत कर लिया करो जो ऐसा करेगा क़ियामत के दिन मैं उस का शफ़ीअ व गवाह बनूंगा । (شعب الایمان)

(اللَّهُمَّ) رَبَّنَا إِنَّا فِي الدُّنْيَا
حَسَنَةٌ وَفِي الْآخِرَةِ حَسَنَةٌ
وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ ①

(ऐ अल्लाह कञ्जुल (عَزَّوَجَلَّ) तरजमए इमाम : ऐ रब हमारे हमें दुन्या में भलाई दे और हमें आखिरत में भलाई दे और हमें अज़ाबे दोज़ख़ से बचा ।

या येह पढ़िये :

اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِي (عَنْهُ ص ६१८) ऐ अल्लाह मेरी मग़ि़रत फ़रमा दे ।

﴿12﴾ अगर दुआए कुनूत पढ़ना भूल गईं और रुकूअ में चली गईं तो वापस न लौटिये बल्कि सज्दए सहव कर लीजिये ।

(عالمگیری، ج ۱ ص ۱۱۱، ۱۲۸)

वित्र का सलाम फ़ैरने के बा 'द की एक सुन्नत

शह-न्शाहे ख़ैरुल अनाम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ जब वित्र में सलाम फ़ैरते तीन बार سُبْحَانَ الْمَلِكِ الْقُدُّوسِ कहते और तीसरी बार बुलन्द आवाज़ से कहते ।

(سُنَنُ التُّسَائِي ص २९९ حدیث ۱۷۲۹)

“हज़रते हलीमा सा'दिया” के चौदह हुरूफ़ की निस्बत से सज्दए सहव के 14 मदनी फूल

﴿1﴾ वाजिबाते नमाज़ में से अगर कोई वाजिब भूले से रह जाए तो सज्दए सहव वाजिब है (دُرْمُخْتَار، ج ۲ ص ۶۰۰) ﴿2﴾ अगर सज्दए सहव वाजिब होने के बा वुजूद न किया तो नमाज़ लौटाना वाजिब है (ایضاً) ﴿3﴾ जानबूझ कर वाजिब तर्क किया तो सज्दए सहव काफी नहीं

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुझ पर एक बार दुरुद पढ़ता है अल्लाह उस के लिये एक क़ीरात अन्न लिखता है और क़ीरात उद्दुद पहाड़ जितना है। (मोत्तरिक)

बल्कि नमाज़ दोबारा लौटाना वाजिब है। ﴿4﴾ (अय्या) कोई ऐसा वाजिब तर्क हुआ जो वाजिबाते नमाज़ से नहीं बल्कि इस का वुजूब अग्रे ख़ारिज से हो तो सज्दए सहव वाजिब नहीं मसलन ख़िलाफ़े तरतीब कुरआने पाक पढ़ना तर्के वाजिब है मगर इस का तअल्लुक़ वाजिबाते नमाज़ से नहीं बल्कि वाजिबाते तिलावत से है लिहाज़ा सज्दए सहव नहीं (अलबत्ता जानबूझ कर ऐसा किया हो तो इस से तौबा करे)

﴿5﴾ (رُدُّالْمُحَارَجِ ٢ ص ١٥٥) फ़र्ज तर्क हो जाने से नमाज़ जाती रहती है सज्दए सहव से इस की तलाफ़ी नहीं हो सकती लिहाज़ा दोबारा पढ़िये

﴿6﴾ (أَيْضاً، غُنَيْهِ ٢ ص ٤٥٥) सुन्नतें या मुस्तहब्बात मसलन “सना”, “तअव्वुज़”, “तस्मिया”, “आमीन”, तक्बीराते इन्तिक़ालात (या’नी सुजूद वगैरा में जाते उठते वक़्त कही जाने वाली اَللّٰهُ اَكْبَرُ) और तस्बीहात के तर्क से सज्दए सहव वाजिब नहीं होता, नमाज़ हो गई। (अय्या) मगर दोबारा पढ़ लेना मुस्तहब है, भूल कर तर्क किया हो या जानबूझ कर (बहारे शरीअत, हिस्सा : 4, स. 58) ﴿7﴾ नमाज़ में अगर्चे दस¹⁰ वाजिब तर्क हुए, सहव के दो² ही सज्दे सब के लिये काफ़ी हैं (رُدُّالْمُحَارَجِ ٢ ص ١٥٥)

बहारे शरीअत, हिस्सा : 4, स. 59) ﴿8﴾ ता’दीले अरकान (मसलन रुकूअ के बा’द कम अज़ कम एक बार سُبْحَانَ اللهِ कहने की मिक्दार सीधा खड़ा होना या दो सज्दों के दरमियान एक बार سُبْحَانَ اللهِ कहने की मिक्दार सीधा बैठना) भूल गई सज्दए सहव वाजिब है (عالمگیری ج ١ ص ١٢٧)

﴿9﴾ कुनूत या तक्बीरे कुनूत (या’नी वित्र की तीसरी रकअत में क़िराअत के बा’द कुनूत के लिये जो तक्बीर कही जाती है वोह अगर) भूल गई सज्दए

फ़रमाने मुस्त्फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जब तुम रसूलों पर दुरूद पढ़ो तो मुझ पर भी पढ़ो, बेशक मैं तमाम जहानों के रब का रसूल हूँ। (جمع الجوامع)

सह्व वाजिब है (أَيْضًا ص १२८) ﴿10﴾ क़िराअत वग़ैरा किसी मौक़अ पर सोचने में तीन मरतबा “سُبْحَانَ اللَّهِ” कहने का वक्फ़ा गुज़र गया सज्दए सह्व वाजिब हो गया। (رُدُّ الْمُنْحَارِ ج २ ص १७७) ﴿11﴾ सज्दए सह्व के बा’द भी अत्तहिय्यात पढ़ना वाजिब है। (عالمگیری، ج १، ص १२०) अत्तहिय्यात पढ़ कर सलाम फैरिये और बेहतर येह है कि दोनों बार अत्तहिय्यात पढ़ कर दुरूद शरीफ़ भी पढ़िये ﴿12﴾ का’दए ऊला में तशहहूद के बा’द इतना पढ़ा “اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ” तो सज्दए सह्व वाजिब है इस वज्ह से नहीं कि दुरूद शरीफ़ पढ़ा बल्कि इस वज्ह से कि तीसरी रक्अत के क़ियाम में ताख़ीर हुई। तो अगर इतनी देर तक सुकूत किया (चुप रही) जब भी सज्दए सह्व है जैसे का’दा व रुकूअ व सुजूद में कुरआन पढ़ने से सज्दए सह्व वाजिब है, हालां कि वोह कलामे इलाही عَزَّوَجَلَّ है।

(बहारे शरीअत, हिस्सा : 4, स. 62, १०७, रُدُّ الْمُنْحَارِ, ج २, ص १७७)

हिकायत

हज़रते सय्यिदुना इमामे आ’जम अबू हनीफ़ा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ को ख़्वाब में सरकारे नामदार, दो आ़लम के मालिको मुख्तार, शहन्शाहे अबरार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का दीदार हुवा सरकारे नामदार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इस्तिफ़सार फ़रमाया : “दुरूद शरीफ़ पढ़ने वाले पर तुम ने सज्दा क्यूं वाजिब बताया ?” अर्ज़ की : “इस लिये कि इस ने भूल कर (या’नी ग़फ़लत से) पढ़ा।” सरकारे आ़ली वक़ार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने येह जवाब पसन्द फ़रमाया। (أَيْضًا)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुझे पर दुरूद पढ़ कर अपनी मजालिस को आरास्ता करो कि तुम्हारा दुरूद पढ़ना बरोज़े क़ियामत तुम्हारे लिये नूर होगा । (फ़रुस़ الاغ़يار)

﴿13﴾ किसी का'दे में तशहहुद से कुछ रह गया तो सज्दए सहव वाजिब है नमाज़ नफ़ल हो या फ़र्ज़ । (عالمگیری، ج 1، ص 127)

सज्दए सहव का तरीका

﴿14﴾ अत्तहिय्यात पढ़ कर बल्कि अफ़ज़ल येह है कि दुरूद शरीफ़ भी पढ़ लीजिये, सीधी तरफ़ सलाम फ़ैर कर दो² सज्दे कीजिये, फिर तशहहुद, दुरूद शरीफ़ और दुआ पढ़ कर सलाम फ़ैर दीजिये ।

सज्दए तिलावत और शैतान की शामत

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अनिल उयूब صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने जन्नत निशान है : जब आदमी आयते सज्दा पढ़ कर सज्दा करता है, शैतान हट जाता है और रो कर कहता है : हाए मेरी बरबादी ! इब्ने आदम को सज्दे का हुक्म हुवा उस ने सज्दा किया उस के लिये जन्नत है और मुझे हुक्म हुवा मैं ने इन्कार किया मेरे लिये दोज़ख़ है । (صحيح مسلم، ص 56، حديث 81)

مُرَاد پُورِي هُوَ اِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ

कुरआने मजीद में सज्दे की 14 आयात हैं । जिस मक्सद के लिये एक मजलिस में सज्दे की सब (या'नी 14) आयतें पढ़ कर (14) सज्दे करे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस का मक्सद पूरा फ़रमा देगा । ख़्वाह एक एक आयत पढ़ कर उस का सज्दा करती जाए या सब पढ़ कर आख़िर में 14 सज्दे कर ले । (دُرْمُخْتَار، ج 2، ص 719، غُنْيَةُ ص 507، وغيرهما) मक्तबतुल मदीना की मत्बूआ बहारे शरीअत हिस्सा 4 सफ़हा 75 ता 77 पर 14 आयाते सज्दा मुलाहज़ा फ़रमा लीजिये ।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुझ पर दुरूदे पाक को कसरत करो बेशक यह तुम्हारे लिये त्हातरत है। (रिवायत)

“या बीबी फ़तिमा” के ग्यारह हुरूफ़ की निस्बत से सज्दए तिलावत के 11 मदनौ फूल

﴿1﴾ आयते सज्दा पढ़ने या सुनने से सज्दा वाजिब हो जाता है पढ़ने में येह शर्त है कि इतनी आवाज़ में हो कि अगर कोई उज़्र न हो तो खुद सुन सके, सुनने वाले के लिये येह ज़रूरी नहीं कि बिल क़स्द सुनी हो बिला क़स्द सुनने से भी सज्दा वाजिब हो जाता है। (बहारे शरीअत, हिस्सा : 4, स. 77, 122, ज 1, 132) (عالمگیری, ج 1, ص 132) ﴿2﴾ किसी भी ज़बान में आयत का तरजमा पढ़ने और सुनने वाली पर सज्दा वाजिब हो गया, सुनने वाली ने येह समझा हो या न समझा हो कि आयते सज्दा का तरजमा है। अलबत्ता येह ज़रूर है कि उसे न मा'लूम हो तो बता दिया गया हो कि येह आयते सज्दा का तरजमा था और आयत पढ़ी गई हो तो इस की ज़रूरत नहीं कि सुनने वाली को आयते सज्दा होना बताया गया हो। (عالمگیری, ج 1, ص 133)

﴿3﴾ सज्दा वाजिब होने के लिये पूरी आयत पढ़ना ज़रूरी है लेकिन बा'ज उलमाए मुतअख़िख़रीन رَحْمَهُمُ اللهُ السُّبْحَانِ के नज़दीक वोह लफ़ज़ जिस में सज्दे का माद्दा पाया जाता है उस के साथ क़ब्ल या बा'द का कोई लफ़ज़ मिला कर पढ़ा तो सज्दए तिलावत वाजिब हो जाता है लिहाज़ा एहतियात येही है कि दोनों² सूरतों में सज्दए तिलावत किया जाए।

(फ़तावा रज़विyya, जि. 8, स. 229, 233, मुलख़ब्रसन)

﴿4﴾ आयते सज्दा बैरूने नमाज़ (या'नी ख़ारिजे नमाज़) पढ़ी तो फ़ौरन सज्दा कर लेना वाजिब नहीं है अलबत्ता वुजू हो तो ताख़ीर मक्रूहे

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुझ पर रोज़े जुमुआ दुर्द शरीफ़ पढ़ेगा मैं कियामत के दिन उस की शफ़ाअत करूंगा। (कोशिल)

तन्जीही है। (दुर्मुत्तार, ज २, व ३०३) ﴿5﴾ सज्दए तिलावत नमाज़ में फ़ौरन करना वाजिब है अगर ताख़ीर की तो गुनहगार होगी और जब तक नमाज़ में है या सलाम फ़ैरने के बा'द कोई नमाज़ के मुनाफ़ी फ़े'ल नहीं किया तो सज्दए तिलावत कर के सज्दए सहव बजा लाए। (दुर्मुत्तार, रूदुलमुत्तार, ज २, व ३०४) ताख़ीर से मुराद तीन आयत से ज़ियादा पढ़ लेना है कम में ताख़ीर नहीं मगर आख़िरे सूरात में अगर सज्दा वाक़ेअ है, मसलन इन्शावक़त तो सूरात पूरी कर के सज्दा करेगी जब भी हरज नहीं। (बहारे शरीअत, हिस्सा : 4, स. 82 मुलख़ब्रसन)

﴿6﴾ काफ़िर या ना बालिग़ से आयते सज्दा सुनी तब भी सज्दए तिलावत वाजिब हो गया। (एलमग़िरी, ज १, व १३२) ﴿7﴾ सज्दए तिलावत के लिये तहरीमा के सिवा तमाम वोह शराइत हैं जो नमाज़ के लिये हैं मसलन तहारत, इस्तिक्बाले क़िब्ला, निय्यत, वक़्त इस मा'ना पर कि आगे आता है¹ सित्रे औरत, लिहाज़ा अगर पानी पर कादिर है तयम्मुम कर के सज्दा करना जाइज़ नहीं। (दुर्मुत्तार, ज २, व १९९) बहारे शरीअत, हिस्सा : 4, स. 80) ﴿8﴾ इस की निय्यत में येह शर्त नहीं कि फुलां आयत का सज्दा है बल्कि मुत्लक़न सज्दए तिलावत की निय्यत काफ़ी है। (दुर्मुत्तार, रूदुलमुत्तार, ज २, व १९९) ﴿9﴾ जो चीज़ें नमाज़ को फ़ासिद करती हैं उन से सज्दा भी फ़ासिद हो जाएगा मसलन हृदसे अ़मद² व कलाम व क़हक़हा। (दुर्मुत्तार, ज २, व १९९) बहारे शरीअत, हिस्सा : 4, स. 80)

دینہ

1 : इस की तफ़सील बहारे शरीअत हिस्सा 4 में मुलाहज़ा फ़रमा लीजिये 2 : या'नी क़स्दन वुजू तोड़ने का अमल

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : उस शख्स को नाक खाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पड़े । (१६)

सज्दए तिलावत का तरीका

﴿10﴾ खड़ी हो कर **اللهُ أَكْبَرُ** कहती हुई सज्दे में जाए और कम से कम तीन बार **سُبْحَانَ رَبِّيَ الْأَعْلَى** कहे फिर **اللهُ أَكْبَرُ** कहती हुई खड़ी हो जाए । शुरूअ और बा'द में, दोनों बार **اللهُ أَكْبَرُ** कहना सुन्नत है और खड़े हो कर सज्दे में जाना और सज्दे के बा'द खड़ा होना येह दोनों कियाम मुस्तहब । (बहारे शरीअत, हिस्सा : 4, स. 80)

﴿11﴾ सज्दए तिलावत के लिये **اللهُ أَكْبَرُ** कहते वक़्त न हाथ उठाना है न इस में तशहहुद है न सलाम । (تَوْبَةُ الْأَبْصَارِ، ج २، ص ७००)

ताकीद : बालिगा होने के बा'द जितनी बार भी आयाते सज्दा सुन कर अभी तक सज्दा न किया हो उन का ग़लबए ज़न के ए'तिबार से हिसाब लगा कर उतनी बार बा वुजू सज्दए तिलावत कर लीजिये ।

सज्दए शुक्र का बयान

औलाद पैदा हुई, या माल पाया या गुमी हुई चीज़ मिल गई या मरीज़ ने शिफ़ा पाई या मुसाफ़िर वापस आया अल ग़रज़ किसी ने'मत के हुसूल पर सज्दए शुक्र करना मुस्तहब है इस का तरीका वोही है जो सज्दए तिलावत का है । (عالمگیری، ج १، ص १३६، رَدُّ الْمَحْتَرَجِ २، ص ७२०) इसी तरह जब भी कोई खुश ख़बरी या ने'मत मिले तो सज्दए शुक्र करना कारे सवाब है मसलन मदीनए मुनव्वरह **رَادَاهَا اللهُ شَرَفًا وَتَعْظِيمًا** का वीज़ा लग गया, किसी पर इन्फ़िरादी कोशिश काम्याब हुई और वोह दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल से वाबस्ता हो गई, मुबारक ख़्वाब नज़र आया, आफ़त टली या कोई दुश्मने इस्लाम मरा वग़ैरा वग़ैरा ।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर एक बार दुरूद पाक पढ़ा अल्लाह (ﷻ) उस पर दस रहमतें भेजता है। (स्ल)

नमाज़ी के आगे से गुज़रना सख़्त गुनाह है

﴿1﴾ सरकारे मदीना, सुल्ताने बा क़रीना, क़रारे क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गन्जीना, साहिबे मुअ़त्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना
 صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने इब्रत निशान है : “अगर कोई जानता कि अपने भाई के सामने नमाज़ में आड़े हो कर गुज़रने में क्या है तो सो¹⁰⁰ बरस खड़ा रहना उस एक क़दम चलने से बेहतर समझता।”
 ﴿2﴾ हज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक (مُسْنَنُ ابْنِ مَاجَه ج 1 ص 106 ح 506) हज़रते सय्यिदुना का 'बुल अहबार رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं कि हज़रते सय्यिदुना का 'बुल अहबार رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ का इर्शाद है : “नमाज़ी के आगे से गुज़रने वाला अगर जानता कि इस पर क्या गुनाह है तो ज़मीन में धंस जाने को गुज़रने से बेहतर जानता।” (موطأ امام مالك، ج 1 ص 104 ح 104) नमाज़ी के आगे से गुज़रने वाला बेशक गुनाहगार है मगर नमाज़ पढ़ने वाले की नमाज़ में इस से कोई फ़र्क नहीं पड़ता।

(फ़तावा रज़विय्या, जि. 7, स. 254, मुलख़्ख़सन)

“सय्यिदह ख़दीजतुल कुब्रा” के पन्दरह हुरूफ़ की निस्बत से नमाज़ी के आगे से गुज़रने के बारे में 15 अहक़ाम

﴿1﴾ मैदान और बड़ी मस्जिद में नमाज़ी के क़दम से मौज़ए सुजूद तक गुज़रना ना जाइज़ है। मौज़ए सुजूद से मुराद येह है कि क़ियाम की हालत में सज्दे की जगह नज़र जमाए तो जितनी दूर तक निगाह फैले वोह मौज़ए सुजूद है। उस के दरमियान से गुज़रना जाइज़

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : उस शख्स को नाक खाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़े । (ترمذی)

नहीं । (عالمگیری، ج ۱، ص ۱۰۴، دُرْمُخْتَار ج ۲، ص ۷۹) ।
 अन्दाज़न क़दम से ले कर तीन गज़ तक है । लिहाज़ा मैदान में नमाज़ी के क़दम के तीन गज़ के बा'द से गुज़रने में हरज नहीं (क़ानूने शरीअत, हिस्सा : अब्वल, स. 114) ﴿2﴾ मकान और छोटी मस्जिद में नमाज़ी के आगे अगर सुतरा (या'नी आड़) न हो तो क़दम से दीवारे क़िब्ला तक कहीं से गुज़रना जाइज़ नहीं । (عالمگیری، ج ۱، ص ۱۰۴) । ﴿3﴾ नमाज़ी के आगे सुतरा या'नी कोई आड़ हो तो उस सुतरे के बा'द से गुज़रने में कोई हरज नहीं । ﴿4﴾ सुतरा कम अज़ कम एक हाथ (या'नी तक्रीबन आधा गज़) ऊंचा और उंगली बराबर मोटा होना चाहिये । (دُرْمُخْتَار ج ۲، ص ۴۸) । ﴿5﴾ दरख़्त, आदमी और जानवर वगैरा का भी सुतरा हो सकता है ﴿6﴾ इन्सान को इस हालत में सुतरा किया जाए जब कि उस की पीठ नमाज़ी की तरफ़ हो कि नमाज़ी की तरफ़ मुंह करना मन्अ है । (बहारे शरीअत, हिस्सा : 3, स. 184) (अगर नमाज़ पढ़ने वाली के चेहरे की तरफ़ किसी ने मुंह किया तो अब कराहत नमाज़ी पर नहीं उस मुंह करने वाली पर है) ﴿7﴾ एक इस्लामी बहन नमाज़ी के आगे से गुज़रना चाहती है अगर दूसरी इस्लामी बहन उसी को आड़ बना कर उस के चलने की रफ़्तार के ऐन मुताबिक़ उस के साथ ही साथ गुज़र जाए तो जो नमाज़ी से क़रीब है वोह गुनहगार हुई और दूसरी के लिये येही पहली इस्लामी बहन सुतरा (या'नी आड़) भी बन गई । (عالمگیری، ج ۱، ص ۱۰۴) । ﴿8﴾ अगर कोई इस क़दर ऊंची जगह पर नमाज़ पढ़ रही है कि गुज़रने वाली के

फरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुझ पर दस मरतबा दुरूदे पाक पढ़े अल्लाह (طربى)। उस पर सो रहमतें नाज़िल फ़रमाता है।

आ'जा नमाज़ी के सामने नहीं हुए तो गुज़रने में हरज नहीं। (बहारे शरीअत, हिस्सा : 3, स. 183, मक्तबतुल मदीना) ﴿9﴾ दो औरतें नमाज़ी के आगे से गुज़रना चाहती हैं इस का तरीका येह है कि उन में से एक नमाज़ी के सामने पीठ कर के खड़ी हो जाए। अब उस को आड़ बना कर दूसरी गुज़र जाए। फिर दूसरी पहली की पीठ के पीछे नमाज़ी की तरफ़ पीठ कर के खड़ी हो जाए। अब पहली गुज़र जाए फिर वोह दूसरी जिधर से आई थी उसी तरफ़ हट जाए। (عالمگیری ج ۱ ص ۱۰۴، رَدُّ الْمُحْتَار ج ۲ ص ۴۸۳)

﴿10﴾ कोई नमाज़ी के आगे से गुज़रना चाहती है तो नमाज़ी को इजाज़त है कि वोह उसे गुज़रने से रोके ख़्वाह "سَبْحَنَ اللهُ" कहे या जहर (या'नी बुलन्द आवाज़ से) क़िराअत करे या हाथ या सर या आंख के इशारे से मन्अ करे। इस से ज़ियादा की इजाज़त नहीं। मसलन कपड़ा पकड़ कर झटकना या मारना बल्कि अगर अमले कसीर हो गया तो नमाज़ ही जाती रही। (دُرِّمُحْتَار، رَدُّ الْمُحْتَار، ج ۲ ص ۴۸۵)

﴿12﴾ (دُرِّمُحْتَار، ج ۲ ص ۴۸۶) तस्बीह व इशारा दोनों को बिला ज़रूरत जम्अ करना मक्रूह है

औरत के सामने से गुज़रे तो औरत तस्फ़ीक़ से मन्अ करे या'नी सीधे हाथ की उंगलियां उल्टे हाथ की पुश्त पर मारे। (ایضاً) ﴿13﴾ अगर मर्द ने तस्फ़ीक़ की और औरत ने तस्बीह कही तो नमाज़ फ़ासिद न हुई मगर ख़िलाफ़े सुन्नत हुवा (ایضاً ص ۴۸۷) ﴿14﴾ तवाफ़ करने वाली को दौराने तवाफ़ नमाज़ी के आगे से गुज़रना जाइज़ है। (دُرِّمُحْتَار، ج ۲ ص ۴۸۲)

﴿15﴾ सअूय के दौरान नमाज़ी के आगे से गुज़रना जाइज़ नहीं।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा तहकीक़ वोह बद बख़्त हो गया । (अब्दुः)

“तरावीह सुन्नते मुअक्कदा है” के सत्तरह हुरूफ़ की निस्बत से तरावीह के 17 मदनी फूल

- ❶ तरावीह हर आक़िल व बालिग़ इस्लामी बहन के लिये सुन्नते मुअक्कदा है । इस का तर्क जाइज़ नहीं । (दُرُّمُخْتَارِ ج २، ص ११० وغيره) ।
- ❷ तरावीह की बीस²⁰ रक्अतें हैं । सय्यिदुना फ़ारूके आ'जम رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ के अहद में बीस²⁰ रक्अतें ही पढ़ी जाती थीं ।
(مَعْرِفَةُ السَّنَنِ وَالْأَثَارِ لِلْبَيْهَقِيِّ ج २ ص ३०० رقم १३६०)
- ❸ तरावीह का वक़्त इशा के फ़र्ज़ पढ़ने के बा'द से सुब्हे सादिक़ तक है । इशा के फ़र्ज़ अदा करने से पहले अगर पढ़ ली तो न होगी ।
(عالمگیری ج १ ص ११० وغيره)
- ❹ इशा के फ़र्ज़ व वित्र के बा'द भी तरावीह पढ़ी जा सकती है । जैसा कि बा'ज अवकात 29 को रूयते हिलाल की शहादत मिलने में ताख़ीर के सबब ऐसा हो जाता है ।
- ❺ मुस्तहब यह है कि तरावीह में तिहाई रात तक ताख़ीर करें अगर आधी रात के बा'द पढ़ें तब भी कराहत नहीं ।
(دُرُّمُخْتَارِ ج २ ص १०९)
- ❻ तरावीह अगर फ़ौत हुई तो इस की क़ज़ा नहीं । (الْبَيْنَاتُ)
- ❼ बेहतर यह है कि तरावीह की बीस²⁰ रक्अतें दो² दो² कर के दस¹⁰ सलाम के साथ अदा करे ।
(دُرُّمُخْتَارِ ج २ ص १०९)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर सुबह व शाम दस दस बार दुरूदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअत मिलेगी । (مُحْتَار) (م)

- ﴿8﴾ तरावीह की बीस²⁰ रकअतें एक सलाम के साथ भी अदा की जा सकती हैं, मगर ऐसा करना मक्रूह है । (يُضَا) हर दो² रकअत पर क़ा'दा करना फ़र्ज़ है । हर क़ा'दा में अत्तहिय्यात के बा'द दुरूद शरीफ़ भी पढ़े और ताक़ रकअत (या'नी पहली, तीसरी, पांचवीं वगैरा) में सना, तअव्वुज व तस्मिया भी पढ़े ।
- ﴿9﴾ एहतियात येह है कि जब दो² दो² रकअत कर के पढ़ रही है तो हर दो² रकअत पर अलग अलग निय्यत करे और अगर बीस²⁰ रकअतों की एक साथ निय्यत कर ली तब भी जाइज है । (رَدُّ الْمُحْتَار ج ٢ ص ٥٩٧)
- ﴿10﴾ बिला उज़्र तरावीह बैठ कर पढ़ना मक्रूह है बल्कि बा'ज फुक़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام के नज़्दीक तो होती ही नहीं । (دَرِّ مُحْتَار ج ٢ ص ٦٠٣)
- ﴿11﴾ अगर (ह्राफ़िज़ा इस्लामी बहन अपनी तरावीह अदा कर रही हैं और) किसी वजह से (तरावीह) की नमाज़ फ़ासिद हो जाए तो जितना कुरआने पाक उन रकअतों में पढ़ा था उन का इआदा करें ताकि ख़त्म में नुक़सान न रहे । (عالمگیری ج ١ ص ١١٨)
- ﴿12﴾ दो² रकअत पर बैठना भूल गई तो जब तक तीसरी³ का सज्दा न किया हो बैठ जाए आख़िर में सज्दे सहव कर ले और अगर तीसरी³ का सज्दा कर लिया तो चार पूरी कर ले मगर येह दो² शुमार होंगी । हां अगर दो² पर क़ा'दा किया था तो चार⁴ हुई । (يُضَا)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़ा उस ने जफ़ा की। (عبدالرزاق)

﴿13﴾ तीन³ रकअतें पढ़ कर सलाम फ़ैरा अगर दूसरी पर बैठी नहीं थी तो न हुई इन के बदले की दो² रकअतें दोबारा पढ़े।

(عالمگیری ج ۱ ص ۱۱۸)

﴿14﴾ अगर सत्ताईसवीं को (या इस से क़ब्ल) कुरआने पाक ख़त्म हो गया तब भी आख़िर रमज़ान तक तरावीह पढ़ती रहें कि सुन्नते मुअक्कदा है।

(ایضاً)

﴿15﴾ हर चार रकअतों के बा'द उतनी देर आराम लेने के लिये बैठना मुस्तहब है जितनी देर में चार रकअत पढ़ी हैं। इस वक़फ़े को तरवीहा कहते हैं।

(عالمگیری ج ۱ ص ۱۱۵)

﴿16﴾ तरवीहा के दौरान इख़्तियार है कि चुप बैठें या ज़िक्रो दुरूद और तिलावत करें या तन्हा नफ़ल पढ़ें या येह तस्बीह भी पढ़ सकती हैं :-

سُبْحَانَ ذِي الْمُلْكِ وَالْمَلَكُوتِ ۝ سُبْحَانَ ذِي الْعِزَّةِ وَالْعَظَمَةِ وَالْهَيْبَةِ
وَالْقُدْرَةِ وَالْكِبْرِيَاءِ وَالْجَبْرُوتِ ۝ سُبْحَانَ الْمَلِكِ الْحَيِّ الَّذِي
لَا يَنَامُ وَلَا يَمُوتُ ۝ سُبُّوحٌ قُدُّوسٌ رَبُّنَا وَرَبُّ الْمَلَائِكَةِ
وَالرُّوحِ ۝ اَللّٰهُمَّ اَجِرْنِي مِنَ النَّارِ ۝ يَا مُجِيزُ يَا مُجِيزًا
مُجِيزًا ۝ بِرَحْمَتِكَ يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ ۝ (غُنْبِيهِ ص ۴۰۴ وغیره)

﴿17﴾ बीस रकअतें हो चुकने के बा'द पांचवां तरवीहा भी मुस्तहब है।

(बहारे शरीअत, हिस्सा : 4, स. 39)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुझ पर रोजे जुमुआ दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअत करूंगा। (جمع الجوامع)

नमाज़े पन्जगाना की तफ़्सील

पांचों नमाज़ों में कुल 48 रकआत हैं। जिन में 17 रकआत फ़र्ज़, 3 रकआत वाजिब, 12 सुन्नते मुअक्कदा, 8 रकआत सुन्नते ग़ैर मुअक्कदा हैं और 8 रकआत नफ़ल हैं।

नम्बर शुमार	नाम अवक़ात	सुन्नते मुअक्कदा क़ब्लिया	सुन्नते ग़ैर मुअक्कदा	फ़र्ज़	सुन्नते मुअक्कदा बा'दिया	नफ़ल	वाजिब	नफ़ल	कुल ता'दाद
1	फ़ज़्र	2	-	2	-	-	-	-	4
2	ज़ोहर	4	-	4	2	2	-	-	12
3	अ़स्र	-	4	4	-	-	-	-	8
4	मग़रिब	-	-	3	2	2	-	-	7
5	इशा	-	4	4	2	2	3	2	17

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा उस ने जन्नत का रास्ता छोड़ दिया। (طبرانی)

नमाज़ के बा'द पढ़े जाने वाले अवराद

नमाज़ के बा'द जो अज़कारे तबीला (तबील अवराद) अहादीसे मुबारका में वारिद हैं, वोह जोहर व मग़रिब व इशा में सुन्नतों के बा'द पढ़े जाएं, क़ब्ले सुन्नत मुख़्तसर दुआ पर क़नाअत चाहिये, वरना सुन्नतों का सवाब कम हो जाएगा।

(رُكُلُ الْحَارِ، ج २، ص ३००) बहारे शरीअत, हिस्सा : 3, स. 107)

अहादीसे मुबारका में किसी दुआ की निस्बत जो ता'दाद वारिद है उस से कम ज़ियादा न करे कि जो फ़ज़ाइल उन अज़कार के लिये हैं वोह उसी अ़दद के साथ मख़्सूस हैं इन में कम ज़ियादा करने की मिसाल येह है कि कोई कुफ़ल (ताला) किसी ख़ास किस्म की कुन्जी से खुलता है अब अगर कुन्जी में दन्दाने कम या ज़ाइद कर दें तो उस से न खुलेगा, अलबत्ता अगर शुमार में शक वाक़ेअ हो तो ज़ियादा कर सकता है और येह ज़ियादत (बढ़ाना) नहीं बल्कि इत्माअ (मुकम्मल करना) है।

(ऐज़न, ایضاً ص ३०२)

पन्ज वक़्ता नमाज़ों के सुनन व नवाफ़िल से फ़राग़त के बा'द ज़ैल के अवराद पढ़ लीजिये सहूलत के लिये नम्बर ज़रूर दिये हैं मगर इन में तरतीब शर्त नहीं है। हर विर्द के अक्वल आख़िर दुरूद शरीफ़ पढ़ना सोने पे सुहागा है।

«1» “आयतुल कुरसी” एक एक बार पढ़ने वाला मरते ही दाख़िले जन्नत हो।

(مَشْهُدَةُ الْمَضَائِبِ ج १ ص १९७-حدیث ११६)

«2» اللَّهُمَّ اعْنِي عَلَيَّ زِكْرَكَ وَشُكْرَكَ وَحَسَنَ عِبَادَتِكَ (1)

(مُسْنَدُ أَبِي كَلُودٍ ج २ ص १२३-حدیث १०२२)

دینہ

1. ऐ अल्लाह! तू अपने ज़िक्र, अपने शुक्र और अपनी अच्छी इबादत करने पर मेरी मदद फ़रमा।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : तुम जहाँ भी हो मुझ पर दुरूद पढ़ो कि तुम्हारा दुरूद मुझ तक पहुँचता है। (طبرانی)

لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ بِيَدِهِ الْخَيْرُ يُحْيِي
 10 10 दस दस बार पढ़िये।
 (1) وَيُمِيتُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ

(बहारे शरीअत, हिस्सा : 3, स. 107)

﴿7﴾ हज़रते सय्यिदुना अनस رضي اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है कि नबिय्ये रहमत, शफीए उम्मत, शहन्शाहे नुबुव्वत, ताजदारो रिसालत صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया : जिस ने नमाज़ के बा'द येह कहा, "سُبْحَانَ اللَّهِ الْعَظِيمِ وَبِحَمْدِهِ لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ" (2) तो वोह मग़िफ़रत याफ़ता हो कर उठेगा।

(مَحْمَعُ الزَّوَالِدِ ج 10 ص 129 حديث 17928)

﴿8﴾ हज़रते इब्ने अब्बास رضي اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا से रिवायत है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अनिल उयूब صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया : "जो हर फ़र्ज नमाज़ के बा'द दस¹⁰ मर्तबा **فُلْ هُوَ اللَّهُ أَحَدٌ** (पूरी सूरत) पढ़ेगा **अल्लाह** तअ़ाला उस के लिये अपनी रिज़ा और मग़िफ़रत लाज़िम फ़रमा देगा।"

(تَفْسِيرُ دُرِّ مَنثور ج 8 ص 678)

﴿9﴾ हज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन अरक़म رضي اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है रसूले अकरम, रहमतो अ़ालम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम, रसूले मुहतशम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया : जो शरख़्स हर नमाज़ के बा'द

1 : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं, वोह तन्हा है, उस का कोई शरीक नहीं, उस के लिये मुल्क व हम्द है, उसी के हाथ में ख़ैर है, वोह ज़िन्दा करता है और मौत देता है और वोह हर शै पर क़ादिर है। 2 : पाक है अज़मत वाला रब और उसी की ता'रीफ़ है और उसी की अ़ता से नेकी की तौफ़ीक़ और गुनाह से बचने की कुव्वत मिलती है।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा चिक्र हो और वोह मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़े तो वोह लोगों में से क-जूस तरीन शख्स है। (मसन्द अहमद)

(1) سُبْحَانَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُونَ ﴿١٧٧﴾ وَسَلَامٌ عَلَى الْمُرْسَلِينَ ﴿١٧٨﴾ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿١٧٩﴾

(1) तीन बार पढ़ेगा गोया उस ने अज़्र का बहुत बड़ा पैमाना भर लिया। (तफ़सीर डुरमन्थूर ललसीवुली ज ७ व १६१)

मिनटों में चार ख़त्मे कुरआने पाक का सवाब

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है मदीने के ताजदार, सुल्ताने दो जहां, रहमते आलमिय्यान, सरवरे जीशान, महबूबे रहमान صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने हकीकत निशान है : जो बा'दे फ़ज़्र बारह मर्तबा قُلْ هُوَ اللهُ أَحَدٌ (पूरी सूत) पढ़ेगा गोया वोह चार बार (पूरा) कुरआन पढ़ेगा और उस दिन उस का येह अमल अहले ज़मीन से अफ़ज़ल है जब कि वोह तक्वा का पाबन्द रहे।

(شُعَبُ الْإِيمَانِ لِلْبَيْهَقِيِّ ج ٢ ص ٥٠١ حديث ٢٥٢٨)

शैतान से महफूज़ रहने का अमल

सरकारे मदीना, राहते क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गन्जीना, साहिबे मुअत्तर पसीना صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने आलीशान है : जिस ने नमाज़े फ़ज़्र अदा की और बात किये बिगैर قُلْ هُوَ اللهُ أَحَدٌ (पूरी सूत) को दस¹⁰ मर्तबा पढ़ा तो उस दिन में उसे कोई गुनाह न पहुंचेगा और वोह शैतान से बचाया जाएगा। (तफ़सीर डुरमन्थूर ज ८ व ६७८)

(नमाज़ के बा'द पढ़ने के मज़ीद अवराद मक्तबतुल मदीना की मत्बूआ बहारे शरीअत हिस्सा 3 सफ़हा 107 ता 110 पर, अल वज़ीफ़तुल करीमा और शजरए कादिरिया में मुलाहज़ा फ़रमा लीजिये)।

1. तरजमए क-ज़ुल ईमान : पाकी है तुम्हारे रब को इज़्ज़त वाले रब को उन की बातों से और सलाम है पैग़म्बरों पर और सब ख़ूबियां अल्लाह को जो सारे जहान का रब है।

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ
 آمَنَّا بِعَدْوِ اللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

क़ज़ा नमाज़ों का तरीक़ा

(हनफ़ी)

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

दो जहां के सुल्तान, सरवरे जीशान, महबूबे रहमान
 صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने मग़िफ़रत निशान है, मुझ पर दुरुदे पाक
 पढ़ना पुल सिरात पर नूर है, जो रोजे जुमुआ मुझ पर अस्सी बार दुरूदे पाक
 पढ़े उस के अस्सी साल के गुनाह मुआफ़ हो जाएंगे ।

(الْعَامِعُ الصَّغِيرُ لِلْسُّوْطِيِّ ص ۳۲۰ حَدِيث ۵۱۹۱)

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْبُ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ عَلَى مُحَمَّدٍ

पारह 30 सूरतुल माऊन की आयत नम्बर 4 और 5 में इर्शाद होता
 है :

فَوَيْلٌ لِلْمُصَلِّينَ ۝۳ الَّذِينَ
 هُمْ عَنْ صَلَاتِهِمْ سَاهُونَ ۝۵

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : तो उन
 नमाज़ियों की ख़राबी है जो अपनी नमाज़
 से भूले बैठे हैं ।

मुफ़स्सरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़ती अहमद यार
 ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْعَالَمِينَ सूरतुल माऊन की आयत नम्बर 5 के तहूत
 फ़रमाते हैं : नमाज़ से भूलने की चन्द सूरतें हैं : कभी न पढ़ना, पाबन्दी
 से न पढ़ना, सहीह वक़्त पर न पढ़ना, नमाज़ सहीह तरीक़े से अदा न

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर एक बार दुरुदे पाक पढ़ा अल्लाह (स) عَزَّوَجَلَّ उस पर दस रहमतें भेजता है।

करना, शौक से न पढ़ना, समझ बूझ कर अदा न करना, कसल व सुस्ती, बे परवाई से पढ़ना। (नूरुल इरफ़ान, स. 958)

जहन्नम की ख़ौफ़नाक वादी

सदरुशशरीअह बदरुत्तरीकह हज़रते मौलाना मुहम्मद अमजद अली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي फ़रमाते हैं : जहन्नम में वैल नामी एक ख़ौफ़नाक वादी है जिस की सख़्ती से खुद जहन्नम भी पनाह मांगता है। जान बूझ कर नमाज़ क़ज़ा करने वाले उस के मुस्तहिक् हैं।

(बहारे शरीअत, हिस्सा : 3, स. 2, मुलख़बसन)

पहाड़ गरमी से पिघल जाएं

हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद बिन अहमद ज-हबी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي फ़रमाते हैं : कहा गया है कि जहन्नम में एक वादी है जिस का नाम वैल है, अगर उस में दुन्या के पहाड़ डाले जाएं तो वोह भी उस की गरमी से पिघल जाएं और येह उन लोगों का ठिकाना है जो नमाज़ में सुस्ती करते और वक़्त के बा'द क़ज़ा कर के पढ़ते हैं मगर येह कि वोह अपनी कोताही पर नादिम हों और बारगाहे खुदा वन्दी عَزَّوَجَلَّ में तौबा करें।

(کتابُ الکبائر ص ۱۹)

एक नमाज़ क़ज़ा करने वाला भी फ़ासिक़ है

आ'ला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़तावा रज़विय्या जिल्द 5 सफ़हा 110 पर फ़रमाते हैं : जो एक वक़्त की नमाज़ भी क़स्दन बिला उज़्रे शर्ई दीदा व दानिस्ता क़ज़ा करे फ़ासिक़

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : उस शख़्स की नाक ख़ाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़े। (ترمذی)

व मुरतकिबे कबीरा व मुस्तहिक्के जहन्नम है।

सर कुचलने की सज़ा

सरकारे मदीनए मुनव्वरह, सरदारे मक्कए मुकर्रमा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने सहाबए किराम الرضوان عَلَيْهِمُ السَّلَام से फ़रमाया : आज रात दो^२ शख़्स (या'नी जिब्रईल عَلَيْهِ السَّلَام और मिकाईल عَلَيْهِ السَّلَام) मेरे पास आए और मुझे अर्जे मुक़द्दसा में ले आए। मैंने देखा कि एक शख़्स लैटा है और उस के सिरहाने एक शख़्स पथ्थर उठाए खड़ा है और पै दर पै पथ्थर से उस का सर कुचल रहा है, हर बार कुचलने के बा'द सर फिर ठीक हो जाता है। मैं ने फ़िरिश्तों से कहा سُبْحَانَ اللهِ عَزَّوَجَلَّ येह कौन है ? उन्होंने ने अर्ज की : आगे तशरीफ़ ले चलिये (मज़ीद मनाज़िर दिखाने के बा'द) फ़िरिश्तों ने अर्ज की, कि : पहला शख़्स जो आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने देखा येह वोह था जिस ने कुरआन पढ़ा फिर उस को छोड़ दिया था और फ़र्ज नमाज़ों के वक़्त सो जाता था इस के साथ येह बरताव क़ियामत तक होगा।

(مُلَخَّصٌ اَزْ صَحِيحِ بَخَارِي حَدِيثٌ ٤٧، ٧٠، ج ٤، ص ٤٢٥)

क़ब्र में आग के शो'ले

एक शख़्स की बहन फ़ौत हो गई। जब उसे दफ़न कर के लौटा तो याद आया कि रक़म की थैली क़ब्र में गिर गई है चुनान्चे क़ब्रिस्तान आ कर थैली निकालने के लिये उस ने अपनी बहन की क़ब्र खोद डाली ! एक दिल हिला देने वाला मन्ज़र उस के सामने था, उस ने देखा कि बहन की क़ब्र में आग के शो'ले भड़क रहे हैं ! चुनान्चे

فَرَمَانَهُ مُسْتَفَاةً صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : جَوِ مُؤَلِّجًا پَر دَس مَرْتَبَا دُرُودِ پَاك پَدِّ اَللّٰهَ عَزَّ وَجَلَّ
 उस पर सो रहमतें नाज़िल फ़रमाता है। (طبرانی)

उस ने जूँ तूँ क़ब्र पर मिट्टी डाली और सदमे से चूर चूर रोता हुवा मां के पास आया और पूछा : प्यारी अम्मीजान ! मेरी बहन के आ 'माल कैसे थे ? वोह बोली : बेटा क्यूं पूछते हो ? अर्ज़ की : "मैं ने अपनी बहन की क़ब्र में आग के शो'ले भड़क्ते देखे हैं ?" येह सुन कर मां भी रोने लगी और कहा, "अफ़सोस ! तेरी बहन नमाज़ में सुस्ती किया करती थी और नमाज़ क़ज़ा कर के पढ़ा करती थी।"

(کتابُ الکبائر ص ۲۶)

इस्लामी बहनो! जब क़ज़ा करने वालियों की ऐसी ऐसी सख़्त सज़ाएं हैं तो जो बदनसीब सिरे से नमाज़ ही नहीं पढ़ती उस का क्या अन्जाम होगा !

अगर नमाज़ पढ़ना भूल जाए तो.....?

ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, पैकरे जूदो सख़ावत, सरापा रहमत, महबूबे रब्बुल इज़्ज़त صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इर्शाद फ़रमाया : "जो नमाज़ से सो जाए या भूल जाए तो जब याद आए पढ़ ले कि वोही उस का वक़्त है।"

(صحيح مُسليم ص ۳۴۶ حدیث ۶۸۴)

फ़ुक़हाए किराम رَحْمَةُ اللهِ السَّلَام फ़रमाते हैं, "सोते में या भूले से नमाज़ क़ज़ा हो गई तो उस की क़ज़ा पढ़नी फ़र्ज़ है अलबत्ता क़ज़ा का गुनाह इस पर नहीं मगर बेदार होने और याद आने पर अगर वक़ते मक्रूह न हो तो उसी वक़्त पढ़ ले ताख़ीर मक्रूह है।

(बहारे शरीअत, हिस्सा : 4, स. 50)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा तहकीक़ वोह बद बख़्त हो गया । (अब्दुल)

मजबूरी में अदा का सवाब मिलेगा या नहीं ?

आंख न खुलने की सूरत में नमाज़े फ़ज़्र “क़ज़ा” हो जाने की सूरत में “अदा” का सवाब मिलेगा या नहीं । इस ज़िम्न में मेरे आक़ा आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, वलिय्ये ने'मत, अज़ीमुल बरकत, अज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्पू रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, हामिये सुन्नत, माहिये बिद्अत, अ़ालिमे शरीअत, पीरे तरीक़त, बाइसे ख़ैरो बरकत, इमामे इश्को महब्बत, हज़रते अ़ल्लामा मौलाना अलहाज़ अल हाफ़िज़ अल क़ारी शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़तावा रज़विय्या जिल्द 8 सफ़हा 161 पर फ़रमाते हैं : रहा अदा का सवाब मिलना येह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के इख़्तियार में है । अगर इस (शख़्स) ने अपनी जानिब से कोई तक्सीर (कोताही) न की, सुब्ह तक जागने के क़स्द (या'नी इरादे) से बैठा था और बे इख़्तियार आंख लग गई तो ज़रूर उस पर गुनाह नहीं । रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ फ़रमाते हैं : नींद की सूरत में कोताही नहीं, कोताही उस शख़्स की है जो (जागते में) नमाज़ न पढ़े हत्ता कि दूसरी नमाज़ का वक़्त आ जाए ।

(صحيح مسلم ص ۳۴۴ حديث 1۸۱)

रात के आख़िरी हिस्से में सोना कैसा ?

नमाज़ का वक़्त दाख़िल हो जाने के बा'द सो गया फिर वक़्त निकल गया और नमाज़ क़ज़ा हो गई तो क़त्अन गुनहगार हुवा जब कि जागने पर सहीह ए'तिमाद या जगाने वाला मौजूद न हो बल्कि फ़ज़्र में दुखूले वक़्त से पहले भी सोने की इजाज़त नहीं हो सकती जब कि

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर सुबह व शाम दस दस बार दुरुदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअत मिलेगी । (मुँजिअरुअह)

अक्सर हिस्सा रात का जागने में गुज़रा और ज़न्ने ग़ालिब है कि अब सो गया तो वक़्त में आंख न खुलेगी ।

(बहारे शरीअत, हिस्सा : 4, स. 50, मक्तबतुल मदीना)

रात देर तक जागना

बा'ज इस्लामी बहनें रात गए तक घरों में जागती रहती हैं अब्बल तो वोह इशा की नमाज़ पढ़ कर जल्दी सो जाने का ज़ेहन बनाएं कि इशा के बा'द बिला वज्ह जागने में कोई भलाई नहीं । अगर इत्तिफ़ाक़िया कभी देर हो जाए तब भी और अगर खुद आंख न खुलती हो जब भी घर के किसी क़ाबिले ए'तिमाद महरम या जो जगा सके ऐसी इस्लामी बहन को दरख़्वास्त कर दे वोह नमाज़े फ़ज़्र के लिये जगा दे । या इलार्म वाली घड़ी हो जिस से आंख खुल जाती हो मगर एक अ़दद घड़ी पर भरोसा न किया जाए कि नींद में हाथ लग जाने या सेल (CELL) ख़त्म हो जाने से या यूंही ख़राब हो कर बन्द हो जाने का इम्कान रहता है, दो² या हस्बे ज़रूरत जाइद घड़ियां हो तो बेहतर है । सगे मदीना غُفَى عَنْهُ सोते वक़्त हत्तल इम्कान तीन घड़ियां सिरहाने रखता है । तीन³ अ़दद रखने में اَلْحَدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ उस हदीसे पाक पर अ़मल की निय्यत है जिस में फ़रमाया गया है : اِنَّ اللّٰهَ وَنَرُّ يُحِبُّ الْوَاتِرَ : या'नी बेशक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ वित्र (तन्हा, ताक) है और वित्र को पसन्द करता है ।

(سُنَنِ التِّرْمِذِيِّ ج ٢ ص ٤ حَدِيث ٤٥٣) فुक़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَامُ फ़रमाते हैं :

“जब येह अन्देशा हो कि सुबह की नमाज़ जाती रहेगी तो बिला ज़रूरते शरइय्या उसे रात देर तक जागना मम्नूअ है ।”

(رَدُّ الْمُحْتَارِ، ج ٢، ص ٣٣)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़ा उस ने जफ़ा की। (عبارة)

अदा, क़ज़ा और वाजिबुल इअ़ादा की ता'रीफ़ात

जिस चीज़ का बन्दों को हुक्म है उसे वक़्त में बजा लाने को अदा कहते हैं। और वक़्त ख़त्म होने के बा'द अमल में लाना क़ज़ा है और अगर उस हुक्म के बजा लाने में कोई ख़राबी पैदा हो जाए तो उस ख़राबी को दूर करने के लिये वोह अमल दोबारा बजा लाना इअ़ादा कहलाता है। वक़्त के अन्दर अन्दर अगर तहरीमा बांध ली तो नमाज़ क़ज़ा न हुई बल्कि अदा है। (فُرْمُخْتَار ج ٢ ص ١٢٧-١٢٢) मगर नमाज़े फ़ज़्र, जुमुअ़ा और ईदैन में वक़्त के अन्दर सलाम फिरना लाज़िमी है वरना नमाज़ न होगी। (बहारे शरीअत, हिस्सा : 4, स. 50) बिना उज़्रे शरूँ नमाज़ क़ज़ा कर देना सख़्त गुनाह है, इस पर फ़र्ज़ है कि उस की क़ज़ा पढ़े और सच्चे दिल से तौबा भी करे, तौबा या हज़्जे मक़बूल से إِنَّ شَاءَ اللهُ عَزَّ وَجَلَّ ताख़ीर का गुनाह मुअ़ाफ़ हो जाएगा। (فُرْمُخْتَار ج ٢ ص ١٢٦) तौबा उसी वक़्त सहीह है जब कि क़ज़ा पढ़ ले उस को अदा किये बिग़ैर तौबा किये जाना तौबा नहीं कि जो नमाज़ उस के ज़िम्मे थी उस को न पढ़ना तो अब भी बाक़ी है और जब गुनाह से बाज़ न आई तो तौबा कहां हुई ? (رُدُّالْمُخْتَار ج ٢ ص ١٢٧) हज़रते सय्यिदुना इब्ने अब्बास رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا से रिवायत है, ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, पैकरे जूदो सखावत, सरापा रहमत, महबूबे रब्बुल इज़्ज़त صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इर्शाद फ़माया : गुनाह पर क़ाइम रह कर तौबा करने वाला अपने रब से ठव्ठा (या'नी मज़ाक़) करता है। (شُعَبُ الْاِيْمَان ج ٥ ص ٤٣٦ حديث ٧١٧٨)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुझ पर रोज़े जुमुआ दुर्दुद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअत करूंगा। (جمع الجوامع)

तौबा के तीन³ रुकन हैं

सदरुल अफ़ाज़िल हज़रते अल्लामा सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِي फ़रमाते हैं : “तौबा के तीन³ रुकन हैं ① ए'तिराफ़े जुर्म ② नदामत ③ अज़्मे तर्क (या'नी इस गुनाह को छोड़ने का पुख़्ता अहद)। अगर गुनाह क़ाबिले तलाफ़ी है तो उस की तलाफ़ी भी लाज़िम। मसलन तारिके सलात (या'नी नमाज़ तर्क कर देने वाले) की तौबा के लिये नमाज़ों की क़ज़ा भी लाज़िम है।

(ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, स. 12, रज़ा एकेडमी, बम्बई)

सोते को नमाज़ के लिये जगाना कब वाजिब है

कोई सो रहा है या नमाज़ पढ़ना भूल गया है तो जिसे मा'लूम है उस पर वाजिब है कि सोते को जगा दे और भूले हुए को याद दिला दे। (वरना गुनहगार होगा) (बहारे शरीअत, हिस्सा : 4, स. 50) याद रहे ! जगाना या याद दिलाना उस वक़्त वाजिब होगा जब कि ज़न्ने ग़ालिब हो कि येह नमाज़ पढ़ेगा वरना वाजिब नहीं। महारिम को बेशक खुद ही जगा दे मगर ना महूरमों मसलन देवर व जेठ वगैरा को महारिम के ज़रीए जगवाए।

जल्द से जल्द क़ज़ा कर लीजिये

जिस के ज़िम्मे क़ज़ा नमाज़ें हों उन का जल्द से जल्द पढ़ना वाजिब है मगर बाल बच्चों की परवरिश और अपनी ज़रूरिय्यात की फ़राहमी के सबब ताख़ीर जाइज़ है। लिहाज़ा फुरसत का जो वक़्त मिले उस में क़ज़ा पढ़ती रहे यहां तक कि पूरी हो जाएं। (दुर्मुख़्तार, ज २, स १६६)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा उस ने जन्नत का रास्ता छोड़ दिया। (طبرانی)

छुप कर क़ज़ा कीजिये

क़ज़ा नमाज़ें छुप कर पढ़िये लोगों पर (या घर वालों बल्कि करीबी सहेलियों पर भी) इस का इज़हार न कीजिये (मसलन यह मत कहा कीजिये कि मेरी आज की फ़ज़्र क़ज़ा हो गई या मैं क़ज़ाए उम्री कर रही हूं वगैरा) कि गुनाह का इज़हार भी मक्रूहे तहरीमी व गुनाह है। (رَدُّ الْمُنْحَار، ج २، ص ६०) लिहाज़ा अगर लोगों की मौजूदगी में वित्र क़ज़ा करें तो तकबीरे कुनूत के लिये हाथ न उठाएं।

जुमुअतुल वदाअ में क़ज़ाए उम्री !

रमज़ानुल मुबारक के आखिरी जुमुआ में बा'ज लोग बा जमाअत क़ज़ाए उम्री पढ़ते हैं और यह समझते हैं कि उम्र भर की क़ज़ाएं इसी एक नमाज़ से अदा हो गईं यह बातिल महूज़ है। (बहारे शरीअत, हिस्सा : 4, स. 57) मुफ़स्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَانِ फ़रमाते हैं : जुमुअतुल वदाअ के जोहर व अस् के दरमियान बारह¹² रकअत नफ़्ल दो² दो² रकअत की निय्यत से पढ़े। और हर रकअत में सूरतुल फ़ातिहा के बा'द एक बार आयतुल कुर्सी और तीन³ बार "قُلْ هُوَ اللهُ أَحَدٌ" और एक बार सूरतुल फ़लक़ और सूरतुन्नास पढ़े। इस का फ़ाएदा यह है कि जिस क़दर नमाज़ें इस ने क़ज़ा कर के पढ़ी होंगी उन के क़ज़ा करने का गुनाह إِنْ شَاءَ اللهُ تَعَالَى मुआफ़ हो जाएगा यह नहीं कि क़ज़ा नमाज़ें इस से मुआफ़ हो जाएंगी वोह तो पढ़ने से ही अदा होंगी। (इस्लामी ज़िन्दगी, स. 135)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत करो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे लिये पाकीज़गी का बाइस है। (बुख़ारी)

उम्र भर की क़ज़ा का हिसाब

जिस ने कभी नमाज़ें ही न पढ़ी हों और अब तौफ़ीक़ हुई और क़ज़ाए उम्री पढ़ना चाहता है वोह जब से बालिग़ हुवा या बालिगा हुई है उस वक़्त से नमाज़ों का हिसाब लगाए। अगर येह भी याद नहीं कि कब बालिग़ या बालिगा हुए हैं तो एहतियात इसी में है कि हिजरी सिन के हिसाब से लड़की 9 बरस और लड़का 12 बरस की उम्र से हिसाब लगाए।

क़ज़ा करने में तरतीब

क़ज़ाए उम्री में यूं भी कर सकते हैं कि पहले तमाम फ़ज़्रें अदा कर लें फिर तमाम जोहर की नमाज़ें इसी तरह अस्स, मगरिब और इशा।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

क़ज़ाए उम्री का तरीका (हनफी)

क़ज़ा हर रोज़ की बीस²⁰ रक़अतें होती हैं। “दो² फ़र्ज़ फ़ज़्र के, चार⁴ जोहर, चार⁴ अस्स, तीन³ मगरिब, चार⁴ इशा के और तीन³ वित्र। निय्यत इस तरह कीजिये, मसलन “सब से पहली फ़ज़्र जो मुझ से क़ज़ा हुई उस को अदा करती हूं।” हर नमाज़ में इसी तरह निय्यत कीजिये। जिस पर ब कसरत क़ज़ा नमाज़ें हैं वोह आसानी के लिये अगर यूं भी अदा करे तो जाइज़ है कि हर रुकूअ और हर सज्दे में तीन³ तीन³ बार سُبْحَانَ رَبِّيَ الْأَعْلَى, سُبْحَانَ رَبِّيَ الْعَظِيمِ की जगह सिर्फ़ एक एक बार कहे। मगर येह हमेशा और हर तरह की नमाज़ में याद रखना

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़े तो वोह लोगों में से कन्नूस तरीन शख्स है। (مسند احمد)

चाहिये कि जब रुकूअ में पूरी पहुंच जाए उस वक़्त “سُبْحَانَ” का “सीन” शुरूअ करे और जब عَظِيم का “मीम” ख़त्म कर चुके उस वक़्त रुकूअ से सर उठाए। इसी तरह सज्दे में भी करे। एक तख़फ़ीफ़ तो येह हुई और दूसरी येह कि फ़र्जों की तीसरी और चौथी रकअत में अल हम्द शरीफ़ की जगह फ़क़त “سُبْحَانَ اللهِ” तीन³ बार कह कर रुकूअ कर ले। मगर वित्र की तीनों रकअतों में अल हम्द शरीफ़ और सूरा दोनों ज़रूर पढ़ी जाएं। तीसरी तख़फ़ीफ़ येह कि का’दए अख़ीरा में तशहहूद या’नी अत्तहिय्यात के बा’द दोनों दुरूदों और दुआ की जगह सिर्फ़, “اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَآلِهِ” कह कर सलाम फ़ैर दे। चौथी तख़फ़ीफ़ येह कि वित्र की तीसरी रकअत में दुआए कुनूत की जगह اللهُ اكْبَر कह कर फ़क़त एक बार या तीन³ बार “رَبِّ اغْفِرْ لِي” कहे।

(मुलख़ब़स अज़ फ़तावा रज़विय्या, जि. 8, स. 157)

नमाज़े क़स्स की क़ज़ा

अगर हालते सफ़र की क़ज़ा नमाज़ हालते इक़ामत में पढ़ेंगी तो क़स्स ही पढ़ेंगी और हालते इक़ामत की क़ज़ा नमाज़ सफ़र में क़ज़ा करेंगी तो पूरी पढ़ेंगी या’नी क़स्स नहीं करेंगी। (عالمگیری ج ۱ ص ۱۲۱)

ज़मानए इरतिदाद की नमाज़ें

जो औरत مَعَاذَ اللهِ عَزَّوَجَلَّ मुस्तह़ा हो गई फिर इस्लाम लाई तो ज़मानए इरतिदाद की नमाज़ों की क़ज़ा नहीं और मुस्तह़ा होने से पहले ज़मानए इस्लाम में जो नमाज़ें जाती रही थीं उन की क़ज़ा वाजिब

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : तुम जहाँ भी हो मुझ पर दुरूद पढ़ो कि तुम्हारा दुरूद मुझ तक पहुँचता है। (طرائق)

है।

(رَدُّ الْمُحْتَارِ، ج ٢، ص ٦٤٧)

बच्चे की पैदाइश के वक़्त नमाज़

दाई (MIDWIFE) नमाज़ पढ़ेगी तो बच्चे के मर जाने का अन्देशा है, नमाज़ क़ज़ा करने के लिये येह उज़्र है। (رَدُّ الْمُحْتَارِ، ج ٢، ص ١٢٧)

मरीज़ा को नमाज़ कब मुआफ़ है ?

ऐसी मरीज़ा कि इशारे से भी नमाज़ नहीं पढ़ सकती अगर येह हालत पूरे छ^६ वक़्त तक रही तो इस हालत में जो नमाज़ें फ़ौत हुई उन की क़ज़ा वाजिब नहीं।

(عالمگیری ج ١، ص ١٢١)

उम्र भर की नमाज़ें दोबारा पढ़ना

जिस की नमाज़ों में नुक़सान व करहत हो वोह तमाम उम्र की नमाज़ें फ़ैरे तो अच्छी बात है और कोई ख़राबी न हो तो न चाहिये और करे तो फ़ज़्र व अ़स्स के बा'द न पढ़े और तमाम रकअतें भरी पढ़े और वित्र में कुनूत पढ़ कर तीसरी के बा'द का'दा कर के, फिर एक और मिलाए कि चार^४ हो जाएं।

(عالمگیری ج ١، ص ١٢٤)

क़ज़ा का लफ़ज़ कहना भूल गई तो कोई हरज नहीं

मेरे आका आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : हमारे उलमा तशरीह फ़रमाते हैं : क़ज़ा ब निय्यते अदा और अदा ब निय्यते क़ज़ा दोनों सहीह हैं।

(फ़तावा रज़विय्या, जि. 8, स. 161)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो लोग अपनी मजलिस से अल्लाह के ज़िक्र और नबी पर दुरूद शरीफ़ पढ़े बिग़ैर उठ गए तो वोह बदबूदार मुर्दार से उठे। (شعب الایمان)

नवाफ़िल की जगह क़ज़ाए उम्री पढ़िये

क़ज़ा नमाज़ें नवाफ़िल से अहम हैं या'नी जिस वक़्त नफ़ल पढ़ती है उन्हें छोड़ कर उन के बदले क़ज़ाएं पढ़ें कि बरिय्युज़्ज़िम्मा हो जाए अलबत्ता तरावीह और बारह¹² रकअतें सुन्नते मुअक्कदा की न छोड़े।

(رَدُّ الْمُحْتَار، ج ۱، ص ۶۴، ۶۵، हिस्सा : 4, स. 55)

फ़ज़्र व अ़स्स के बा'द नवाफ़िल नहीं पढ़ सकते

नमाज़े फ़ज़्र (के पूरे वक़्त में या'नी सुब्हे सादिक़ से ले कर तुलूए आफ़ताब तक जब कि) अ़स्स के बा'द वोह तमाम नवाफ़िल अदा करने मक्रूहे (तहरीमी) हैं जो क़स्दन हों अगर्चे तहिय्यतुल मस्जिद हों, और हर वोह नमाज़ जो ग़ैर की वज्ह से लाज़िम हो। मसलन नज़्र और त़वाफ़ के नवाफ़िल और हर वोह नमाज़ जिस को शुरूअ किया फिर उसे तोड़ डाला, अगर्चे वोह फ़ज़्र और अ़स्स की सुन्नतें ही क्यूं न हों।

(فَرْمَاتُ الْمُحْتَار، ج ۲، ص ۴۴-۴۵)

क़ज़ा के लिये कोई वक़्त मुअय्यन नहीं उम्र में जब पढ़ेगी बरिय्युज़्ज़िम्मा हो जाएगी। मगर तुलूअ व गुरूब और ज़वाल के वक़्त नमाज़ नहीं पढ़ सकती कि इन वक़्तों में नमाज़ जाइज़ नहीं।

(عالمگیری، ج ۱، ص ۵۲، हिस्सा : 4, स. 51)

ज़ोहर की चार सुन्नतें रह जाएं तो क्या करे ?

अगर ज़ोहर के फ़र्ज़ पहले पढ़ लिये तो दो² रकअत सुन्नतें बा'दिया अदा करने के बा'द चार रकअत सुन्नते क़ब्बिया अदा कीजिये

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर रोज़े जुमुआ दो सो बार दुरुदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआफ़ होंगे । (جمع الجوامع)

चुनान्चे सरकारे आ'ला हज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعَرْتِ फ़रमाते हैं : ज़ोहर की पहली चार⁴ सुन्नतें जो फ़र्ज़ से पहले न पढ़ी हों तो बा'दे फ़र्ज़ बल्कि मज़हबे अरजह (या'नी पसन्दीदा तरीन मज़हब) पर बा'द (दो² रकअत) सुन्नते बा'दिया के पढ़ें बशर्ते कि हुनूज़ (या'नी अभी) वक़ते ज़ोहर बाक़ी हो । (फ़तावा रज़विय्या, जि. 8, स. 148 मुलख़बसन) अस्स व इशा से पहले जो चार चार रकअतें हैं वोह सुन्नते ग़ैर मुअक्कदा हैं उन की क़ज़ा नहीं ।

क्या मग़रिब का वक़्त थोड़ा सा होता है ?

मग़रिब की नमाज़ का वक़्त गुरूबे आफ़ताब ता इब्तिदाए वक़ते इशा होता है । येह वक़्त मक़ामात और तारीख़ के ए'तिबार से घटता बढ़ता रहता है मसलन बाबुल मदीना में निज़ामुल अवक़ात के नक़शे के मुताबिक़ मग़रिब का वक़्त कम अज़ कम एक घन्टा 18 मिनट होता है । फ़ुक़हाए किराम رَحْمَتُهُمُ اللهُ السَّلَامُ फ़रमाते हैं, रोज़े अब्र (या'नी जिस दिन बादल छाए हों उस) के सिवा मग़रिब में हमेशा ता'जील (या'नी जल्दी) मुस्तहब है और दो² रकअत से ज़ाइद की ताख़ीर मक्रूहे तन्ज़ीही और बिग़ैर उज़्र सफ़र व मरज़ वग़ैरा इतनी ताख़ीर की, कि सितारे गुथ गए तो मक्रूहे तहरीमी । (बहारे शरीअत, हिस्सा : 3, स. 21) मेरे आक़ा आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰنِ फ़रमाते हैं : इस (या'नी मग़रिब) का वक़ते मुस्तहब जब तक है कि सितारे ख़ूब ज़ाहिर न हो जाएं, इतनी देर करनी कि (बड़े बड़े सितारों के इलावा) छोटे छोटे

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुझ पर दुरूद शरीफ़ पढ़ो अल्लाह عُزَّوَجَلَّ तुम पर रहमत भेजेगा । (अबुदौद)

सितारे भी चमक आएँ मकरूह है । (फ़तावा रज़विय्या, जि. 5, स. 153)

तरावीह की क़ज़ा का क्या हुक्म है ?

जब तरावीह फ़ौत हो जाए तो उस की क़ज़ा नहीं, और अगर कोई क़ज़ा कर भी लेती है तो येह जुदागाना नफ़ल हो जाएंगे, तरावीह से उन का तअल्लुक न होगा । (तौयूरु अब्सार, ड्रुमख्तार, ज २, स ०९८)

नमाज़ का फ़िदया

जिन के रिश्तेदार फ़ौत हुए हों वोह

इस मज़मून का ज़रूर मुतालाआ फ़रमाएं

मध्यित की उम्र मा'लूम कर के इस में से नव^० साल औरत के लिये और बारह¹² साल मर्द के लिये ना बालिगी के निकाल दीजिये । बाकी जितने साल बचे इन में हिसाब लगाइये कि कितनी मुद्दत तक वोह (या'नी मर्हूमा या मर्हूम) बे नमाज़ी रहा या बे रोज़ा रहा, या कितनी नमाज़ें या रोज़े उस के ज़िम्मे क़ज़ा के बाकी हैं । ज़ियादा से ज़ियादा अन्दाज़ा लगा लीजिये । बल्कि चाहें तो ना बालिगी की उम्र के बा'द बक़िय्या तमाम उम्र का हिसाब लगा लीजिये । अब फ़ी नमाज़ एक एक सदक़ए फ़ि़त्र ख़ैरात कीजिये । एक सदक़ए फ़ि़त्र की मिक्दार दो² किलो से 80 ग्राम कम गेहूं या उस का आटा या उस की रक़म है और एक दिन की छ^६ नमाज़ें हैं पांच फ़र्ज़ और एक वित्र वाजिब । मसलन दो² किलो से 80 ग्राम कम गेहूं की रक़म 12 रुपै हो तो एक दिन की नमाज़ों के 72 रुपै हुए और 30 दिन के 2160 रुपै

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुझ पर कसूरत से दुरूदे पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग़िफ़रत है । (ابن عساکر)

और बारह¹² माह के तक़रीबन 25920 रुपै हुए । अब किसी मय्यित पर 50 साल की नमाज़ें बाकी हैं तो फ़िदया अदा करने के लिये 1296000 रुपै ख़ैरात करने होंगे । ज़ाहिर है हर कोई इतनी रक़म ख़ैरात करने की इस्तिताअत (ताक़त) नहीं रखती, इस के लिये उलमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام ने शर्इ हिला इर्शाद फ़रमाया है । मसलन वोह 30 दिन की तमाम नमाज़ों के फ़िदये की निय्यत से 2160 रुपै किसी फ़कीर या फ़कीरनी की मिल्क कर दे, येह 30 दिन की नमाज़ों का फ़िदया अदा हो गया । अब वोह फ़कीर या फ़कीरनी येह रक़म उस देने वाली ही को हिबा कर दे (या'नी तोहफ़े में दे दे) येह क़ब्ज़ा करने के बा'द फिर फ़कीर या फ़कीरनी को 30 दिन की नमाज़ों के फ़िदये की निय्यत से क़ब्ज़े में दे कर उस का मालिक बना दे । इस तरह लौट फ़ैर करते रहें यूं सारी नमाज़ों का फ़िदया अदा हो जाएगा । 30 दिन की रक़म के ज़रीए ही हीला करना शर्त नहीं वोह तो समझाने के लिये मिसाल दी है । बिलफ़र्ज 50 साल के फ़िदयों की रक़म मौजूद हो तो एक ही बार लौट फ़ैर करने में काम हो जाएगा । नीज़ फ़ित्रे की रक़म का हिसाब भी गेहूं के मौजूदा भाव से लगाना होगा । इसी तरह रोज़ों का फ़िदया भी फ़ी रोज़ा एक सदक़ए फ़ित्र है नमाज़ों का फ़िदया अदा करने के बा'द रोज़ों का भी इसी तरीके से फ़िदया अदा कर सकते हैं । ग़रीब व अमीर सभी फ़िदये का हीला कर सकते हैं । अगर वुरसा अपने मर्हूमिन के लिये येह अमल करें तो येह मय्यित की ज़बर

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने किताब में मुझ पर दुरूदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फिरिश्ते उस के लिये इस्तिफ़ार (या'नी बख़्शिश की दुआ) करते रहेंगे। (طبرانی)

दस्त इमदाद होगी, इस तरह मरने वाला भी إِنَّ شَاءَ اللهُ رَبِّهِمْ फ़र्ज़ के बोझ से आज़ाद होगा और वुरसा भी अज़्रो सवाब के मुस्तहिक् होंगे। बा'ज इस्लामी बहनें मस्जिद वगैरा में एक कुरआने पाक का नुस्खा दे कर अपने मन को मना लेती हैं कि हम ने मर्हूम की तमाम नमाज़ों का फ़िदया अदा कर दिया येह उन की ग़लत फ़हमी है।

(तफ़सील के लिये देखिये : फ़तावा रज़विय्या, जि. 8, स. 167)

मर्हमा के फ़िदये का एक मसअला

औरत की आदते हैज़ अगर मा'लूम हो तो इस क़दर दिन और न मा'लूम हो तो हर महीने से तीन³ दिन, नव⁹ बरस की उम्र से मुस्तस्ना करें (या'नी नव बरस की उम्र के बा'द से ले कर वफ़ात तक हर महीने से तीन दिन हैज़ के समझ कर निकाल दें बक़िय्या जितने दिन बनें उन के हिसाब से फ़िदया अदा कर दें।) मगर जितनी बार हम्मल रहा हो मुद्दते हम्मल के महीनों से अय्यामे हैज़ का इस्तिस्ना न करें। (चूँकि इस मुद्दत में हैज़ नहीं आता इस लिये हैज़ के दिन कम न करें) औरत की आदत दर बारए निफ़ास अगर मा'लूम हो तो हर हम्मल के बा'द उतने दिन मुस्तस्ना करें (या'नी कम कर दें) और न मा'लूम हो तो कुछ नहीं कि निफ़ास के लिये जानिबे अक़ल (कम से कम) में शरअन कुछ तक्दीर (मिक्दार मुकर्रर) नहीं। मुम्किन है कि एक ही मिनट आ कर फ़ौरन पाक हो जाए। (या'नी अगर निफ़ास की मुद्दत याद नहीं तो दिन कम न करें)

(माखूज़ अज़ फ़तावा रज़विय्या, जि. 8, स. 154)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुझ पर एक दिन में 50 बार दुरूदे पाक पढ़े क़ियामत के दिन मैं उस से मुसाफ़हा करूँ (या'नी हाथ मिलाऊँ)गा । (ابن بشكوال)

100 कोड़ों का हीला

इस्लामी बहनो ! नमाज़ के फ़िदये का हीला मैं ने अपनी तरफ़ से नहीं लिखा । हीलए शर्ई का जवाज़ कुरआनो हदीस और फ़िक्हे हनफ़ी की मो'तबर कुतुब में मौजूद है । चुनान्चे मुफ़स्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْمَآئِن "नूरुल इरफ़ान" सफ़हा 728 पर फ़रमाते हैं : हज़रते सय्यिदुना अय्यूब عَلَيْهِ السَّلَام की बीमारी के ज़माने में आप عَلَيْهِ السَّلَام की ज़ौजए मोहतरमा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا एक बार ख़िदमते सरापा अज़मत में ताख़ीर से हाज़िर हुई तो आप عَلَيْهِ السَّلَام ने क़सम खाई कि "मैं तन्दुरुस्त हो कर सो¹⁰⁰ कोड़े मारूंगा "सिद्दहत याब होने पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उन्हें 100 तीलियों की झाड़ू मारने का हुक्म इर्शाद फ़रमाया । चुनान्चे कुरआने पाक में है :

وَحُذِّبِيكَ ضِعْفًا فَاصْرَبِ ۗ وَبِهِ وَلَا تَحْتِطْ ۗ (پاره ۲۳، ص: ۴۴)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और फ़रमाया कि अपने हाथ में एक झाड़ू ले कर इस से मार दे और क़सम न तोड़ ।

"आलमगीरी" में हीलों का एक मुस्तक़िल बाब है जिस का नाम "किताबुल हियल" है चुनान्चे "आलमगीरी किताबुल हियल" में है : जो हीला किसी का हक़ मारने या उस में शुबा पैदा करने या बातिल से फ़रेब देने के लिये किया जाए वोह मक्रूह है और जो हीला इस लिये किया जाए कि आदमी हराम से बच जाए या हलाल को हासिल कर ले वोह अच्छा है । इस क़िस्म के हीलों के जाइज़ होने की दलील अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का येह फ़रमान है :

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : बरोज़े क़ियामत लोगों में से मेरे क़रीब तर वोह होगा जिस ने दुन्या में मुझ पर ज़ियादा दुरूदे पाक पढ़े होंगे । (ترمذی)

وَخُذْ بِيَدِكَ ضِعْفًا فَاصْرِبْ
بِهِ وَلَا تَحْتِطْ ط (پاره ۲۳، ص: ۴۴)

तरजमए कन्ज़ुल इमान : और फ़रमाया कि अपने हाथ में एक झाडू ले कर इस से मार दे और क़सम न तोड़ ।

(فتاویٰ عالمگیری، ج ۶، ص ۳۹۰)

कान छेदने का रवाज कब से हुवा ?

हीले के जवाज़ पर एक और दलील मुलाहज़ा फ़रमाइये चुनान्वे हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا से रिवायत है, एक बार हज़रते सय्यिदतुना सारह और हज़रते सय्यिदतुना हाजिरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا में कुछ चपकलश हो गई । हज़रते सय्यिदतुना सारह रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا ने क़सम खाई कि मुझे अगर काबू मिला तो मैं हाजिरा रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا का कोई उज़्व काटूंगी । अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने हज़रते सय्यिदुना जिब्रईल عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام को हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़लीलुल्लाह की ख़िदमत में भेजा कि इन में सुल्ह करवा दें । हज़रते सय्यिदतुना सारह رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا ने अर्ज़ की : "مَا حِيلَةٌ يَمِينِي" या'नी मेरी क़सम का क्या हीला होगा तो हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام पर वहूय नाज़िल हुई कि (हज़रते) सारह (رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا) को हुक्म दो कि वोह (हज़रते) हाजिरा (رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا) के कान छेद दें । उसी वक़्त से औरतों के कान छेदने का रवाज पड़ा ।

(غمرغيمون البصائر شرح الاشباه والنظائر، ج ۳، ص ۲۹۰)

صَلُّوا عَلَيَّ الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ عَلَى مُحَمَّدٍ

फ़रमाने मुस्त्फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर एक मरतबा दुरूद पढ़ा अल्लाह उस पर दस रहमतें भेजता और उस के नामए आ'माल में दस नेकियां लिखता है। (ترمذی)

गोश्त का तोहफ़ा

उम्मुल मुअमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीका रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا से रिवायत है कि दो जहां के सुल्तान, सरवरे जीशान, महबूबे रहमान صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की खिदमत में गाय का गोश्त हाज़िर किया गया, किसी ने अर्ज़ की : येह गोश्त हज़रते सय्यिदतुना बरीरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا पर सदका हुवा था। फ़रमाया هُوَ لَهَا صَدَقَةٌ وَلَنَا هَدِيَّةٌ۔ पर सदका हुवा था। फ़रमाया هُوَ لَهَا صَدَقَةٌ وَلَنَا هَدِيَّةٌ۔ या'नी येह बरीरा के लिये सदका था हमारे लिये हदिय्या है।

(صحيح مسلم ص ٥٤١-٥٤٢ حديث ١٠٧٥)

ज़कात का शर्ई ह्रीला

इस हदीसे पाक से साफ़ ज़ाहिर है कि हज़रते सय्यिदतुना बरीरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا जो कि सदके की हक़दार थीं उन को बतौरै सदका मिला हुवा गोश्त अगर्चे उन के हक़ में सदका ही था मगर उन के कब्ज़ा कर लेने के बा'द जब बारगाहे रिसालत में पेश किया गया था तो उस का हुक़म बदल गया था और अब वोह सदका न रहा था। यूं ही कोई मुस्तहिक् शख़्स ज़कात अपने कब्जे में ले लेने के बा'द किसी भी आदमी को तोहफ़तन दे सकता या मस्जिद वगैरा के लिये पेश कर सकता है कि मज़क़ूरा मुस्तहिक् शख़्स का पेश करना अब ज़कात न रहा, हदिय्या या अतिरय्या हो गया। फुक़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام ज़कात का शर्ई ह्रीला करने का तरीका यूं इर्शाद फ़रमाते हैं : ज़कात की रक़म मुर्दे की तज्हीज़ व तक्फ़ीन या मस्जिद की ता'मीर में सर्फ़ नहीं कर सकते कि तम्लीके फ़कीर (या'नी फ़कीर को मालिक करना) न पाई गई, अगर इन उमूर में खर्च करना चाहें तो

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : शबे जुमुआ और रोज़े मुज़ पर दुरूद की कसरत कर लिया करो जो ऐसा करेगा क़ियामत के दिन मैं उस का शफ़ीअ व गवाह बनूंगा । (شعب الایمان)

इस का तरीका येह है कि फ़कीर को (ज़कात की रक़म का) मालिक कर दें और वोह (ता'मीरे मस्जिद वगैरा में) सर्फ़ करे, इस तरह सवाब दोनों को होगा ।
(बहारे शरीअत, हिस्सा : 5, स. 25)

100 अफ़राद को बराबर बराबर सवाब मिले

इस्लामी बहनो ! देखा आप ने ! कफ़न दफ़न बल्कि ता'मीरे मस्जिद में भी हीलाए शर्इ के ज़रीए ज़कात इस्ति'माल की जा सकती है । क्यूं कि ज़कात तो फ़कीर के हक़ में थी, जब फ़कीर ने क़ब्ज़ा कर लिया तो अब वोह मालिक हो चुका, जो चाहे करे । हीलाए शर्इ की बरकत से देने वाले की ज़कात भी अदा हो गई और फ़कीर भी मस्जिद में दे कर सवाब का हक़दार हो गया । हीला करते वक़्त मुम्किन हो तो ज़ियादा अफ़राद के हाथ में रक़म फिरानी चाहिये ताकि सब को सवाब मिले मसलन हीले के लिये फ़कीरे शर्इ को 12 लाख रुपै ज़कात दी, क़ब्ज़े के बा'द वोह किसी भी इस्लामी भाई को तोहफ़तन दे दे येह भी क़ब्ज़े में ले कर किसी और को मालिक बना दे, यूं सभी ब निय्यते सवाब एक दूसरे को मालिक बनाते रहें, आखिर वाला मस्जिद या जिस काम के लिये हीला किया था उस के लिये दे दे तो إِنَّ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ सभी को बारह बारह लाख रुपै सदक़ा करने का सवाब मिलेगा । चुनान्वे हज़रते सय्यिदुना अबू हु़रैरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है, ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, पैकरे जूदो सखावत, सरापा रहमत, महबूबे रब्बुल इज़्ज़त صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इर्शाद फ़रमाया : अगर सो¹⁰⁰ हाथों में सदक़ा गुज़रा तो सब को वैसा ही सवाब मिलेगा जैसा देने वाले के लिये है और उस के अज़्र में कुछ कमी न होगी । (تاریخ بغداد ج 7 ص 135 رقم 3068)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुझ पर एक बार दुरुद पढ़ता है अल्लाह उस के लिये एक क़ीरात अन्न लिखता है और क़ीरात उद्दुद पहाड़ जितना है। (मिशक़)

फ़कीर की ता'रीफ़

फ़कीर वोह है कि (الف) जिस के पास कुछ न कुछ हो मगर इतना न हो कि निसाब को पहुंच जाए (ب) या निसाब की क़दर तो हो मगर उस की हाजते अस्लिह्या (या'नी ज़रूरिय्याते जिन्दगी) में मुस्तगरक़ (घिरा हुआ) हो। मसलन रहने का मकान, ख़ानादारी का सामान, सुवारी के जानवर (या साइकिल, स्कूटर या कार) कारीगरों के औज़ार, पहनने के कपड़े, ख़िदमत के लिये लौंडी, गुलाम, इल्मी शुग़ल रखने वाले के लिये इस्लामी किताबें जो उस की ज़रूरत से जाइद न हों (ج) इसी तरह अगर मद्यून (मक्रूज़) है और दैन (क़र्ज़ा) निकालने के बा'द निसाब बाक़ी न रहे तो फ़कीर है अग़र्चे उस के पास एक तो क्या कई निसाबें हों।

(رَدُّ الْمُحْتَرَجِ ج ۳ ص ۳۳۳ وغیره)

मिस्कीन की ता'रीफ़

मिस्कीन वोह है जिस के पास कुछ न हो यहां तक कि खाने और बदन छुपाने के लिये इस का मोहताज है कि लोगों से सुवाल करे और उसे सुवाल हलाल है। फ़कीर को (या'नी जिस के पास कम अज़ कम एक दिन का खाने के लिये और पहनने के लिये मौजूद है) बिगैर ज़रूरत व मजबूरी सुवाल हराम है।

(عالمگیری ج ۱ ص ۱۸۷-۱۸۸)

इस्लामी बहनो ! मा'लूम हुआ जो भिकारी कमाने पर क़ादिर होने के बा वुजूद बिला ज़रूरत व मजबूरी बतौर पेशा भीक मांगते हैं गुनहगार हैं और ऐसों के हाल से बा ख़बर होने के बा वुजूद उन को देना जाइज़ नहीं।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जब तुम रसूलों पर दुरूद पढ़ो तो मुझ पर भी पढ़ो, बेशक मैं तमाम जहानों के रब का रसूल हूँ। (جمع الجوامع)

तरह तरह के फ़िदये और कफ़ारे

इस्लामी बहनो ! याद रहे ! नमाज़ व रोज़े के इलावा मय्यित की तरफ़ से बहुत सारे फ़िदये और कफ़ारे हो सकते हैं मसलन ﴿1﴾ ज़कात ﴿2﴾ फ़ित्रे (मर्द पर छोटे बच्चों वगैरा के फ़ित्रे भी जब कि अदा न किये हों) ﴿3﴾ कुरबानियां ﴿4﴾ क़समों के कफ़ारे ﴿5﴾ सज्दए तिलावत जितने वाजिब होने के बा वुजूद ज़िन्दगी में अदा नहीं किये ﴿6﴾ जितने नवाफ़िल फ़ासिद हुए और उन की क़ज़ा न की ﴿7﴾ जो जो मन्नतें मानीं और अदा न कीं ﴿8﴾ ज़मीन का उ़श्र या ख़िराज जो अदा करने से रह गया ﴿9﴾ फ़र्ज़ होने के बा वुजूद हज़ अदा न किया ﴿10﴾ हज़ व उ़मे के एहराम के कफ़ारे मसलन दम, या सदक़े अगर वाजिब हुए थे और अदा न किये हों। इन के इलावा भी बे शुमार फ़िदये और कफ़ारे हो सकते हैं।

इन फ़िदयों की अदाएगी की सूरतें

रोज़ा, सज्दए तिलावत, फ़ासिद शुदा नवाफ़िल की क़ज़ा वगैरा के फ़िदये में हर एक के बदले एक एक सदक़ए फ़ित्र की रक़म अदा करे। और ज़कात, फ़ित्रा, कुरबानियां, उ़श्र व ख़िराज वगैरा में जितनी रक़म मर्हूम या मर्हूमा के ज़िम्मे निकलती है वोह भी अदा करे।

(माखूज़ अज़ फ़तावा रज़विyyा, जि. 10, स. 540, 541)

(तफ़सीली मा'लूमात के लिये फ़तावा रज़विyyा "मुख़र्रजा" जिल्द 10 में सफ़हा 523 ता 549 पर मब्नी रिसाला, "तफ़ासीरुल अहक़ाम लि फ़िद यतिस्सलाति वस्सियाम" नीज़ मुफ़स्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़ती अहमद यार ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهَا की तस्नीफ़ "जाअल हक़" से "इस्कात का बयान" पढ़ लीजिये)

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ
 أَمَا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

नवाफ़िल का बयान

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

खातमुल मुरसलीन, रहमतुल्लिल आलमीन, शफ़ीइल मुज़िबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, महबूबे रब्बुल आलमीन, जनाबे सादिक्को अमीन صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने मग़िफ़रत निशान है : जब जुमा'रात का दिन आता है अल्लाह तआला फ़िरिश्तों को भेजता है जिन के पास चांदी के काग़ज़ और सोने के क़लम होते हैं वोह लिखते हैं, कौन यौमे जुमा'रात और शबे जुमुआ मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ता है। (कَنْزُ الْعَمَالِ، ج ١، ص ٢٥٠، حدیث ٢١٧٤)

صَلُّوا عَلَيَّ الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ عَلَى مُحَمَّدٍ

अल्लाह का प्यारा बनने का नुस्खा

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है, हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआला ने फ़रमाया : “जो मेरे किसी वली से दुश्मनी करे, उसे मैं ने लड़ाई का ए'लान दे दिया और मेरा बन्दा जिन चीजों के ज़रीए मेरा कुर्ब चाहता है उन में मुझे सब से ज़ियादा फ़राइज़ महबूब हैं और नवाफ़िल के ज़रीए कुर्ब हासिल करता रहता है यहां तक कि मैं उसे अपना महबूब बना लेता हूं अगर वोह मुझ से सुवाल करे तो उसे ज़रूर दूंगा और पनाह

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुझ पर दुरूद पढ़ कर अपनी मजालिस को आरास्ता करो कि तुम्हारा दुरूद पढ़ना बरोजे क़ियामत तुम्हारे लिये नूर होगा । (फ़रुस الاحवाल)

मांगे तो उसे ज़रूर पनाह दूंगा ।” (صَحِيحُ الْبُخَارِيِّ ج ٤، ص ٢٤٨-حدیث ٦٥٠٢)

صَلُّوْا عَلَي الْحَيِّبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَي مُحَمَّدٍ

सलातुल्लैल

रात में बा'द नमाज़े इशा जो नवाफ़िल पढ़े जाएं उन को सलातुल्लैल कहते हैं और रात के नवाफ़िल दिन के नवाफ़िल से अफ़ज़ल हैं कि सहीह मुस्लिम शरीफ़ में है : सय्यिदुल मुबल्लिगीन, रहूमतुल्लिल अलमीन صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इर्शाद फ़रमाया : “फ़र्ज़ी के बा'द अफ़ज़ल नमाज़ रात की नमाज़ है ।” (صَحِيحُ مُسْلِمٍ، ص ٥٩١-حدیث ١١٦٣)

तहज्जुद और रात में नमाज़ पढ़ने का सवाब

अल्लाह तबारक व तअ़ाला पारह 21 सूरतुस्सज्दह आयत नम्बर 16 और 17 में इर्शाद फ़रमाता है :

تَتَجَافَى جُنُوبَهُمْ عَنِ الْمَضَاجِعِ

يَدْعُونَ رَبَّهُمْ خَوْفًا وَطَمَعًا وَمِمَّا

رَأَوْهُمْ يُنْفِقُونَ ﴿١٦﴾

فَلَا تَعْلَمُ نَفْسٌ مَّا أُخْفِيَ لَهُمْ مِنْ

قُرَّةِ أَعْيُنٍ ۗ جَزَاءً لِّبِمَا كَانُوا

يَعْمَلُونَ ﴿١٧﴾

तरजमए कन्जुल ईमान : इन की करवटें जुदा होती हैं ख़्वाब गाहों से और अपने रब को पुकारते हैं डरते और उम्मीद करते और हमारे दिये हुए से कुछ ख़ैरात करते हैं तो किसी जी को नहीं मा'लूम जो आंख की ठन्डक इन के लिये छुपा रखी है सिला इन के कामों का ।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत करो बेशक यह तुम्हारे लिये त्हातर है । (रोयल)

सलातुल्लैल की एक क़िस्म तहज्जुद है कि इशा के बा'द रात में सो कर उठें और नवाफ़िल पढ़ें, सोने से क़ब्ल जो कुछ पढ़ें वोह तहज्जुद नहीं । कम से कम तहज्जुद की दो रकअतें हैं और हुज़ूरे अक्दस صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ से आठ तक साबित । (बहारे शरीअत, हिस्सा : 4, स. 26, 27) इस में क़िराअत का इख़्तियार है कि जो चाहें पढ़ें, बेहतर येह है कि जितना कुरआन याद है वोह तमाम पढ़ लीजिये वरना येह भी हो सकता है कि हर रकअत में सूराए फ़ातिहा के बा'द तीन³ तीन³ बार सूरतुल इख़्लास पढ़ लीजिये कि इस तरह हर रकअत में कुरआने करीम ख़त्म करने का सवाब मिलेगा, ऐसा करना बेहतर है, बहर हाल सूराए फ़ातिहा के बा'द कोई सी भी सूरत पढ़ सकते हैं ।

(मुलख़ख़स अज़ फ़तावा रज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 7, स. 447)

سَلُّوْا عَلَيَّ الْحَيِّبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ عَلَى مُحَمَّدٍ

तहज्जुद गुज़ार के लिये जन्नत के अलीशान बालाख़ाने

अमीरुल मुअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा

كَرَّمَ اللهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمِ से रिवायत है कि सय्यिदुल मुबल्लिगीन, रहमतुल्लिल अलमीन صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने दिल नशीन है : जन्नत में ऐसे बालाख़ाने हैं जिन का बाहर अन्दर से और अन्दर बाहर से देखा जाता है । एक आ'राबी ने उठ कर अर्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ! येह किस के लिये हैं ? आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इर्शाद फ़रमाया : येह उस के लिये हैं जो नर्म गुफ़्तू करे, खाना

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुझ पर रोज़े जुमुआ़ा दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअत करूंगा। (कोशिस)

खिलाए, मुतवातिर रोज़े रखे, और रात को उठ कर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये नमाज़ पढ़े जब लोग सोए हुए हों।

(سُنَنُ التِّرْمِذِيِّ ج ٤ ص ٢٣٧ حديث ٢٥٣٥، شُعَبُ الْإِيمَان ج ٣ ص ٤٠٤، حديث ٣٨٩٢)

मुफ़स्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى मिरआतुल मनाजीह जिल्द 2 सफ़हा 260 पर इस हिस्से हदीस “وَتَأْتِي الصِّيَامَ” या’नी “मुतवातिर रोज़े रखे” की शर्ह करते हुए फ़रमाते हैं : या’नी हमेशा रोज़े रखें सिवा उन पांच⁵ दिनों के जिन में रोज़ा हराम है या’नी शव्वाल की यकुम और ज़िल हिज्जा की दसवीं¹⁰ ता तेरहवीं¹³, येह हदीस उन लोगों की दलील है जो हमेशा रोज़े रखते हैं बा’ज ने फ़रमाया कि इस के मा’ना हैं हर महीने में मुसल्लसल तीन³ रोज़े रखे।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

“तहज्जुद शुज़ार” के आठ हुरूफ़ की निरखत से नेक बन्दों और बन्दियों की 8 हिकायात

(1) सारी रात नमाज़ पढ़ते रहते

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल अज़ीज़ बिन रवाद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى रात को सोने के लिये अपने बिस्तर पर आते और उस पर हाथ फ़ैर कर कहते : “तू नर्म है लेकिन अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! जन्नत में तुझ से ज़ियादा नर्म बिस्तर मिलेगा फिर सारी रात नमाज़ पढ़ते रहते।”

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : उस शख्स की नाक खाक आलूद हो जिस के पास मेरा निज़्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पड़े । (माँ)

(أَحْيَاءُ الْعُلُومِ، ج 1 ص 67) अल्लाहु रब्बुल इज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ की उन पर रहमत हो और उन के सदक़े हमारी मग़िफ़रत हो ।

أَمِينٍ بِجَاهِ النَّبِيِّ الْأَمِينِ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

बिल यक़ीं ऐसे मुसल्मान हैं बेहद नादान

जो कि रंगीनिये दुन्या पे मरा करते हैं

(2) शहद की मख़वी की भिनभिनाहट की सी आवाज़ !

मशहूर सहाबी हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह इब्ने मस्ऊद رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ जब लोगों के सो जाने के बा'द उठ कर कियाम (या'नी इबादत) फ़रमाया करते तो उन से सुब्ह तक शहद की मख़वी की सी भिनभिनाहट सुनाई देती । (أَحْيَاءُ الْعُلُومِ، ج 1 ص 67) अल्लाहु रब्बुल इज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ की उन पर रहमत हो और उन के सदक़े हमारी मग़िफ़रत हो ।

أَمِينٍ بِجَاهِ النَّبِيِّ الْأَمِينِ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

महब्बत में अपनी गुमा या इलाही

न पाऊं मैं अपना पता या इलाही

(3) मैं जन्नत कैसे मांगूं !

हज़रते सय्यिदुना सिलह बिन अश्यम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْأَكْرَم सारी रात नमाज़ पढ़ते । जब सहरी का वक़्त होता तो अल्लाहु عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में अर्ज़ करते : “इलाही ! عَزَّوَجَلَّ मेरे जैसा आदमी जन्नत नहीं मांग सकता लेकिन तू अपनी रहमत से मुझे जहन्म से पनाह अता फ़रमा ।” (أَحْيَاءُ الْعُلُومِ، ج 1 ص 72)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह (स्) उस पर दस रहमतें भेजता है।

रहमत हो और उन के सदक़े हमारी मग़िफ़रत हो ।

اٰمِيْنَ بِجَاہِ النَّبِيِّ الْاَمِيْنَ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

तेरे ख़ौफ़ से तेरे डर से हमेशा

मैं थर थर रहूँ कांपता या इलाही

(4) तुम्हारा बाप ना गहानी अज़ाब से डरता है !

हज़रते सय्यिदुना रबीअ बिन खुसैम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ की बेटी ने आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ से अर्ज़ की : “अब्बाजान ! क्या वजह है कि लोग सो जाते हैं और आप नहीं सोते ?” तो इर्शाद फ़रमाया : “बेटी ! तुम्हारा बाप ना गहानी अज़ाब से डरता है जो अचानक रात को आ जाए ।” (شُعَبُ الْاِيْمَانِ ج ١ ص ٥٤٣ رقم ٩٨٤) अल्लाहु रब्बुल इज़्ज़त इज़्ज़लْ عَزَّوَجَلَّ की उन पर रहमत हो और उन के सदक़े हमारी मग़िफ़रत हो ।

اٰمِيْنَ بِجَاہِ النَّبِيِّ الْاَمِيْنَ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

गर तू नाराज़ हुवा मेरी हलाकत होगी

हाए ! मैं नारे जहन्म में जलूंगा या रब !

(5) इबादत के लिये जागने का अज़ीब अन्दाज़

हज़रते सय्यिदुना सफ़वान बिन सुलैम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ की पिंडलियां नमाज़ में ज़ियादा देर खड़े रहने की वजह से सूज गई थीं । आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ इस क़दर कसरत से इबादत किया करते थे कि बिलफ़र्ज़ आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ से कह दिया जाता कि कल कियामत है तो भी अपनी इबादत में कुछ इज़ाफ़ा न कर सकते (या'नी उन के पास

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : उस शख्स की नाक खाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पड़े । (ترمذی)

इबादत में इज़ाफ़ा करने के लिये वक़्त की गुन्जाइश ही न थी) । जब सर्दी का मौसिम आता तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْه मकान की छत पर सोया करते ताकि सर्दी आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْه को जगाए रखे और जब गर्मियों का मौसिम आता तो कमरे के अन्दर आराम फ़रमाते ताकि गर्मी और तक्लीफ़ के सबब सो न सके (क्यूं कि A.C. कुजा उन दिनों बिजली का पंखा भी न होता था !) । सज्दे की हालत में ही आप का इन्तिक़ाल हुवा । आप दुआ़ किया करते थे : “**ऐّ عَزَّوَجَلَّ ! मैं तेरी मुलाक़ात को पसन्द करता हूँ तू भी मेरी मुलाक़ात को पसन्द फ़रमा ।**” (اتحاف السادة المتقين بشرح احياء علوم الدين ج 13 ص 247، 248) अल्लाहु रब्बुल इज़ज़त की उन पर रहमत हो और उन के सदके हमारी मग़िफ़रत हो ।

أَمِينٍ بِجَاهِ النَّبِيِّ الْأَمِينِ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

अफ़्व कर और सदा के लिये राज़ी हो जा

गर करम कर दे तो जन्नत में रहूंगा या रब !

(6) रोते रोते नाबीना हो जाने वाली ख़ातून

हज़रते सय्यिदुना ख़व्वास رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْه फ़रमाते हैं कि हम रिह्ला आबिदा के पास गए । येह ब कसरत रोजे रखती थीं और इतना रोतीं कि इन की बीनाई जाती रही और इतनी कसरत से नमाज़ें पढ़तीं कि खड़ी न हो सकती थीं, लिहाज़ा बैठ कर ही नमाज़ पढ़ती थीं । हम ने उन्हें सलाम किया फिर **अल्लाहु एَزَّوَجَلَّ** के अफ़वो करम का तज़िक़रा किया ता कि उन पर मुआमला आसान हो जाए । उन्होंने ने येह

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुझे पर दस मरतबा दुरूदे पाक पढ़े अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस पर सो रहमतें नाज़िल फ़रमाता है । (طُرُق)

बात सुन कर एक चीख़ मारी और फ़रमाया : “मेरे नफ़्स का हाल मुझे मा’लूम है और इस ने मेरे दिल को ज़ख़मी कर दिया है और जिगर टुकड़े टुकड़े हो गया है, खुदा की क़सम ! मैं चाहती हूँ कि काश ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मुझे पैदा ही न किया होता और मैं कोई क़ाबिले ज़िक्र शै न होती ।” यह फ़रमा कर दोबारा नमाज़ में मशगूल हो गई ।
(أَحْسَاءُ الْعُلُومِ، ج ٥٢ ص ١٥٢ المحلّصا) अल्लाहु रब्बुल इज़्ज़त इज़्ज़त की उन पर रहमत हो और उन के सदक़े हमारी मग़िफ़रत हो ।

أَمِينٍ بِجَاهِ النَّبِيِّ الْأَمِينِ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

आह सल्वे ईमां का ख़ौफ़ खाए जाता है

काश ! मेरी मां ने ही मुझे को न जना होता

(7) मौत की याद में भूकी रहने वाली ख़ातून

हज़रते सय्यिदतुना मुआज़ह अदविyyा عَلَيْهَا رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى रोज़ाना सुब्द के वक़्त फ़रमाती : “(शायद) येह वोह दिन है जिस में मुझे मरना है ।” फिर शाम तक कुछ न खातीं फिर जब रात होती तो कहतीं : “(शायद) येह वोह रात है जिस में मुझे मरना है ।” फिर सुब्द तक नमाज़ पढ़ती रहतीं । (अيضاً ص ١٥١) अल्लाहु रब्बुल इज़्ज़त इज़्ज़त की उन पर रहमत हो और उन के सदक़े हमारी मग़िफ़रत हो ।

أَمِينٍ بِجَاهِ النَّبِيِّ الْأَمِينِ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

मेरा दिल कांप उठता है कलेजा मुंह को आता है

करम या रब अंधेरा क़ब्र का जब याद आता है

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा तहक़ीक़ वोह बद बख़्त हो गया । (अब्दुल)

(8) गिर्या व ज़ारी करने वाला ख़ानदान

हज़रते सय्यिदुना क़ासिम बिन राशिद शैबानी قُدَسَ سِرُّهُ التُّورَانِي

कहते हैं कि हज़रते सय्यिदुना ज़म्आ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ मुह्रससब में ठहरे हुए थे, आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ की जौजा और बेटियां भी हमराह थीं। आप रَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ रात को उठे और देर तक नमाज़ पढ़ते रहे। जब सहर्री का वक़्त हुआ तो बुलन्द आवाज़ से पुकारने लगे : “ऐ रात में पड़ाव करने वाले क़ाफ़िले के मुसाफ़िरो ! क्या सारी रात सोते रहोगे ? क्या उठ कर सफ़र नहीं करोगे ?” तो वोह लोग जल्दी से उठ गए और कहीं से रोने की आवाज़ आने लगी और कहीं से दुआ मांगने की, एक जानिब से कुरआने पाक पढ़ने की आवाज़ सुनाई दी तो दूसरी जानिब कोई वुजू कर रहा होता। फिर जब सुब्ह हुई तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने बुलन्द आवाज़ से पुकारा : “लोग सुब्ह के वक़्त चलने को अच्छा समझते हैं।” (کتابُ التَّهْجِدِ وَقِيَامِ اللَّيْلِ مَعَ مَوْسُوَعَةِ اسْمَاءِ ابْنِ أَبِي الدُّنْيَا، ج ١، ص ٢٦١ رقم ٧٢)।

अल्लाहु रब्बुल इज़ज़त عَزَّ وَجَلَّ की उन पर रहमत हो और उन के सदक़े हमारी मग़िफ़रत हो।

اٰمِيْنَ بِجَاہِ النَّبِيِّ الْاَمِيْنَ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

मेरे ग़ौस का वसीला रहे शाद सब क़बीला

इन्हें ख़ुल्द में बसाना मदनी मदीने वाले

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह (स्)। (مس)। उस पर दस रहमतें भेजता है।

नमाज़े इशराक़

दो फ़रामीने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ﴿1﴾ जो नमाज़े फ़ज़्र बा जमाअत अदा कर के ज़िक्रुल्लाह करता रहे यहां तक कि आफ़ताब बुलन्द हो गया फिर दो² रकअतें पढ़ीं तो उसे पूरे हज़ व उम्रा का सवाब मिलेगा।

﴿2﴾ जो शख़्स नमाज़े फ़ज़्र से फ़ारिग़ होने के बा'द अपने मुसल्ले में (या'नी जहां नमाज़ पढ़ी वहीं) बैठा रहा हत्ता कि इशराक़ के नफ़ल पढ़ ले सिर्फ़ ख़ैर ही बोले तो उस के गुनाह बख़्श दिये जाएंगे अगर्चे समुन्दर के झाग से भी ज़ियादा हों।

(سُنَنُ أَبِي دَاوُدَ ج ٢ ص ٤١ - حَدِيثُ ١٢٨٧)

हदीसे पाक के इस हिस्से “अपने मुसल्ले में बैठा रहे” की वजाहत करते हुए हज़रते सय्यिदुना मुल्ला अली क़ारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِي फ़रमाते हैं : या'नी मस्जिद या घर में इस हाल में रहे कि ज़िक्र या ग़ौरो फ़िक्र करने या इल्मे दीन सीखने सिखाने या “बैतुल्लाह के तवाफ़ में मशगूल रहे” नीज़ “सिर्फ़ ख़ैर ही बोले” के बारे में फ़रमाते हैं : या'नी फ़ज़्र और इशराक़ के दरमियान ख़ैर या'नी भलाई के सिवा कोई गुफ़्तगू न करे क्यूं कि येह वोह बात है जिस पर सवाब मुरत्तब होता है।

(مِرْقَاةُ ج ٣ ص ٣٩٦ - تَحْتَ الْحَدِيثِ ١٣١٧)

नमाज़े इशराक़ का वक़्त : सूरज तुलूअ होने के कम अज़ कम बीस या पच्चीस मिनट बा'द से ले कर ज़हूवए कुब्रा तक नमाज़े इशराक़ का वक़्त रहता है।

صَلُّوْا عَلَي الْحَبِيْبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَي مُحَمَّدٍ

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : उस शख्स की नाक ख़ाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पड़े। (ترمذی)

नमाज़े चाशत की फ़ज़ीलत

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि हुजूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया : “जो चाशत की दो^२ रकअतें पाबन्दी से अदा करता रहे उस के गुनाह मुआफ़ कर दिये जाते हैं अगर्चे समुन्दर की झाग के बराबर हों।”

(سُنَنُ ابْنِ مَاجَه، ج ۲ ص ۱۰۳، ۱۰۴ - حدیث ۱۳۸۲)

नमाज़े चाशत का वक़्त : इस का वक़्त आफ़ताब बुलन्द होने से ज़वाल या'नी निस्फुन्नहारे शरूँ तक है और बेहतर येह है कि चौथाई दिन चढ़े पड़े। (बहारे शरीअत, हिस्सा : 4, स. 25) नमाज़े इशराक़ के फ़ौरन बा'द भी चाहें तो नमाज़े चाशत पढ़ सकते हैं।

صَلُّوا عَلَيَّ الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ عَلَى مُحَمَّدٍ

सलातुत्तस्बीह

इस नमाज़ का बे इन्तिहा सवाब है, शहन्शाहे खुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने अपने चचाजान हज़रते सय्यिदुना अब्बास رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से फ़रमाया कि ऐ मेरे चचा ! अगर हो सके तो सलातुत्तस्बीह हर रोज़ एक बार पढ़िये और अगर रोज़ाना न हो सके तो हर जुमुआ को एक बार पढ़ लीजिये और येह भी न हो सके तो हर महीने में एक बार और येह भी न हो सके तो साल में एक बार और येह भी न हो सके तो उम्र में एक बार।

(سُنَنُ أَبِي كَلُودٍ ج ۲ ص ۴६, ॴ६ - حدیث ۱۲۹۷)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुझ पर दस मरतबा दुरूदे पाक पढ़े अल्लाह (طربان) उस पर सो रहमतें नाज़िल फ़रमाता है ।

सलातुत्तस्बीह पढ़ने का तरीका

इस नमाज़ की तरकीब यह है कि तक्बीरे तहरीमा के बा'द सना पढ़े फिर पन्दरह¹⁵ मर्तबा यह तस्बीह पढ़े :
 “سُبْحَنَ اللهُ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ وَلَا إِلَهَ إِلَّا اللهُ وَاللهُ أَكْبَرُ” फिर اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ फिर और कोई सूरात पढ़ कर रुकूअ
 और بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ सूराए फ़ातिहा और सूरए फ़ातिहा और कोई सूरात पढ़ कर रुकूअ
 से पहले दस¹⁰ बार येही तस्बीह पढ़े फिर रुकूअ करे और रुकूअ में
 سُبْحٰنَ رَبِّيَ الْعَظِيْمِ तीन³ मर्तबा पढ़ कर फिर दस¹⁰ मर्तबा येही तस्बीह
 पढ़े फिर रुकूअ से सर उठाए और سَمِعَ اللهُ لِمَنْ حَمِدَهُ और اَللّٰهُمَّ رَبَّنَا وَذٰلِكَ الْمُهْدٰى
 पढ़ कर फिर खड़े खड़े दस¹⁰ मर्तबा येही तस्बीह पढ़े फिर सज्दे में
 जाए और तीन³ मर्तबा سُبْحٰنَ رَبِّيَ الْاَعْلٰى पढ़ कर फिर दस¹⁰ मर्तबा येही
 तस्बीह पढ़े फिर सज्दे से सर उठाए और दोनों सज्दों के दरमियान
 बैठ कर दस¹⁰ मर्तबा येही तस्बीह पढ़े फिर दूसरे सज्दे में जाए और
 سُبْحٰنَ رَبِّيَ الْاَعْلٰى तीन³ मर्तबा पढ़े फिर इस के बा'द येही तस्बीह दस¹⁰
 मर्तबा पढ़े इसी तरह चार⁴ रकअत पढ़े और खयाल रहे कि खड़े होने
 की हालत में सूराए फ़ातिहा से पहले पन्दरह¹⁵ मर्तबा और बाकी सब
 जगह येह तस्बीह दस¹⁰ दस¹⁰ बार पढ़े यूं हर रकअत में 75 मर्तबा
 तस्बीह पढ़ी जाएगी और चार⁴ रकअतों में तस्बीह की गिनती तीन
 सो³⁰⁰ मर्तबा होगी । (बहारे शरीअत, हिस्सा : 4, स. 32) तस्बीह उंग्लियों
 पर न गिने बल्कि हो सके तो दिल में शुमार करे वरना उंग्लियां दबा
 कर । (ऐज़न, स. 33)

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٌ

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पड़ा तहकीक़ वोह बद बख़्त हो गया । (अबुन)

इस्तिख़ारा

हज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन अब्दुल्लाह رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا से रिवायत है कि रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ हम को तमाम उमूर में इस्तिख़ारा ता'लीम फ़रमाते जैसे कुरआन की सूरत ता'लीम फ़रमाते थे, फ़रमाते हैं : “जब कोई किसी अम्र का क़स्द करे तो दो² रकअत नफ़ल पढ़े फिर कहे :

اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْتَخِيرُكَ بِعِلْمِكَ وَأَسْتَقْدِرُكَ بِقُدْرَتِكَ

وَأَسْأَلُكَ مِنْ فَضْلِكَ الْعَظِيمِ فَإِنَّكَ تَقْدِرُ وَلَا أَقْدِرُ

وَتَعْلَمُ وَلَا أَعْلَمُ وَأَنْتَ عَلَّامُ الْغُيُوبِ اللَّهُمَّ إِنْ كُنْتَ

تَعْلَمُ أَنَّ هَذَا الْأَمْرَ خَيْرٌ لِي فِي دِينِي وَمَعَاشِي وَعَاقِبَةِ

أَمْرِي أَوْ قَالَ عَاجِلِ أَمْرِي وَاجِلِهِ فَأَقْدِرْهُ لِي وَيَسِّرْهُ

لِي ثُمَّ بَارِكْ لِي فِيهِ وَإِنْ كُنْتَ تَعْلَمُ أَنَّ هَذَا الْأَمْرَ شَرٌّ

لِي فِي دِينِي وَمَعَاشِي وَعَاقِبَةِ أَمْرِي أَوْ قَالَ عَاجِلِ

أَمْرِي وَاجِلِهِ فَاصْرِفْهُ عَنِّي وَاصْرِفْنِي عَنْهُ وَاقْدِرْ

لِي الْخَيْرَ حَيْثُ كَانَ ثُمَّ رَضِّنِي بِهِ.

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर सुबह व शाम दस दस बार दुरूदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअत मिलेगी । (مُعْتَمَدَاتُ)

ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मैं तेरे इल्म के साथ तुझ से ख़ैर त़लब करता (करती) हूँ और तेरी कुदरत के ज़रीए से त़लबे कुदरत करता (करती) हूँ और तुझ से तेरा फ़ज़्ले अज़ीम मांगता (मांगती) हूँ क्यूं कि तू कुदरत रखता है और मैं कुदरत नहीं रखता (रखती) तू सब कुछ जानता है और मैं नहीं जानता (जानती) और तू तमाम पोशीदा बातों को ख़ूब जानता है ऐ अल्लाह (عَزَّوَجَلَّ) अगर तेरे इल्म में येह अम्र (जिस का मैं क़स्द व इरादा रखता (रखती) हूँ) मेरे दीन व ईमान और मेरी ज़िन्दगी और मेरे अन्जामे कार में दुन्या व आख़िरत में मेरे लिये बेहतर है तो इस को मेरे लिये मुक़द्दर कर दे और मेरे लिये आसान कर दे फिर इस में मेरे वासिते बरकत कर दे । ऐ अल्लाह (عَزَّوَجَلَّ) अगर तेरे इल्म में येह काम मेरे लिये बुरा है मेरे दीन व ईमान मेरी ज़िन्दगी और मेरे अन्जामे कार दुन्या व आख़िरत में तो इस को मुझ से और मुझ को इस से फ़ैर दे और जहां कहीं बेहतरी हो मेरे लिये मुक़द्दर कर फिर उस से मुझे राज़ी कर दे ।

(صَحِيحُ الْبُخَارِيِّ، ج ١ ص ٣٩٣ حديث ١١٦٢، رَدُّ الْمُحْتَار، ج ٢ ص ٥٦٩)

مِنْ أَوْ قَالَ عَاجِلِ أَمْرِي में “أَوْ” शके रावी है, फुक़हा फ़रमाते हैं कि जम्अ करे या’नी यूं कहे : وَعَاقِبَةُ أَمْرِي وَعَاجِلِ أَمْرِي وَأَجَلِيهِ : (ص ٤٣١) ।
मस्अला : हज़ और जिहाद और दीगर नेक कामों में नफ़से फ़ैल के लिये इस्तिख़ारा नहीं हो सकता, हां ता’यीने वक़्त (या’नी वक़्त मुक़र्र करने) के लिये कर सकते हैं । (الْبَيِّنَاتُ)

नमाज़े इस्तिख़ारा में कौन सी सूरतें पढ़ें

मुस्तहब येह है कि इस दुआ के अब्वल आख़िर اللهُ الْحَمْدُ لله और दुरूद शरीफ़ पढ़े और पहली रकअत में

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़ा उस ने जफ़ा की। (अहज़ान)

दूसरी में **قُلْ هُوَ اللَّهُ** पढ़े और बा'ज मशाइख़ फ़रमाते हैं कि पहली में **وَرَبُّكَ يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ وَيَخْتَارُ مَا كَانَ لَهُمُ الْخِيَرَةُ سُبْحَانَ اللَّهِ وَتَعْلَى عَمَّا يُشْرِكُونَ** (१४) और दूसरी में **وَرَبُّكَ يَعْلَمُ مَا تُكِنُّ صُدُورُهُمْ وَمَا يُعْلِنُونَ** (१५) (प २०, अक्स: १९, २१) **وَمَا كَانَ لِمُؤْمِنٍ وَلَا لِمُؤْمِنَةٍ إِذَا قَضَى اللَّهُ وَرَسُولُهُ أَمْرًا أَنْ يَكُونَ لَهُمُ الْخِيَرَةُ مِنْ أَمْرِهِمْ وَمَنْ يَعْصِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ فَقَدْ ضَلَّ ضَلَالًا مُّبِينًا** (३६) (प २२, الاحزاب: ३६) पढ़े। (رَدُّ الْمُحْتَرَجِ ج २ ص ५०)

बेहतर यह है कि सात बार इस्तिख़ारा करे कि एक हदीस में **عَزَّوَجَلَّ** है : “ऐ अनस ! जब तू किसी काम का क़स्द करे तो अपने रब से उस में सात बार इस्तिख़ारा कर फिर नज़र कर तेरे दिल में क्या गुज़रा कि बेशक उसी में ख़ैर है।” (अिضا)

और बा'ज मशाइख़े किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام से मन्कूल है कि दुआए मज़कूर पढ़ कर बा तहारत क़िब्ला रू सो रहे अगर ख़्वाब में सफ़ेदी या सब्जी देखे तो वोह काम बेहतर है और सियाही या सुख़ी देखे तो बुरा है उस से बचे। (अिضا)

इस्तिख़ारे का वक़्त उस वक़्त तक है कि एक तरफ़ राय पूरी जम न चुकी हो। (बहारे शरीअत, हिस्सा : 4, स. 32)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

सलातुल अव्वाबीन की फ़ज़ीलत

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि ताजदारे रिसालत, शह-शाहे नुबुव्वत, मख़ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुज़ पर रोज़े जुमुआ़ा दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअत करूंगा । (جمع الجوامع)

अज़मतो शराफ़त, महबूबे रब्बुल इज़ज़त, मोहसिने इन्सानियत
 صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया : “जो मग़रिब के बा’द छ⁶ रकअतें इस
 तरह अदा करे कि इन के दरमियान कोई बुरी बात न कहे तो येह छ⁶ रकअतें
 बारह¹² साल की इबादत के बराबर होंगी ।” (سنن ابن ماجه، ج ٢ ص ٤٥ حديث ١١٦٧)

नमाज़े अव्वाबीन का तरीक़ा

मग़रिब की तीन³ रकअत फ़र्ज़ पढ़ने के बा’द छ⁶ रकअत एक
 ही निय्यत से पढ़िये, हर दो² रकअत पर का’दा कीजिये और इस में
 अत्तहिय्यात, दुरूदे इब्राहीम और दुआ़ा पढ़िये, पहली, तीसरी³ और
 पांचवीं⁵ रकअत की इब्तिदा में सना, तअव्वुज़ व तस्मिया (या’नी
 اَعُوْذُ بِسْمِ اللّٰهِ) भी पढ़िये । छटी⁶ रकअत के का’दे के बा’द सलाम
 फ़ैर दीजिये । पहली दो² रकअतें सुन्नते मुअक्कदा हुई और बाकी चार⁴
 नवाफ़िल । येह है अव्वाबीन (या’नी तौबा करने वालों) की नमाज़ ।
 (अल वज़ीफ़तुल करीमा, स. 24, मुलख़बसन) चाहें तो दो² दो² रकअत कर
 के भी पढ़ सकते हैं । बहारे शरीअत हिस्सा 4 सफ़हा 15 और 16 पर
 है : बा’दे मग़रिब छ⁶ रकअतें मुस्तहब हैं इन को सलातुल अव्वाबीन
 कहते हैं, ख़्वाह एक सलाम से सब पढ़े या दो² से या तीन³ से और
 तीन³ सलाम से या’नी हर दो² रकअत पर सलाम फ़ैरना अफ़ज़ल है ।

(دُرْمُخْتَار، رَدُّ الْمُحْتَار ج ٢، ص ٥٤٧)

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

तहिय्यतुल वुज़ू

वुज़ू के बा’द आ’जा खुश्क होने से पहले दो² रकअत नमाज़ पढ़ना

फ़रमाने मुस्त्फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा उस ने जन्नत का रास्ता छोड़ दिया। (طبرانی)

मुस्तहब है। (فُرُؤْمُحْتَار، ج २، ص ०६३) हज़रते सय्यिदुना उक्बा बिन अमिर से रिवायत है, फ़रमाते हैं कि नबिय्ये करीम, रऊफ़रहीम رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने फ़रमाया : “जो शख्स वुजू करे और अच्छा वुजू करे और ज़ाहिरो बातिन के साथ मुतवज्जेह हो कर दो^२ रकअत पढ़े, उस के लिये जन्नत वाजिब हो जाती है।” (صَحِيحُ مُسْلِم، ص १४४، حَدِيثُ २३४)

गुस्ल के बा'द भी दो^२ रकअत नमाज़ मुस्तहब है। वुजू के बा'द फ़र्ज वगैरा पढ़े तो काइम मक़ाम तहिय्यतुल वुजू के हो जाएंगे। (رَدُّ الْمُحْتَار، ج २، ص ०६३) मक्रूह वक़्त में तहिय्यतुल वुजू और गुस्ल के बा'द वाली दो^२ रकअतें नहीं पढ़ सकते।

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَيِّبُ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ عَلَى مُحَمَّدٍ

सलातुल असरार

दुआओं की मक्बूलिय्यत और हाजतों के पूरा होने के लिये एक मुजर्रब (या'नी आजमूदा) नमाज़ सलातुल असरार भी है जिस को इमाम अबुल हसन नूरुद्दीन अली बिन जरीर लख़मी शतनौफ़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى ने बहजतुल असरार में और हज़रते मुल्ला अली क़ारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى और शैख़ अब्दुल हक़ मुहदिस देहलवी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى ने हुज़ूरे ग़ौसे आ'ज़म رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत करते हुए तहरीर फ़रमाया है। इस की तरकीब यह है कि बा'द नमाज़े मग़रिब सुन्नतें पढ़ कर दो^२ रकअत नमाज़ नफ़ल पढ़े और बेहतर यह है कि अल हम्द के बा'द हर रकअत में ग्यारह ग्यारह मर्तबा اللهُ هُوَ قُلْ पढ़े सलाम के बा'द अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की हम्दो सना करे (मसलन हम्दो सना की निय्यत से सूरतुल

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत करो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे लिये पाकीज़गी का बाइस है। (ब्रिग्ल)

फ़ातिहा पढ़ ले) फिर नबी صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पर ग्यारह बार दुरूदे सलाम अर्ज़ करे और ग्यारह बार येह कहे : يَا رَسُولَ اللَّهِ يَا نَبِيَّ اللَّهِ اغْنِنِي : ए अल्लाह एऒऒऒऒऒ के तरजमा : ए अल्लाह एऒऒऒऒऒ के रसूल ! ए अल्लाह एऒऒऒऒऒ के नबी ! मेरी फ़रियाद को पहुंचिये और मेरी मदद कीजिये, मेरी हाजत पूरी होने में, ए तमाम हाजतों के पूरा करने वाले । फिर इराक़ की जानिब ग्यारह क़दम चले और हर क़दम पर येह कहे : يَا غَوْثَ الثَّقَلَيْنِ يَا كَرِيمَ الطَّرْفَيْنِ اغْنِنِي وَأَمُدُّنِي فِي قَضَائِ حَاجَتِي يَا قَاضِيَ الْحَاجَاتِ . (तरजमा : ए जिन्नो इन्स के फ़रियादरस और ए दोनों तरफ़ (या'नी मां बाप दोनों ही की जानिब) से बुजुर्ग ! मेरी फ़रियाद को पहुंचिये और मेरी मदद कीजिये मेरी हाजत पूरी होने में, ए हाजतों के पूरा करने वाले ।) फिर हुजूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को वसीला बना कर अल्लाह तआला से अपनी हाजत के लिये दुआ मांगे । (अरबी दुआओं के साथ तरजमा पढ़ना ज़रूरी नहीं) (बहारे शरीअत, हिस्सा : 4, स. 35, 197, بهجة الاسرار, ص)

हुस्ने निव्यत हो, ख़ता तो कभी करता ही नहीं

आज़माया है यगाना है दोगाना तेरा

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْبُ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

सलातुल हाजात

हज़रते सय्यिदुना हुजैफ़ा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि “जब हुजूरे अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम, रसूले मुहूतशम, शाफ़ेए उमम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को कोई अम्ने अहम पेश आता तो नमाज़

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़े तो वोह लोगों में से कज़ूस तरीन शख्स है। (सुन्द अहमद)

पढ़ते।”

(سُنَنِ أَبُو يَكُوْبُوْد، حَلِيْث ۱۳۱۹ ج ۲ ص ۵۲)

इस के लिये दो^२ या चार^४ रकअत पढ़े। हृदीसे पाक में है :
“पहली रकअत में सूरा फ़ातिहा और तीन^३ बार आयतुल कुरसी पढ़े और बाकी तीन^३ रकअतों में सूरा फ़ातिहा और اللهُ قُلْ और قُلْ هُوَ اللهُ قُلْ और قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ और قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِ और قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ एक एक बार पढ़े, तो येह ऐसी हैं जैसे शबे क़द्र में चार^४ रकअतें पढ़ीं।” (बहारे शरीअत, हिस्सा : 4, स. 34)

मशाइख़े किराम رَحْمَهُمُ اللهُ السَّلَامُ फ़रमाते हैं कि : हम ने येह नमाज़ पढ़ी और हमारी हाज़तें पूरी हुई। (ऐज़न) हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन औफ़ी صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ से रिवायत है कि हुज़ूरे अक़दस फ़रमाते हैं : जिस की कोई हाज़त अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की तरफ़ हो या किसी बनी आदम (या'नी इन्सान) की तरफ़ तो अच्छी तरह वुजू करे फिर दो^२ रकअत नमाज़ पढ़ कर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की सना करे और नबी صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पर दुरूद भेजे फिर येह पढ़े :

لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ الْحَلِيمُ الْكَرِيمُ سُبْحَانَ اللَّهِ رَبِّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ أَسْأَلُكَ مُوجِبَاتِ رَحْمَتِكَ

وَعَزَائِمِ مَغْفِرَتِكَ وَالْغَنِيْمَةَ مِنْ كُلِّ بَرٍّ وَالسَّلَامَةَ مِنْ كُلِّ

إِثْمٍ لَا تَدْعُ لِي ذَنْبًا إِلَّا غَفَرْتَهُ وَلَا هَمًّا إِلَّا فَرَجْتَهُ وَلَا حَاجَةً

هِيَ لَكَ رِضًا إِلَّا قَضَيْتَهَا يَا أَرْحَمَ الرَّاحِمِينَ.

(سُنَنِ التِّرْمِذِيِّ، حَلِيْث ۴۷۸ ج ۲ ص ۲۱)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : तुम जहाँ भी हो मुझ पर दुरूद पढ़ो कि तुम्हारा दुरूद मुझ तक पहुँचता है। (طبرانی)

तरजमा : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं जो हलीम व करीम है, पाक है अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मालिक है अर्शे अज़ीम का, हम्द है अल्लाह के लिये जो रब है तमाम जहाँ का, मैं तुझ से तेरी रहमत के अस्बाब मांगता (मांगती) हूँ और तलब करता (करती) हूँ तेरी बख़्शाश के ज़राएअ और हर नेकी से ग़नीमत और हर गुनाह से सलामती को, मेरे लिये कोई गुनाह बिग़ैर मग़िफ़रत न छोड़ और हर ग़म को दूर कर दे और जो हाज़त तेरी रिज़ा के मुवाफ़िक़ है उसे पूरा कर दे ऐ सब मेहरबानों से ज़ियादा मेहरबान।

नाबीना को आंखें मिल गईं

हज़रते सय्यिदुना उस्मान बिन हुनैफ़ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि एक नाबीना सहाबी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने बारगाहे रिसालत में हाज़िर हो कर अर्ज़ की : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से दुआ कीजिये कि मुझे आफ़ियत दे। इर्शाद फ़रमाया : “अगर तू चाहे तो दुआ करूँ और चाहे तो सब्र कर और यह तेरे लिये बेहतर है।” उन्होंने ने अर्ज़ की : हुज़ूर ! दुआ फ़रमा दीजिये। उन्हें हुक्म फ़रमाया कि : वुजू करो और अच्छा वुजू करो और दो रकअत नमाज़ पढ़ कर यह दुआ पढ़ो :

اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ وَأَتَوَسَّلُ وَأَتَوَجَّهُ إِلَيْكَ بِنَبِيِّكَ
مُحَمَّدٍ نَبِيِّ الرَّحْمَةِ يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنِّي تَوَجَّهْتُ بِكَ
إِلَى رَبِّي فِي حَاجَتِي هَذِهِ لِتُقْضَى لِي اللَّهُمَّ فَشَفِّعْهُ فِيَّ

ادینہ

1. हदीसे पाक में इस जगह “या मुहम्मद” (عَلَى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ) है। मगर मुजद्दिदे आ'ज़म, आ'ला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلِيهِ وَرَحْمَةُ الرَّحْمٰن ने “या मुहम्मद” (عَلَى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ) कहने के बजाए, या रसूलल्लाह (عَلَى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ) कहने की ता'लीम दी है।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो लोग अपनी मजलिस से अल्लाह के ज़िक्र और नबी पर दुरूद शरीफ़ पढ़े बिग़ैर उठ गए तो वोह बदबूदार मुर्दार से उठे । (شعب الايمان)

तरजमा : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! मैं तुझ से सुवाल करता हूँ और तवस्सुल करता हूँ और तेरी तरफ़ मुतवज्जेह होता हूँ तेरे नबी मुहम्मद صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के ज़रीए से जो नबिय्ये रहमत हैं । या रसूलल्लाह ! (صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ) मैं हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के ज़रीए से अपने रब عَزَّوَجَلَّ की तरफ़ इस हाजत के बारे में मुतवज्जेह होता हूँ, ताकि मेरी हाजत पूरी हो । “इलाही ! इन की शफ़ाअत मेरे हक़ में क़बूल फ़रमा ।”

सय्यिदुना उस्मान बिन हुनैफ़ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं : “खुदा की क़सम ! हम उठने भी न पाए थे, बातें ही कर रहे थे कि वोह हमारे पास आए, गोया कभी अन्धे थे ही नहीं ।” (سنن ابن ماجه، ج ۲، ص ۱۵۶، حديث ۱۳۸۵، سنن الترمذی، ص ۳۳۶، ج ۵، حديث ۳۵۸۹، المعجم الكبير، ج ۹، ص ۳۰، حديث ۸۳۱۱)

इस्लामी बहनो ! शैतान जो येह वस्वसा डालता है कि सिर्फ़ “या अल्लाह” कहना चाहिये “या रसूलल्लाह” नहीं कहना चाहिये, الْحَبْدُ لِلَّهِ عَزَّوَجَلَّ इस हदीसे मुबारक ने शैतान के इस इन्तिहाई ख़तरनाक वस्वसे को भी जड़ से उखाड़ दिया कि अगर “या रसूलल्लाह” कहना जाइज़ न होता तो खुद हमारे प्यारे आका मदीने वाले मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ इस की क्यूं ता’लीम देते ? बस झूम झूम कर “या रसूलल्लाह” के ना रे लगाते जाइये ।

या रसूलल्लाह के ना रे से हम को प्यार है

जिस ने येह ना’रा लगाया उस का बेड़ा पार है

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْبُ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٌ

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर रोज़े जुमुआ दो सो बार दुरुदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुअफ़ होंगे। (جمع الجوامع)

गहन की नमाज़

हज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश़री رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी कि शहन्शाहे खुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के अहदे करीम (या'नी मुबारक ज़माने) में एक मरतबा आफ़ताब में गहन लगा, आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ मस्जिद में तशरीफ़ लाए और बहुत तवील क़ियाम व रुकूअ व सुजूद के साथ नमाज़ पढ़ी कि मैं ने कभी ऐसा करते न देखा और येह फ़रमाया कि **اللّٰهُ** किसी की मौत व हयात के सबब अपनी येह निशानियां ज़ाहिर नहीं फ़रमाता, बल्कि इन से अपने बन्दों को डराता है, लिहाज़ा जब इन में से कुछ देखो तो ज़िक्र व दुआ व इस्तिग़फ़ार की तरफ़ घबरा कर उठो। (صحيح البخاري، ج ١ ص ٣٦٣ حديث ١٠٥٩) **सूरज** गहन की नमाज़ सुन्नते मुअक्कदा और चांद गहन की नमाज़ मुस्तहब है। (دُرْمُخْتَار، ج ٣ ص ٨٠)

गहन की नमाज़ पढ़ने का तरीक़ा

येह नमाज़ और नवाफ़िल की तरह दो रक्अत पढ़ें या'नी हर रक्अत में एक रुकूअ और दो सज्दे करें न इस में अज़ान है, न इक़ामत, न बुलन्द आवाज़ से क़िराअत, और नमाज़ के बा'द दुआ करें यहां तक कि आफ़ताब खुल जाए और दो रक्अत से ज़ियादा भी पढ़ सकते हैं

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुझ पर दुरुद शरीफ़ पढ़ो अल्लाह तुम पर रहमत भेजेगा । (अबुनूर)

ख़्वाह दो, दो रकअत पर सलाम फ़ैरें या चार पर ।

(बहारे शरीअत, हिस्सा : 4, स. 136)

ऐसे वक़्त गहन लगा कि उस वक़्त नमाज़ पढ़ना मम्मूअ है तो नमाज़ न पढ़ें, बल्कि दुआ में मशगूल रहें और इसी हालत में डूब जाए तो दुआ ख़त्म कर दें और मग़रिब की नमाज़ पढ़ें ।

(الحوهرة النيرة، ص 124، ردّالمحتار، ج 3 ص 78)

तेज़ आंधी आए या दिन में सख़्त तारीकी छा जाए या रात में ख़ौफ़नाक रोशनी हो या लगातार कसरत से मींह बरसे या ब कसरत ओले पड़ें या आस्मान सुर्ख़ हो जाए या बिज्लियां गिरें या ब कसरत तारे टूटें या ताऊन वगैरा वबा फैले या जलजले आए या दुश्मन का ख़ौफ़ हो या और कोई दहशत नाक अम्र पाया जाए इन सब के लिये दो रकअत नमाज़ मुस्तहब है । (عالمگیری، ج 1 ص 103، ذرّمختار، ج 3 ص 80، وغيرهما)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

नमाज़े तौबा

हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि हुज़ुरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़लाक صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ फ़रमाते हैं : “जब कोई बन्दा गुनाह करे फिर वुजू कर के नमाज़ पढ़े फिर इस्तिग़फ़ार करे, अल्लाह तआला उस के गुनाह बख़्श देगा ।” फिर येह आयत पढ़ी :

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग़िफ़रत है । (ابن عساکر)

وَالَّذِينَ إِذَا فَعَلُوا فَاحِشَةً أَوْ
ظَلَمُوا أَنْفُسَهُمْ ذَكَرُوا اللَّهَ
فَاسْتَعْفَرُوا الدُّنُوبَ بِهِمْ وَمَنْ يَغْفِرُ
الدُّنُوبَ إِلَّا اللَّهُ وَلَمْ يُصِرُّوا
عَلَى مَافَعَلُوا وَهُمْ يَعْلَمُونَ ﴿٣٥﴾

(प ६, अल-अमरान: १३०)

तरजमाए कन्ज़ुल ईमान : और वोह कि जब कोई बे हयाई या अपनी जानों पर जुल्म करें अल्लाह (عَزَّوَجَلَّ) को याद कर के अपने गुनाहों की मुआफ़ी चाहें और गुनाह कौन बख़्शे सिवा अल्लाह (عَزَّوَجَلَّ) के ? और अपने किये पर जान बूझ कर अड़ न जाएं ।

(سُنَنُ التِّرْمِذِيِّ، ج ۱ ص ۴۱۵ حديث ۴۰۶)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ
इशा के बा'द दो^२ नफ़ल का सवाब

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन अब्बास رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا से रिवायत है, उन्होंने ने फ़रमाया : जो इशा के बा'द दो^२ रकअत पढ़ेगा और हर रकअत में सूराए फ़ातिहा के बा'द पन्द्रह^{१५} बार قُلْ هُوَ اللهُ पढ़ेगा अल्लाह तआला उस के लिये जन्नत में दो^२ ऐसे महल ता'मीर करेगा जिसे अहले जन्नत देखेंगे ।

(تفسير درمنثور ج ८ ص २८१)

सुन्ते अ़स् के बारे में दो^२ फ़रामीने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ (1) “जो अ़स् से पहले चार^४ रकअतें पढ़े, अल्लाह तआला उस के बदन को आग पर हराम फ़रमा देगा ।” (2) “जो अ़स् से पहले चार^४ रकअतें पढ़े, उसे आग न छूएगी ।”

(المُعْتَمَدُ الْأَوْسَطُ لِلطَّبْرَانِيِّ، ج २ ص ७७ حديث २०८)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने किताब में मुझ पर दुरूदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फिरिश्ते उस के लिये इस्तिफ़ार (या'नी बख़्शिश की दुआ) करते रहेंगे। (ज़रान)।

ज़ोहर के आख़िरी दो नफ़ल के भी क्या कहने

ज़ोहर के बा'द चार⁴ रकअत पढ़ना मुस्तहब है कि हदीसे पाक में फ़रमाया : जिस ने ज़ोहर से पहले चार और बा'द में चार पर मुहाफ़ज़त की अल्लाह तअ़ाला उस पर आग़ हराम फ़रमा देगा।

(سُنَنُ النَّسَائِي ص ۳۱۰ حدیث ۱۸۱۳) अल्लामा सय्यिद तहतावी फ़रमाते हैं : सिरे से आग़ में दाख़िल ही न होगा और उस के गुनाह मिटा दिये जाएंगे और उस पर (हुकूक़ल इबाद या'नी बन्दों की हक़ तल्फ़ियों के) जो मुतालबात हैं अल्लाह तअ़ाला उस के फ़रीक़ को राज़ी कर देगा या येह मतलब है कि ऐसे कामों की तौफ़ीक़ देगा जिन पर सज़ा न हो। (حاشية الطحطاوى على الدرر ج ۱ ص ۲۸۴) और अल्लामा शामी ف़रमाते हैं : उस के लिये बिशारत येह है कि सअ़ादत पर उस का ख़ातिमा होगा और दोज़ख़ में न जाएगा।

(رَدُّ الْمُحْتَرَج ۲ ص ۵۴۷)

इस्लामी बहनो ! اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ जहां ज़ोहर की दस रकअत नमाज़ पढ़ लेते हैं वहां आख़िर में मज़ीद दो रकअत नफ़ल पढ़ कर बारहवीं शरीफ़ की निस्बत से 12 रकअत करने में देर ही कितनी लगती है ! इस्तिक़ामत के साथ दो नफ़ल पढ़ने की निय्यत फ़रमा लीजिये।

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ
 أَمَا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

(हनफी)

इस्तिन्जा का तरीका

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार, हबीबे परवर्द गार, शफ़ीए रोज़े शुमार, जनाबे अहमदे मुख्तार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का इशादि नूरबार है : “तुम अपनी मजलिसों को मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ कर आरास्ता करो क्यूं कि तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना बरोज़े कियामत तुम्हारे लिये नूर होगा।” (الجامع الصغير للسيوطي ص ٢٨٠-حديث ٤٥٨٠)

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ عَلَى مُحَمَّدٍ

अज़ाब में तख़फ़ीफ़ हो गई

हज़रते सय्यिदुना इब्ने अब्बास رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا से मरवी है कि सरकारे दो आलम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम, रसूले मुहूतशम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ दो क़ब्रों के पास से गुज़रे (तो ग़ैब की ख़बर देते हुए) फ़रमाया : येह दोनों क़ब्र वाले अज़ाब दिये जा रहे हैं और किसी बड़ी चीज़ में (जिस से बचना दुश्वार हो) अज़ाब नहीं दिये जा रहे बल्कि एक तो पेशाब के छींटों से नहीं बचता था और दूसरा चुग़ल ख़ोरी किया करता था। फिर आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने ख़जूर की ताज़ा टहनी मंगवाई और उसे आधों आध चीरा और हर एक की क़ब्र पर एक एक हिस्सा

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : बरोज़े क़ियामत लोगों में से मेरे क़रीब तर वोह होगा जिस ने दुन्या में मुज़ पर ज़ियादा दुरूदे पाक पढ़े होंगे । (ترمذی)

गाड़ दिया और फ़रमाया : जब तक येह खुश्क़ न हों तब तक इन दोनों के अज़ाब में तख़फ़ीफ़ होगी ।

(سُنُنُ النَّسَائِي ص ۱۳ حديث ۳۱ صَحِيحُ الْبُخَارِيِّ ج ۱ ص ۹۵ حديث ۲۱۶)

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَيِّبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ عَلَى مُحَمَّدٍ

इस्तिन्जा का तरीका

﴿1﴾ इस्तिन्जा ख़ाने में जिन्नात और शयातीन रहते हैं अगर जाने से पहले बिस्मिल्लाह पढ़ ली जाए तो इस की बरकत से वोह सित्र देख नहीं सकते । हदीसे पाक में है : जिन्न की आंखों और लोगों के सित्र के दरमियान पर्दा येह है कि जब पाख़ाने को जाए तो बिस्मिल्लाह कह ले ।¹ या'नी जैसे दीवार और पर्दे लोगों की निगाह के लिये आड़ बनते हैं ऐसे ही येह अल्लाह (عَزَّوَجَلَّ) का ज़िक्र जिन्नात की निगाहों से आड़ बनेगा कि जिन्नात उस को देख न सकेंगे । (मिरआत, जि. 1, स. 268)

﴿2﴾ इस्तिन्जा ख़ाने में दाख़िल होने से पहले बिस्मिल्लाह पढ़ लीजिये बल्कि बेहतर है कि येह दुआ पढ़ लीजिये । (अव्वल व आख़िर दुरूद शरीफ़)

بِسْمِ اللّٰهِ اللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَعُوْذُبِكَ
مِّنَ الْخُبْثِ وَالْخَبَائِثِ .

या'नी अल्लाह के नाम से शुरूअ, या अल्लाह ! मैं नापाक जिन्नों (नर व मादा) से तेरी पनाह मांगता (मांगती) हूँ ।²

—دينه

(1) (سُنُنُ التِّرْمِذِي ج ۲ ص ۱۱۳ حديث ۶۰۶) (2) (كِتَابُ الدُّعَاءِ لِلطَّيْرِ لِي، حديث ۳۵۷، ص ۱۳۲)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर एक मरतबा दुरूद पढ़ा अल्लाह उस पर दस रहमतें भेजता और उस के नामए आ'माल में दस नेकियां लिखता है। (ترمذی)

﴿3﴾ फिर पहले उल्टा क़दम इस्तिन्जा ख़ाने में रख कर दाख़िल हों ﴿4﴾

सर पर दुपट्टा वग़ैरा अच्छी तरह लपेट लीजिये ताकि उस का कनारा

वग़ैरा नजासत में गिर कर नापाक न हो जाए ﴿5﴾ नंगे सर इस्तिन्जा

ख़ाने में दाख़िल होना मन्मूअ है ﴿6﴾ जब पेशाब करने या क़ज़ाए हाज़त

के लिये बैठें तो मुंह और पीठ दोनों में से कोई भी क़िब्ले की तरफ़ न

हो अगर भूल कर क़िब्ले की तरफ़ मुंह या पुश्त कर के बैठ गई तो याद

आते ही फ़ौरन क़िब्ले की तरफ़ से इस तरह रुख़ बदल दे कि कम अज़

कम 45 डिग्री से बाहर हो जाए इस में उम्मीद है कि फ़ौरन उस के लिये

मग़िफ़रत व बख़्शिश फ़रमा दी जाए ﴿7﴾ अक्सर इस्लामी बहनें बच्चे

को पेशाब या पाख़ाने के लिये जब बिठाती हैं तो क़िब्ले की سمت का

ख़याल नहीं रखतीं, लिहाज़ा उन को चाहिये कि बच्चे को इस तरह

बिठाए कि उस का मुंह या पीठ क़िब्ले को न हो। अगर किसी ने ऐसा

किया तो वोह गुनहगार होगी ﴿8﴾ जब तक क़ज़ाए हाज़त के लिये बैठने

के क़रीब न हो कपड़ा बदन से न हटाए और न ही हाज़त से ज़ियादा

बदन खोले ﴿9﴾ फिर दोनों पाउं ज़रा कुशादा कर के बाएं (या'नी उल्टे)

पाउं पर ज़ोर दे कर बैठे कि इस तरह बड़ी आंत का मुंह खुलता है और

इजाबत आसानी से होती है ﴿10﴾ किसी दीनी मस्अले पर ग़ौर न करे

कि महरूमि का बाइस है ﴿11﴾ उस वक़्त छींक ﴿12﴾ सलाम या ﴿13﴾

अज़ान का जवाब ज़बान से न दे ﴿14﴾ अगर खुद छींके तो ज़बान से

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ न कहे, दिल में कह ले ﴿15﴾ बातचीत न करे ﴿16﴾ अपनी

शर्मगाह की तरफ़ न देखे ﴿17﴾ उस नजासत को न देखे जो बदन से

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : शबे जुमुआ और रोज़े मुझ पर दुरूद की कसरत कर लिया करो जो ऐसा करेगा क़ियामत के दिन मैं उस का शफ़ीअ व गवाह बनूंगा । (شعب الایمان)

निकली है ﴿18﴾ ख़्वाह म ख़्वाह देर तक इस्तिन्जा ख़ाने में न बैठे कि बवासीर होने का अन्देशा है ﴿19 ता 25﴾ पेशाब में न थूके, न नाक साफ़ करे, न बिला ज़रूरत खन्कारे, न बार बार इधर उधर देखे, न बेकार बदन छूए, न आस्मान की तरफ़ निगाह करे, बल्कि शर्म के साथ सर झुकाए रहे । ﴿26﴾ क़ज़ाए हाज़त से फ़ारिग़ होने के बा'द पहले पेशाब का मक़ाम धोए फिर पाख़ाने का मक़ाम ﴿27﴾ औरत के लिये पानी से इस्तिन्जा करने का मुस्तहब तरीका येह है कि ज़रा कुशादा हो कर बैठे और सीधे हाथ से आहिस्ता आहिस्ता पानी डाले और उल्टे हाथ की हथेली से नजासत के मक़ाम को धोए, लोटा ऊंचा रखे कि छींटें न पड़ें सीधे हाथ से इस्तिन्जा करना मक्रूह है और धोने में मुबालगा करे या'नी सांस का दबाव नीचे की जानिब डाले यहां तक कि अच्छी तरह नजासत का मक़ाम धुल जाए या'नी इस तरह कि चिक्नाई का असर बाकी न रहे अगर औरत रोज़ादार हो तो फिर मुबालगा न करे ﴿28﴾ तहारत हासिल होने के बा'द हाथ भी पाक हो गए लेकिन बा'द में साबुन वग़ैरा से भी धो ले । (बहारे शरीअत, हिस्सा :

2, स. 131,132, (رُؤَالُ سُحْرَجِ اَصْر ١١ وَفِيْرَهَا ﴿29﴾ जब इस्तिन्जा ख़ाने से निकले तो पहले सीधा क़दम बाहर निकाले और बाहर निकलने के बा'द (अव्वल आख़िर दुरूद शरीफ़ के साथ) येह दुआ पढ़े :

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ اَنْزَلَ عَلَيَّ
الْاَذَى وَعَافَانِيْ

(سُنَنُ ابْنِ مَاجَهٗ ج ١ ص ٩٣ - حَدِيْثُ ٣٠١)

या'नी अल्लाह तआला का शुक्र है जिस ने मुझ से तकलीफ़ देह चीज़ को दूर किया और मुझे अफ़ि़य्यत (राहत) बख़्शी ।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुझ पर एक बार दुरूद पढ़ता है अल्लाह उस के लिये एक क़ीरात अन्न लिखता है और क़ीरात उहूद पहाड़ जितना है। (عبدالمطلب)

बेहतर यह है कि साथ में यह दुआ भी मिला ले इस तरह दो हदीसों पर अमल हो जाएगा : عَزَّوَجَلَّ مَعْنَى : मैं अल्लाह से मग़िफ़रत का सुवाल करता (करती) हूँ। (سُنَنُ التِّرْمِذِيِّ، ج ١ ص ٨٧ حديث ٧)

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْبُ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ عَلَى مُحَمَّدٍ

आबे ज़मज़म से इस्तिन्जा करना कैसा ?

﴿1﴾ ज़मज़म शरीफ़ से इस्तिन्जा करना मक्रूह है और ढेला न लिया हो तो ना जाइज़। (बहारे शरीअत, हिस्सा : 2, स. 135) ﴿2﴾ वुजू के बक़िय्या पानी से त़हारत करना ख़िलाफ़े औला है। (ऐज़न) ﴿3﴾ त़हारत के बचे हुए पानी से वुजू कर सकते हैं, बा'ज़ लोग जो उस को फेंक देते हैं यह न चाहिये इसराफ़ में दाख़िल है। (ऐज़न)

इस्तिन्जा ख़ाना का रुख़ दुरुस्त रखिये

अगर खुदा न ख़्वास्ता आप के घर के इस्तिन्जा ख़ाने का रुख़ ग़लत है या'नी बैठते वक़्त क़िब्ले की तरफ़ मुंह या पीठ होती है तो इस को दुरुस्त करने की फ़ौरन तरकीब कीजिये। मगर यह ज़ेहन में रहे कि मा'मूली सा तिरछा करना काफ़ी नहीं। W.C. इस तरह हो कि बैठते वक़्त मुंह या पीठ क़िब्ले से 45 डिग्री के बाहर रहे। आसानी इसी में है कि क़िब्ले से 90 डिग्री पर रुख़ रखिये। या'नी नमाज़ के बा'द दोनों बार सलाम फ़ैरने में जिस तरफ़ मुंह करते हैं उन दोनों سمتों में से किसी एक जानिब W.C. का रुख़ रखिये।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जब तुम रसूलों पर दुरूद पढ़ो तो मुझ पर भी पढ़ो, बेशक मैं तमाम जहानों के रब का रसूल हूँ। (جمع الجوامع)

इस्तिन्जा के बा'द क़दम धो लीजिये

पानी से इस्तिन्जा करते वक़्त उमूमन पाउं के टख़्नों की तरफ़ छींटें आ जाते हैं लिहाज़ा एहतियात इसी में है कि बा'दे फ़राग़त क़दमों के वोह हिस्से धो कर पाक कर लिये जाएं मगर येह ख़याल रहे कि धोने के दौरान अपने कपड़ों या दीगर चीज़ों पर छींटे न पड़ें।

बिल में पेशाब करना

रहमत वाले आका, दो जहां के दाता, शाफ़ेए रोज़े जज़ा, मक्की मदनी मुस्तफ़ा, महबूबे किब्रिया صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने शफ़क़त निशान है : तुम में से कोई शख़्स सूराख़ में पेशाब न करे।

(سُنَنُ النَّسَائِيِّ ص ١٤ حَدِيث ٣٤)

जिन्न ने शहीद कर दिया

मुफ़स्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰنِ फ़रमाते हैं : जुहूर से मुराद या ज़मीन का सूराख़ है या दीवार की फटन (या'नी दराड़), चूंकि अक्सर सूराख़ों में ज़हरीले जानवर (या) च्यूंटियां वग़ैरा कमज़ोर जानवर या जिन्नात रहते हैं, च्यूंटियां पेशाब या पानी से तकलीफ़ पाएंगी या सांप व जिन्न निकल कर हमें तकलीफ़ देंगे, इस लिये वहां पेशाब करना मन्अ़ फ़रमाया गया। चुनान्वे (हज़रते सय्यिदुना) सा'द इब्ने उबादा अन्सारी (رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ) की वफ़ात इसी से हुई कि आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने एक

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुझ पर दुरूद पढ़ कर अपनी मजालिस को आरास्ता करो कि तुम्हारा दुरूद पढ़ना बरोज़े क़ियामत तुम्हारे लिये नूर होगा । (फ़रुसुल अख़बार)

सूराख़ में पेशाब किया, जिन्न ने निकल कर आप को शहीद कर दिया । लोगों ने उस सूराख़ से येह आवाज़ सुनी :

تَرْجَمَا : نَحْنُ قَتَلْنَا سَيِّدَ الْخَزْرَجِ سَعْدَ بْنَ عُبَادَةَ وَرَمَيْنَاهُ بِسَهْمٍ فَلَمْ نَخْطِ فُرَادَهُ.

या'नी हम ने क़बीलए ख़ज़रज के सरदार सा'द बिन उबादा (رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ)

को शहीद कर दिया और हम ने (ऐसा) तीर मारा जो उन के दिल से आर पार हो गया । (मिरआत, जि. अब्वल, स. 267, २२०, २२१, २२२, २२३, २२४, २२५, २२६, २२७, २२८, २२९, २३०, २३१, २३२, २३३, २३४, २३५, २३६, २३७, २३८, २३९, २४०, २४१, २४२, २४३, २४४, २४५, २४६, २४७, २४८, २४९, २५०, २५१, २५२, २५३, २५४, २५५, २५६, २५७, २५८, २५९, २६०, २६१, २६२, २६३, २६४, २६५, २६६, २६७, २६८, २६९, २७०, २७१, २७२, २७३, २७४, २७५, २७६, २७७, २७८, २७९, २८०, २८१, २८२, २८३, २८४, २८५, २८६, २८७, २८८, २८९, २९०, २९१, २९२, २९३, २९४, २९५, २९६, २९७, २९८, २९९, ३००, ३०१, ३०२, ३०३, ३०४, ३०५, ३०६, ३०७, ३०८, ३०९, ३१०, ३११, ३१२, ३१३, ३१४, ३१५, ३१६, ३१७, ३१८, ३१९, ३२०, ३२१, ३२२, ३२३, ३२४, ३२५, ३२६, ३२७, ३२८, ३२९, ३३०, ३३१, ३३२, ३३३, ३३४, ३३५, ३३६, ३३७, ३३८, ३३९, ३४०, ३४१, ३४२, ३४३, ३४४, ३४५, ३४६, ३४७, ३४८, ३४९, ३५०, ३५१, ३५२, ३५३, ३५४, ३५५, ३५६, ३५७, ३५८, ३५९, ३६०, ३६१, ३६२, ३६३, ३६४, ३६५, ३६६, ३६७, ३६८, ३६९, ३७०, ३७१, ३७२, ३७३, ३७४, ३७५, ३७६, ३७७, ३७८, ३७९, ३८०, ३८१, ३८२, ३८३, ३८४, ३८५, ३८६, ३८७, ३८८, ३८९, ३९०, ३९१, ३९२, ३९३, ३९४, ३९५, ३९६, ३९७, ३९८, ३९९, ४००, ४०१, ४०२, ४०३, ४०४, ४०५, ४०६, ४०७, ४०८, ४०९, ४१०, ४११, ४१२, ४१३, ४१४, ४१५, ४१६, ४१७, ४१८, ४१९, ४२०, ४२१, ४२२, ४२३, ४२४, ४२५, ४२६, ४२७, ४२८, ४२९, ४३०, ४३१, ४३२, ४३३, ४३४, ४३५, ४३६, ४३७, ४३८, ४३९, ४४०, ४४१, ४४२, ४४३, ४४४, ४४५, ४४६, ४४७, ४४८, ४४९, ४५०, ४५१, ४५२, ४५३, ४५४, ४५५, ४५६, ४५७, ४५८, ४५९, ४६०, ४६१, ४६२, ४६३, ४६४, ४६५, ४६६, ४६७, ४६८, ४६९, ४७०, ४७१, ४७२, ४७३, ४७४, ४७५, ४७६, ४७७, ४७८, ४७९, ४८०, ४८१, ४८२, ४८३, ४८४, ४८५, ४८६, ४८७, ४८८, ४८९, ४९०, ४९१, ४९२, ४९३, ४९४, ४९५, ४९६, ४९७, ४९८, ४९९, ५००, ५०१, ५०२, ५०३, ५०४, ५०५, ५०६, ५०७, ५०८, ५०९, ५१०, ५११, ५१२, ५१३, ५१४, ५१५, ५१६, ५१७, ५१८, ५१९, ५२०, ५२१, ५२२, ५२३, ५२४, ५२५, ५२६, ५२७, ५२८, ५२९, ५३०, ५३१, ५३२, ५३३, ५३४, ५३५, ५३६, ५३७, ५३८, ५३९, ५४०, ५४१, ५४२, ५४३, ५४४, ५४५, ५४६, ५४७, ५४८, ५४९, ५५०, ५५१, ५५२, ५५३, ५५४, ५५५, ५५६, ५५७, ५५८, ५५९, ५६०, ५६१, ५६२, ५६३, ५६४, ५६५, ५६६, ५६७, ५६८, ५६९, ५७०, ५७१, ५७२, ५७३, ५७४, ५७५, ५७६, ५७७, ५७८, ५७९, ५८०, ५८१, ५८२, ५८३, ५८४, ५८५, ५८६, ५८७, ५८८, ५८९, ५९०, ५९१, ५९२, ५९३, ५९४, ५९५, ५९६, ५९७, ५९८, ५९९, ६००, ६०१, ६०२, ६०३, ६०४, ६०५, ६०६, ६०७, ६०८, ६०९, ६१०, ६११, ६१२, ६१३, ६१४, ६१५, ६१६, ६१७, ६१८, ६१९, ६२०, ६२१, ६२२, ६२३, ६२४, ६२५, ६२६, ६२७, ६२८, ६२९, ६३०, ६३१, ६३२, ६३३, ६३४, ६३५, ६३६, ६३७, ६३८, ६३९, ६४०, ६४१, ६४२, ६४३, ६४४, ६४५, ६४६, ६४७, ६४८, ६४९, ६५०, ६५१, ६५२, ६५३, ६५४, ६५५, ६५६, ६५७, ६५८, ६५९, ६६०, ६६१, ६६२, ६६३, ६६४, ६६५, ६६६, ६६७, ६६८, ६६९, ६७०, ६७१, ६७२, ६७३, ६७४, ६७५, ६७६, ६७७, ६७८, ६७९, ६८०, ६८१, ६८२, ६८३, ६८४, ६८५, ६८६, ६८७, ६८८, ६८९, ६९०, ६९१, ६९२, ६९३, ६९४, ६९५, ६९६, ६९७, ६९८, ६९९, ७००, ७०१, ७०२, ७०३, ७०४, ७०५, ७०६, ७०७, ७०८, ७०९, ७१०, ७११, ७१२, ७१३, ७१४, ७१५, ७१६, ७१७, ७१८, ७१९, ७२०, ७२१, ७२२, ७२३, ७२४, ७२५, ७२६, ७२७, ७२८, ७२९, ७३०, ७३१, ७३२, ७३३, ७३४, ७३५, ७३६, ७३७, ७३८, ७३९, ७४०, ७४१, ७४२, ७४३, ७४४, ७४५, ७४६, ७४७, ७४८, ७४९, ७५०, ७५१, ७५२, ७५३, ७५४, ७५५, ७५६, ७५७, ७५८, ७५९, ७६०, ७६१, ७६२, ७६३, ७६४, ७६५, ७६६, ७६७, ७६८, ७६९, ७७०, ७७१, ७७२, ७७३, ७७४, ७७५, ७७६, ७७७, ७७८, ७७९, ७८०, ७८१, ७८२, ७८३, ७८४, ७८५, ७८६, ७८७, ७८८, ७८९, ७९०, ७९१, ७९२, ७९३, ७९४, ७९५, ७९६, ७९७, ७९८, ७९९, ८००, ८०१, ८०२, ८०३, ८०४, ८०५, ८०६, ८०७, ८०८, ८०९, ८१०, ८११, ८१२, ८१३, ८१४, ८१५, ८१६, ८१७, ८१८, ८१९, ८२०, ८२१, ८२२, ८२३, ८२४, ८२५, ८२६, ८२७, ८२८, ८२९, ८३०, ८३१, ८३२, ८३३, ८३४, ८३५, ८३६, ८३७, ८३८, ८३९, ८४०, ८४१, ८४२, ८४३, ८४४, ८४५, ८४६, ८४७, ८४८, ८४९, ८५०, ८५१, ८५२, ८५३, ८५४, ८५५, ८५६, ८५७, ८५८, ८५९, ८६०, ८६१, ८६२, ८६३, ८६४, ८६५, ८६६, ८६७, ८६८, ८६९, ८७०, ८७१, ८७२, ८७३, ८७४, ८७५, ८७६, ८७७, ८७८, ८७९, ८८०, ८८१, ८८२, ८८३, ८८४, ८८५, ८८६, ८८७, ८८८, ८८९, ८९०, ८९१, ८९२, ८९३, ८९४, ८९५, ८९६, ८९७, ८९८, ८९९, ९००, ९०१, ९०२, ९०३, ९०४, ९०५, ९०६, ९०७, ९०८, ९०९, ९१०, ९११, ९१२, ९१३, ९१४, ९१५, ९१६, ९१७, ९१८, ९१९, ९२०, ९२१, ९२२, ९२३, ९२४, ९२५, ९२६, ९२७, ९२८, ९२९, ९३०, ९३१, ९३२, ९३३, ९३४, ९३५, ९३६, ९३७, ९३८, ९३९, ९४०, ९४१, ९४२, ९४३, ९४४, ९४५, ९४६, ९४७, ९४८, ९४९, ९५०, ९५१, ९५२, ९५३, ९५४, ९५५, ९५६, ९५७, ९५८, ९५९, ९६०, ९६१, ९६२, ९६३, ९६४, ९६५, ९६६, ९६७, ९६८, ९६९, ९७०, ९७१, ९७२, ९७३, ९७४, ९७५, ९७६, ९७७, ९७८, ९७९, ९८०, ९८१, ९८२, ९८३, ९८४, ९८५, ९८६, ९८७, ९८८, ९८९, ९९०, ९९१, ९९२, ९९३, ९९४, ९९५, ९९६, ९९७, ९९८, ९९९, १०००)

अल्लाहु रब्बुल इज़्ज़त एज़्ज़ल की उन पर रहमत हो और उन के सदक़े हमारी मफ़िरत हो ।

أَمِينٍ بِجَاهِ النَّبِيِّ الْأَمِينِ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

हम्माम में पेशाब करना

सरकारे मदीनए मुनव्वरह, सरदारे मक्कए मुकर्रमा

ने फ़रमाया : “कोई गुस्ल ख़ाने में पेशाब न करे, फिर उस में नहाए या वुजू करे कि अक्सर वस्वसे इस से होते हैं ।”

मुफ़स्सरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते

मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيهِ رَحْمَةُ الصَّانِ इस हदीसे पाक के तहत फ़रमाते

हैं : अगर गुस्ल ख़ाने की ज़मीन पुख़्ता हो, और उस में पानी ख़ारिज

होने की नाली भी हो तो वहां पेशाब करने में हरज नहीं अगर्चे बेहतर

है कि न करे, लेकिन अगर ज़मीन कच्ची हो, और पानी निकलने का

रास्ता भी न हो तो पेशाब करना सख़्त बुरा है कि ज़मीन नजिस हो

जाएगी, और गुस्ल या वुजू में गन्दा पानी जिस्म पर पड़ेगा । यहां दूसरी

सूरत ही मुराद है इस लिये ताकीदी मुमानअत फ़रमाई गई, या'नी

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत करो बेशक यह तुम्हारे लिये त्हा रत है। (البرقلى)

इस से वस्वसों और वहम की बीमारी पैदा होती है जैसा कि तजरिबा है या गन्दी छींटें पड़ने का वस्वसा रहेगा। (मिरआत, जि. 1, स. 266)

इस्तिन्जा के ढेलों के अहकाम

﴿1﴾ आगे पीछे से जब नजासत निकले तो ढेलों से इस्तिन्जा करना सुन्नत है, और अगर सिर्फ़ पानी ही से त्हा रत कर ली तो भी जाइज़ है, मगर मुस्तहब यह है कि ढेले लेने के बा'द पानी से त्हा रत करे।

फ़तावा रज़विध्या मुखर्रजा जिल्द 4 सफ़हा 598 पर है : सुवाल :

औरत बा'दे पेशाब कुलूख़ (या'नी ढेला) ले या सिर्फ़ पानी से इस्तिन्जा करे ? जवाब : दोनों का जम्अ करना अफ़ज़ल है और इस के हक़ में

कुलूख़ (या'नी ढेले) से कपड़ा बेहतर है ﴿2﴾ आगे और पीछे से पेशाब, पाख़ाना के सिवा कोई और नजासत, मसलन खून, पीप, वगैरा निकले,

या उस जगहे ख़ारिज से नजासत लग जाए तो भी ढेले से साफ़ कर लेने से त्हा रत हो जाएगी, जब कि उस मौज़अ (या'नी जगह) से बाहर न

हो मगर धो डालना मुस्तहब है ﴿3﴾ ढेलों की कोई ता'दाद मुअय्यन (या'नी मुकर्ररा ता'दाद) सुन्नत नहीं, बल्कि जितने से सफ़ाई हो

जाए, तो अगर एक से सफ़ाई हो गई सुन्नत अदा हो गई और अगर तीन ढेले लिये और सफ़ाई न हुई सुन्नत अदा न हुई, **अलबत्ता**

मुस्तहब यह है कि ताक़ (मसलन एक, तीन, पांच) हों और कम से कम तीन हों तो अगर एक या दो से सफ़ाई हो गई तो तीन की गिनती

पूरी करे, और अगर चार से सफ़ाई हो तो एक और ले, कि ताक़ हो

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुझ पर रोजे जुमुआ दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअत करूंगा। (क़ुआमल)

जाएं। ﴿4﴾ ढेलों से त़हारत उस वक़्त होगी कि नजासत से मख़्ख़ (या'नी ख़ारिज होने की जगह) के आस पास की जगह एक दिरहम¹ से ज़ियादा आलूदा न हो और अगर दिरहम से ज़ियादा सन जाए तो धोना फ़र्ज़ है, मगर ढेले लेना अब भी सुन्नत रहेगा ﴿5﴾ कंकर, पथ्थर, फटा हुवा कपड़ा, (फटा हुवा कपड़ा या दरज़ी की बे कीमत कतरन बेहतर येह है कि सूती (COTTON) हो ताकि जल्द ज़ब्ब कर ले) येह सब ढेले के हुक्म में हैं, इन से भी साफ़ कर लेना बिला कराहत जाइज़ है ﴿6﴾ हड्डी और खाने और गोबर और पक्की ईट और ठेकरी और शीशा और कोएले और जानवर के चारे से और ऐसी चीज़ से जिस की कुछ कीमत हो, अगर्चे एकआध पैसा ही सही, इन चीज़ों से इस्तिन्जा करना मक्रूह है। ﴿7﴾ कागज़ से इस्तिन्जा मन्अ है, अगर्चे उस पर कुछ लिखा न हो, या अबू जहल ऐसे काफ़िर का नाम लिखा हो ﴿8﴾ दाहने (या'नी सीधे) हाथ से इस्तिन्जा करना मक्रूह है, अगर किसी का बायां हाथ बेकार हो गया, तो उसे दहने (सीधे) हाथ से जाइज़ है ﴿9﴾ जिस ढेले से एक बार इस्तिन्जा कर लिया उसे दोबारा काम में लाना मक्रूह है, मगर दूसरी करवट उस की साफ़ हो तो उस से कर सकते हैं। ﴿10﴾ औरत के लिये तरीका येह है कि पहला ढेला आगे से पीछे को ले जाए, और दूसरा पीछे से आगे की तरफ़, और तीसरा आगे से पीछे को ﴿11﴾ पाक ढेले दाहनी (सीधी) जानिब रखना और बा'द काम में लाने के, बाई

داينه

1. एक दिरहम की मिक्दार “कपड़े पाक करने का तरीका” में मुलाहज़ा फ़रमाइये।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : उस शख्स की नाक खाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पड़े । (16)

(उल्टे हाथ की) तरफ़ डाल देना, इस तरह पर कि जिस रुख़ में नजासत लगी हो नीचे हो, मुस्तहब है । (बहारे शरीअत, हिस्सा : 2 स. 132,134, ००.६४) (عالمگیری ج 1 ص 48) ﴿12﴾ टॉयलेट पेपर के इस्ति'माल की उलमा ने इजाज़त दी है क्यूं कि येह इसी मक्सद के लिये बनाया गया है और लिखने में काम नहीं आता । अलबत्ता बेहतर मिट्टी का ढेला है ।

मिट्टी का ढेला और साइन्सी तहक़ीक़

एक तहक़ीक़ के मुताबिक़ मिट्टी में नौशादर (AMMONIUM CHLORIDE) नीज़ बदबू दूर करने वाले बेहतरीन अज्ज़ा मौजूद हैं । पेशाब और फुज़्ला जरासीम से लबरेज़ होता है, इस का जिस्मे इन्सानी पर लगना नुक़सान देह है । इस के अज्ज़ा बदन पर चिपके रह जाने की सूरत में तरह तरह की बीमारियां पैदा होने का अन्देशा है । “डॉक्टर हलोक” लिखता है : इस्तिन्जा के मिट्टी के ढेले ने साइन्सी दुन्या को वर्तए हैरत में डाल रखा है । मिट्टी के तमाम अज्ज़ा जरासीम के कातिल होते हैं लिहाज़ा मिट्टी के ढेले के इस्ति'माल से पर्दे की जगह पर मौजूद जरासीम का ख़ातिमा हो जाता है बल्कि इस का इस्ति'माल “पर्दे की जगह के केन्सर” (CANCER OF PENIS) से बचाता है ।

डॉक्टर का इन्किशाफ़

इस्लामी बहनो ! सुन्नत के मुताबिक़ क़ज़ाए हाज़त करने में आख़िरत की सअ़ादत और दुन्या में बीमारियों से हिफ़ाज़त है । ग़ैर

फ़रमाने मुस्त्फा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह (स्) उस पर दस रहमतें भेजता है।

मुस्लिम भी इस्लामी अतवार का ख़्वाही न ख़्वाही इक़ार कर ही लेते हैं। इस की झलक इस हिकायत में मुलाहज़ा फ़रमाइये : चुनान्वे फ़िज़ियोलोजी के एक सीनियर प्रोफ़ेसर का बयान है : मैं उन दिनों मराक़िश में था, मुझे बुख़ार आ गया, दवा के लिये एक ग़ैर मुस्लिम बुढ़े घाघ डोक्टर के पास पहुंचा, उस ने पूछा : क्या मुसल्मान हो ? मैं ने कहा : हां मुसल्मान हूं। येह सुन कर कहने लगा : अगर तुम्हारे मुल्क में एक तरीका जो खुद तुम्हारे नबी صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का बताया हुवा है ज़िन्दा हो जाए तो लोग बहुत सारे अमराज़ से बच जाएं ! मैं ने हैरत से पूछा : वोह कौन सा तरीका है ? बोला : अगर क़ज़ाए हाजत के लिये इस्लामी तरीके पर बैठा जाए तो एपेन्डे साइटिस (APPENDICITIS), दाइमी क़ब्ज़, बवासीर और गुर्दों के अमराज़ नहीं होंगे !

रफ़ू हाजत के लिये बैठने का तरीका

इस्लामी बहनो ! यकीनन आप भी जानना चाहेंगी कि वोह करिश्माती तरीका कौन सा है तो सुनिये ! हज़रते सय्यिदुना सुराक़ा बिन मालिक رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं : हमें ताजदारे रिसालत, महबूबे रब्बुल इज़्ज़त, सरापा अज़मतो व शराफ़त صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने हुक्म दिया कि हम रफ़ू हाजत के वक़्त बाएं (उल्टे) पाउं पर वज़्न दें और दायां पाउं खड़ा रखें।

(مَجْمَعُ الزَّوَالِدِ ج ١ ص ٤٨٨ حديث ١٠٢٠)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : उस शख्स को नाक खाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पड़े । (ترمذی)

बाएं पाउं पर वज़्न डालने की हिक्मत

रफ़ू हाजत के वक़्त उकडूं बैठ कर दायां (सीधा) पाउं खड़ा या'नी अपनी अस्ली हालत पर (NORMAL) रख कर बाएं या'नी उल्टे पाउं पर वज़्न देने से बड़ी आंत जो कि उल्टी तरफ़ होती है और उसी में फुज़्ला होता है उस का मुंह अच्छी तरह खुल जाता और ब आसानी फ़राग़त हो जाती और पेट अच्छी तरह साफ़ हो जाता है और जब पेट साफ़ हो जाएगा तो बहुत सारी बीमारियों से तहफ़ूज हासिल रहेगा ।

कुर्सी नुमा क़मोड

अफ़सोस ! आज कल इस्तिन्जा के लिये क़मोड (COMMODE) आ़म होता जा रहा है इस पर कुर्सी की तरह बैठने के सबब टांगें पूरी तरह नहीं खुलतीं, उकडूं बैठने की तरकीब न होने के सबब उल्टे पाउं पर वज़्न भी नहीं दिया जा सकता और यूं आंतों और मे'दे पर ज़ोर नहीं पड़ता इस लिये बराबर फ़राग़त नहीं हो पाती कुछ न कुछ फुज़्ला आंत में बाकी रह जाता है जिस से आंतों और मे'दे के मुतअद्दद अमराज़ पैदा होने का अन्देशा रहता है । क़मोड के इस्ति'माल से आ'साबी तनाव पैदा होता है, हाजत के बा'द पेशाब के क़तरात गिरने के भी ख़तरात रहते हैं ।

पर्दे की जगह का केन्सर

कुर्सी नुमा क़मोड में पानी से इस्तिन्जा करना और अपने बदन और कपड़ों को पाक रखना एक अग्रे दुश्वार है । ज़ियादा तर इस

فَرَمَانَهُ مُسْتَفَاً صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : جَوِ مُؤَلَّجٍ پَر دَس مَرَتَبَا دُرُودَةَ پَاكِ پَدَدِ اَللّٰهَ اَعُوْذُ
 اُس پَر سَو رَهْمَتَتِ نَاجِل فَرَمَاتَا هَيْ । (طَرَبَن)

के लिये टॉयलेट पेपर्ज का इस्ति'माल होता है। कुछ अर्सा क़ब्ल यूरोप में पर्दे के हिस्सों के मोहलिक अमराज़ बिल खुसूस पर्दे की जगह का केन्सर तेज़ी से फैलने की ख़बरें अख़्बारात में शाएअ हुई, तहक़ीकी बोर्ड बैठा और उस ने नतीजा येह बयान किया कि इन अमराज़ के दो^२ ही अस्बाब सामने आए हैं (1) टॉयलेट पेपर का इस्ति'माल करना और (2) पानी का इस्ति'माल न करना।

टॉयलेट पेपर से पैदा होने वाले अमराज़

टॉयलेट पेपर बनाने में बा'ज़ ऐसे केमिकल इस्ति'माल होते हैं जो जिल्द (चमड़ी) के लिये इन्तिहाई नुक़सान देह हैं। इस के इस्ति'माल से जिल्दी अमराज़ पैदा होते हैं जैसा की एग्ज़ीमा और चमड़ी का रंग तब्दील होना। “डॉक्टर केनन डयूस” का कहना है : टॉयलेट पेपर्ज का इस्ति'माल करने वाले इन अमराज़ के इस्तिक्बाल की तय्यारी करें (1) पर्दे की जगह का केन्सर (2) भगन्दर (एक फोड़ा जो मक्अद के आस पास होता या'नी बैठने की जगह पर और बहुत तकलीफ़ पहुंचाता है) (3) जिल्द इन्फेक्शन (SKIN INFECTION) (4) फफूंदी के अमराज़ (VIRAL DISEASES)

टॉयलेट पेपर और गुर्दों के अमराज़

अतिब्बा का कहना है कि टॉयलेट पेपर से सफ़ाई बराबर नहीं होती लिहाज़ा जरासीम फैलते और बदने इन्सानी के अन्दर जा कर तरह तरह की बीमारियों का सबब बनते हैं। खुसूसन औरतों की पेशाब

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा चिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पड़ा तहकीक़ वोह बद बख़्त हो गया । (अब्दु)

गाह के ज़रीए गुर्दों में दाख़िल हो जाते हैं जिस के सबब बसा अवकात गुर्दों से पीप आना शुरूअ हो जाता है। हां टॉयलेट पेपर के इस्ति'माल के बा'द अगर पानी से इस्तिन्जा कर लिया जाए तो इस का नुक़सान न होने के बराबर रह जाता है।

सख़्त ज़मीन पर क़ज़ाए हाज़त के नुक़सानात

कुर्सी नुमा कमोड और w.c. का इस्ति'माल शरअन जाइज़ है। सहूलत के लिहाज़ से कमोड के मुकाबले में w.c. बेहतर है जब कि कुशादा हो ताकि इस पर सुन्नत के मुताबिक़ बैठा जा सके। लेकिन आज कल छोटे w.c. लगाए जाते हैं और उन में कुशादा हो कर नहीं बैठा जा सकता। हां अगर क़दमचे या'नी पाउं रखने की जगह फ़र्श के साथ हमवार रखी जाए तो हस्बे ज़रूरत कुशादा बैठा जा सकता है। एक सुन्नत नर्म ज़मीन पर रफ़ू हाज़त करना भी है। जैसा कि हदीसे रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ में है : जब तुम में से कोई पेशाब करना चाहे तो पेशाब के लिये नर्म जगह ढूँडे। (الْحَامِيعُ الصَّغِيرُ لِلشُّبُوطِيِّ ص ३७-حدیث ००७) इस के फ़वाइद को तस्लीम करते हुए ल्यूवल पावल (louval pou) कहता है : “इन्सान की बका मिट्टी और फ़ना भी मिट्टी है जब से लोगों ने नर्म मिट्टी की ज़मीन पर क़ज़ाए हाज़त करने के बजाए सख़्त ज़मीन (या'नी w.c., कमोड वगैरा) का इस्ति'माल शुरूअ किया है उस वक़्त से मर्दों में जिन्सी (मर्दाना) कमज़ोरी और पथरी के अमराज़ में इज़ाफ़ा हो गया है ! सख़्त ज़मीन पर हाज़त करने के असरात मसाने के गुदूद (PROSTATE GLANDS) पर भी पड़ते हैं, पेशाब या फुज़्ला

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर सुबह व शाम दस दस बार दुरूदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअत मिलेगी । (मुँजिबुररवा)

जब नर्म ज़मीन पर गिरता है तो उस के जरासीम और तेज़ाबिय्यत फ़ौरन जज़्ब हो जाते हैं जब कि सख़्त ज़मीन चूँकि जज़्ब नहीं कर पाती इस लिये तेज़ाबी और जरासीमी असरात बराहे रास्त जिस्म पर हम्ला आवर होते और तरह तरह के अमराज़ का बाइस बनते हैं ।”

आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ दूर तशरीफ़ ले जाते

मदीने के सुल्तान, रहमते अ़लमिय्यान صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की शाने अज़मत निशान पर कुरबान कि जब क़ज़ाए हाज़त को तशरीफ़ ले जाते तो इतनी दूर जाते कि कोई न देखे । (मुँजिबुररवा, स. ३०-३१) या'नी या तो दरख़्त या दीवार के पीछे बैठते और अगर चट्यल मैदान होता तो इतनी दूर तशरीफ़ ले जाते जहां किसी की निगाह न पड़ सकती । (मिरआत, जि. 1, स. 262) यकीनन सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ के हर फ़े'ल में दीनो दुन्या की बे शुमार भलाइयां पिन्हां होती हैं । पेशाब करने के बा'द अगर हर फ़र्द एक लोटा पानी बहा दिया करे तो إِنَّ شَاءَ اللهُ عَلَيْهِ बदबू और जरासीम की अफ़ज़ाइश में कमी होगी, बड़ा पेशाब करने के बा'द भी जहां एकआध लोटा पानी काफ़ी हो वहां फ़्लेश टैंक से पानी न बहाया जाए क्यूं कि वोह कई लोटे पर मुश्तमिल होता है ।

क़ज़ाए हाज़त से क़ब्ल चलने के फ़वाइद

आज कल बिल खुसूस शहरों में बन्द कमरे के अन्दर ही बैतुल ख़ला होते हैं, जो कि जरासीम की नश्वो नमा और इन के ज़रीए फैलने वाले अमराज़ के ज़राएअ हैं । एक बायो केमिस्ट्री के माहिर का

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़ा उस ने जफ़ा की। (عبدالرزاق)

कहना है : जब से शहरों में वुस्अत, आबादियों की कसरत और खेतों की किल्लत होने लगी है तब से अमराज़ की ख़ूब ज़ियादत होने लगी है। क़ज़ाए हाज़त के लिये जब से दूर चल कर जाना तर्क किया है क़ब्ज़, गेस, तब्ज़ीर और जिगर की बीमारियां बढ़ गई हैं। चलने से आंतों की हरकतों में तेज़ी आती है। जिस के सबब हाज़त तसल्ली बख़्श हो जाती है, आजकल बिगैर चले (घर ही घर में) बैतुल ख़ला में दाख़िल हो जाने की वजह से बसा अवकात फ़राग़त भी ताख़ीर से होती है !

बैतुल ख़ला जाने की 47 निय्यतें

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : “मुसल्मान की निय्यत उस के अमल से बेहतर है।” (الْمُعْتَمَدُ الْكَبِيرُ لِلطَّبْرَانِيِّ ج 6 ص 185 حديث 5942)

﴿1﴾ सर ढांप कर ﴿2﴾ जाने में उल्टे पाउं से और ﴿3﴾ बाहर निकलने में सीधे पाउं से पहल कर के इत्तिबाए सुन्नत करूंगी
 ﴿4,5﴾ दोनों बार या'नी दाख़िले से क़ब्ल और निकलने के बा'द मस्नून दुआएं पढ़ूंगी
 ﴿6﴾ सिफ़ अंधेरे की सूरत में येह निय्यत कीजिये : तहारत पर मदद हासिल करने के लिये बत्ती जलाऊंगी
 ﴿7﴾ फ़राग़त के फ़ौरन बा'द इसराफ़ से बचने की निय्यत से बुझा दूंगी
 ﴿8﴾ हदीसे पाक तरजमा : “पाकी निस्फ़ ईमान है”, पर अमल करते हुए पाउं को गन्दगी से बचाने के लिये चप्पल पहनूंगी
 ﴿9﴾ पहनते हुए सीधे क़दम से और ﴿10﴾ उतारते हुए उल्टे से पहल कर के इत्तिबाए सुन्नत करूंगी
 ﴿11, 12﴾ सित्र खुला

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुझ पर रोजे जुमुआ दुर्दुद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअत करूंगा। (جمع الجوامع)

होने की सूरत में इस्तिक्बाले क़िब्ला (या'नी क़िब्ले की तरफ़ मुंह करने) और इस्तिदबारे क़िब्ला (या'नी क़िब्ले की तरफ़ पीठ करने) से बचूंगी

﴿13, 14﴾ ज़मीन से क़रीब हो कर फ़क़त हस्बे ज़रूरत सित्र खोलूंगी। इसी तरह फ़राग़त के बा'द ﴿15﴾ उठने से क़ब्ल ही सित्र छुपा लूंगी

﴿16﴾ जो कुछ ख़ारिज होगा उस की तरफ़ नहीं देखूंगी ﴿17﴾ पेशाब के छोटों से बचूंगी ﴿18﴾ हया से सर झुकाए रहूंगी ﴿19﴾ ज़रूरतन आंखें बन्द कर लूंगी और ﴿20, 21﴾ बिना ज़रूरत शर्मगाह को देखने और छूने से बचूंगी ﴿22 ता 26﴾ उल्टे हाथ से ढेला पकड़ कर उल्टे ही हाथ से खुशक कर के उल्टे हाथ की तरफ़ उल्टा (या'नी नजासत वाला हिस्सा ज़मीन की तरफ़) रखूंगी, पाक सीधी तरफ़ रखूंगी, मुस्तहब ता'दाद में मसलन तीन, पांच, सात ढेले इस्ति'माल करूंगी ﴿27﴾ पानी से त़हारत करते वक़्त भी सिर्फ़ उल्टा हाथ शर्मगाह को लगाऊंगी ﴿28﴾ शर्ई मसाइल पर ग़ौर नहीं करूंगी (कि बाइसे महरूमि है) ﴿29﴾ सित्र खुला होने की सूरत में बातचीत नहीं करूंगी और ﴿30, 31﴾ पेशाब वगैरा में न थूकूंगी न ही इस में नाक सिनकूंगी ﴿32, 33﴾ अगर फ़ौरन हम्माम ही में वुजू करना न हुवा तो त़हारत वाली हदीस पर अमल करते हुए दोनों हाथ धोऊंगी नीज़ ﴿34﴾ जो कुछ निकला उस को बहा दूंगी (पेशाब करने के बा'द अगर हर फ़र्द एक लोटा पानी बहा दिया करे तो

إِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ) बदबू और जरासीम की अफ़ज़ाइश में कमी होगी, बड़ा इस्तिन्जा करने के बा'द भी जहां एकआध लोटा पानी काफ़ी हो वहां फ़्लेश टेंक से

फ़रमाने मुस्त्फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा उस ने जन्नत का रास्ता छोड़ दिया। (طبرانی)

पानी न बहाया जाए क्यूं कि वोह कई लोटे पर मुश्तमिल होता है।) ﴿35﴾ पानी से इस्तिन्जा करने के बा'द पाउं के टख़ने वाले हिस्से एहतियात के साथ धो लूंगी (क्यूं कि इस मौक़अ पर उमूमन टख़नों की तरफ़ गन्दे पानी के छींटे आ जाते हैं) ﴿36﴾ फ़ारिग़ हो कर जल्दी निकलूंगी ﴿37﴾ बे पर्दगी से बचने के लिये बैतुल ख़ला का दरवाज़ा बन्द करूंगी ﴿38﴾ मुसलमानों को घिन से बचाने के लिये बा'दे फ़राग़त दरवाज़ा बन्द करूंगी।

अवामी इस्तिन्जा ख़ाने में जाते हुए येह निय्यतें भी कीजिये

﴿39-41﴾ अगर लाइन लम्बी हुई तो सब्र के साथ अपनी बारी का इन्तिज़ार करूंगी, किसी की हक़ तलफ़ी नहीं करूंगी, बार बार दरवाज़ा बजा कर उस को ईज़ा नहीं दूंगी ﴿42﴾ अगर मेरे अन्दर होते हुए किसी ने बार बार दरवाज़ा बजाया तो सब्र करूंगी ﴿43﴾ अगर किसी को मुझ से ज़ियादा हाज़त हुई और कोई सख़्त मजबूरी या नमाज़ फ़ौत होने का अन्देशा न हुआ तो ईसाार करूंगी ﴿44﴾ हत्तल इम्कान भीड़ के वक़्त इस्तिन्जा ख़ाने जा कर भीड़ में मज़ीद इज़ाफ़ा कर के मुसलमानों पर बोझ नहीं बनूंगी ﴿45﴾ दरो दीवार पर कुछ नहीं लिखूंगी ﴿46﴾ वहां बनी हुई फ़ोहूश तस्वीरें देख कर और ﴿47﴾ हया सोज़ तहरीरें पढ़ कर अपनी आंखों को बरोजे क़ियामत अपने ख़िलाफ़ गवाह नहीं बनाऊंगी।

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْبُ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ عَلَى مُحَمَّدٍ

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ



हैज़ व निफ़ास का बयान (हनफ़ी)



दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

एक बार किसी भिकारी ने कुफ़्फ़ार से सुवाल किया, उन्होंने ने मजाक़न हज़रते मौला अली क़रमैल्लैहि के पास भेज दिया जो कि सामने तशरीफ़ फ़रमा थे। उस ने हाज़िर हो कर दस्ते सुवाल दराज़ किया। आप क़रमैल्लैहि ने दस¹⁰ बार दुरूद शरीफ़ पढ़ कर उस की हथेली पर दम कर दिया और फ़रमाया : मुठ्ठी बन्द कर लो और जिन लोगों ने भेजा है उन के सामने जा कर खोल दो। (कुफ़्फ़ार हंस रहे थे कि ख़ाली फूंक मारने से क्या होता है!) मगर जब साइल ने उन के सामने जा कर मुठ्ठी खोली तो वोह सोने के दीनारों से भरी हुई थी ! येह करामत देख कर कई काफ़िर मुसलमान हो गए।

(राह्त القلوب ص ७२)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

अल्लाह तआला इर्शाद फ़रमाता है :

وَيَسْأَلُونَكَ عَنِ الْمَيْحِضِ قُلْ هُوَ
أَذَىٰ ۖ فَأَعْتَرُوا النِّسَاءَ فِي
الْمَيْحِضِ ۖ وَلَا تَقْرَبُوهُنَّ حَتَّىٰ
يَطْهُرْنَ ۖ فَإِذَا تَطَهَّرْنَ فَأْتُوهُنَّ مِنْ
حَيْثُ أَمَرَكُمُ اللَّهُ ۗ (٢: ٢٢٢)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और तुम से पूछते हैं हैज़ का हुक़म तुम फ़रमाओ : वोह नापाकी है, तो औरतों से अलग रहो हैज़ के दिनों, और उन से नज़दीकी न करो, जब तक पाक न हो लें, फिर जब पाक हो जाएं तो उन के पास जाओ जहां से तुम्हें अल्लाह (عَزَّوَجَلَّ) ने हुक़म दिया।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत करो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे लिये पाकीज़गी का बाइस है। (अबुसैय्द)

सदरुल अफ़ज़िल हज़रते अल्लामा मौलाना सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِي इस आयत के तहत तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में लिखते हैं : अरब के लोग यहूद व मजूस की तरह हाएज़ा औरतों से कमाले नफ़रत करते थे। साथ खाना पीना एक मकान में रहना गवारा न था बल्कि शिद्दत यहां तक पहुंच गई थी कि उन की तरफ़ देखना और उन से कलाम करना भी हराम समझते थे और नसारा (या'नी क्रिस्चन) इस के बर अक्स हैज़ के अय्याम में औरतों के साथ बड़ी महब्वत से मशगूल होते थे और इख़्तिलात् (मेलजोल) में बहुत मुबालगा करते थे। मुसलमानों ने हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ से हैज़ का हुक्म दरयाफ़्त किया, इस पर यह आयत नाज़िल हुई और इफ़रातो तफ़रीत् (या'नी बढ़ाने घटाने) की राहें छोड़ कर ए'तिदाल (मियाना रबी) की ता'लीम फ़रमाई गई और बता दिया गया कि हालते हैज़ में औरतों से मुजामअत (या'नी सोहबत) मम्नूअ है।

(तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, स. 56)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

हैज़ किसे कहते हैं ?

बालिगा औरत के आगे के मक़ाम से जो खून आदत के तौर पर निकलता है और बीमारी या बच्चा पैदा होने के सबब से न हो तो उसे हैज़ कहते हैं। (बहारे शरीअत, हिस्सा : 2, स. 93) हैज़ के लिये माहवारी, अय्याम, अय्याम से होना, महीना, महीना आना, महीने से होना, बारी के दिन और MONTHLY COURSE (मंथली कोर्स) वगैरा अल्फ़ाज़ भी बोले जाते हैं।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह (स) उस पर दस रहमतें भेजता है।

इस्तिहाज़ा किसे कहते हैं ?

जो खून बीमारी की वजह से आए, उस को इस्तिहाज़ा कहते हैं। (ऐज़न) उम्मुल मुअमिनीन हज़रते सय्यिदतुना उम्मे सलमह رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا से रिवायत है कि रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के अहदे मुबारक में एक औरत के अगले मक़ाम से खून बहता रहता था। उस के लिये उम्मुल मुअमिनीन हज़रते सय्यिदतुना उम्मे सलमह رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا ने हुजूरे अकरम से फ़तवा पूछा। इर्शाद फ़रमाया : इस बीमारी से पहले महीने में जितने दिन व रातें हैज़ आता था, उन की गिनती शुमार कर के महीने में उन ही की मिक्दार नमाज़ छोड़ दे और जब वोह दिन जाते रहें तो गुस्ल करे और शर्मगाह पर कपड़ा बांध कर नमाज़ पढ़े।

(موطا امام مالك، ج ۱ ص ۷۷-۷۸ حديث ۱۴۰)

हैज़ के रंग

हैज़ के छ^६ रंग हैं : १) सियाह २) सुर्ख ३) सब्ज ४) ज़र्द ५) गदला ६) मटियाला। सफ़ेद रंग की रतूबत हैज़ नहीं। (बहारे शरीअत, हिस्सा : 2, स. 95) याद रहे कि औरत के अगले मक़ाम से जो ख़ालिस रतूबत बे आमेज़िशे खून निकलती है उस से वुजू नहीं टूटता अगर कपड़े में लग जाए तो कपड़ा पाक है। (ऐज़न, स. 26)

नोट : हम्ल वाली औरत को जो खून आया वोह इस्तिहाज़ा है।

(دُرْمُعْتَار ج ۱ ص ۵۲۴)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : उस शख्स को नाक खाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पड़े । (ترمذی)

हैज़ की हिक्मत

बालिगा औरत के बदन में फ़ितरतन ज़रूरत से कुछ ज़ियादा खून पैदा होता है कि हम्ल की हालत में वोह खून बच्चे की गिज़ा में काम आए और बच्चे के दूध पीने के ज़माने में वोही खून दूध हो जाए अगर ऐसा न हो तो हम्ल और दूध पिलाने के ज़माने में इस की जान पर बन जाए येही वजह है कि हम्ल और इब्तिदाए शीर ख़्वारगी (या'नी दूध पिलाने) में खून नहीं आता और जिस ज़माने में न हम्ल हो और न दूध पिलाना तब वोह खून अगर बदन से न निकले तो क़िस्म क़िस्म की बीमारियां हो जाएं ।

(बहारे शरीअत, हिस्सा : 2, स. 93)

हैज़ की मुद्दत

हैज़ की कम से कम मुद्दत तीन दिन और तीन³ रातें या'नी पूरे 72 घन्टे हैं । अगर एक मिनट भी कम हुवा तो वोह हैज़ नहीं बल्कि इस्तिहाज़ा या'नी बीमारी का खून है और ज़ियादा से ज़ियादा मुद्दत दस¹⁰ दिन और दस¹⁰ रातें या'नी 240 घन्टे हैं ।

कैसे मा'लूम हो कि इस्तिहाज़ा है

अगर दस¹⁰ दिन और दस¹⁰ रात से ज़ियादा खून आया तो अगर येह हैज़ पहली मर्तबा आया है तो दस¹⁰ दिन तक हैज़ माना जाएगा । और इस के बा'द जो खून आया वोह इस्तिहाज़ा है, और अगर पहले औरत को हैज़ आ चुके हैं और इस की आदत दस¹⁰ दिन से कम थी तो आदत से जितने दिन ज़ियादा खून आया वोह इस्तिहाज़ा

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुझ पर दस मरतबा दुरूदे पाक पढ़े अल्लाह (طربان) उस पर सो रहमतेँ नाज़िल फ़रमाता है।

है, मिसाल के तौर पर किसी औरत को हर महीने में पांच दिन हैज़ आने की आदत थी अब की मरतबा दस¹⁰ दिन आया तो येह दसों¹⁰ दिन हैज़ के माने जाएंगे अलबत्ता अगर बारह¹² दिन खून आया तो आदत वाले पांच दिन हैज़ के माने जाएंगे और सात दिन इस्तिहाज़े के और अगर एक आदत मुकर्रर न थी बल्कि किसी महीने चार⁴ दिन तो किसी महीने सात⁷ दिन हैज़ आता था तो पिछली मरतबा जितने दिन हैज़ के थे वोही अब भी हैज़ के दिन माने जाएंगे, और बाकी इस्तिहाज़े का खून होगा।

हैज़ की कम अज़ कम और इन्तिहाई उम्र

कम से कम 9 बरस की उम्र से हैज़ शुरूअ होगा। और हैज़ आने की इन्तिहाई उम्र पचपन⁵⁵ साल है। इस उम्र वाली को आएसा (या'नी हैज़ व औलाद से ना उम्मीद होने वाली) कहते हैं। (बहारे शरीअत, हिस्सा : 2, स. 94) नव बरस की उम्र से पहले जो खून आएगा वोह हैज़ नहीं बल्कि इस्तिहाज़ा है यूं ही 55 बरस की उम्र के बा'द जो आएगा वोह भी इस्तिहाज़ा है। लेकिन अगर किसी को 55 बरस की उम्र के बा'द भी ख़ालिस खून बिल्कुल ऐसे ही रंग का आया जैसा कि हैज़ के ज़माने में आया करता था तो उस को हैज़ मान लिया जाएगा।

दो² हैज़ के दरमियान कम अज़ कम फ़ासिला

दो² हैज़ों के दरमियान कम से कम पूरे 15 दिन का फ़ासिला ज़रूरी है। (دُرُوسُ خُتَابِ رَجُلٍ ص ٥٢٤) इस्लामी बहन को चाहिये कि वोह हैज़ आने की मुद्दत अच्छी तरह याद रखे या लिख ले ताकि शरीअते

फ़रमाने मुस्त्फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिफ़्र हुआ और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पड़ा तहक्कीक़ वोह बद बख़्त हो गया । (अहम)

मुतहहरा पर अहसन तरीके से अमल कर सके, मुद्दते हैज़ याद न रखने की सूरत में बहुत सी पेचीदगियां हो जाती हैं ।

अहम मसअला

येह ज़रूरी नहीं कि मुद्दत में हर वक़्त खून जारी रहे जब ही हैज़ हो बल्कि अगर बा'ज बा'ज वक़्त भी आए, जब भी हैज़ है ।

(दुर्मुह्तार ज १ व २३)

निफ़ास का बयान

बच्चा होने के बा'द औरत के आगे के मक़ाम से जो खून आता है वोह निफ़ास कहलाता है ।

(एलमग़िरी ज १ व ३७)

निफ़ास की ज़रूरी वज़ाहत

अक्सर इस्लामी बहनों में येह मशहूर है कि बच्चा जनने के बा'द इस्लामी बहन 40 दिन तक लाज़िमी तौर पर नापाक रहती है येह बात बिल्कुल ग़लत है । बराए करम ! निफ़ास की ज़रूरी वज़ाहत पढ़ लीजिये :

निफ़ास की ज़ियादा से ज़ियादा मुद्दत 40 दिन है या'नी अगर 40 दिन के बा'द भी बन्द न हो तो मरज़ है । लिहाज़ा 40 दिन पूरे होते ही गुस्ल कर ले और 40 दिन से पहले बन्द हो जाए ख़्वाह बच्चे की विलादत के बा'द एक मिनट ही में बन्द हो जाए तो जिस वक़्त भी बन्द हो गुस्ल कर ले और नमाज़ व रोज़ा शुरू हो गए । अगर 40 दिन के अन्दर अन्दर दोबारा खून आ गया तो शुरू

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर सुबह व शाम दस दस बार दुरूदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअत मिलेगी । (مُعْتَمَدَات)

विलादत से ख़त्मे ख़ून तक सब दिन निफ़ास ही के शुमार होंगे । मसलन विलादत के बा'द दो^२ मिनट तक ख़ून आ कर बन्द हो गया और गुस्ल कर के नमाज़ रोज़ा वगैरा करती रही, 40 दिन पूरे होने में फ़क़त दो^२ मिनट बाक़ी थे कि फिर ख़ून आ गया तो सारा चिल्ला या'नी मुकम्मल 40 दिन निफ़ास के ठहरेंगे । जो भी नमाज़ें पढ़ीं या रोज़े रखे सब बेकार गए, यहां तक कि अगर इस दौरान फ़र्ज़ व वाजिब नमाज़ें या रोज़े क़ज़ा किये थे तो वोह भी फिर से अदा करे ।

(माखूज़ अज़ फ़तावा रज़विyyा, जि. 4, स. 354 ता 356)

निफ़ास के मुतअल्लिक़ कुछ ज़रूरी मसाइल

किसी औरत को 40 दिन व रात से ज़ियादा निफ़ास का ख़ून आया, अगर पहला बच्चा पैदा हुवा है तो 40 दिन रात निफ़ास है, बाक़ी जितने अय्याम 40 दिन रात से ज़ियादा हुए हैं वोह इस्तिहाजे के हैं । और अगर इस से पहले भी बच्चा तो पैदा हुवा था मगर येह याद नहीं रहा कि कितने दिन ख़ून आया था तो इस सूरत में भी येही मस्अला होगा या'नी **40 दिन रात निफ़ास के और बाक़ी इस्तिहाजे के और अगर पहले बच्चे के पैदा होने पर ख़ून आने के दिन याद हैं मसलन पहले जो बच्चा पैदा हुवा था तो 30 दिन रात ख़ून आया था तो इस सूरत में 30 दिन रात निफ़ास के हैं बाक़ी इस्तिहाजे के मसलन पहले बच्चे के पैदा होने पर 30 दिन रात ख़ून आया था और दूसरे**

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़ा उस ने जफ़ा की। (عبدالرزاق)

बच्चे की पैदाइश पर 50 दिन रात खून आया तो 30 दिन निफ़ास के होंगे बाकी 20 दिन रात इस्तिहाज़ के। (बहारे शरीअत, हिस्सा : 2, स. 99)

हम्ल साक़ित हो जाए तो.....?

हम्ल साक़ित हो गया और उस का कोई उज़्व बन चुका है जैसे हाथ, पाउं या उंगलियां, तो यह खून निफ़ास है (عالمگیری ج ۱ ص ۳۷) वरना अगर तीन³ दिन रात तक रहा और इस से पहले पन्द्रह¹⁵ दिन पाक रहने का ज़माना गुज़र चुका है तो हैज़ है और जो तीन³ दिन से पहले ही बन्द हो गया, या अभी पूरे पन्द्रह¹⁵ दिन तहारत के नहीं गुज़रे हैं तो इस्तिहाज़ा है। (बहारे शरीअत, हिस्सा : 2, स. 99)

चन्द ग़लत फ़हमियों का इज़ाला

बच्चा जनने के बा'द से ले कर निफ़ास से पाक होने तक औरत ज़च्चा कहलाती है ऐसी औरत या'नी ज़च्चा को ज़च्चा खाने से निकलना जाइज़ है। उस को साथ खिलाने या उस का झूटा खाने में कोई हरज नहीं, बा'ज इस्लामी बहनें ज़च्चा के बरतन तक अलग कर देती हैं बल्कि उन बरतनों को مَعَادَ اللهِ عَزَّوَجَلَّ एक तरह से नापाक समझती हैं ऐसी बेहूदा रस्मों से एहतियात लाज़िम है। इसी तरह येह मस्अला भी मन घड़त है कि ज़च्चा (निफ़ास वाली) जब गुस्ल करे तो वोह चालीस लोटों के पानी से गुस्ल करे वरना गुस्ल नहीं उतरेगा। सहीह मस्अला येह है कि अपनी ज़रूरत के मुताबिक पानी इस्ति'माल करे।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुझ पर रोजे जुमुआ दुरुद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअत करूंगा। (جمع الجوامع)

इस्तिहाज़ा के अहकाम

«1» इस्तिहाज़े में न नमाज़ मुआफ़ है न रोज़ा, न ऐसी औरत से सोहबत ह़राम।

(عالمگیری ج ۱ ص ۳۹)

«2» मुस्तहाज़ा (या'नी इस्तिहाज़े वाली) का का'बा शरीफ़ में दाख़िल होना, तवाफ़े का'बा, वुजू कर के कुरआन शरीफ़ को हाथ लगाना और इस की तिलावत करना येह तमाम उमूर भी जाइज़ हैं।

(رَدُّ الْمُحْتَار، ج ۱، ص ۵۴۴)

«3» इस्तिहाज़ा अगर इस हद तक पहुंच गया कि (बार बार खून आने के सबब) इस को इतनी मोहलत नहीं मिलती कि वुजू कर के फ़र्ज़ नमाज़ अदा कर सके तो नमाज़ का पूरा एक वक़्त शुरूअ से आख़िर तक इसी हालत में गुज़र जाने पर उस को मा'ज़ूर कहा जाएगा, एक वुजू से उस वक़्त में जितनी नमाज़ें चाहे पढ़े, खून आने से उस का वुजू न जाएगा।

(बहारे शरीअत, हिस्सा : 2, स. 107)

«4» अगर कपड़ा वगैरा रख कर इतनी देर तक खून रोक सकती है कि वुजू कर के फ़र्ज़ पढ़ ले, तो उज़्र साबित न होगा। (या'नी ऐसी सूत में "मा'ज़ूर" नहीं कहलाएगी)

(ऐज़न)

हैज़ व निफ़ास के 21 अहकाम

«1» हैज़ व निफ़ास की हालत में नमाज़ पढ़ना और रोज़ा रखना ह़राम है।

(عالمگیری ج ۱ ص ۲۸، हिस्सा : 2, स. 102)

«2» इन दिनों में नमाज़ें मुआफ़ हैं इन की क़ज़ा भी नहीं। अलबत्ता

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा उस ने जन्नत का रास्ता छोड़ दिया। (ज़रन)

रोज़ों की क़ज़ा दूसरे दिनों में रखना **फ़र्ज़** है। (बहारे शरीअत, हिस्सा : 2, स. 102, ०३२) इस मुआमले में इस्लामी बहनें इम्तिहान में पड़ जाती हैं। एक ता'दाद है जो रोज़े क़ज़ा नहीं करती। मेहरबानी कर के लाज़िमी रोज़े क़ज़ा करें वरना जहन्नम का अज़ाब सहा न जाएगा।

❸ हैज़ व निफ़ास वाली को कुरआने मजीद पढ़ना **हराम** है ख़्वाह देख कर पढ़े या ज़बानी पढ़े। यूं ही कुरआने मजीद का छूना भी **हराम** है। हां अगर जुद्दान में कुरआने मजीद हो तो उस जुद्दान को छूने में कोई **हरज** नहीं। (बहारे शरीअत, हिस्सा : 2, स. 101)

❹ कुरआने मजीद पढ़ने के इलावा दूसरे तमाम अवरादो वज़ाइफ़ कलिमा शरीफ़ और दुरूद शरीफ़ वगैरा हैज़ व निफ़ास की हालत में इस्लामी बहन बिला कराहत **पढ़ सकती** है बल्कि मुस्तहब है कि नमाज़ों के अवकात में वुजू कर के उतनी देर तक दुरूद शरीफ़ और दूसरे वज़ाइफ़ पढ़ लिया करे जितनी देर में नमाज़ पढ़ सकती थी ताकि आदत बाकी रहे। (बहारे शरीअत, हिस्सा : 2, स. 101, 102)

❺ हैज़ व निफ़ास की हालत में हमबिस्तरी **हराम** है। इस हालत में नाफ़ से घुटने तक औरत के बदन को मर्द अपने किसी उज़्व से न छूए कि येह भी **ना जाइज़** है जब कि कपड़ा वगैरा हाइल न हो शहवत से हो या बे शहवत और अगर ऐसा हाइल हो कि बदन की गरमी महसूस न होगी तो हरज नहीं। हां नाफ़ से ऊपर और घुटने के नीचे के बदन को छूना और बोसा वगैरा देना जाइज़ है। (ऐज़न, स. 104) इस हालत में औरत मर्द के हर हिस्से बदन को हाथ लगा सकती है। (ऐज़न, स. 105)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत करो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे लिये पाकीज़गी का बाइस है। (बुख़ारी)

«6» हैज़ व निफ़ास की हालत में इस्लामी बहन को मस्जिद में जाना ह़राम है। हां अगर चोर या दरिन्दे से डर कर या किसी भी शदीद मजबूरी से मजबूर हो कर मस्जिद में चली जाए तो जाइज़ है मगर उस को चाहिये कि तयम्मूम कर के मस्जिद में जाए। (ऐज़न, स. 101, 102)

«7» हैज़ व निफ़ास वाली इस्लामी बहन अगर ईदगाह में दाख़िल हो जाए तो कोई ह़रज नहीं। (ऐज़न, स. 102) इसी तरह फ़िनाए मस्जिद में भी जा सकती है। मसलन दा'वते इस्लामी के मदनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना का वसीओ अरीज़ तहख़ाना जहां इस्लामी बहनों का सुन्नतों भरा इज्तिमाअ होता है यह फ़िनाए मस्जिद है यहां हैज़ व निफ़ास वाली आ सकती है, इज्तिमाअ में शरीक हो सकती है। सुन्नतों भरा बयान भी कर सकती है ना'त शरीफ़ भी पढ़ सकती है, दुआ भी करवा सकती है।

«8» हैज़ व निफ़ास की हालत में अगर मस्जिद के बाहर रह कर और हाथ बढ़ा कर मस्जिद से कोई चीज़ उठा ले या मस्जिद में कोई चीज़ रख दे तो जाइज़ है। (बहारे शरीअत, हिस्सा : 2, स. 102)

«9» हैज़ व निफ़ास वाली को ख़ानए का'बा के अन्दर जाना और उस का त्वाफ़ करना अगर मस्जिदुल ह़राम के बाहर से हो ह़राम है। (ऐज़न)

«10» हैज़ व निफ़ास की हालत में बीवी को अपने बिस्तर पर सुलाने में ग़लबए शहवत या अपने को काबू में न रखने का अन्देशा हो तो शोहर के लिये लाज़िम है कि बीवी को अपने बिस्तर पर न सुलाए

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़े तो वोह लोगों में से कन्ज़ूस तरीन शख्स है। (مسند احمد)

बल्कि अगर गुमान ग़ालिब हो कि शहवत पर क़ाबू न रख सकेगा तो शोहर को ऐसी हालत में बीवी को अपने साथ सुलाना गुनाह है।

(बहारे शरीअत, हिस्सा : 2, स. 105)

«11» हैज़ व निफ़ास की हालत में बीवी के साथ हमबिस्तरी को हलाल समझना कुफ़्र है और हराम समझते हुए कर लिया तो सख़्त गुनहगार हुवा उस पर तौबा करना फ़र्ज़ है। और अगर शुरूए हैज़ व निफ़ास में ऐसा कर लिया तो एक दीनार¹ और अगर क़रीबे ख़त्म के किया तो निस्फ़ (या'नी आधा) दीनार ख़ैरात करना मुस्तहब है (ऐज़न, स. 104) अज़ब नहीं कि यहां सोना देना ही अन्सब (या'नी मुनासिब तर) हो। (फ़तावा रज़विय्या, जि. 4, स. 364) ताकि खुदा के ग़ज़ब से अमान पाए। इस का मतलब हरगिज़ येह नहीं कि ख़ैरात कर देने का ज़ेहन बना कर مَعَاذَ اللَّهِ عَزَّ وَجَلَّ जानबूझ कर जिमाअ में मुब्तला हो, अगर ऐसा किया तो सख़्त गुनहगार और जहन्नम का हक़दार है। दुर्रे मुख़्तार में है : इस का मसरफ़ वोही है जो ज़कात का है। क्या औरत पर भी सदक़ा करना मुस्तहब है ? ज़ाहिर बात येह है कि औरत पर येह हुक्म नहीं है।

(نُزُومُ خُتَار، ج 1 ص 543)

«12» रोज़े की हालत में अगर हैज़ व निफ़ास शुरूअ हो गया तो वोह रोज़ा जाता रहा उस की क़ज़ा रखे, फ़र्ज़ था तो क़ज़ा फ़र्ज़ है और

1 : फ़तावा रज़विय्या जि. 4 स. 356 पर एक दीनार दस दिरहम के बराबर लिखा है इस से माखूज़ कर के दीनार से मुराद दो तोला साढ़े सात माशा (30.618 ग्राम) चांदी या उस की रक़म बनती है।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : तुम जहाँ भी हो मुझ पर दुरूद पढ़ो कि तुम्हारा दुरूद मुझ तक पहुँचता है। (भरान)

नफ़ल था तो क़ज़ा वाजिब है। (बहारे शरीअत, हिस्सा : 2, स. 104)

«13» हैज़ अगर पूरे दस¹⁰ दिन पर ख़त्म हुआ तो पाक होते ही उस से जिमाअ करना जाइज़ है अगरचे अब तक गुस्ल न किया हो लेकिन मुस्तहब यह है कि नहाने के बा'द सोहबत करे। (ऐज़न, स. 105)

«14» अगर दस¹⁰ दिन से कम में हैज़ बन्द हो गया तो ता वक़्ते कि गुस्ल न करे या वोह वक़्ते नमाज़ जिस में पाक हुई न गुज़र जाए सोहबत करना जाइज़ नहीं। (ऐज़न)

«15» हैज़ व निफ़ास की हालत में सज्दए तिलावत भी ह़राम है और सज्दे की आयत सुनने से इस पर सज्दा वाजिब नहीं। (ऐज़न, स. 104)

«16» रात को सोते वक़्त औरत पाक थी और सुब्ह को सो कर उठी तो हैज़ का असर देखा तो उसी वक़्त से हैज़ का हुक्म दिया जाएगा रात से हाएज़ा नहीं मानी जाएगी। (बहारे शरीअत, हिस्सा : 2, स. 104)

«17» हैज़ वाली सुब्ह को सो कर उठी और गद्दी पर कोई निशान हैज़ का नहीं तो रात ही से पाक मानी जाएगी। (ऐज़न)

«18» जब तक औरत को खून आए नमाज़ छोड़े रखे अलबत्ता अगर खून का बहना दस¹⁰ दिन रात कामिल से आगे बढ़ जाए तो गुस्ल कर के नमाज़ पढ़ना शुरूअ कर दे यह इस सूरत में है कि पिछला हैज़ भी दस¹⁰ दिन रात आया हो और अगर पिछला हैज़ दस¹⁰ दिन से कम था मसलन 6 दिन का था तो अब गुस्ल कर के चार⁴ दिन की क़ज़ा नमाज़ें पढ़े और अगर पिछला हैज़ चार दिन का था तो अब छ दिन

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो लोग अपनी मजलिस से अल्लाह के जिक्र और नबी पर दुरूद शरीफ़ पढ़े बिगैर उठ गए तो वोह बदबूदार मुर्दा़र से उठे । (شعب الایمان)

की क़ज़ा नमाज़ें पढ़ेगी । (फ़तावा रज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 4, स. 350)

«19» जो हैज़ अपनी पूरी मुद्दत या'नी दस¹⁰ दिन कामिल से कम में ख़त्म हो जाए उस में दो² सूरते हैं : (1) या तो औरत की आदत से भी कम मुद्दत में ख़त्म हुवा या'नी इस से पहले महीने में जितने दिन हैज़ आया था उतने दिन भी अभी नहीं गुज़रे थे कि खून बन्द हो गया । लिहाज़ा इस सूरत में सोहबत अभी जाइज़ नहीं अगर्चे गुस्ल भी कर ले ।

(2) और अगर आदत से कम मुद्दत हैज़ नहीं आया । मसलन पहले महीने सात दिन हैज़ आया था अब भी सात दिन या आठ दिन हैज़ आ कर ख़त्म हो गया या येह पहला ही हैज़ है जो इस औरत को आया और दस दिन से कम में ख़त्म हुवा तो इन सूरतों में सोहबत जाइज़ होने के लिये दो बातों में से एक बात ज़रूरी है : (الف) या तो औरत गुस्ल कर ले और अगर ब वज्हे मरज़ या पानी न होने के तयम्मूम करना हो तो तयम्मूम कर के नमाज़ भी पढ़ ले सिर्फ़ तयम्मूम काफ़ी नहीं । (ب) या औरत गुस्ल न करे तो इतना हो कि उस औरत पर कोई नमाज़े फ़र्ज़, फ़र्ज़ हो जाए या'नी नमाज़े पन्जगाना से किसी नमाज़ का वक़्त गुज़र जाए जिस में कम से कम उस ने इतना वक़्त पाया हो जिस में वोह नहा कर सर से पाउं तक एक चादर ओढ़ कर तक्बीरे तहरीमा कह सकती है तो इस सूरत में बिगैर तहारत या'नी गुस्ल के बिगैर भी उस से सोहबत जाइज़ हो जाएगी ।

(फ़तावा रज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 4, स. 352)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صلى الله تعالى عليه و آله و سلم : जिस ने मुझ पर रोज़े जुमुआ दो सो बार दुरूदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआफ़ होंगे। (جمع الجوامع)

﴿20﴾ निफ़ास में खून जारी होता है अगर पानी जारी हो तो वोह कोई चीज़ नहीं लिहाज़ा चालीस⁴⁰ दिन के अन्दर जब भी खून लौटेगा शुरूए विलादत से ख़त्मे खून तक सब दिन निफ़ास ही के गिने जाएंगे। जो दिन बीच में खून न आने की वजह से ख़ाली रह गए वोह भी निफ़ास ही में शुमार होंगे मसलन बच्चे की विलादत के बा'द दो² मिनट तक खून आ कर बन्द हो गया। औरत ने तहारत का गुमान कर के गुस्ल किया और नमाज़, रोज़ा वगैरा अदा करती रही मगर चालीस⁴⁰ दिन पूरे होने में अभी दो² मिनट बाकी थे कि फिर खून आ गया तो येह सारे दिन निफ़ास ही के ठहरेंगे, नमाज़ें बेकार गईं, फ़र्ज़ या वाजिब रोज़े या अगली क़ज़ा नमाज़ें जितनी पढ़ी हों उन्हें फिर फ़ैरे।

(फ़तावा रज़विख्या मुख़र्रजा, जि. 4, स. 354)

﴿21﴾ हैज़ वाली औरत के हाथ का पका हुआ खाना भी जाइज़ और उसे अपने साथ खाना खिलाना भी जाइज़, इन बातों से एहृतिराज़ व इज्तिनाब यहूद व मजूस¹ का मस्अला है कि वोह ऐसा करते हैं। (ऐज़न, स. 355)

हैज़ और निफ़ास के मुतअल्लिक़ आठ मदनी फूल

﴿1﴾ हैज़ व निफ़ास की हालत में इस्लामी बहनें दर्स भी दे सकती हैं और बयान भी कर सकती हैं इस्लामी किताब को छूने में भी हरज नहीं। कुरआने पाक को हाथ या उंगली की नोक या बदन का कोई हिस्सा लगाना हराम है। नीज़ किसी परचे पर अगर सिर्फ़ आयते कुरआनी

داينه

1. मजूसी या'नी आतश परस्त, मजूसी की जम्अ मजूस है।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुझ पर दुरूद शरीफ़ पढ़ो अल्लाह عُزَّ وَجَلُّهُ تَعَالَى तुम पर रहमत भेजेगा । (अबुदौद)

लिखी हो दीगर कोई इबारत न लिखी हो तो उस कागज़ के आगे पीछे किसी भी हिस्से कोने कनारे को छूने की इजाज़त नहीं ।

﴿2﴾ कुरआने पाक या कुरआनी आयत या इस का तरजमा पढ़ना और छूना दोनों हराम है ।

﴿3﴾ अगर कुरआने अज़ीम जुज़्दान में हो तो जुज़्दान पर हाथ लगाने में हरज नहीं, यूँही रुमाल वगैरा किसी ऐसे कपड़े से पकड़ना जो न अपना ताबेअ हो न कुरआने मजीद का तो जाइज़ है, कुरते की आस्तीन, दुपट्टे के आंचल से यहां तक कि चादर का एक कोना इस के मूँढे (कंधे) पर है दूसरे कोने से छूना हराम है कि येह सब इस के ताबेअ हैं जैसे चोली कुरआने मजीद की ताबेअ थी । (बहारे शरीअत, हिस्सा : 2, स. 48)

﴿4﴾ अगर कुरआन की आयत दुआ की निय्यत से या तबर्क के लिये जैसे بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ या अदाए शुक्र को या छींक के बा'द اِنَّ اللّٰهَ وَاَنَا الْیَوْمَ لَمُجْرَمُونَ या ख़बरे परेशान पर الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ या सना पूरी सूरतुल फ़ातिहा या आयतुल कुर्सी या सूरए हशर की पिछली तीन³ आयतें اِلَّا هُوَ سے आख़िर सूरह तक पढ़ीं और इन सब सूरतों में कुरआन की निय्यत न हो तो कुछ हरज नहीं । यूँही तीनों कुल बिना लफ़्जे कुल ब निय्यते सना पढ़ सकती है और लफ़्जे कुल के साथ नहीं पढ़ सकती अगर्चे ब निय्यते सना ही हो कि इस सूरत में इन का कुरआन होना मुतअय्यन है, निय्यत को कुछ दख़ल नहीं । (बहारे शरीअत, हिस्सा : 2, स. 48)

﴿5﴾ जि़क्रो अज़्कार, दुरूदो सलाम, ना'त शरीफ़ पढ़ने, अज़ान का

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मफ़िरत है। (ابن عساکر)

जवाब देने वगैरा में कोई मुजायका नहीं। हल्क़ए ज़िक्र में शिकत कर सकती हैं। बल्कि ज़िक्र करवा भी सकती हैं।

﴿6﴾ खुसूसन येह बात याद रखिये कि (इन दिनों में) नमाज़ और रोज़ा हराम है। (ऐज़न, स. 102)

﴿7﴾ मुरव्वत में भी ऐसे मौक़अ पर हरगिज़ हरगिज़ नमाज़ न पढ़िये कि फुक़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَامُ यहां तक फ़रमाते हैं : बिला उज़्र जानबूझ कर बिगैर वुजू के नमाज़ पढ़ना कुफ़्र है। जब कि इसे जाइज़ समझे या इस्तिहज़ान (या'नी मज़ाक़ उड़ाते हुए) येह फ़े'ल करे।

(مَنْعُ الرُّوضِ للقَارِيءِ ص ٤٦٨ دار البشائر الاسلاميّة بيروت)

﴿8﴾ इन दिनों की नमाज़ों की क़ज़ा नहीं अलबत्ता रमज़ानुल मुबारक के रोज़ों की क़ज़ा फ़र्ज़ है। (बहारे शरीअत, हिस्सा : 2, स. 102) जब तक क़ज़ा रोज़े ज़िम्मे बाक़ी रहते हैं उस वक़्त तक नफ़ली रोज़े के मक़बूल होने की उम्मीद नहीं। इन अहक़ाम की तफ़सीली मा'लूमात के लिये मक्तबतुल मदीना की मत्बूआ बहारे शरीअत, हिस्सा 2 सफ़हा 91 ता 109 का मुतालआ करने की हर इस्लामी बहन को न सिर्फ़ दरख़्वास्त बल्कि सख़्त ताकीद है।

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

تُؤْبُوْا اِلَى اللهِ ! اَسْتَغْفِرُ اللهُ

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

ज़नानी बीमारियों के घरेलू इलाज

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

अल्लाह के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अनिल उयूब صَلَّ اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने बख़्शाश निशान है : “अल्लाह की खातिर आपस में महबूबत रखने वाले जब बाहम मिलें और मुसाफ़हा करें और नबी (صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ) पर दुरूदे पाक भेजें तो उन के जुदा होने से पहले दोनों के अगले पिछले गुनाह बख़्शा दिये जात हैं।”

(مسند ابى يعلى، ج ٣، ص ٩٥، حديث ٢٩٥١ دارالكتب العلمية بيروت)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

इस्लामी बहनो ! हर एक का तर्ब्द मिज़ाज अलग अलग होता है एक ही दवा किसी के लिये आबे हयात का काम दिखाती है तो किसी के लिये मौत का पैग़ाम लाती है लिहाज़ा किताबों में लिखे हुए (और इस किताब के भी) या अ़वामुन्नास के बताए हुए इलाज शुरूअ करने से क़ब्ल अपनी तबीबा से मशवरा कर लेना ज़रूरी है। एक मदनी फूल येह भी क़बूल कर लीजिये कि बदल बदल कर नहीं बल्कि एक ही तबीबा से इलाज करवाना मुनासिब रहता है कि वोह तर्ब्द मिज़ाज से वाक़िफ़ हो जाती है।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने किताब में मुझ पर दुरूदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फ़िरिश्ते उस के लिये इस्तिफ़र (या'नी बख़्शाश की दुआ) करते रहेंगे। (طبرانی)

बीमारियों से हिफ़ाज़त के लिये.....

पुरानी ज़नानी बीमारियों से नजात और आयिन्दा इन से तहफ़फ़ुज़ात के लिये इस्लामी बहनें येह चीज़ें ब कसरत इस्ति'माल करें ﴿1﴾ चुक़न्दर ﴿2﴾ पत्ते वाली सब्ज़ियां ﴿3﴾ साग ﴿4﴾ सोयाबीन ﴿5﴾ चोलाई का साग ﴿6﴾ सरसों का साग ﴿7﴾ कढ़ी पत्ता मरीज़ ग़ैरे मरीज़ सभी इस को खा लें, इसे सालन से निकाल कर फेंक न दिया करें ﴿8﴾ हरा धनिया ﴿9﴾ पोदीना ﴿10﴾ काले और सफ़ेद चने ﴿11﴾ दालें ﴿12﴾ बिग़ैर छने आटे की रोटी। (ब्राऊन खुब्ज़ (रोटी) और ब्राऊन ब्रेड (डबल रोटी) के नाम से बिग़ैर छने आटे की रोटियां बेकरी से मिल सकती हैं)

हैज़ की ख़राबी के नुक़सानात

हैज़ खुल कर न आने, या तक्लीफ़ से आने या बन्द हो जाने से कई किस्म के अमराज़ जनम लेते हैं। मसलन चक्कर आना, सर का दर्द और ख़ून की ख़राबी के अमराज़ जैसे ख़ारिश, फोड़े फुन्सियां वग़ैरा।

हैज़ की ख़राबी और डरावने ख़्वाब

हैज़ की ख़राबियों की वजह से मरीज़ा को दूसरी परेशानियों के इलावा डरावने ख़्वाब भी तंग करते हैं, यहां तक कि बा'ज अवकात अमिल "असरात" कह कर मज़ीद ख़ौफ़ज़दा कर देते हैं ! हालां कि वोह आसेब ज़दा नहीं होती। इस्लामी बहन या इस्लामी भाई को जिस वजह से भी डरावने ख़्वाब आते हों। रोज़ाना सोते वक़्त

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुझ पर एक दिन में 50 बार दुरूद पाक पढ़े क़ियामत के दिन मैं उस से मुसाफ़हा करूँ (या'नी हाथ मिलाऊँ)गा । (ابن بشكوال)

يا مُتَكَبِّرُ 21 बार (अव्वल आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़) पढ़ लिया करे । इस अमल की पाबन्दी करने से ख़्वाब में नहीं डरेंगे ।

कसरते हैज़ के दो² इलाज

﴿1﴾ बहुत ज़ियादा खून गिरता हो और चक्कर आते हों तो थोड़े से तुलसी के रस में एक चम्मच शहद मिला कर पीना मुफ़ीद है ﴿2﴾ छ ग्राम धनिया (बीज) आधा किलो पानी में ख़ूब पकाइये यहां तक कि पानी आधा रह जाए अब उतार कर एक चम्मच शहद मिला कर नीम गर्म पी लीजिये, إِنَّ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ जल्द फ़ाएदा हो जाएगा । (मुद्दत 20 दिन)

माहवारी की ख़राबियों के तीन³ इलाज

﴿1﴾ हाँग खाने से रेहूम (बच्चादान) सुकड़ता और हैज़ साफ़ आता है ﴿2﴾ 12 ग्राम काले तिल, पाव किलो पानी में ख़ूब जोश दीजिये जब तीन हिस्से पानी जल जाए तो उस में कुछ गुड़ डाल कर दोबारा जोश दीजिये (पीने के क़ाबिल हो जाने के बा'द) येह पानी पीने से إِنَّ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ माहवारी की तकलीफ़ कम और अय्याम दुरुस्त हो जाएंगे ﴿3﴾ कच्ची पियाज़ खाने से माहवारी साफ़ आती है और दर्द नहीं होता ।

हैज़ बन्द होने के 6 इलाज

﴿1﴾ अगर गरमी या खुश्की के बाइस हैज़ बन्द हो जाए तो एक कप सोंफ़ के अरक में एक छोटा चम्मच तरबूज के बीज का मग़ज़ और एक चम्मच शहद मिला कर सुब्ह व शाम पियें إِنَّ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ फ़ाएदा हो जाएगा । पानी ख़ूब कसरत से पियें, हो सके तो रोज़ाना 12 गिलास पी

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : बरोज़े क़ियामत लोगों में से मेरे क़रीब तर वोह होगा जिस ने दुन्या में मुझ पर ज़ियादा दुरूदे पाक पढ़े होंगे। (ترمذی)

लें ﴿2﴾ 25 ग्राम गुड़ और 25 ग्राम सोंफ़ एक किलो पानी में जोश दीजिये, अन्दाज़न जब एक पियाली रह जाए तो छान कर गर्म गर्म पी लीजिये। ता हुसूले शिफ़ा रोज़ाना सुबह व शाम येह इलाज कीजिये ﴿3﴾ हर खाने के साथ लहसन का एक जवा (या'नी लहसन की पोथी की काश, कली) बारीक काट कर निगल लीजिये और बेहतर है कि उबाल कर पी लीजिये। (नमाज़ और ज़िक्रो दुरूद के लिये मुंह ख़ूब साफ़ कीजिये हत्ता कि बदबू ख़त्म हो जाए) ﴿4﴾ तीन अदद छुहारे, मग़जे बादाम 10 ग्राम, नारियल 10 ग्राम और किशमिश या'नी खुश्क छोटे अंगूर 20 ग्राम हैज़ के दिनों में रोज़ाना गर्म दूध के साथ इस्ति'माल कीजिये ﴿5﴾ अय्यामे हैज़ से एक हफ़ता क़ब्ल रोज़ाना दूध के साथ 25 ग्राम सोंफ़ इस्ति'माल कीजिये ﴿6﴾ आलू, मसूर और खुश्क गिज़ाएं माहवारी में रुकावट बनती हैं लिहाज़ा इन अय्याम में इन से परहेज़ कीजिये।

हैज़ के दर्द का इलाज

25 ग्राम गुड़ और गाजर के बीज 15 ग्राम दो² गिलास पानी में उबालिये जब आधा गिलास रह जाए तो छान कर पी लीजिये। अगर हैज़ दर्द से आता हो तो उस के अय्याम में बिगैर दर्द के आने लगेगा। اِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ

“या ख़ुद्धा” के पांच हुरूफ़ की निस्बत से

बांझपन के 5 इलाज

﴿1﴾ हर नमाज़ के बा'द दोनों मियां बीवी (अव्वल आख़िर एक बार

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझे पर एक मरतबा दुरूद पढ़ा अल्लाह उस पर दस रहमतें भेजता और उस के नामए आ'माल में दस नेकियां लिखता है। (ترمذی)

दुरूद शरीफ़ के साथ) कुरआने करीम में वारिद येह दुआए इब्राहीम तीन³ बार पढ़ते रहें :

رَبِّ اجْعَلْنِي مُقِيمَ الصَّلَاةِ وَمِنْ ذُرِّيَّتِي رَبَّنَا وَتَقَبَّلْ دُعَاءِ ﴿٣٠﴾ رَبَّنَا اغْفِرْ لِي
وَلِوَالِدَيَّ وَلِلْمُؤْمِنِينَ يَوْمَ يَقُومُ الْحِسَابُ ﴿٣١﴾ (1) (پ ۱۳ ابراهيم ۴۰-۴۱)

﴿2﴾ दोनों हर नमाज़ के बा'द (अव्वल आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़)

दुआए ज़करिय्या भी तीन³ मरतबा पढ़ लिया करें :

رَبِّ هَبْ لِي مِنْ لَدُنْكَ ذُرِّيَّةً طَيِّبَةً إِنَّكَ سَمِيعُ الدُّعَاءِ ﴿٣٨﴾ (2) (پ ۱۳ عمران ۳۸)

﴿3﴾ एक अदद जाइफल बारीक पीस कर सात⁷ हिस्से कर लीजिये ।

तीन³ माह तक औरत एक एक हिस्सा रोज़ाना सुब्ह पानी से इस्ति'माल

करे । मगर हैज़ के दौरान न ले ﴿4﴾ 12 ग्राम सोंफ़ और 50 ग्राम

गुलक़न्द रोज़ाना रात को गर्म दूध से खाइये ﴿5﴾ आधा किलो शकर,

आधा किलो सोंफ़, 250 ग्राम मग़जे बादाम, आधा किलो देसी घी ।

सोंफ़ को बारीक पीस कर गर्म घी में मिला दीजिये नीज़ शकर डाल

दीजिये फिर चूल्हे से उतार कर कूटे हुए बादाम ऊपर डाल दीजिये ।

तरकीबे इस्ति'माल : जिस दिन माहवारी शुरूअ हो उस दिन से

मियां बीवी दोनों तीस तीस ग्राम सुब्ह व शाम दूध के साथ इस्ति'माल

داينه

1. तरजमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ मेरे रब ! मुझे नमाज़ का काइम करने वाला रख और कुछ मेरी औलाद को ऐ हमारे रब ! और हमारी दुआ सुन ले ऐ हमारे रब ! मुझे बख़्श दे और मेरे मां बाप को और सब मुसल्मानों को जिस दिन हिस्सा काइम होगा ।

2. तरजमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ रब मेरे मुझे अपने पास से दे सुथरी औलाद, बेशक तू ही दुआ सुनने वाला ।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : शबे जुमुआ और रोज़े मुज़ पर दुरूद की कसरत कर लिया करो जो ऐसा करेगा क़ियामत के दिन मैं उस का शफ़ीअ व गवाह बनूंगा । (شعب الایمان)

करना शुरू कर दें । (मुद्दते इलाज कम अज़ कम 92 दिन)

हामिला की तकालीफ़ के 6 इलाज

﴿1﴾ देसी घी में भुनी हुई हींग देसी घी के साथ खाने से दर्दे ज़ेह और चक्कर में फ़ाएदा होता है ﴿2﴾ अगर हामिला को भूक न लगती हो तो दो² चम्मच अदरक के रस में सुपारी जितना गुड़ और पाव चम्मच अजमा का चूरन मिला कर सुब्ह व शाम इस्ति'माल करने से भूक ख़ूब लगती है ﴿3﴾ दौराने हम्मल बुख़ार और विलादत के बा'द दर्दे कमर हो तो आधा चम्मच पिसी हुई सूँठ, आधा चम्मच अजमा और आधा चम्मच देसी घी मिला कर सुब्ह व शाम खिलाइये إِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّ وَجَلَّ आराम आ जाएगा ﴿4﴾ हामिला रोज़ाना माल्टा और सिर्फ़ एक अदद छोटा सेब खाए, अगर मजबूरी हो तो तब भी आयरन की गोलियां कम से कम इस्ति'माल करे । إِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّ وَجَلَّ हर क़िस्म की बीमारी से हिफ़ाज़त होगी और बच्चा ख़ूब सूरत होगा । सेब और आयरन की गोलियां ज़ियादा खाने से बच्चा काला पैदा हो सकता है ﴿5﴾ कै, मतली, बद हज़्मी, गेस से पेट फूलना, बलग़म, पेट का दर्द और हामिला की दीगर तकालीफ़ में अजमा का चूरन आधा चम्मच नीम गर्म पानी के साथ सुब्ह व शाम इस्ति'माल करना बहुत मुफ़ीद है ﴿6﴾ तीन³ ग्राम पिसा हुवा धनिया और 12 ग्राम शकर को चावल के धोवन (या'नी चावल का धोया हुवा पानी) के साथ हामिला इस्ति'माल करे तो कै में इफ़ाका (कमी, फ़ाएदा) होता है ।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुज़ पर एक बार दुरूद पढ़ता है अल्लाह उस के लिये एक क़ीरात अन्न लिखता है और क़ीरात उहुद पहाड़ जितना है। (मैरुज़)

हसीन व अक्लमन्द औलाद के लिये

हामिला अगर ब कसरत ख़रबूज़ा खाए तो औलाद हसीन और सिद्दहत मन्द पैदा होगी **إِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ** । और अगर हामिला “लोबिया” (जो कि एक मशहूर सब्ज़ी है) कसरत से खाए तो औलाद अक्ल मन्द पैदा हो। **إِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ** ।

अय्यामे ह्म्ल के लिये बेहतरिन अमल

ह्म्ल में किसी किस्म की भी तक्लीफ़ हो उस के लिये नीज़ वज़ू ह्म्ल (या'नी विलादत) में आसानी की ख़ातिर सूरए मरयम (पारह 15) का विर्द बेहद मुफ़ीद है। हामिला रोज़ पढ़ कर अपने ऊपर दम कर लिया करे या कोई दूसरा पढ़ कर दम कर दे। रोज़ाना न पढ़ सके तो जब दर्द की शिद्दत हो या बच्चा पेट में टेढ़ा हो जाए तो पढ़ कर दम कर लिया करे। **إِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ** । इस की बरकतें ख़ूब ज़ाहिर होंगी।

ह्म्ल में ताख़ीर

अगर ह्म्ल में मतलूबा दर्द शुरू होने में ताख़ीर हो जाए तो बहुत पुराना गुड़ 30 या 40 ग्राम ले कर 100 ग्राम पानी में गर्म कीजिये, जब गुड़ पिघल जाए तो “सुहागा” और “फूली हुई फट्करी” दो^२ ग्राम मिला कर पिलाने से **إِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ** आसानी से विलादत हो जाएगी।

अगर पेट में बच्चा टेढ़ा हो गया तो.....

सूरए इन्शिकाक़ की इब्तिदाई पांच^५ आयात तीन^३ बार पढ़े। (अव्वल आख़िर तीन मर्तबा दुरूद शरीफ़ पढ़े) आयतों के शुरूअ में हर बार **بِسْمِ اللهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ** पढ़ ले। पढ़ कर पानी पर दम कर के पी ले।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जब तुम रसूलों पर दुरूद पढ़ो तो मुझ पर भी पढ़ो, बेशक मैं तमाम ज़हानों के रब का रसूल हूँ। (جمع الجوامع)

रोज़ाना येह अमल करती रहे। वक़तन फ़ वक़तन इन आयात का विर्द करती रहे। दूसरा कोई भी दम कर के दे सकता है। **إِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ** बच्चा सीधा हो जाएगा। दर्दे ज़ेह के लिये भी येह अमल मुफ़ीद है।

सफ़ेद पानी

﴿1﴾ तीन³ तीन³ ग्राम जीरा और शकर को पीस कर मिला लीजिये। इस चूरन को मुनासिब मिक्दार में चावल के धोवन में मिला कर पीने से **إِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ** सफ़ेद पानी गिरना बन्द हो जाएगा ﴿2﴾ 6 ग्राम ख़ालिस घी और एक पक्का केला साथ खाने से **إِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ** पानी गिरना बन्द होगा।

“या फ़तिमा” के सात हुरूफ़ की निस्बत से हम्ल की हिफ़ाज़त के 7 इलाज

﴿1﴾ **لَا إِلَهَ إِلَّا اللهُ** (ए'राब लगाने की हाज़त नहीं अलबत्ता दोनों जगह 8 के दाएरे खुले रखिये) किसी कागज़ पर 55 बार लिख कर (या लिखवा कर) ह़स्बे ज़रूरत ता'वीज़ की तरह तह कर के मोमजामा या प्लास्टिक कोटिंग करवा कर कपड़े या रेग़ज़ीन या चमड़े में सी कर ह़ामिला गले में पहन या बाजू में बांध ले। **إِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ** हम्ल की भी हिफ़ाज़त होगी और बच्चा भी बला व आफ़त से सलामत रहेगा। अगर 55 बार (अव्वल आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़ के साथ) पढ़ कर पानी पर दम कर के रख लें और पैदा होते ही बच्चे के मुंह पर लगा दें तो **إِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ** बच्चा ज़हीन होगा और बच्चों को होने वाली बीमारियों से भी महफूज़ रहेगा।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुझ पर दुरूद पढ़ कर अपनी मजालिस को आरास्ता करो कि तुम्हारा दुरूद पढ़ना बरोज़े क़ियामत तुम्हारे लिये नूर होगा । (फ़रुस अल-हज़ार)

अगर येही पढ़ कर ज़ैत (या'नी ज़ैतून शरीफ़ के तेल) पर दम कर के बच्चे के जिस्म पर नरमी के साथ मल दिया जाए तो बेहद मुफ़ीद है ।

إِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ कीड़े मकोड़े और दीगर मूजी जानवर बच्चे से दूर रहेंगे ।

इस तरह का पढ़ा हुआ ज़ैत बड़ों के जिस्मानी दर्दों में मालिश के लिये भी निहायत कारआमद है (फ़ैज़ाने सुन्नत, जिल्द अब्वल, स. 995) ﴿2﴾

لَا إِلَهَ إِلَّا اللهُ (बिगैर ए'राब मगर दोनों जगह 8 के दाएरे खुले हों) किसी रिकाबी (या कागज़) पर 11 बार लिख कर धो कर औरत को पिला दीजिये ।

إِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ हम्ल की हिफ़ाज़त होगी । जिस औरत को दूध न आता हो या कम आता हो

إِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ उस के लिये भी येह अमल मुफ़ीद है ।

चाहें तो एक ही दिन पिलाएं या कई रोज़ तक रोज़ाना ही लिख कर पिलाएं हर तरह से इख़्तियार है 111 बार

يا حَيُّ يَا قَيُّوْمُ ﴿3﴾ किसी कागज़ पर लिख कर हामिला के पेट पर बांध दीजिये और

विलादत के वक़्त तक बांधे रहिये (ज़रूरतन कुछ देर के लिये खोलने में

हरज नहीं) इِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ हम्ल भी महफूज़ रहेगा और बच्चा भी सिहहत

मन्द पैदा होगा । (फ़ैज़ाने सुन्नत, जिल्द अब्वल, स. 1296) ﴿4﴾ हिफ़ाज़ते

हम्ल के लिये शुरूए हम्ल से ले कर बच्चे का दूध छुड़ाने तक रोज़ाना

एक बार सूरए वशम्म (पारह 30) पढ़े 5) हम्ल जाएअ होने के

ख़तरे की सूरत में रोज़ाना बा'दे नमाजे फ़ज़्र शोहर हामिला जौजा के पेट

पर शहादत की उंगली रख कर दस¹⁰ बार दाएरा बनाए और हर बार

उंगली घुमाते हुए يا مُبْتَدِئُ पढ़े 6) يا رَقِيبُ सात बार रोज़ाना पांचों

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत करो बेशक यह तुम्हारे लिये त्हा रत है। (अबुय़स्र)

नमाज़ों के बा'द अपने पेट पर हाथ रख कर हामिला पढ़े **إِنْ شَاءَ اللهُ** बच्चा ज़ाएअ न होगा ﴿7﴾ जिस औरत का हम्ल गिर जाता हो उसे चाहिये कि आगाज़ से ले कर आख़िरी दिन तक रोज़ाना सुब्ह खुश्क धनिया 21 दाने और शाम को काला ज़ीरा दो² चुटकियां ठण्डे पानी के साथ निगल लिया करे। **إِنْ شَاءَ اللهُ** मुक़र्ररा वक़्त पर तन्दुरुस्त बच्चे की विलादत हो जाएगी।

लीकोरिया का इलाज

﴿1﴾ नाशते के बा'द तीन³ खुश्क अन्जीर खाइये **إِنْ شَاءَ اللهُ** फ़ाएदा होगा।

इर्कुन्सिा के दो² इलाज

﴿1﴾ रोज़ाना दर्द के मक़ाम पर हाथ रख कर अव्वल आख़िर दुरूद शरीफ़ सूरतुल फ़ातिहा एक बार और सात मरतबा येह दुआ पढ़ कर दम कर दीजिये : **اللَّهُمَّ أَذْهَبْ عَنِّي سُوءَ مَا أَجِدُ** (ऐ अल्लाह **عَزَّوَجَلَّ** मुझ से मरज़ दूर फ़रमा दे) अगर दूसरा कोई पढ़ कर दम करे तो **عَنِّي** की जगह मर्द के लिये (1) **عَنْهُ** और औरत के लिये (2) **عَنْهَا** कहे। (मुद्दत : ता हुसूले शिफ़ा) **﴿2﴾ يَا مُحِبِّي** सात बार पढ़ कर गेस हो या पीठ या पेट में तक्लीफ़ या इर्कुन्सिा या किसी भी जगह दर्द हो या किसी उज़्ज के ज़ाएअ हो जाने का ख़ौफ़ हो, अपने ऊपर दम कर दीजिये। (मुद्दत : ता हुसूले शिफ़ा)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

داينيه

1, 2 : या'नी इस से

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ
 أَمَا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

कपड़े पाक करने का तरीका (मअ नजासतों का बयान)

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अनिल
 उयूब صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने तकर्रुब निशान है : “जिस ने
 मुझ पर सो¹⁰⁰ मर्तबा दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह तआला उस की दोनों
 आंखों के दरमियान लिख देता है कि येह निफ़ाक़ और जहन्नम की आग से
 आजाद है और उसे बरोजे क़ियामत शुहदा के साथ रखेगा ।”

(مَحْمَعُ الزَّوَالِد، ج 1، ص 253، حديث 17298)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

नजासत की अक़साम

नजासत की दो क़िस्में हैं : ﴿1﴾ नजासते ग़लीज़ा ﴿2﴾ नजासते
 ख़फ़ीफ़ा ।

(फ़तावा काज़ी ख़ान, जि. 1, स. 10)

नजासते ग़लीज़ा

﴿1﴾ इन्सान के बदन से जो ऐसी चीज़ निकले कि उस से गुस्ल
 या वुजू वाजिब हो नजासते ग़लीज़ा है जैसे पाख़ाना, पेशाब, बहता
 खून, पीप, मुंह भर कै, हैज़ व निफ़ास व इस्तिहाज़े का खून, मनी,

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा तहकीक़ वोह बद बख़्त हो गया । (अहमद)

मज़ी, वदी । (فتاوى عالمگیری ج ١ ص ٤٦) ﴿2﴾ जो खून ज़ख़्म से बहा न हो पाक है । (फ़तावा रज़विध्या मुखर्रजा, जि. 1, स. 280) ﴿3﴾ दुखती आंख से जो पानी निकले, नजासते ग़लीज़ा है । यूंही नाफ़ या पिस्तान से दर्द के साथ पानी निकले, नजासते ग़लीज़ा है । (ऐज़न, स. 269, 270) ﴿4﴾ खुशकी के हर जानवर का बहता खून, मुर्दार का गोशत और चर्बी, (या'नी जिस जानवर में बहता खून होता है वोह अगर बिगैर ज़ब्हे शरूई के मर जाए तो मुर्दार है, नीज़ मजूसी या बुत परस्त या मुरतद का ज़बीहा भी मुरदार है अगर्चे उस ने हलाल जानवर मसलन बकरी वगैरा को "بِسْمِ اللَّهِ الْكَبِيرِ" पढ़ कर ज़ब्ह किया हो उस का गोशत पोस्त (चमड़ा), सब नापाक हो गया । हां मुसल्मान ने हराम जानवर को भी अगर शरूई तरीके से ज़ब्ह कर लिया तो उस का गोशत पाक है अगर्चे खाना हराम है, सिवा खिन्ज़ीर के कि वोह नजिसुल ऐन है किसी तरह पाक नहीं हो सकता) ﴿5﴾ हराम चौपाए जैसे कुत्ता, शेर, लोमड़ी, बिल्ली, चूहा, गधा, खच्चर, हाथी और सुवर का पाख़ाना, पेशाब और घोड़े की लीद और ﴿6﴾ हर हलाल चौपाए का पाख़ाना जैसे भेंस का गोबर, बकरी ऊंट की मेंगनी और ﴿7﴾ जो परिन्दा कि ऊंचा न उड़े उस की बीट जैसे मुर्गी और बत (बतख़) छोटी हो ख़्वाह बड़ी, और ﴿8﴾ हर किस्म की शराब और नशा लाने वाली ताड़ी और सेंधी और ﴿9﴾ सांप का पाख़ाना पेशाब और ﴿10﴾ उस जंगली सांप और मेंडक का गोशत जिन में बहता खून होता है अगर्चे ज़ब्ह किये गए हों, यूंहीं उन की खाल अगर्चे पका (या'नी सुखा) ली गई हो और ﴿11﴾ सुवर का गोशत और

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह (ﷺ) उस पर दस रहमतें भेजता है।

हड्डी और बाल अगर्चे ज़ब्द किया गया हो येह सब नजासते ग़लीज़ा हैं। (बहारे शरीअत, हिस्सा : 2, स. 112, 113) ﴿12﴾ छिपकली या गिरगट का खून नजासते ग़लीज़ा है। (ऐज़न, स. 113) ﴿13﴾ हाथी के सूंड की रतूबत और शेर, कुत्ते, चीते और दूसरे दरिन्दे चौपायों का लुआब (थूक) नजासते ग़लीज़ा है। (ऐज़न)

दूध पीते बच्चों का पेशाब नापाक है

अक्सर अ़वाम में जो येह मशहूर है कि दूध पीते बच्चे चूँकि खाना नहीं खाते इस लिये इन का पेशाब नापाक नहीं होता। येह ग़लत है, दूध पीते बच्चे और बच्ची का पेशाब पाख़ाना भी नजासते ग़लीज़ा है। इसी तरह अगर दूध पीते बच्चे ने दूध डाल दिया अगर मुंह भर है तो नजासते ग़लीज़ा है। (मुलख़बसन बहारे शरीअत, हिस्सा 2, स. 112)

नजासते ग़लीज़ा का हुक्म

नजासते ग़लीज़ा का हुक्म येह है कि अगर कपड़े या बदन पर एक दिरहम से ज़ियादा लग जाए तो उस का पाक करना फ़र्ज है, बिग़ैर पाक किये अगर नमाज़ पढ़ ली तो नमाज़ न होगी। और इस सूरत में जान बूझ कर नमाज़ पढ़ना सख़्त गुनाह है, और अगर नमाज़ को हलका जानते हुए इस तरह नमाज़ पढ़ी तो कुफ़्र है।

नजासते ग़लीज़ा अगर दिरहम के बराबर कपड़े या बदन पर लगी हुई हो तो उस का पाक करना वाजिब है अगर बिग़ैर पाक किये नमाज़ पढ़ ली तो नमाज़ मक्रूहे तहरीमी होगी और ऐसी सूरत में

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : उस शख्स को नाक खाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़े। (नरुम्दी)

कपड़े या बदन को पाक कर के दोबारा नमाज़ पढ़ना वाजिब है, जान बूझ कर इस तरह नमाज़ पढ़नी गुनाह है। अगर नजासते ग़लीज़ा दिरहम से कम कपड़े या बदन पर लगी हुई है तो उस का पाक करना सुन्नत है अगर बिगैर पाक किये नमाज़ पढ़ ली तो नमाज़ हो जाएगी, मगर ख़िलाफ़े सुन्नत, ऐसी नमाज़ को दोहरा लेना बेहतर है।

(बहारे शरीअत, हिस्सा : 2, स. 111)

दिरहम की मिक्दार की वज़ाहत

नजासते ग़लीज़ा का दिरहम या इस से कम या ज़ियादा होने से मुराद येह है कि नजासते ग़लीज़ा अगर गाढ़ी हो मसलन पाख़ाना, लीद वगैरा तो दिरहम से मुराद वज़न में साढ़े चार माशा (या'नी 4.374 ग्राम) है, लिहाज़ा अगर नजासत दिरहम से ज़ियादा या कम है तो उस से मुराद वज़न में साढ़े चार माशे से कम या ज़ियादा होना है और अगर नजासते ग़लीज़ा पतली हो जैसे पेशाब वगैरा तो दिरहम से मुराद लम्बाई चौड़ाई है या'नी हथेली को ख़ूब फैला कर हमवार रखिये और उस पर आहिस्तगी से इतना पानी डालिये कि इस से ज़ियादा पानी न रुक सके, अब जितना पानी का फैलाव है उतना बड़ा दिरहम समझा जाएगा।

(बहारे शरीअत, हिस्सा 2, स. 111)

किसी कपड़े या बदन पर चन्द जगह नजासते ग़लीज़ा लगी और किसी जगह दिरहम के बराबर नहीं, मगर मज्मूआ दिरहम के बराबर है, तो दिरहम के बराबर समझी जाएगी और ज़ाइद है तो ज़ाइद। नजासते ख़फ़ीफ़ा में भी मज्मूए ही पर हुक्म दिया जाएगा। (ऐज़न, स. 115)

फ़रमाने मुस्तफ़ा عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुझ पर दस मरतबा दुरूदे पाक पढ़े अल्लाह (طرائف) उस पर सो रहमतें नाज़िल फ़रमाता है।

नजासते ख़फ़ीफ़ा

जिन जानवरों का गोशत हलाल है, (जैसे भैंस, बकरी, ऊंट वगैरहा) उन का पेशाब, नीज़ घोड़े का पेशाब और जिस परिन्द का गोशत हराम है, ख़्वाह शिकारी हो या नहीं, (जैसे कव्वा, चील, शिकरा, बाज़) उस की बीट नजासते ख़फ़ीफ़ा है। (ऐज़न, स. 113)

नजासते ख़फ़ीफ़ा का हुक्म

नजासते ख़फ़ीफ़ा का हुक्म यह है कि कपड़े के जिस हिस्से या बदन के जिस उज़्व में लगी है अगर उस का चौथाई से कम है तो मुअ़फ़ है, मसलन आस्तीन में नजासते ख़फ़ीफ़ा लगी हुई है तो अगर आस्तीन की चौथाई से कम है या दामन में लगी है तो दामन की चौथाई से कम है या इसी तरह हाथ में लगी है तो हाथ की चौथाई से कम है तो मुअ़फ़ है या'नी इस सूरत में पढ़ी गई नमाज़ हो जाएगी और अलबत्ता अगर पूरी चौथाई में लगी हो तो बिगैर पाक किये नमाज़ न होगी। (बहारे शरीअत, हिस्सा 2, स. 111)

जुगाली का हुक्म

हर चौपाए की जुगाली का वोही हुक्म है जो उस के पाख़ाने का। (ऐज़न, स. 113, 120) فُرْتُغْنَارُ ज 1, 120) हैवानात का अपने चारे को मे'दे में से निकाल कर मुंह में दोबारा चबाना जुगाली कहलाता है। जैसा कि अक्सर गाय और ऊंट अपना मुंह चलाते रहते हैं और उन से साबुन की तरह झाग निकलता है, उन की (या'नी गाय और ऊंट की)

फ़रमाने मुस्फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर सुबह व शाम दस दस बार दुरूदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअत मिलेगी । (مُعْتَمَدَات)

जुगाली में निकलने वाला झाग वगैरा नजासते ग़लीज़ा है ।

पित्ते का हुक्म

हर जानवर के पित्ते का वोही हुक्म है जो उस के पेशाब का, ह़राम जानवरों का पित्ता नजासते ग़लीज़ा और ह़लाल का नजासते ख़फ़ीफ़ा है । (مُعْتَمَدَات، ج 1، ص 120، बहारे शरीअत, हिस्सा 2, स. 113)

जानवरों की कै

हर जानवर की कै उस की बीट का हुक्म रखती है या'नी जिस की बीट पाक है जैसे चिड़िया या कबूतर उस की कै भी पाक है और जिस की नजासते ख़फ़ीफ़ा है जैसे बाज़ या कव्वा, उस की कै भी नजासते ख़फ़ीफ़ा । और जिस की नजासते ग़लीज़ा है जैसे बत (बतख़) या मुर्गी, उस की कै भी नजासते ग़लीज़ा । और कै से मुराद वोह खाना पानी वगैरा है जो पोटे (या'नी मे'दे) से बाहर निकले कि जिस जानवर की बीट नापाक है उस का पोटा मा'दिने नजासात (नजासतों की जगह) है पोटे से जो चीज़ बाहर आएगी खुद नजिस (नापाक) होगी या नजिस से मिल कर आएगी बहर हाल मिस्ले बीट नजासत रखेगी ख़फ़ीफ़ा में ख़फ़ीफ़ा, ग़लीज़ा में ग़लीज़ा, ब ख़िलाफ़ उस चीज़ के जो अभी पोटे तक न पहुंची थी कि निकल आई । मसलन मुर्गी ने पानी पिया अभी गले ही में था कि उच्छू¹ लगा और निकल गया येह पानी बीट

داينه

1. पानी पीने के दौरान बा'जू अवकात गले में फन्दा सा लगता है और खांसी उठती है इस को उच्छू लगना कहते हैं ।

फ़रमाने मुस्तफ़ा عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़ा उस ने जफ़ा की। (عبدالرزاق)

का हुक्म न रखेगा। (या'नी क्यूं कि لِإِنَّهُ مَا اسْتَحَالَ إِلَى نَجَاسَةٍ وَلَا لَأَقْبَىٰ مَحَلِّهَا) इस ने नजासत में हुलूल नहीं किया (मिक्स न हुआ) और न ही नजासत की जगह से मिला) बल्कि इसे सुअर या'नी झूटे का हुक्म दिया जाएगा कि उस के मुंह से मिल कर आया है। उस जानवर का झूटा नजासते ग़लीज़ा या ख़फ़ीफ़ा या मश्कूक या मक्रूह या ताहिर (या'नी पाक) जैसा होगा वैसा ही उस चीज़ का हुक्म दिया जाएगा जो मे'दे तक पहुंचने से पहले बाहर आई जो मुर्गी छूटी फिरे उस का झूटा मक्रूह है येह पानी भी मक्रूह होगा और पोटे (मे'दे) में पहुंच कर आता तो नजासते ग़लीज़ा होता। (फ़तावा रज़विख्या मुखर्रजा, जि. 4, स. 390, 391)

दूध या पानी में नजासत पड़ जाए तो.....?

नजासते ग़लीज़ा और ख़फ़ीफ़ा के जो अलग अलग हुक्म बताए गए हैं येह अहक़ाम उसी वक़्त हैं जब कि बदन या कपड़े में लगे। अगर किसी पतली चीज़ मसलन दूध या पानी में नजासत पड़ जाए चाहे ग़लीज़ा हो या ख़फ़ीफ़ा दोनों सूरतों में वोह दूध या पानी जिस में नजासत पड़ी है नापाक हो जाएगा अगरचें एक ही क़तरा नजासत पड़ी हो। नजासते ख़फ़ीफ़ा अगर नजासते ग़लीज़ा में मिल जाए तो वोह तमाम नजासते ग़लीज़ा हो जाएगी।

(बहारे शरीअत, हिस्सा 2, स. 112, 113)

दीवार, ज़मीन, दरख़्त वगैरा कैसे पाक हों ?

﴿1﴾ नापाक ज़मीन अगर सूख जाए और नजासत का असर या'नी रंग

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुज़ पर रोज़े जुमुआ़ा दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा में क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअत करूंगा । (جمع الجوامع)

व बू जाते रहें तो वोह ज़मीन पाक हो गई ख़्वाह वोह नापाकी हवा से सूखी हो या धूप से या आग से, लिहाज़ा उस ज़मीन पर नमाज़ पढ़ सकते हैं मगर उस ज़मीन से तयम्मूम नहीं कर सकते ﴿2﴾ दरख़्त और घास और दीवार और ऐसी ईंट जो ज़मीन में जड़ी हो, येह सब खुश्क हो जाने से पाक हो गए (जब कि नजासत का असर रंग व बू जाते रहे हों) और अगर ईंट जड़ी हुई न हो तो खुश्क होने से पाक न होगी बल्कि धोना ज़रूरी है। यूंही दरख़्त या घास (नजासत) सूखने के पेशतर काट लें, तो त़हारत (या'नी पाक करने) के लिये धोना ज़रूरी है। (बहारे शरीअत, हिस्सा : 2, स. 123) ﴿3﴾ अगर पथ़र ऐसा हो जो ज़मीन से जुदा न हो सके तो खुश्क होने से पाक हो जाएगा जब कि नजासत का असर ज़ाइल हो जाए वरना धोने की ज़रूरत है। (ऐज़न) ﴿4﴾ जो चीज़ ज़मीन से मुत्तसिल (या'नी मिली हुई) थी और नजिस हो गई, फिर खुश्क होने (और नजासत का असर दूर हो जाने) के बा'द अलग की गई, तो अब भी पाक ही है। (ऐज़न, स. 124) ﴿5﴾ जो चीज़ सूखने या रगड़ने वगैरा से पाक हो गई फिर उस के बा'द गीली हो गई तो वोह चीज़ नापाक न होगी (ऐज़न) जैसे ज़मीन पर पेशाब पड़ने से वोह नापाक हो गई फिर वोह ज़मीन सूख गई और नजासत का असर ख़त्म हो गया तो वोह ज़मीन पाक हो गई। अब अगर वोह ज़मीन फिर किसी पाक चीज़ से गीली हो गई तो नापाक नहीं होगी।

ख़ून आलूद ज़मीन पाक करने का तरीका

बच्चे या बड़े ने ज़मीन पर पेशाब पाख़ाना कर दिया या ज़ख़्म

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा उस ने जन्नत का रास्ता छोड़ दिया। (طبرانی)

वगैरा से खून या पीप या जानवर ज़बड़ करते वक़्त निकला हुआ खून ज़मीन पर गिर गया और बिगैर पानी के वैसे ही किसी कपड़े वगैरा से पोंछ लिया, सूखने और नजासत का असर ख़त्म हो जाने के बा'द वोह ज़मीन पाक हो गई। उस पर नमाज़ पढ़ सकते हैं।

गोबर से लीपी हुई ज़मीन

जो ज़मीन गोबर से लीसी या लीपी गई अगर्चे वोह सूख जाए फिर भी ऐन उस ज़मीन पर नमाज़ जाइज़ नहीं, अलबत्ता ऐसी ज़मीन जो गोबर से लीसी या लीपी गई हो, उस के सूख जाने के बा'द उस पर कोई मोटा कपड़ा बिछा कर नमाज़ पढ़ी तो नमाज़ दुरुस्त होगी।

(बहारे शरीअत, हिस्सा : 2, स. 126)

जिन परिन्दों की बीट पाक है

﴿1﴾ चमगादड़ की बीट और पेशाब दोनों पाक हैं (﴿2﴾ जो (﴿1﴾ جُرْمُخَسَارٍ، رُدَّالْشُّخَارِ، ج (ص ०५६) बहारे शरीअत, हिस्सा : 2, स. 113) जो हलाल परिन्दे ऊंचे उड़ते हैं, जैसे (चिड़िया), कबूतर, मैना, मुर्गाबी वगैरा इन की बीट पाक है। (ऐज़न, स. 113)

मछली का खून पाक है

मछली और पानी के दीगर जानवरों और खटमल और मच्छर का खून और ख़च्चर और गधे का लुआब और पसीना पाक है।

(बहारे शरीअत, हिस्सा : 2, स. 114)

ادینه

1. चमगादड़ एक अंधेरा पसन्द परिन्दा है जो दिन के वक़्त दरख़्तों और छतों वगैरा में उल्टा लटका रहता और रात को उड़ता है।)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत करो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे लिये पाकीज़गी का बाइस है। (रिज़ली)

पेशाब की बारीक छींटें

﴿1﴾ पेशाब की निहायत बारीक छींटें सूई की नोक बराबर की बदन या कपड़े पर पड़ जाएं, तो कपड़ा और बदन पाक रहेगा। (एंग्लियी 17:161, बहारे शरीअत, हिस्सा : 2, स. 114) ﴿2﴾ जिस कपड़े पर पेशाब की ऐसी ही बारीक छींटें पड़ गईं, अगर वोह कपड़ा पानी में पड़ गया तो पानी भी नापाक न होगा। (बहारे शरीअत, हिस्सा : 2, स. 114)

गोशत में बचा हुआ खून

गोशत, तिल्ली, कलेजी में जो खून बाकी रह गया पाक है और अगर येह चीज़ें बहते खून में सन जाएं (या'नी आलूदा हो जाएं) तो नापाक हैं, बिगैर धोए पाक न होंगी। (ऐज़न)

जानवरों की सूखी हड्डियां

सुवर के इलावा तमाम जानवरों की वोह हड्डी जिस पर मुर्दार की चिकनाई न लगी हो पाक है, और बाल और दांत भी पाक हैं। (बहारे शरीअत, हिस्सा : 2, स. 117)

हराम जानवर का दूध

हराम जानवरों का दूध नजिस है, अलबत्ता घोड़ी का दूध पाक है मगर खाना जाइज़ नहीं। (ऐज़न, स. 115)

चूहे की मेंगनी

चूहे की मेंगनी (नापाक है मगर) गेहूं में मिल कर पिस गई या

फ़रमाने मुस्ताफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़े तो वोह लोगों में से कन्जूस तरीन शख्स है। (مسند احمد)

तेल में पड़ गई तो आटा और तेल पाक है, हां अगर मज़े में फ़र्क आ जाए तो नजिस (नापाक) है और अगर रोटी के अन्दर मिली तो उस के आस पास से थोड़ी सी अलग कर दें, बाकी में कुछ हरज नहीं।

(एगिरी 1/173 स. 416, बहारे शरीअत, हिस्सा : 2, स. 115)

ग़लाज़त पर बैठने वाली मख़्खयां

❶ पाख़ाने पर से मख़्खयां उड़ कर कपड़े पर बैठीं कपड़ा नजिस (नापाक) न होगा। (बहारे शरीअत, हिस्सा : 2, स. 116)

❷ रास्ते की कीचड़ (चाहे बारिश की हो या कोई और) पाक है जब तक उस का नजिस होना मा'लूम न हो, तो अगर पाउं या कपड़े में लगी और बे धोए नमाज़ पढ़ ली हो गई मगर धो लेना बेहतर है। (ऐज़न)

बारिश के पानी के अहकाम

❶ छत के परनाले से मींह (बारिश) का पानी गिरे वोह पाक है अगर्चे छत पर जा बजा नजासत पड़ी हो, अगर्चे नजासत परनाले के मूंह पर हो, अगर्चे नजासत से मिल कर जो पानी गिरता हो वोह निस्फ़ से कम या बराबर या ज़ियादा हो जब तक नजासत से पानी के किसी वस्फ़ में तग़य्युर न आए (या'नी जब तक नजासत की वज्ह से पानी का रंग या बू या ज़ाएफ़ा तब्दील न हो जाए) येही सहीह है और इसी पर ए'तिमाद है और अगर मींह (बरसात) रुक गया और पानी का बहना मौकूफ़ हो गया तो अब वोह ठहरा हुवा पानी और जो छत से टपके नजिस है।

फ़रमाने मुस्फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : तुम जहाँ भी हो मुझ पर दुरूद पढ़ो कि तुम्हारा दुरूद मुझ तक पहुँचता है। (طبرانی)

(बहारे शरीअत, हिस्सा : 2, स. 52) ﴿2﴾ यूँही नालियों से बरसात का बहता पानी पाक है जब तक नजासत का रंग, या बू, या मज़ा उस में ज़ाहिर न हो, रहा उस से वुजू करना अगर उस पानी में नजासते मरइय्या (या'नी नज़र आने वाली नजासत) के अज़्ज़ा ऐसे बहते जा रहे हों जो चुल्लू लिया जाएगा उस में एकआध ज़रा उस का भी ज़रूर होगा जब तो हाथ में लेते ही नापाक हो गया वुजू उस से हराम वरना जाइज़ है और बचना बेहतर है। (ऐज़न) ﴿3﴾ नाली का पानी कि बा'द बारिश के ठहर गया अगर उस में नजासत के अज़्ज़ा महसूस हों या उस का रंग व बू महसूस हो तो नापाक है वरना पाक। (ऐज़न)

गलियों में खड़ा हुआ बारिश का पानी

निचान वाली गलियों और सड़कों पर बारिश का जो पानी खड़ा हो जाता है वोह पाक है अगरचे उस का रंग गदला होता है। बा'ज अवकात गटर का पानी भी उस में शामिल हो जाता है लेकिन यहां भी येही काइदा है कि नापाकी के सबब से इस पानी के रंग या मज़ा या बू में तब्दीली आई तो नापाक है वरना पाक। हां अगर बारिश थम गई, पानी भी बहना बन्द हो गया और दह दर दह से कम है और उस में कोई नजासत या उस के अज़्ज़ा नज़र आ रहे हैं तो अब नापाक है। इसी तरह उस में किसी ने पेशाब कर दिया तो नापाक हो गया। चप्पल से उड़ कर जो कीचड़ के छींटे पाजामे के पिछले हिस्से पर पड़ते हैं वोह पाक हैं जब तक यकीनी तौर पर इन का नापाक होना मा'लूम न हो।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो लोग अपनी मजलिस से अल्लाह के जिक्र और नबी पर दुरूद शरीफ़ पढ़े बिगैर उठ गए तो वोह बदबूदार मुर्दार से उठे । (شعب الایمان)

सड़क पर छिड़के जाने वाले पानी के छींटे

सड़क पर पानी छिड़का जा रहा था ज़मीन से छींटें उड़ कर कपड़े पर पड़ें, कपड़ा नजिस न हुवा मगर धो लेना बेहतर है ।

(बहारे शरीअत, हिस्सा : 2, स. 116)

ढेलों से पाकी लेने के बा 'द आने वाला पसीना

बा 'द पाख़ाना पेशाब के ढेलों से इस्तिन्जा कर लिया, फिर उस जगह से पसीना निकल कर कपड़े या बदन में लगा तो बदन और कपड़े नापाक न होंगे । (عائيرى ج ٤ ص ٤٨, बहारे शरीअत, हिस्सा : 2, स. 117)

कुत्ता बदन से छू जाए

कुत्ता बदन या कपड़े से छू जाए तो अगर्चे उस का जिस्म तर हो बदन और कपड़ा पाक है, हां अगर उस के बदन पर नजासत लगी हो तो और बात है या उस का लुआ़ब लगे तो नापाक कर देगा ।

(बहारे शरीअत, हिस्सा : 2, स. 117)

कुत्ता आटे में मूंह डाल दे तो ?

कुत्ते वगैरा किसी ऐसे जानवर (मसलन सुवर, शेर, चीता, भेड़िया, हाथी, गीदड़ और दूसरे दरिन्दों में से किसी) ने जिस का लुआ़ब नापाक है, आटे में मूंह डाला तो अगर गुंधा हुवा था तो जहां उस का मूंह पड़ा उस को अ़लाहिदा कर दे बाकी पाक है और सूखा था तो जितना तर हो गया वोह फेंक दे । (बहारे शरीअत, हिस्सा : 2, स. 117)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर रोज़े जुमुआ दो सो बार दुरूदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआफ़ होंगे। (جمع الجوامع)

कुत्ता बरतन में मूंह डाल दे

कुत्ते ने बरतन में मूंह डाला तो अगर वोह चीनी या धात का है या मिट्टी का रोगनी या इस्ति'माली चिकना तो तीन³ बार धोने से पाक हो जाएगा वरना हर बार सुखा कर। हां चीनी में बाल (या'नी बहुत बारीक शिगाफ़) हो या और बरतन में दराड़ हो तो तीन बार सुखा कर पाक होगा फ़क़त धोने से पाक न होगा। (ऐज़न, स. 64)

मटके को कुत्ते ने ऊपर (बाहरी हिस्सों) से चाटा उस में का पानी नापाक न होगा। (ऐज़न)

बिल्ली पानी में मूंह डाल दे तो ?

घर में रहने वाले जानवर जैसे बिल्ली, चूहा, सांप, छिपकली का झूटा मक्रूह है। (ऐज़न, स. 65)

तीन मदनी मुन्नियों की मौत का अलमनाक वाक़िआ

दूध पानी और खाने पीने की चीज़ें ढक कर रखनी चाहिए। एक इब्रतनाक वाक़िआ है कि एक मियां बीवी अपनी तीन छोटी छोटी बच्चियों को पड़ोसन या किसी अज़ीज़ा के सिपुर्द कर के हज़ के लिये गए, हज़ से क़ब्ल ही यकायक तीनों मदनी मुन्नियां एक साथ मौत की नींद सो गईं! कोहराम पड़ गया, मां बाप हज़ के बिगैर ही रोते धोते मक्कए मुकर्मा زَادَهَا اللهُ شَرْفًا وَتَعْظِيمًا से अपने वतन आ पहुंचे, तहक़ीक़ करने पर इन्किशाफ़ हुवा कि दूध खुला हुवा रखा था उस में छिपकली गिर कर मर गई थी वोही दूध बच्चियों ने पिया और ज़हूर के असर

فَرَمَانَهُ مُسْتَفَاةً عَلَيْهِ وَعَلَيْهِ وَسَلَّمَ : مُؤْذِنٌ عَلَى شَرِيفِ مَدِينَةِ الْمَدِينَةِ الْمُحَرَّمَةِ أَلَّا يَدْخُلَ عَلَيْهَا أَحَدٌ مِنْكُمْ حَتَّى يَسْمَعَ نَادِيَ الْمَدِينَةِ مُنَادِيًا بِرَحْمَةِ اللَّهِ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ (ابن عمر)

से येह अलमिय्या पेश आया । कहा जाता है अगर छिपकली मशरूब में मर कर फट जाए तो 100 आदमियों के लिये उस का ज़हर काफ़ी है !

जानवरों का पसीना

जिस का झूटा नापाक है उस का पसीना और लुआब (या'नी थूक) भी नापाक है और जिस का झूटा पाक उस का पसीना और लुआब भी पाक और जिस का झूटा मक्रूह उस का लुआब और पसीना भी मक्रूह ।

(बहारे शरीअत, हिस्सा : 2, स. 66)

गधे का पसीना पाक है

गधे, ख़च्चर का पसीना अगर कपड़े में लग जाए तो कपड़ा पाक है चाहे कितना ही ज़ियादा लगा हो ।

(ऐज़न)

खून वाले मुंह से पानी पीना

किसी के मुंह से इतना खून निकला कि थूक में सुख़ी आ गई और उस ने फ़ौरन पानी पिया तो येह झूटा (पानी) नापाक है और सुख़ी जाती रहने के बा'द उस पर लाज़िम है कि कुल्ली कर के मुंह पाक करे और अगर कुल्ली न की और चन्द बार थूक का गुज़र मौज़ए नजासत (या'नी नापाक हिस्से) पर हुवा ख़्वाह निगलने में या थूकने में यहां तक कि नजासत का असर न रहा तो त़हारत हो गई इस के बा'द अगर पानी पियेगा तो पाक रहेगा अगर्चे ऐसी सूरत में थूक निगलना सख़्त नापाक बात और गुनाह है ।

(बहारे शरीअत, हिस्सा : 2, स. 63)

फ़रमाने मुस्त्फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग़िफ़रत है । (ابن عساکر)

औरत के पर्दे की जगह की रतूबत

औरत के पेशाब के मक़ाम से जो रतूबत निकले पाक है, कपड़े या बदन में लगे तो धोना ज़रूरी नहीं हां धो लेना बेहतर है ।

(ऐज़न, स. 117)

सड़ा हुआ गोश्त

जो गोश्त सड़ा गया बदबू ले आया उस का खाना ह़राम है अगर्चे नजिस (नापाक) नहीं । (बहारे शरीअत, हिस्सा : 2, स. 117)

खून की शीशी

अगर नमाज़ पढ़ी और जेब वगैरा में शीशी है और उस में पेशाब या खून या शराब है तो नमाज़ न होगी और जेब में अन्डा है और उस की ज़र्दी खून हो चुकी है तो नमाज़ हो जाएगी । (ऐज़न, स. 114)

मय्यित के मुंह का पानी

मुर्दे के मुंह का पानी नापाक है ।

(दُرْمُعْتَارَج ۱ ص ۲۹۰, जि. 1, स. 268, फ़तावा रज़विय्या मुख़र्रजा)

नापाक बिछोना

❶ भीगी हुई नापाक ज़मीन या नजिस (नापाक) बिछोने पर सूखे हुए पाउं रखे और पाउं में तरी आ गई तो नजिस (नापाक) हो गए और सील (या'नी ऐसी नमी जो पाउं को तर न कर सके, ठन्डक) है तो नहीं ।

(बहारे शरीअत, हिस्सा : 2, स. 115)

❷ नजिस (नापाक) कपड़ा पहन कर या नजिस (नापाक) बिछोने पर

फ़रमाने मुस्त्फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने किताब में मुझ पर दुरूदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फिरिश्ते उस के लिये इस्तिफ़्फ़र (या'नी बख़्शिश की दुआ) करते रहेंगे। (طبرانی)

सोया और पसीना आया अगर पसीने से वोह नापाक जगह भीग गई फिर उस से बदन तर हो गया तो नापाक हो गया वरना नहीं।

(ऐज़न, स. 116)

गीली रुमाली

मियानी¹ तर थी और हवा निकली तो कपड़ा नजिस न होगा।

(ऐज़न)

इन्सानी खाल का टुकड़ा

आदमी की खाल अगर्चे नाखुन बराबर थोड़े पानी (या'नी दह दर दह से कम) में पड़ जाए वोह पानी नापाक हो गया और खुद नाखुन गिर जाए तो नापाक नहीं।

(ऐज़न)

उपला (सूखा हुआ गोबर)

﴿1﴾ उपले (या'नी गाय भेंस का सूखा हुआ गोबर) जला कर खाना पकाना जाइज़ है। (बहारे शरीअत, हिस्सा : 2, स. 124) ﴿2﴾ उपले (या'नी गाय भेंस के सूखे हुए गोबर) का धुवां रोटी में लगा तो रोटी नापाक न हुई। (ऐज़न, स. 116) ﴿3﴾ उपले की राख पाक है और अगर राख होने से कब्ल बुझ गया तो नापाक।

(ऐज़न, स. 118)

तवे पर नापाक पानी छिड़क दिया तो ?

तन्नूर या तवे पर नापाक पानी का छींटा डाला और आंच से उस की तरी जाती रही अब जो रोटी लगाई गई पाक है। (ऐज़न, स. 124)

دينه

1. मियानी या'नी दोनों पाइंचों के बीच का कपड़ा। इस को रुमाली भी कहते हैं।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुझ पर एक दिन में 50 बार दुरूदे पाक पढ़े क़ियामत के दिन मैं उस से मुसा-फ़हा करूँ (या'नी हाथ मिलाऊँ)गा। (ابن بشكوال)

हराम जानवर का गोशत और चमड़ा कैसे पाक हो

सुवर के सिवा हर जानवर हलाल हो या हराम जब कि ज़ब्ह के क़ाबिल हो, और बिस्मिल्लाह कह कर ज़ब्ह किया गया तो उस का गोशत और खाल पाक है, कि नमाज़ी के पास अगर वोह गोशत है या उस की खाल पर नमाज़ पढ़ी तो नमाज़ हो जाएगी मगर हराम जानवर (का गोशत वगैरा खाना) ज़ब्ह से हलाल न होगा हराम ही रहेगा।

(बहारे शरीअत, हिस्सा : 2, स. 124)

बकरे की खाल पर बैठने से अज़िज़ी पैदा होती है

दरिन्दे की खाल अगर्चे पका (या'नी सुखा) ली गई हो न उस पर बैठना चाहिये न नमाज़ पढ़नी चाहिये कि मिज़ाज में सख़्ती और तकब्बुर पैदा होता है, बकरी (बकरा) और मेंढे की खाल पर बैठने और पहनने से मिज़ाज में नरमी और इन्किसार (अज़िज़ी) पैदा होता है, कुत्ते की खाल अगर्चे पका (या'नी सुखा) ली गई हो या वोह ज़ब्ह कर लिया गया हो इस्ति'माल में न लाना चाहिये कि आइम्मा के इख़्तिलाफ़ और अ़वाम की नफ़रत से बचना मुनासिब है। (ऐज़न, स. 124, 125)

जो नजासत दिखाई देती है उस को मरइय्या और जो नहीं दिखाई देती उसे गैर मरइय्या कहते हैं। (ऐज़न, स. 54)

गाढ़ी नजासत वाला कपड़ा किस तरह धोए

नजासत अगर दलदार या'नी गाढ़ी हो जिसे नजासते मरइय्या कहते हैं (जैसे पाख़ाना, गोबर, खून वगैरा) तो धोने में गिनती की कोई

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : बरोज़े क़ियामत लोगों में से मेरे क़रीब तर वोह होगा जिस ने दुन्या में मुज़ पर ज़ियादा दुरूदे पाक पढ़े होंगे। (ترمذی)

शर्त नहीं बल्कि उस को दूर करना ज़रूरी है, अगर एक बार धोने से दूर हो जाए तो एक ही मरतबा धोने से पाक हो जाएगा और अगर चार पांच मरतबा धोने से दूर हो तो चार पांच मरतबा धोना पड़ेगा हां अगर तीन मरतबा से कम में नजासत दूर हो जाए तो तीन बार पूरा कर लेना मुस्तहब है। (बहारे शरीअत, हिस्सा : 2, स. 119)

अगर नजासत का रंग कपड़े पर बाक़ी रह जाए तो ?

अगर नजासत दूर हो गई मगर उस का कुछ असर, रंग या बू बाक़ी है तो उसे भी जाइल करना लाज़िम है हां अगर उस का असर ब दिक्कत (या'नी दुश्वारी से) जाए तो असर दूर करने की ज़रूरत नहीं तीन मरतबा धो लिया पाक हो गया, साबुन या खटाई या गर्म पानी (या किसी किस्म के केमीकल वगैरा) से धोने की हाज़त नहीं। (ऐज़न)

पतली नजासत वाला कपड़ा पाक करने के

मुतअल्लिक 6 मदनी फूल

﴿1﴾ अगर नजासत रकीक (या'नी पतली जैसे पेशाब वगैरा) हो तो तीन मरतबा धोने और तीनों मरतबा ब कुव्वत (या'नी पूरी ताक़त से) निचोड़ने से पाक होगा और कुव्वत के साथ निचोड़ने के येह मा'ना हैं कि वोह शख्स अपनी ताक़त भर इस तरह निचोड़े कि अगर फिर निचोड़े तो उस से कोई क़तरा न टपके, अगर कपड़े का ख़याल कर के अच्छी तरह नहीं निचोड़ा तो पाक न होगा। (बहारे शरीअत, हिस्सा : 2, स. 120) ﴿2﴾ अगर धोने वाले ने अच्छी तरह निचोड़ लिया मगर अभी ऐसा है कि अगर

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर एक मरतबा दुरूद पढ़ा अल्लाह उस पर दस रहमतेँ भेजता और उस के नामए आ'माल में दस नेकियाँ लिखता है। (ترمذی)

कोई दूसरा शख्स जो ताक़त में उस से ज़ियादा है निचोड़े तो दो एक बूंद टपक सकती है तो उस (पहले निचोड़ने वाले) के हक़ में पाक और दूसरे के हक़ में नापाक है। इस दूसरे की ताक़त का (पहले के हक़ में) ए'तिबार नहीं, हां अगर येह धोता और इसी क़दर निचोड़ता (जिस क़दर पहले वाले ने निचोड़ा था) तो पाक न होता। (ऐज़न) ﴿3﴾ पहली और दूसरी मरतबा निचोड़ने के बा'द हाथ पाक कर लेना बेहतर है और तीसरी बार निचोड़ने से कपड़ा भी पाक हो गया और हाथ भी, और जो कपड़े में इतनी तरी रह गई हो कि निचोड़ने से एकआध बूंद टपकेगी तो कपड़ा और हाथ दोनों नापाक हैं। (ऐज़न) ﴿4﴾ पहली या दूसरी बार हाथ पाक नहीं किया, और उस की तरी से कपड़े का पाक हिस्सा भीग गया तो येह भी नापाक हो गया फिर अगर पहली बार के निचोड़ने के बा'द भीगा है तो उसे दो^ए मरतबा धोना चाहिये और दूसरी मरतबा निचोड़ने के बा'द हाथ की तरी से भीगा है तो एक मरतबा धोया जाए। यूंही अगर उस कपड़े से जो एक मरतबा धो कर निचोड़ लिया गया है, कोई पाक कपड़ा भीग जाए तो येह दो बार धोया जाए और अगर दूसरी मरतबा निचोड़ने के बा'द उस से वोह कपड़ा भीगा तो एक बार धोने से पाक हो जाएगा। (बहारे शरीअत, हिस्सा : 2, स. 120) ﴿5﴾ कपड़े को तीन मरतबा धो कर हर मरतबा ख़ूब निचोड़ लिया है कि अब निचोड़ने से न टपकेगा फिर उस को लटका दिया और उस से पानी टपका तो येह पानी पाक है और अगर ख़ूब नहीं निचोड़ा था तो येह पानी नापाक है। (ऐज़न, स. 121) ﴿6﴾ येह ज़रूरी नहीं कि एक दम तीनों

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : शबे जुमुआ और रोज़े मुझ पर दुरूद की कसरत कर लिया करो जो ऐसा करेगा क़ियामत के दिन मैं उस का शफ़ीअ व गवाह बनूंगा । (شعب الایمان)

बार धोएं बल्कि अगर मुख़लिफ़ वक्तों बल्कि मुख़लिफ़ दिनों में येह ता'दाद पूरी की जब भी पाक हो जाएगा । (ऐज़न, 122)

बहते नल के नीचे धोने में निचोड़ना शर्त नहीं

फ़तावा अम्ज़दिया दिलद 1 सफ़हा 35 में है कि येह (या'नी तीन मरतबा धोने और निचोड़ने का) हुक्म उस वक्त है जब थोड़े पानी में धोया हो, और अगर हौजे कबीर (या'नी दह दर दह या इस से बड़े हौज़, नहर, नदी, समुन्दर वगैरा) में धोया हो या (नल, पाइप या लोटे वगैरा के ज़रीए) बहुत सा पानी उस पर बहाया या (दरिया वगैरा) बहते पानी में धोया तो निचोड़ने की शर्त नहीं ।

बहते पानी में पाक करने में निचोड़ना शर्त नहीं

फ़ु-क़हाए किराम رَحْمَةُ اللهِ السَّلَام ف़रमाते हैं : दरी या टाट या कोई नापाक कपड़ा बहते पानी में रात भर पड़ा रहने दें पाक हो जाएगा और अस्ल येह है कि जितनी देर में येह ज़न्ने ग़ालिब हो जाए कि पानी नजासत को बहा ले गया पाक हो गया कि बहते पानी से पाक करने में निचोड़ना शर्त नहीं । (बहारे शरीअत, हिस्सा : 2, स. 121)

पाक नापाक कपड़े साथ धोने का मस्अला

अगर बाल्टी या कपड़े धोने की मशीन में पाक कपड़ों के साथ एक भी नापाक कपड़ा पानी के अन्दर डाल दिया तो सारे ही कपड़े नापाक हो जाएंगे और बिना ज़रूरते शरइय्या ऐसा करना जाइज़ नहीं है । चुनान्चे मेरे आका आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत,

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुझ पर एक बार दुरुद पढ़ता है अल्लाह उस के लिये एक क़ीरात अन्न लिखता है और क़ीरात उहुद पहाड़ जितना है। (عبارة رقم ۱)

मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़तावा रज़विय्या (मुखर्रजा) जिल्द अव्वल सफ़हा 792 पर फ़रमाते हैं : “बिला ज़रूरत पाक शै को नापाक करना ना जाइज़ व गुनाह है।” जिल्द 4 (मुखर्रजा) सफ़हा 585 पर फ़रमाते हैं : “जिस्म व लिबास बिला ज़रूरते शरइय्या नापाक करना और येह हराम है।” “अल बहरुराइक़” में है : “पाक चीज़ को नापाक करना हराम है।” (البحر الرائق، ج ۱ ص ۱۷۰)

इस्लामी बहनों को चाहिये की पाक व नापाक कपड़े जुदा जुदा धोएं। अगर साथ ही धोना है तो नापाक कपड़े का नजासत वाला हिस्सा एहतियात के साथ पहले पाक कर लीजिये फिर बेशक दीगर मैले कपड़ों के हमराह एक साथ वॉशिंग मशीन में उस को भी धो लीजिये।

नापाक कपड़े पाक करने का आसान तरीका

कपड़े पाक करने का एक आसान तरीका येह भी है कि बाल्टी में नापाक कपड़े डाल कर ऊपर से नल खोल दीजिये, कपड़ों को हाथ या किसी सलाख़ वगैरा से इस तरह डुबोए रखिये कि कहीं से कपड़े का कोई हिस्सा पानी के बाहर उभरा हुवा न रहे। जब बाल्टी के ऊपर से उबल कर इतना पानी बह जाए कि ज़न्ने ग़ालिब आ जाए कि पानी नजासत को बहा कर ले गया होगा तो अब वोह कपड़े और बाल्टी का पानी नीज़ हाथ या सलाख़ का जितना हिस्सा पानी के अन्दर था सब पाक हो गए जब कि कपड़े वगैरा पर नजासत का असर बाक़ी न हो। इस अमल के दौरान येह एहतियात ज़रूरी है कि पाक हो जाने के ज़न्ने ग़ालिब से क़ब्ल नापाक पानी का एक भी छींटा आप के बदन या

फरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जब तुम रसूलों पर दुरूद पढ़ो तो मुझ पर भी पढ़ो, बेशक मैं तमाम जहानों के रब का रसूल हूँ। (جمع الجوامع)

किसी और चीज़ पर न पड़े। बाल्टी या बरतन का ऊपरी कनारा या अन्दरूनी दीवार का कोई हिस्सा नापाक पानी वाला है और ज़मीन इतनी हमवार नहीं कि बाल्टी के हर तरफ़ से पानी उभर के निकले और मुकम्मल कनारे वगैरा धुल जाएं तो ऐसी सूरत में किसी बरतन के ज़रीए या जारी पानी के नल के नीचे हाथ रख कर उस से बाल्टी वगैरा के चारों तरफ़ इस तरह पानी बहाइये कि कनारे और बक़िय्या अन्दरूनी हिस्से भी धुल कर पाक हो जाएं मगर येह काम शुरूअ ही में कर लीजिये कहीं पाक कपड़े दोबारा नापाक न कर बैठें !

वोशिंग मशीन में कपड़े पाक करने का तरीका

वोशिंग मशीन में कपड़े डाल कर पहले पानी भर लीजिये और कपड़ों को हाथ वगैरा से पानी में दबा कर रखिये ताकि कोई हिस्सा उभरा हुवा न रहे, ऊपर का नल खुला रखिये अब निचला सूराख़ भी खोल दीजिये, इस तरह ऊपर नल से पानी आता रहेगा और निचले सूराख़ से बहता रहेगा जब ज़न्ने ग़ालिब आ जाए कि पानी नजासत को बहा ले गया होगा तो कपड़े और मशीन के अन्दर का पानी पाक हो जाएगा जब कि नजासत का असर कपड़ों वगैरा पर बाक़ी न हो। ज़रूरतन मशीन के ऊपरी कनारे वगैरा मज़क़ूरा तरीके पर शुरूअ ही में धो लेने चाहिए।

नल के नीचे कपड़े पाक करने का तरीका

मज़क़ूरा तरीके पर पाक करने के लिये बाल्टी या बरतन ही ज़रूरी नहीं, नल के नीचे हाथ में पकड़ कर भी पाक कर सकते हैं।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुझ पर दुरूद पढ़ कर अपनी मजालिस को आरास्ता करो कि तुम्हारा दुरूद पढ़ना बरोजे क़ियामत तुम्हारे लिये नूर होगा । (फ़रदुस الاعمال)

मसलन रुमाल नापाक हो गया, तो बेसिन में नल के नीचे रख कर इतनी देर तक पानी बहाइये कि ज़न्ने ग़ालिब आ जाए कि पानी नजासत को बहा कर ले गया होगा तो पाक हो जाएगा । बड़ा कपड़ा या उस का नापाक हिस्सा भी इसी तरीके पर पाक किया जा सकता है । मगर येह एहतियात ज़रूरी है कि नापाक पानी के छींटे आप के कपड़े, बदन और अतराफ़ में दीगर जगहों पर न पड़ें ।

कारपेट पाक करने का तरीका

कारपेट (CARPET) का नापाक हिस्सा एक बार धो कर लटका दीजिये यहां तक कि पानी टपकना मौकूफ़ हो जाए फिर दोबारा धो कर लटकाइये हत्ता कि पानी टपकना बन्द हो जाए फिर तीसरी बार इसी तरह धो कर लटका दीजिये जब पानी टपकना बन्द हो जाएगा तो कारपेट पाक हो जाएगा । चटाई, चमड़े के चप्पल और मिट्टी के बरतन वगैरा जिन चीजों में पतली नजासत ज़ब्ब हो जाती हो इसी तरीके पर पाक कीजिये । ऐसा नाजुक कपड़ा कि निचोड़ने से फट जाने का अन्देशा हो वोह भी इसी तरह पाक कीजिये । अगर नापाक कारपेट या कपड़ा वगैरा बहते पानी में (मसलन दरिया, नहर में या पाइप या टोंटी के जारी पानी के नीचे) इतनी देर तक रख छोड़ें कि ज़न्ने ग़ालिब हो जाए कि पानी नजासत को बहा कर ले गया होगा तब भी पाक हो जाएगा । कारपेट पर बच्चा पेशाब कर दे तो उस जगह पर पानी के छींटे मार देने से वोह पाक नहीं होता । याद रहे ! एक दिन के बच्चे या बच्ची का पेशाब भी नापाक होता है ।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत करो बेशक यह तुम्हारे लिये त्हातरत है। (अबुयुसुफ़)

नापाक मेंहदी से रंगा हुवा हाथ कैसे पाक हो ?

कपड़े या हाथ में नजिस रंग लगा, या नापाक मेंहदी लगाई तो इतनी मर्तबा धोएं कि साफ़ पानी गिरने लगे पाक हो जाएगा अगर्चे कपड़े या हाथ पर रंग बाकी हो। (बहारे शरीअत, हिस्सा : 2, स. 119)

नापाक तेल वाला कपड़ा धोने का मस्अला

कपड़े या बदन में नापाक तेल लगा था तीन मर्तबा धो लेने से पाक हो जाएगा अगर्चे तेल की चिकनाई मौजूद हो, इस तकल्लुफ़ की ज़रूरत नहीं कि साबुन या गर्म पानी से धोए लेकिन अगर मुर्दार की चर्बी लगी थी तो जब तक इस की चिकनाई न जाए पाक न होगा।

(ऐज़न, स. 120)

अगर कपड़े का थोड़ा सा हिस्सा नापाक हो जाए

कपड़े का कोई हिस्सा नापाक हो गया और येह याद नहीं कि वोह कौन सी जगह है, तो बेहतर येह है कि पूरा ही धो डालें (या'नी जब बिल्कुल न मा'लूम हो कि किस हिस्से में नापाकी लगी है और अगर मा'लूम है कि मसलन आस्तीन नजिस हो गई मगर येह नहीं मा'लूम कि आस्तीन का कौन सा हिस्सा है, तो पूरी आस्तीन का धोना ही पूरे कपड़े का धोना है) और अगर अन्दाजे से सोच कर इस का कोई सा हिस्सा धो ले जब भी पाक हो जाएगा, और जो बिला सोचे हुए कोई टुकड़ा (हिस्सा) धो लिया जब भी पाक है मगर इस सूरत में अगर चन्द नमाज़ें पढ़ने के बा'द मा'लूम हो कि नजिस हिस्सा नहीं धोया गया तो फिर

फ़रमाने मुस्फ़ा عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुझ पर रोजे जुमुआ दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा मैं कियामत के दिन उस की शफ़ाअत करूंगा । (कोरआन)

धोए और नमाज़ों का इआदा करे (या'नी दोबारा पढ़े) और जो सोच कर धो लिया था और बा'द को ग़लती मा'लूम हुई तो अब धो ले और नमाज़ों के इआदे (या'नी दोबारा अदा करने) की हाज़त नहीं ।

(ऐज़न, स. 121,122)

दूध से कपड़ा धोना कैसा ?

दूध और शोरबा और तेल से धोने से पाक न होगा कि इन से नजासत दूर न होगी । (बहारे शरीअत, हिस्सा : 2, स. 119)

मनी वाले कपड़े पाक करने के 6 अहक़ाम

﴿1﴾ मनी कपड़े में लग कर खुश्क हो गई तो फ़क़त मल कर झाड़ने और साफ़ करने से कपड़ा पाक हो जाएगा अगरचें बा'द मलने के कुछ इस का असर कपड़े में बाक़ी रह जाए । (ऐज़न, स. 122) ﴿2﴾ इस मसअले में औरत व मर्द और इन्सान व हैवान व तन्दुरुस्त व मरीजे जिरयान सब की मनी का एक हुक्म है । (ऐज़न) ﴿3﴾ बदन में अगर मनी लग जाए तो भी इसी तरह पाक हो जाएगा । (ऐज़न) ﴿4﴾ पेशाब कर के तहारत न की पानी से न ढेले से और मनी उस जगह पर गुज़री जहां पेशाब लगा हुआ है, तो येह मलने से पाक न होगी बल्कि धोना ज़रूरी है और अगर तहारत कर चुका था या मनी जस्त कर के (या'नी उछल कर) निकली कि उस मौज़ए नजासत (या'नी नापाक जगह) पर न गुज़री तो मलने से पाक हो जाएगी । (ऐज़न, स. 123) ﴿5﴾ जिस कपड़े को मल कर पाक कर लिया (अब) अगर वोह पानी से भीग जाए तो नापाक न

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : उस शख्स को नाक ख़ाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पड़े । (१७)

होगा । (ऐज़न) ﴿6﴾ अगर मनी कपड़े में लगी है और अब तक तर है (बिगैर सुखाए पाक करना चाहें) तो धोने से पाक होगा (सूखने से क़ब्ल) मलना काफ़ी नहीं । (ऐज़न)

दूसरे के नापाक कपड़े की निशान देही कब वाजिब है

किसी दूसरे मुसलमान के कपड़े में नजासत लगी देखी और ग़ालिब गुमान है कि इस को ख़बर करेगा तो पाक कर लेगा तो ख़बर करना वाजिब है । (ऐसी सूरत में ख़बर नहीं देगा तो गुनहगार होगा) । (बहारे शरीअत, हिस्सा : 2, स. 127) इस्लामी बहन ने अगर ना महरम मसलन भाभी ने देवर के कपड़े में नजासत देखी तो बताना ज़रूरी नहीं ।

रूई पाक करने का तरीका

रूई का अगर इतना हिस्सा नजिस (नापाक) है जिस क़दर धुनने से उड़ जाने का गुमाने सहीह हो तो धुनने से (रूई) पाक हो जाएगी वरना बिगैर धोए पाक न होगी, हां अगर मा'लूम न हो कि कितनी नजिस (नापाक) है तो भी धुनने से पाक हो जाएगी ।

(बहारे शरीअत, हिस्सा : 2, स. 125)

बरतन पाक करने का तरीका

अगर ऐसी चीज़ हो कि उस में नजासत ज़ब्त न हुई, जैसे चीनी के बरतन या मिट्टी का पुराना इस्ति'माली चिकना बरतन या लोहे, तांबे, पीतल वगैरा धातों की चीज़ें तो उसे फ़क़त तीन बार धो लेना काफ़ी है, इस की भी ज़रूरत नहीं कि उसे इतनी देर तक छोड़ दें कि पानी टपकना मौकूफ़ हो जाए । (ऐज़न, 121)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह (ﷻ) उस पर दस रहमते भेजता है। (स्ल)

छुरी चाकू वगैरा पाक करने का तरीका

लोहे की चीज़ जैसे छुरी, चाकू, तलवार वगैरा जिस में न जंग हो न नक्शो निगार, नजिस हो जाए तो अच्छी तरह पोंछ डालने से पाक हो जाएगी और इस सूरात में नजासत के दलदार या पतली होने में कुछ फ़र्क नहीं। यूँही चांदी, सोने, पीतल, गिलट और हर किस्म की धात की चीज़ें पोंछने से पाक हो जाती हैं बशर्ते कि नक्शी न हों और अगर नक्शी हों या लोहे में जंग हो तो धोना ज़रूरी है पोंछने से पाक न होंगी।

(बहारे शरीअत, हिस्सा : 2, स. 122)

आईना पाक करने का तरीका

आईना और शीशे की तमाम चीज़ें और चीनी के बरतन या मिट्टी के रोगनी बरतन (या मिट्टी के वोह बरतन जिन पर कांच की पतली तह चढ़ी होती है) या पोलिश की हुई लकड़ी गरज़ वोह तमाम चीज़ें जिन में मसाम न हों, कपड़े या पत्ते से इस क़दर पोंछ ली जाएं कि (नजासत का) असर बिल्कुल जाता रहे पाक हो जाती हैं। (ऐज़न) मगर खयाल रहे कि दराड़ हो, या कहीं से कुछ उखड़ा हुवा हो या कोई हिस्सा टूटा हुवा हो या कहीं से पोलिश निकल गई हो अल गरज़ किसी तरह का भी खुर्दरा पन होने की सूरात में उस हिस्से का पोंछना काफ़ी न होगा धो कर पाक करना ज़रूरी है।

जूते पाक करने का तरीका

मोज़े (चमड़े के) या जूते में दलदार नजासत लगी, जैसे

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : उस शख्स की नाक खाक आलूद हो जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पड़े । (ترمذی)

पाख़ाना, गोबर, मनी तो अगर्चे वोह नजासत तर हो खुरच्ने और रगड़ने से पाक हो जाएंगे । और अगर मिस्ल पेशाब के कोई पतली नजासत लगी हो और उस पर मिट्टी या राख या रैता वगैरा डाल कर रगड़ डालें जब भी पाक हो जाएंगे और अगर ऐसा न किया यहां तक कि वोह नजासत सूख गई तो अब बे धोए पाक न होंगे ।

(बहारे शरीअत, हिस्सा : 2, स. 123)

काफ़िरों के इस्ति 'माल शुदा स्वेटर वगैरा

कुफ़्फ़ार के मुमालिक से दरआमद किये हुए (IMPORTED)

इस्ति 'माल शुदा स्वेटर (SWEATER) जुराबें, क़ालीन (CARPET) और दीगर पुराने कपड़े कि जब तक इन पर नजासत का असर ज़ाहिर न हो पाक हैं बिगैर धोए नमाज़ में इस्ति 'माल करने में हरज नहीं, अलबत्ता पाक कर लेना मुनासिब है । सदरुशशरीअह, बदरुत्तरीक़ह हज़रते अल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद अमजद अली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي मक्तबतुल मदीना की मत्बूआ बहारे शरीअत हिस्सा 2 सफ़हा 127 पर फ़रमाते हैं : फ़ासिकों के इस्ति 'माली कपड़े जिन का नजिस होना मा'लूम न हो पाक समझे जाएंगे मगर बे नमाज़ी के पाजामे वगैरा में एह्तियात येही है कि रुमाली पाक कर ली जाए कि अक्सर बे नमाज़ी पेशाब कर के वैसे ही पाजामा बांध लेते हैं और कुफ़्फ़ार के इन कपड़ों के पाक कर लेने में तो बहुत ख़याल करना चाहिये ।

(बहारे शरीअत, हिस्सा : 2, स. 127)

صَلُّوْا عَلَي الْحَبِيْبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَي مُحَمَّدٍ

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ
 أَمَا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ



“बानुवाने तहार्त पे लाख्रों सलाम” के तेईस हुरूफ़
 की निरखत से इस्लामी बहनों की 23 मदनी बहारें



दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

हज़रते सय्यिदुना अब्दुरहमान बिन औफ़ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है कि शहन्शाहे खुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ एक मरतबा बाहर तशरीफ़ लाए तो मैं भी पीछे हो लिया। आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ एक बाग़ में दाख़िल हुए और सज्दे में तशरीफ़ ले गए आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने सज्दा इतना तवील कर दिया कि मुझे अन्देशा हुवा कहीं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की रूहे मुबारका क़ब्ज़ न फ़रमा ली हो। चुनान्चे मैं क़रीब हो कर बग़ौर देखने लगा। जब सरे अक़दस उठाया तो फ़रमाया : “ऐ अब्दुरहमान ! क्या हुवा ?” मैं ने जवाबन अपना ख़दशा ज़ाहिर कर दिया तो फ़रमाया : “जिब्रईले अमीन ने मुझ से कहा : “क्या आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को येह बात खुश नहीं करती कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है कि जो तुम पर दुरूदे पाक पढ़ेगा मैं उस पर रहमत नाज़िल फ़रमाऊंगा और जो तुम पर सलाम भेजेगा मैं उस पर

فَرَمَانَةُ مُسْتَفَاةً صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : جَوِي مُؤَدِّةً عَلَى مَرْتَبَا دُرُودِ طَاكِ طَدِّ اَللّٰهَ عَزَّ وَجَلَّ
 उस पर सो रहमतें नाज़िल फ़रमाता है। (طبرانی)

सलामती नाज़िल फ़रमाऊंगा।” (مُسْتَدْرَأَمَامِ أَحْمَدَ بِنِ حَنْبَلٍ ج ١ ص ٤٠٦ حديث ١٦٦٢)

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

﴿1﴾ मदनी आक़ा सब्ज़ सब्ज़ इमामे वालों के झुरमट में

دا'वते اَلْحَدِيْدِ لِلّٰهِ عَزَّ وَجَلَّ वते इस्लामी वालों पर झूम झूम कर बाराने रहमत बरसता है चुनान्चे बरमिंगहम (U.K.) के एक इस्लामी भाई का बयान अपने अन्दाज़ व अल्फ़ाज़ में पेशे खिदमत है, हम एक बार मुसलमानों की गुनजान आबादी वाले अ़लाके small health जिस को हम अपने मदनी माहोल में “मक्की हल्का” कहते हैं में अ़लाक़ाई दौरा करते हुए नेकी की दा'वत देने के लिये घर घर जा रहे थे। इस दौरान एक घर पर दस्तक दी तो एक उम्र रसीदा खातून निकलीं जो उर्दू और इंग्लिश से ना बलद थीं। हम ने सर झुका कर पंजाबी में नेकी की दा'वत पेश की और अ़र्ज़ की, कि घर के मर्दों को फुलां वक़्त मस्जिद में भेज दीजिये। हम जब जाने लगे तो वोह कहने लगीं : अब मेरी भी सुनो ! हमारे पास वक़्त कम था इस लिये आगे बढ़ गए मगर हमारे एक इस्लामी भाई ठहर गए। बड़ी बी फ़रमाने लगीं : اَلْحَدِيْدِ لِلّٰهِ عَزَّ وَجَلَّ मैं ने चन्द ही रोज़ पहले येह मुबारक ख़्वाब देखा था कि “सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ सब्ज़ सब्ज़ इमामा शरीफ़ वालों के झुरमट में मस्जिदुन नबवी शरीफ़ عَلَى صَاحِبِهَا الصَّلَاةُ وَالسَّلَام से बाहर की तरफ़ तशरीफ़ ला रहे हैं।” अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की कुदरत कि आज वोही सब्ज़

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा तहकीक़ वोह बद बख़्त हो गया । (अहूँ)

सब्ज़ इमामे वाले मेरे घर नेकी की दा'वत देने आ गए ! उन को इस्लामी बहनों के हफ़तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ की दा'वत दी गई । अब वोह अपने ख़ानदान की इस्लामी बहनों समेत बा काइदगी के साथ हफ़तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ में शिर्कत फ़रमाती हैं ।

हैं सहाबा के झुरमट में बदरुहुजा

नूर ही नूर हर सू मदीने में है

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

इस्लामी बहनों में मदनी इन्क़िलाब

इस्लामी बहनो ! देखा आप ने ! दा'वते इस्लामी वालों पर

सरकारे नामदार, बि इज़्ने परवर्द गार दो अ़लम के मालिको मुख़्तार, शहन्शाहे अबरार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का कितना बड़ा करम है !

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ इस्लामी भाइयों के साथ साथ इस्लामी बहनों में भी दा'वते इस्लामी के मदनी कामों की हर तरफ़ धूमें हैं । اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ

लाखों लाख इस्लामी बहनों ने भी दा'वते इस्लामी के मदनी पैग़ाम को क़बूल किया, फ़ेशन परस्ती से सरशार मुआशारे में परवान चढ़ने वाली बे शुमार इस्लामी बहनें गुनाहों के दलदल से निकल कर उम्महातुल मुअमिनीन और शहज़ादिये कौनैन बीबी फ़ातिमा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُنَّ की दीवानियां बन गई । गले में दुपट्टा लटका कर शोपिंग सेन्टरों और मख़्लूत तफ़्रीह गाहों में भटकने वालियों, नाइट क्लबों और सिनेमा घरों की जीनत बनने वालियों को करबला वाली इफ़्त मआब शहज़ादियों رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُنَّ की शर्मो हया के सदके वोह बरकतें नसीब हुई कि

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर सुबह व शाम दस दस बार दुरूदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअत मिलेगी । (مُعْتَبَرَات)

मदनी बुरक़अ उन के लिबास का जुज़्चे ला यन्फ़क बन गया ।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ मदनी मुन्नियों और इस्लामी बहनों को कुरआने करीम हिफ़ज़ व नाज़िरा की मुफ़्त ता'लीम देने के लिये कई मदारिसुल मदीना और अ़ालिमा बनाने के लिये मुतअद्द "जामिआतुल मदीना" काइम हैं । اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी में "हाफ़िज़ात" और "मदनिय्या अ़ालिमात" की ता'दाद बढ़ती जा रही है । बहर हाल इस्लामी भाइयों से इस्लामी बहनें किसी तरह पीछे नहीं हैं, 1429 सिने हिजरी के मदनी माह जुमादिल ऊला (जून 2008) में मुल्क के अन्दर होने वाले दा'वते इस्लामी के मदनी कामों की इस्लामी बहनों की "मजलिसे मुशावरत" की तरफ़ से मिलने वाली कारक़र्दगी की एक झलक मुलाहज़ा हो : ﴿1﴾ इस एक मदनी माह में मुल्क भर के अन्दर रोज़ाना तक्रीबन 24228 घर दर्स हुए ﴿2﴾ रोज़ाना लगने वाले मद्रसतुल मदीना (बालिगात) की ता'दाद लगभग 3275 और इन से इस्तिफ़ादा करने वालियों की ता'दाद तक्रीबन 34633 ﴿3﴾ हल्का/अ़लाका सत्ह के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअत की ता'दाद तक्रीबन 3000, इन में शरीक होने वालियां लगभग 136245 (एक लाख छत्तीस हज़ार दो सो पेंतालीस) ﴿4﴾ हफ़्तावार तरबिय्यती हल्कों की ता'दाद तक्रीबन 26052 ।

मेरी जिस क़दर हैं बहनें सभी मदनी बुरक़अ पहनें

इन्हें नेक तुम बनाना मदनी मदीने वाले

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़ा उस ने जफ़ा की। (عبارازان)

② मैं ने मदनी बुरक़अ कैसे अपनाया !

एक इस्लामी बहन के बयान का लुब्बे लुबाब है कि दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल से वाबस्ता होने से पहले मैं बहुत ज़ियादा फ़ेशन एबल थी, फ़ोन के ज़रीए ग़ैर मर्दों से दोस्ती करने में बड़ा लुत्फ़ आता, पड़ोस की शादियों में रस्मे मेंहदी वग़ैरा के मौक़अ पर मुझे ख़ास तौर पर बुलाया जाता, वहां मैं न सिर्फ़ खुद रक्स करती बल्कि दूसरी लड़कियों को भी डांडिया रास सिखा कर अपने साथ नचवाती, ला ता'दाद गाने मुझे ज़बानी याद थे, आवाज़ चूँकि अच्छी थी इस लिये मेरी सहेलियां मुझ से अक्सर गाना सुनाने की फ़रमाइश किया करतीं। बद किस्मती से घर में T.V. बहुत देखा जाता था, इस के बेहूदा प्रोग्रामों का मेरी तबाही में बहुत अहम किरदार था। रबीउन्नूर शरीफ़ की एक सुहानी शाम थी, नमाज़े मग़रिब के बा'द मेरे बड़े भाई घर आए तो उन के हाथ में मक्तबतुल मदीना के जारी कर्दा सुन्नतों भरे बयानात की तीन³ केसिटें थीं, इन में से एक बयान का नाम "क़ब्र की पहली रात" था खुश किस्मती से येह केसेट सुनने की मैं ने सआदत हासिल की, क़ब्र का मरहूला किस क़दर कठिन है, इस का एहसास मुझे येह बयान सुन कर हुवा। मगर अफ़सोस ! मेरे दिल पर गुनाहों की लज़ज़त का इस क़दर ग़लबा था कि मुझ में कोई ख़ास तब्दीली न आई। हां ! इतना फ़र्क़ ज़रूर पड़ा कि अब मुझे गुनाहों का एहसास होने लगा। कुछ ही दिन बा'द पड़ोस में दा'वते इस्लामी की जिम्मेदार इस्लामी बहनों ने ब सिल्लिसलए "ग्यारहवीं शरीफ़" इज्तिमाए ज़िक्रो

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुझ पर रोजे जुमुआ़ा दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ा़त करूंगा । (جمع الجوامع)

ना 'त का एहतिमाम किया। मुझे भी शिर्कत की दा'वत दी गई। “क़ब्र की पहली रात” सुन कर मेरा दिल पहले ही चोट खा चुका था, चुनान्वे मैं ने जिन्दगी में पहली बार इज्तिमाए़ जि़क्रो ना 'त में जाने का इरादा किया। मगर मेरी हमाक़त कि ख़ूब मेकअप कर के जदीद फ़ेशन का लिबास पहन कर इज्तिमाअ़ में गई, एक इस्लामी बहन ने वहां सुन्नतों भरा बयान फ़रमाया, जिसे सुन कर मेरे दिल की दुनिया ज़ेरो ज़बर हो गई। बयान के बा'द जब मन्क़बत “या ग़ौस बुलाओ मुझे बग़दाद बुलाओ” पढ़ी गई, इस ने गोया गर्म लोहे पर हथोड़े का काम किया ! यूं मैं दा 'वते इस्लामी के सुन्नतों भरे इज्तिमाआ़त में शरीक होने लगी। मदनी आका की दीवानियों की सोहबतों की बरकत से मेरे दिल में गुनाहों से नफ़त पैदा हुई, तौबा की सआ़दत मिली। और الْحَسْبُ لِلَّهِ عَزَّوَجَلَّ मैं दा 'वते इस्लामी के मदनी माहोल से वाबस्ता हो कर नेकियों की शाहराह पर ऐसी गामज़न हुई कि मैं वोही फ़ेशन की पुतली जो कि पहले बाहर निकलते वक़्त दुपट्टा भी ठीक तरह से नहीं ओढ़ती थी, कुछ ही अ़सें में मदनी बुरक़अ़ पहनने की सआ़दत पाने लगी। الْحَسْبُ لِلَّهِ عَزَّوَجَلَّ आज मैं दा 'वते इस्लामी के मदनी कामों की धूमें मचाने के लिये कोशां हूं।

अल्लाह करम ऐसा करे तुझ पे जहां में

ऐ दा 'वते इस्लामी तेरी धूम मची हो

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْبُ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٌ

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुआ और उस ने मुझे पर दुरूदे पाक न पढ़ा उस ने जन्नत का रास्ता छोड़ दिया। (ज़रान)

﴿3﴾ सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का दीदार नसीब हो गया

एक इस्लामी बहन की तहरीर का खुलासा है कि दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल से वाबस्ता होने से पहले मेरी अमली हालत इन्तिहाई अबतर थी। मोडर्न सहेलियों की सोहबत के बाइस मैं फ़ेशन की पुतली और मख़्लूत तफ़रीह गाहों की बेहद मतवाली थी, مَعَادُ اللهِ न नमाज़ पढ़ती न ही रोज़े रखती और बुरक़अ से तो कोसों दूर भागती थी। बस T.V. और V.C.R होता और मैं। खुदसर इतनी थी कि अपने सामने किसी की चलने नहीं देती थी। उन दिनों मैं कॉलेज में फ़र्स्ट इयर की तालिबा थी। एक रोज़ मुझे किसी ने मक्तबतुल मदीना के जारी कर्दा सुन्नतों भरे बयान की केसेट बनाम “वुज़ू और साइन्स” तोहफ़े में दी, बयान मा'लूमाती और ख़ासा दिलचस्प था। इस बयान से मुतअस्सिर हो कर मैं ने अलाके में होने वाले दा'वते इस्लामी के इस्लामी बहनों के सुन्नतों भरे इज्तिमाअ में जाना शुरूअ कर दिया। मदनी माहोल का नूर मेरी तारीक ज़िन्दगी को मुनव्वर करने लगा। वक्त गुज़रने के साथ साथ الْحَمْدُ لِلَّهِ عَزَّوَجَلَّ मैं अपनी बुरी आदतों से तौबा करने में काम्याब हो गई। दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल से वाबस्ता होने की बरकत से कुछ ही अर्से में मदनी बुरक़अ पहनने लगी। मेरे घर वाले, रिश्तेदार और मेरी सहेलियां इस हैरत अंगेज़ तब्दीली पर बहुत हैरान थे! उन्हें ये सब ख़्वाब लग रहा था मगर येह सो फ़ी सदी हकीकत थी। الْحَمْدُ لِلَّهِ عَزَّوَجَلَّ अब मैं अपने घर में फ़ैज़ाने सुन्नत से दर्स देती हूँ। दीगर इस्लामी बहनों के साथ मिल

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत करो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे लिये पाकीज़गी का बाइस है। (बुख़ारी)

कर मदनी काम करने की सआदत से भी बहरा मन्द होती हूं। रोज़ाना “फ़िक्रे मदीना” के ज़रीए मदनी इन्आमात के रिसाले के खाने पुर कर के हर माह जम्अ करवाना मेरा मा'मूल है। एक रोज़ मुझ पर रब عَزَّوَجَلَّ का ऐसा करम हुवा कि मैं जितना भी शुक्र करूं कम कम और कम है। हुवा यूं कि एक रात मैं सोई तो मेरी क़िस्मत अंगड़ाई ले कर जाग उठी। मैं ने ख़्वाब में देखा कि दा'वते इस्लामी का सुन्नतों भरा इज्तिमाअ हो रहा है मैं जिस जगह बैठी हूं वहां खिड़की से ठन्डी ठन्डी हवा आ रही है, मैं बे साख़्ता खिड़की से बाहर की तरफ़ देखती हूं तो आस्मान पर बादल नज़र आते हैं। मैं बे इख़्तियार येह सलाम पढ़ना शुरूअ कर देती हूं :

ऐ सबा मुस्तफ़ा से कह देना

ग़म के मारे सलाम कहते हैं

अचानक मेरे सामने एक हसीनो जमील और नूरानी चेहरे वाले बुजुर्ग सफ़ेद लिबास में मल्बूस सब्ज सब्ज इमामा शरीफ़ का ताज सरे मुबारक पर सजाए मुस्कुराते हुए तशरीफ़ ले आए, मैं अभी नज़्जारे ही में गुम थी कि किसी की आवाज़ सुनाई दी : “येह हुज़ूरे अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ हैं।” फिर मेरी आंख खुल गई। मैं अपनी सआदतों की इस मे'राज पर शिद्दते जज़्बात से रोने लगी। दिल चाहता था कि आंखें बन्द करूं और बार बार वोही मन्ज़र देखूं। अब भी हर रात इसी उम्मीद पर दुरूदे पाक पढ़ते पढ़ते सोती हूं कि काश ! मेरे भाग दोबारा जाग उठें !

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझे पर दुरूद शरीफ़ न पढ़े तो वोह लोगों में से कन्नूस तरीन शख्स है। (सनाहद)

क्या ख़बर आज की शब दीद का अरमां निकले
अपनी आंखों को अक़्रीदत से बिछाए रखिये
صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْبُ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٌ

﴿4﴾ सीधा रास्ता मिल गया

एक इस्लामी बहन के बयान का खुलासा है : हमारा ख़ानदान अक़ाइद के ए'तिबार से मुख़्तलिफ़ ख़ानों में बटा हुवा था, मैं शदीद परेशान थी कि न जाने कौन से लोग सहीह रास्ते पर हैं ! मैं अपने रब عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में दुआएं किया करती कि या अल्लाह ! मुझे सीधे रास्ते पर चलने की तौफीक़ अता फ़रमा । اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ मुझे सीधा रास्ता मिल गया और इस की सूरत यूं बनी कि एक दिन चन्द इस्लामी बहनों ने मुझे तब्लीगे कुरआनो सुन्नत की गैर सियासी तहरीक दा'वते इस्लामी के इस्लामी बहनों के हफ़तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ में शिर्कत की दा'वत पेश की, मैं सुन्नतों भरे इज्तिमाअ में शरीक हुई । वहां एक मुबल्लिगा इस्लामी बहन ने फ़ैज़ाने सुन्नत से देख कर बयान किया, बयान सुन कर मैं ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ से कांप उठी । रिक्कत अंगेज़ दुआ, सलातो सलाम और इस्लामी बहनों की अपनाइयत भरी मुलाक़ातों ने मज़ीद बहुत मुतअस्सिर किया । اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ सुन्नतों भरे इज्तिमाअ में शिर्कत की बरकत से मज़हबे मुहज़ज़ब अहले सुन्नत की सदाक़त पर यकीन की दौलत के साथ साथ मुझे नमाजे पन्जगाना और रमज़ानुल मुबारक के रोज़ों

फ़रमाने मुस्फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : तुम जहाँ भी हो मुझ पर दुरूद पढ़ो कि तुम्हारा दुरूद मुझ तक पहुँचता है। (طبرانی)

की पाबन्दी भी नसीब हुई। यूँ मैं दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल की बरकतों को समेटती समेटती ता दमे तहरीर तहसील जिम्मादार की हैसियत से इस्लामी बहनों में नेकी की दा'वत आम करने के लिये कोशां हूँ।

ज़ालिम हूँ जफ़ाकारो सितमगर हूँ मैं आसी व ख़ताकार भी हृद भर हूँ मैं
 येह सब है मगर प्यारे तेरी रहमत से सुन्नी हूँ मुसल्मान मुकर्रर हूँ मैं
 صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْبُ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

﴿5﴾ मैं गाने लिखती थी

एक इस्लामी बहन के बयान का लुब्बे लुबाब है कि मैं गाने बाजे सुनने की बहुत शौकीन थी। मेरे पास गानों की बहुत सारी केसिटें और किताबें जम्अ थीं बल्कि मैं खुद भी गाने लिखती थी। फ़िल्मों डिरामों की ऐसी दीवानी थी कि लगता था कि शायद इन के बिगैर (مَعَاذَ اللهِ عَزَّوَجَلَّ) मैं जी न सकूंगी। अफ़सोस ! कि निगाहों की हिफ़ाज़त का बिल्कुल भी ज़ेहन नहीं था। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के करम से बिल आख़िर गुनाहों भरी जिन्दगी से कनारा कशी की सूरत बन ही गई, हुवा यूँ कि मैं ने दा'वते इस्लामी के इस्लामी बहनों के हफ़तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ में शिर्कत की सअादत हासिल की। उस सुन्नतों भरे इज्तिमाअ में होने वाले बयान, दुआ और इस्लामी बहनों की इन्फ़रादी कोशिश के मदनी फूलों ने मेरे दिल में मदनी इन्क़िलाब बरपा कर दिया। اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ मैं ने अपने गुनाहों से तौबा की और

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो लोग अपनी मजलिस से अल्लाह के जिक्र और नबी पर दुरूद शरीफ़ पढ़े बिगैर उठ गए तो वोह बदबूदार मुर्दार से उठे। (شعب الایمان)

सुन्नतों भरी ज़िन्दगी गुज़ारने के लिये दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल से वाबस्ता हो गई। ता दमे तहरीर हल्का ज़िम्मादार की हैसियत से सुन्नतों की ख़िदमत की सआदत हासिल कर रही हूँ।

करम जो आप का ऐ सख्थिदे अबरार हो जाए
तो हर बदकार बन्दा दम में नेकूकार हो जाए

(सामाने बख़्शिश)

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ عَلَى مُحَمَّدٍ

﴿6﴾ क़ाबिले रश्क मौत

एक ज़िम्मेदार इस्लामी बहन के बयान का खुलासा है कि मेरी वालिदा एक अर्से से गुर्दों के मरज़ में मुब्तला थीं। रबीउन्नूर शरीफ़ के पुरनूर महीने में पहली मरतबा हम मां बेटी दा'वते इस्लामी के इस्लामी बहनों के अल्लाह, अल्लाह और मरहूबा या मुस्तफ़ा की पुरकैफ़ सदाओं से गूँजते हफ़तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ में शरीक हुए। शर्ई पर्दा करने के लिये मदनी बुरक़अ पहनने, आयिन्दा भी सुन्नतों भरे इज्तिमाआत में शिर्कत करने और मज़ीद अच्छी अच्छी निव्यते कर के हम दोनों घर लौट आईं। रात के वक़्त अम्मीजान को यकायक दिल का दौरा पड़ा, सुन्नतों भरे इज्तिमाअ में गूँजने वाली अल्लाह, अल्लाह की मस्हूर कुन सदाओं का नशा गोया अभी बाकी था शायद इसी लिये मेरी अम्मीजान अपनी ज़िन्दगी के आख़िरी तक़ीबन 25 मिनट अल्लाह, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का विर्द करती रहीं और फिर...

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर रोज़े जुम'आ दो सो बार दुरूदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मु'आफ़ होंगे। (جمع الموعود)

फिर... उन की रूह क़फ़से उन्सुरी से परवाज़ कर गई। اِنَّ اللّٰهَ وَاِنَّ الْيَوْمَ لَاجْمَعٌ اَللّٰهُ رब्बुल इज़्ज़त मर्हमा को ग़रीके रहमत करे और उन को बे हिसाब मग़िफ़रत से नवाज़ कर जन्नतुल फ़िरदौस में अपने महबूब صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का पड़ोस नसीब फ़रमाए और मुझ गुनहगारों के सरदार सगे मदीना غَفْرَةَ الْغَفَّارِ के हक़ में भी येह दुआएं क़बूल करे।

اٰمِيْنَ بِجَاہِ النَّبِيِّ الْاَمِيْنَ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

अफ़्व फ़रमा ख़ताएं मेरी ऐ अफ़ू शौक़ो तौफ़ीक़ नेकी की दे मुझ को तू जारी दिल कर कि हर दम रहे ज़िक़्रे हू अ़ादते बद बदल और कर नेक ख़ू

अल्लाहू अल्लाहू अल्लाहू अल्लाहू

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

﴿7﴾ सफ़रे मदीना की सआदत मिल गई

एक इस्लामी बहन (उम्र तक़रीबन 55 साल) के बयान का खुलासा है कि मैं दा'वते इस्लामी के इस्लामी बहनों के हफ़तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ में पाबन्दी से हाज़िरी से महरूम थी। सुन्नतों भरे बयानात में दा'वते इस्लामी के इज्तिमाआत में क़बूले दुआ के वाक़िआत अगर्चे सुन रखे थे मगर मेरा ए'तिकाद यूं मज़ीद पुख़्ता हुवा कि मैं 3 साल तक सफ़रे मदीना के लिये फ़ोर्म जम्अ करवाती रही लेकिन हाज़िरी की कोई सूरत न बन पाई। अब की बार फ़ोर्म जम्अ करवाया तो मैं ने यूं दुआ मांगी : "يَا اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ ! मैं दा'वते इस्लामी के हफ़तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ में मुसल्लसल 12 हफ़ते

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुझ पर दुरूद शरीफ़ पढ़ो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम पर रहमत भेजेगा । (अबुनूर)

अव्वल ता आख़िर शिर्कत करूंगी, ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुझे सफ़रे मदीना की सअ़ादत से नवाज़ दे ।” اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ अभी 12 हफ़्ते पूरे न हुए थे कि मुझ पर बाबे करम खुल गया और मुझे मदीने का बुलावा आ गया, मैं खुशी खुशी सफ़रे मदीना पर रवाना हो गई । हाज़िरिये मदीना से वापसी पर मैं ने 12 हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ में अव्वल ता आख़िर शिर्कत की निय्यत पर अमल भी किया । اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ ता दमे तहरीर हर हफ़्ते पाबन्दी से हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ में शिर्कत की सअ़ादत पाती हूँ ।

हम ग़रीबों को रोज़े पे बुलवाइये राहे तयबा का ज़ादे सफ़र चाहिये

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

﴿8﴾ बेटी की इस्लाह का राज़

एक इस्लामी बहन के बयान का लुब्बे लुबाब है कि मेरी बेटी फ़िल्मों, डिरामों और बे पर्दगियों वगैरा गुनाहों की आलूदगियों में अपनी ज़िन्दगी के कीमती लम्हों को बरबाद कर रही थी, मैं उस की हरकतों से बेहद परेशान थी, बारहा समझाती मगर वोह एक कान से सुन कर दूसरे से निकाल देती । اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ मैं दा'वते इस्लामी के इस्लामी बहनों के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ में शिर्कत करती थी और इज्तिमाअ में मांगी जाने वाली दुआओं की क़बूलिय्यत के वाक़िआत भी सुना करती थी । चुनान्चे एक मर्तबा मैं ने दा'वते इस्लामी के तहूत होने वाले ग्यारहवीं शरीफ़ के इज्तिमाए ज़िक्रो

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग़िफ़रत है । (ابن عساکر)

ना 'त में अपनी बेटी की इस्लाह के लिये गिड़गिड़ा कर दुआ मांगी । मेरी ख़्वाहिश थी कि मेरी बेटी भी दा'वते इस्लामी की मुबल्लिगा बने । الْحَمْدُ لِلَّهِ عَزَّوَجَلَّ मेरी दुआ क़बूल हुई और मेरी बेटी किसी न किसी तरह इस्लामी बहनों के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ में शरीक होने पर रिज़ा मन्द हो गई । उस ने जब शिर्कत की तो इतनी मुतअस्सिर हुई कि बस दा'वते इस्लामी ही की हो कर रह गई । الْحَمْدُ لِلَّهِ तरक्की की मन्ज़िलें तै करते करते (ता दमे तहरीर) मेरी बेटी हल्का जिम्मादार की हैसियत से सुन्नतों की खिदमतों में मशगूल है ।

गिर पड़ के यहां पहुंचा मर मर के इसे पाया

छूटे न इलाही अब संगे दरे जानाना

(सामाने बख़्शिश)

इस्लामी बहनो ! दा'वते इस्लामी के सुन्नतों भरे इज्तिमाआत में रहमतें क्यूं नाज़िल न होंगी कि इन अशिक़ाने रसूल और आक़ा की दीवानियों में न जाने कितने औलियाए किराम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى होते और वलिय्यात होती होंगी । मेरे आक़ा आ 'ला हज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़तावा रज़विख्या जिल्द 24 सफ़हा 184 पर फ़रमाते हैं : "जमाअत में बरकत है और दुआए मज्मए मुस्लिमीन अक़ब ब क़बूल । (या'नी मुसल्मानों के मज्मअ में दुआ मांगना क़बूलिय्यत के क़रीब तर है) इलमा फ़रमाते हैं : जहां चालीस मुसल्मान सालेह (या 'नी

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने किताब में मुझ पर दुरूदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फिरिश्ते उस के लिये इस्तिग़फ़ार (या'नी बख़्शिश की दुआ) करते रहेंगे। (परान)

नेक मुसल्मान) जम्अ होते हैं उन में से एक वलिय्युल्लाह ज़रूर होता है ।”

(تيسير شرح جامع صغير ج ١ ص ٣١٢ زير حديث ٧١٤ دارالحدیث مصر)

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْبُ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ عَلَى مُحَمَّدٍ

﴿9﴾ मदनी मुन्ना सिद्दहत याब हो गया

एक जिम्मेदार इस्लामी बहन के बयान का खुलासा है कि 2005 सि.ई. में तब्लीगे कुरआनो सुन्नत की ग़ैर सियासी तहरीक दा'वते इस्लामी के सुन्नतों भरे इज्तिमाअ में आख़िरी दिन होने वाली खुसूसी निशस्त की टेलीफ़ोन के ज़रीए इस्लामी बहनों में रिले (RELAY) की तरकीब थी। चुनान्चे हम अपने अलाके की इस्लामी बहनों में इस की दा'वत आम करने में मसरूफ़ थीं। इज्तिमाअ के आख़िरी दिन अलस्सुब्ह हम चन्द इस्लामी बहनें घर घर जा कर इज्तिमाअ में शिर्कत की तरगीब दिला रही थीं इसी दौरान हमारी मुलाक़ात एक निहायत दुख्यारी इस्लामी बहन से हुई, उन्होंने ने ग़मगीन लहजे में कहा : मेरे बच्चे की तबीअत ख़राब है, डॉक्टरों ने उस की रिपोर्ट देख कर किसी मोहलिक बीमारी का ख़दशा जाहिर किया है, आप दुआ कीजियेगा कि “اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلَيَّ” मेरे बेटे को शिफ़ा अता फ़रमाए।” हम ने उस परेशान हाल इस्लामी बहन पर इन्फ़रादी कोशिश करते हुए सुन्नतों भरे इज्तिमाअ की बरकतें सुना कर शिर्कत की दा'वत पेश की। चुनान्चे वोह हाथों हाथ हमारे साथ सुन्नतों

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुझ पर एक दिन में 50 बार दुरूदे पाक पढ़े क़ियामत के दिन मैं उस से मुसाफ़हा करूँ (या'नी हाथ मिलाऊँ)गा । (ابن بشكوال)

भरे इज्तिमाअ की आखिरी निशस्त में शरीक हो गई । इज्तिमाअ में होने वाली रिक्कत अंगेज़ दुआ के दौरान उन्होंने ने अपने बेटे की सिह्हत याबी की दुआ मांगी । चन्द रोज़ बा'द वोह इस्लामी बहन दा'वते इस्लामी के इस्लामी बहनों के हफ़तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ में भी तशरीफ़ लाई और इज्तिमाअ के इख़िताम पर उन्होंने ने जिम्मादार इस्लामी बहन को बताया कि اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी के सुन्नतों भरे इज्तिमाअ की खुसूसी निशस्त में शिर्कत की मुझे ऐसी बरकतें नसीब हुई कि जब मैं ने अपने मुन्ने का दोबारा मेडीकल टेस्ट करवाया तो हैरत अंगेज़ तौर पर रिपोर्ट्स बिल्कुल सहीह आई और अब मेरा मदनी मुन्ना मुकम्मल तौर पर सिह्हत याब हो चुका है । मेरे मुन्ने की अचानक सिह्हत याबी ने डॉक्टरों को भी हैरत में मुब्तला कर दिया है !

वल्लाह वोह सुन लेंगे फ़रियाद को पहुंचेंगे

इतना भी तो हो कोई जो आह ! करे दिल से

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

﴿10﴾ रोज़गार मिल गया

एक जिम्मेदार इस्लामी बहन के बयान का खुलासा है कि हम तवील अर्से से मआशी बदहाली का शिकार थे, मेरे बच्चों के अब्बू को कभी कभार कोई काम मिल जाता वरना अक्सर बे रोज़गार रहते । इसी परेशानी के अ़ालम में मेरी मुलाक़ात दा'वते

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : बरोजे क़ियामत लोगों में से मेरे क़रीब तर वोह होगा जिस ने दुन्या में मुझ पर ज़ियादा दुरूदे पाक पढ़े होंगे । (ترمذی)

इस्लामी की एक मुबल्लिगा से हुई, मैं ने उन्हें अपने हालात बता कर दुआ के लिये कहा तो उन्होंने ने निहायत शफ़क़त से दिलासा दिया और मुझ पर इन्फ़रादी कोशिश करते हुए दा'वते इस्लामी के इस्लामी बहनों के सुन्नतों भरे हफ़तावार इज्तिमाअ में शिर्कत की दा'वत पेश की और मेरा कुछ इस तरह ज़ेहन बनाया कि اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी के सुन्नतों भरे इज्तिमाअ में शिर्कत की ख़ूब ख़ूब बहारें हैं, जहां कसीर इस्लामी बहनों को तौबा की तौफीक़ मिली और वोह गुनाहों भरी ज़िन्दगी छोड़ कर नेक बन गई वहीं बा'ज अवक़ात रब्बे का एनात عَزَّوَجَلَّ की इनायात से ईमान अफ़रोज़ करिश्मात का भी जुहूर होता है मसलन मरीज़ों को शिफ़ा मिली, बे औलादों को औलाद नसीब हुई, आसेब ज़दा को ख़लासी मिली, वग़ैरहा। उन की "इन्फ़रादी कोशिश" के दिल मोह लेने वाले अन्दाज़ ने मुझे सुन्नतों भरे इज्तिमाअ में शरीक होने पर मजबूर कर दिया। चुनान्वे मैं सुन्नतों भरे इज्तिमाअ में शरीक हुई और इख़िताम पर होने वाली रिक्कत अंगेज़ दुआ के दौरान मैं ने येह भी दुआ मांगी कि يَا اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ ! इस इज्तिमाअ में शिर्कत की बरकत से हमारे रोज़गार के मस्अले को हल़ फ़रमा दे। اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ। अभी चन्द ही रोज़ गुज़रे थे कि अल्लाहु ग़फ़ार عَزَّوَجَلَّ ने मेरे बच्चों के अब्बू को बेहतरीन सिल्सलए रोज़गार अता फ़रमा दिया। اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ। इस तरह दा'वते इस्लामी के सुन्नतों भरे इज्तिमाअ में शिर्कत की बरकत से हमारी बदहाली खुशहाली में तब्दील हो गई।

फ़रमाने मुस्त्फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर एक मरतबा दुरूद पढ़ा अल्लाह उस पर दस रहमतें भेजता और उस के नामए आ'माल में दस नेकियां लिखता है। (ترمذی)

दो² आलम में बटता है सदका यहां का
हमीं इक नहीं रेज़ा ख़्वारे मदीना

(जौके ना'त)

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْبُ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٌ

﴿11﴾ सच्ची निय्यत की बरकत

एक जिम्मेदार इस्लामी बहन के बयान का लुब्बे लुबाब है कि दा'वते इस्लामी के तीन³ रोज़ा सुन्नतों भरे इज्तिमाअ की आमद आमद थी। आख़िरी दिन की ख़ूसूसी निशस्त का बयान, ज़िक्र व दुआ और सलातो सलाम ब जरीअए टेलीफ़ोन इस्लामी बहनों के बा पर्दा इज्तिमाआत में भी रिले किया जाता है। चुनान्चे हमारे अलाके की इस्लामी बहनों ने घर घर जा कर सुन्नतों भरे इज्तिमाअ की दा'वत को आम करना शुरूअ कर दिया, उन इस्लामी बहनों में मर्हूमा ज़ाहिदा अत्तारिय्या भी शामिल थीं, उन का जज़्बा काबिले दीद था, वोह सुन्नतों भरे इज्तिमाअ की आख़िरी निशस्त में शिर्कत के लिये इस्लामी बहनों पर भरपूर इन्फ़रादी कोशिश और उन्हें इज्तिमाअ गाह में ले जाने के इन्तिज़ामात में मसरूफ़ दिखाई देती थीं। सुन्नतों भरे इज्तिमाअ से एक हफ़्ता क़ब्ल इतवार के दिन अचानक उन की तबीअत ख़राब हो गई और उन्हें अस्पताल में ले जाया गया जहां हालत देखते हुए उन्हें फ़ौरन दाख़िल कर लिया गया। तीन³ रोज़ बिस्तरे अलालत पर रहने के बा'द वोह मंगल के रोज़ इस दुन्याए फ़ानी से कूच फ़रमा गई,

फ़रमाने मुस्त्फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : शबे जुमुआ और रोज़े मुझ पर दुरूद की कसरत कर लिया करो जो ऐसा करेगा क़ियामत के दिन मैं उस का शफ़ीअ व गवाह बनूंगा । (شعب الایمان)

إِنَّا لِلّٰهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ رَاجِعُونَ इतवार के रोज़ सुन्नतों भरे इज्तिमाअ की आख़िरी निशस्त में उन के अलाके की कसीर इस्लामी बहनों ने शिकत की । अचानक एक इस्लामी बहन ने येह ईमान अफ़रोज़ मन्ज़र देखा कि चन्द रोज़ क़ब्ल इन्तिक़ाल कर जाने वाली दा 'वते इस्लामी की मुबल्लिग़ा ज़ाहिदा अत्तारिय्या मर्हूमा भी सुन्नतों भरे इज्तिमाअ में शरीक हैं । अल्लाहु रब्बुल इज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ की उन पर रहमत हो और उन के सदके हमारी मग़िफ़रत हो ।

أَمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْأَمِين صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

आप महबूब हैं अल्लाह के ऐसे महबूब

हर मुह़िब आप का महबूबे ख़ुदा होता है

(सामाने बख़्शिश)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

﴿12﴾ औलाद मिली, पाउं का दर्द मिटा

एक इस्लामी बहन के तहरीरी बयान का खुलासा है कि मैं नित नए फ़ेशन की शौकीन और नमाज़ें क़ज़ा कर देने की आदी थी । हमारी खुश बख़्ती कि मेरी एक बेटी दा 'वते इस्लामी के मुश्कवार मदनी माहोल से वाबस्ता हो गई । वोह मुझे भी इन्फ़रादी कोशिश के ज़रीए सुन्नतों भरे इज्तिमाअ की दा 'वत देती रहती थी लेकिन मैं उस की बात को नज़र अन्दाज़ कर दिया करती थी । एक मरतबा हस्बे मा 'मूल मेरी बेटी ने मुझ पर "इन्फ़रादी कोशिश" की

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुझ पर एक बार दुरुद पढ़ता है अल्लाह उस के लिये एक क़ीरात अन्न लिखता है और क़ीरात उहुद पहाड़ जितना है। (عبارت)

और मुझे दा'वते इस्लामी के इज्तिमाआत में शिर्कत की एक बरकत यह भी बताई कि **الْحَيِّبُ لِلَّهِ عَزَّوَجَلَّ** दा'वते इस्लामी के इज्तिमाआत में शरीक होने वालियों की दुआओं की क़बूलियत के कई वाक़िआत हैं, लिहाज़ा आप भी इज्तिमाअ में शरीक हों और भाई के लिये दुआ कीजिये। बात यह थी कि मेरे बेटे की शादी को 4 साल का अर्सा गुज़र चुका था मगर वोह औलाद की ने'मत से महरूम था। चुनान्वे मैं ने अपनी बेटी की तरगीब पर यह नियत की, कि **إِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ** मैं दा'वते इस्लामी के सुन्नतों भरे इज्तिमाअ में शिर्कत करूंगी और अपने बेटे के लिये औलाद की दुआ मांगूंगी। **الْحَيِّبُ لِلَّهِ عَزَّوَجَلَّ** मैं ने सुन्नतों भरे इज्तिमाअ में पाबन्दी से शिर्कत करना शुरू कर दी। वहां मैं अपने बेटे के लिये भी दुआ किया करती। कुछ ही अर्से में **عَزَّوَجَلَّ** ने मेरे बेटे को औलाद की ने'मत से मालामाल फ़रमा दिया। सुन्नतों भरे इज्तिमाअ में शिर्कत की एक और बरकत यह भी मिली कि तक्रीबन 3 साल से मेरे पाउं में जो शदीद तक्लीफ़ रहती थी **الْحَيِّبُ لِلَّهِ عَزَّوَجَلَّ** मुझे उस से भी नजात मिल गई।

मांगेंगे मांगे जाएंगे मुंह मांगी पाएंगे

सरकार में न "ला" है न हाजत "अगर" की है

(हदाइके बख़्शिश)

صَلُّوا عَلَى الْحَيِّبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जब तुम रसूलों पर दुरूद पढ़ो तो मुझ पर भी पढ़ो, बेशक मैं तमाम जहानों के रब का रसूल हूँ। (جمع الجوامع)

﴿13﴾ मेरे मसाइल हल हो गए

एक मुअम्मर इस्लामी बहन का हल्फ़िय्या बयान कुछ इस तरह है कि मैं मुख़ालिफ़ घरेलू मसाइल में गिरिफ़्तार थी। हम किराए के मकान में रहते थे, मगर आमदनी कम होने की वजह से किराया भी वक़्त पर न दे पाते। बच्चियां भी जवान हो रही थीं, उन की शादियों की फ़िक्र अलग खाए जा रही थी। एक रोज़ किसी इस्लामी बहन से मेरी मुलाक़ात हुई, उन्होंने मेरी ग़म ख़्तारी की और इन्फ़ि़रादी कोशिश करते हुए दा'वते इस्लामी के इस्लामी बहनों के हफ़तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ में पाबन्दी के साथ शिर्कत की निय्यत करवाई और वहां आ कर अपने मसाइल के लिये दुआ करने की भी तरगीब दी। मैं हफ़तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ में शिर्कत की सआदत हासिल करने लगी। मैं वहां अपने मसाइल के हल के लिये अल्लाह की बारगाह में दुआ भी किया करती। कुछ ही अर्सा गुज़रा था कि अल्लाहु रब्बुल इज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ के करम से मेरे बच्चों के अब्बू को अच्छी मुलाज़मत मिल गई और करम बालाए करम येह हुवा कि कुछ ही अर्से में हम ने किराए का घर छोड़ कर अपना ज़ाती मकान भी ख़रीद लिया। अल्लाहु मुजीब عَزَّوَجَلَّ ने अपने हबीबे लबीब صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के सदके, सुन्नतों भरे इज्तिमाआत में शिर्कत की बरकत से बच्चियों की शादियों के फ़रीजे से ओहदा बरआ होने की ताक़त भी इनायत फ़रमा दी। इस तरह दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुझ पर दुरूद पढ़ कर अपनी मजालिस को आरास्ता करो कि तुम्हारा दुरूद पढ़ना बरोजे क़ियामत तुम्हारे लिये नूर होगा । (फ़रुस الاعمال)

की बरकत से हमारा मसाइल का रेगिस्तान, हंसते मुस्कुराते लहलहाते गुलिस्तान में तब्दील हो गया । اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ

बे कसो बे बसो बे यारो मददगार हो जो

आप के दर से शहा सब का भला होता है (सामाने बरिख़ाश)

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

﴿14﴾ मदनी इन्आमात पर अमल की बरकत से चल मदीना की सआदत मिल गई

एक इस्लामी बहन के हल्फ़िय्या बयान का खुलासा कुछ यूं है कि اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ हमारा घराना आकाए ने'मत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن के एक अज़ीमुल मर्तबत ख़लीफ़ा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ की औलाद से है । सय्यिदी आ'ला हज़रत رَحْمَةُ رَبِّ الْعَزَّاتِ عَلَيْهِ के वोह ख़लीफ़ए मुकर्रम मेरी वालिदए मोहतरमा के नानाजान थे और हमारे तमाम अहले ख़ाना उन्हीं के दस्ते मुबारक पर बैअत थे । उन से बैअत की बरकत से اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ सय्यिदी आ'ला हज़रत رَحْمَةُ رَبِّ الْعَزَّاتِ عَلَيْهِ की महब्बत व अक्कीदत रगो पै में सरायत किये हुए थी, लेकिन अमली ज़िन्दगी में हमारी मिसाल कोरे कागज़ की सी थी बिल खुसूस नमाज़ों की पाबन्दी से महरूमी थी नीज़ फ़ेशन परस्ती और गाने बाजे सुनने की नुहूसत छाई थी, गुस्सा और चिड़चिड़ा पन हमारी आदते सानिया थी । मेरे फूफीज़ाद भाई ने (जो कि दा'वते इस्लामी के मुश्कबार मदनी माहोल से वाबस्ता थे) इन्फ़रादी कोशिश

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत करो बेशक यह तुम्हारे लिये त्हा़रत है। (ابوعلیٰ)

करते हुए मेरे भाईजान को भी दा'वते इस्लामी के हफ़तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ में शिर्कत की न सिर्फ़ दा'वत दी बल्कि अपने साथ ले जाना शुरूअ कर दिया। भाईजान सुन्नतों भरे इज्तिमाअ से वापसी पर इज्तिमाअ की रूदाद सुनाते जिन में सय्यिदी आ'ला हज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعَزَّاتِ का जि़क्रे ख़ैर सुनने को मिलता जिस की वज्ह से मुझे दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल से अपनाइय्यत सी महसूस होने लगी। اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلَيْهِ इसी अपनाइय्यत की सोच ने मुझे पहली बार 1985 सि.ई. के सालाना सुन्नतों भरे इज्तिमाअ की खुसूसी निशस्त में शिर्कत पर उभारा। चुनान्चे मैं भी इस्लामी बहनों के साथ इज्तिमाअ में शरीक हुई जहां हम ने पर्दे में रह कर सुन्नतों भरे इज्तिमाअ में होने वाला बयान सुना और रिक्कत अंगेज़ दुआ मांगी। اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلَيْهِ उसी इज्तिमाअ में शिर्कत की बरकत से मुझे गुनाहों से तौबा करने की सआदत नसीब हुई, फ़िक्रे आख़िरत मिली। जिस पर इस्तिक़ामत पाने के लिये मैं ने मदनी इन्आमात पर अमल करना शुरूअ कर दिया। मदनी इन्आमात की बरकत से اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلَيْهِ मुझे चल मदीना की सआदत भी नसीब हो गई।¹

चल मदीना वोही हो सके जिस का दिल घर में रह कर भी अक्सर मदीने में है

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

داينيه

1. अमीरे अहले सुन्नत دامت بركاتهم العالیه के काफ़िले के साथ हज़ व जि़यारते मदीना से मुशर्रफ़ होना दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल में “चल मदीना” की सआदत पाना कहलाता है।

मजलिसे मक्तबतुल मदीना

फ़रमाने मुस्त्फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुझ पर रोज़े जुमुआ दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा मैं कियामत के दिन उस की शफ़ाअत करूंगा । (कोशिस)

﴿15﴾ बिगैर ओपरेशन विलादत हो गई

एक इस्लामी भाई के बयान का लुब्बे लुबाब है : ग़ालिबन 1998 सि.ई. का वाकिआ है, मेरी अहलिया उम्मीद से थीं, दिन भी “पूरे” हो गए थे। डॉक्टर का कहना था कि शायद ओपरेशन करना पड़ेगा। तब्लीगे कुरआनो सुन्नत की ग़ैर सियासी तहरीक, दा'वते इस्लामी का तीन³ रोज़ा सुन्नतों भरा इज्तिमाअ क़रीब था। इज्तिमाअ के बा'द सुन्नतें सिखने के लिये 30 दिन के मदनी क़ाफ़िले में आशिकाने रसूल के हमराह सफ़र की मेरी निय्यत थी। इज्तिमाअ के लिये रवानगी के वक़्त, सामाने क़ाफ़िला साथ ले कर अस्पताल पहुंचा, चूँकि ख़ानदान के दीगर अफ़राद तआवुन के लिये मौजूद थे, अहलियाए मोहतरमा ने अशक़बार आंखों से मुझे सुन्नतों भरे इज्तिमाअ के लिये अल वदाअ किया।

मेरा ज़ेहन येह बना हुवा था कि अब तो मुझे सुन्नतों भरे इज्तिमाअ और फिर वहां से 30 दिन के मदनी क़ाफ़िले में ज़रूर सफ़र करना है कि काश ! इस की बरकत से आफ़िय्यत के साथ विलादत हो जाए। मुझ ग़रीब के पास तो ओपरेशन के अख़्राजात भी नहीं थे ! बहर हाल मैं इज्तिमाअ में हाज़िर हो गया। सुन्नतों भरे इज्तिमाअ में गिड़गिड़ा कर ख़ूब दुआएं मांगीं। इज्तिमाअ की इख़ितामी रिक्कत अंगेज़ दुआ के बा'द मैं ने घर पर फ़ोन किया तो मेरी अम्मीजान ने फ़रमाया : मुबारक हो ! गुज़श्ता रात रब्बे काएनात عَزَّوَجَلَّ ने बिगैर ओपरेशन के तुम्हें चांद सी मदनी मुन्नी अता फ़रमाई

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह (स.प.) उस पर दस रहमतें भेजता है।

है। मैं ने खुशी से झूमते हुए अर्ज़ की : अम्मीजान ! मेरे लिये क्या हुक्म है ? आ जाऊं या 30 दिन के लिये मदनी क़ाफ़िले का मुसाफ़िर बनूं ? अम्मीजान ने फ़रमाया, “बेटा ! बे फ़िक्र हो कर मदनी क़ाफ़िले में सफ़र करो।”

अपनी मदनी मुन्नी की ज़ियारत की हसरत दिल में दबाए मैं 30 दिन के मदनी क़ाफ़िले में अशिक़ाने रसूल के साथ रवाना हो गया। अम्मीजान मदनी क़ाफ़िले में सफ़र की निय्यत की बरकत से मेरी मुशिकल आसान हो गई थी मदनी क़ाफ़िलों की बहारों की बरकत के सबब घर वालों का बहुत ज़बर दस्त मदनी ज़ेहन बन गया, हत्ता कि मेरे बच्चों की अम्मी का कहना है, जब आप मदनी क़ाफ़िले के मुसाफ़िर होते हैं मैं बच्चों समेत अपने आप को महफूज़ तसव्वुर करती हूँ।

जचगी आसान हो, ख़ूब फ़ैज़ान हो गम के साए ढलें, क़ाफ़िले में चलो
बीवी बच्चे सभी, ख़ूब पाएं ख़ुशी ख़ैरियत से रहें, क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

﴿16﴾ घर वालों पर इन्फ़िरादी कोशिश कीजिये

इस्लामी बहनो ! येह मदनी बहार अपने अन्दर इस्लामी भाइयों और इस्लामी बहनों सभी के लिये रहमत के महक्ते मदनी फूल लिये हुए है, इस्लामी बहनों को चाहिये कि वोह अपने बच्चों, उन के अब्बू, अपने वालिद साहिब, भाइयों, वगैरा महारिम पर ख़ूब इन्फ़िरादी कोशिश करें, इतनी करें इतनी करें और इतनी करें कि वोह

فَرَمَانِے مُسْتَفَا صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : جُو مُذَلَّ پَر دَس مَرَتَبَا دُرُودِے پَاک پَدَّے اَللّٰہُ اَرْجَلُ عَلَّیْہِ رَحْمَتِے نَاجِلُ فَرَمَاتَا هَے । (طَرَبَانِ) اُس پَر سُو رَحْمَتِے نَاجِلُ فَرَمَاتَا هَے ।

सब के सब पक्के नमाज़ी, सुन्नतों के आदी, हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ के पाबन्द, मदनी इन्आमात के आमिल, हर माह तीन दिन के मदनी क़ाफ़िलों के मुसाफ़िर और दा'वते इस्लामी के बा अमल मुबल्लिग़ बन जाएं। इस तरह اِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَلَيْكُمْ आप के लिये सवाब का अम्बार लग जाएगा। सुन्नतें सिखाने और नेकियों की तरगीब दिलाने का अज़ीमुश्शान सवाब कमाने के लिये क्या ही अच्छा होता कि आप फ़ैज़ाने सुन्नत जिल्द अव्वल से “घर दर्स” शुरूअ कर देतीं! आप की तरगीब व तहरीस के लिये चार अहदीसे मुबारका पेश की जाती हैं :

صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

﴿1﴾ नेकी की राह दिखाने वाला नेकी करने वाले की तरह है।⁽¹⁾

﴿2﴾ अगर अल्लाह तआला तुम्हारे ज़रीए किसी एक शख्स को हिदायत अता फ़रमाए तो यह तुम्हारे लिये इस से अच्छा है कि तुम्हारे पास सुख् ऊंट हों।² ﴿3﴾ बेशक अल्लाह तआला, उस के फ़िरिश्ते, आस्मान और ज़मीन की मख़्लूक यहां तक कि च्यूंटियां अपने सूरखों में और मछलियां (पानी में) लोगों को नेकी सिखाने वाले पर “सलात” भेजते हैं।⁽³⁾ मुफ़स्सिरे

شَہِیْرُ هَکِیْمُलْ اُمَّمَتْ هَज़َرْتِے مُفْتِیْ اَهْمَدْ یَارِ خَیْرَانِ عَلَیْہِ رَحْمَةُ اللّٰحْنَانِ फ़रमाते हैं : अल्लाह اَرْجَلُ की “सलात” से उस की खास रहमत और मख़्लूक की “सलात” से खुसूसी दुआए रहमत मुराद है। (मिरआतुल

मनाजीह, जि. 1, स. 200) ﴿4﴾ बेहतरीन सदका यह है कि मुसलमान आदमी इल्म हासिल करे फिर अपने मुसलमान भाई को सिखाए।⁽⁴⁾

(1) سُنَنُ الرُّؤْمِیَّةِ ج ٤ ص ٣٠٥ حدیث ٢٦٧٩ (2) صَحِیحُ مُسْلِمْ ص ١٣١١ حدیث ٢٤٠٦

(3) سُنَنُ الرُّؤْمِیَّةِ ج ٤ ص ٣١٤ حدیث ٢٦٩٤ (4) سُنَنُ ابْنِ مَاجَه ج ١ ص ١٥٨ حدیث ٢٤٣

फ़रमाने मुस्त्फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा तहकीक़ वोह बद बख़्त हो गया । (अहूँ)

﴿17﴾ बेटा सिद्दहत याब हो गया

एक इस्लामी बहन के बयान का खुलासा है कि दा'वते इस्लामी की कुछ इस्लामी बहनें नेकी की दा'वत देने के लिये हमारे घर आया करतीं, वोह मुझ पर इन्फ़िरादी कोशिश करते हुए इस्लामी बहनों के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ और अलाकाई दौरा बराए नेकी की दा'वत में शिर्कत की दा'वत पेश करतीं मगर मैं सुस्ती के बाइस इस सआदत से महरूम रहती । एक दिन अचानक मेरे बेटे की तबीअत ख़राब हो गई, डॉक्टर को दिखाया तो उस ने अन्देशा ज़ाहिर किया कि शायद अब येह बच्चा उम्र भर टांगों के सहारे चल न सके, नीज़ इस का दिमागी तवाजुन भी ठीक नहीं रहा । येह सुन कर मेरे पाउं तले से ज़मीन निकल गई ! हर मां की तरह मुझे भी अपने बेटे से बहुत महबबत थी, इस सदमे ने मुझे नीम जान कर दिया । कुछ दिन इसी हालत में गुज़र गए । एक दिन फिर वोही इस्लामी बहनें नेकी की दा'वत के लिये आई । उन्हों ने मेरे चेहरे पर परेशानी के आसार देखे तो ग़म ख़्वारी करते हुए पूछा : “ख़ैरियत तो है आप परेशान दिखाई दे रही हैं ?” मैं ने उन्हें सारा माजरा कह सुनाया तो उन्हों ने मुझे बहुत हौसला दिया और कहा कि आप दा'वते इस्लामी के 12 हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाआत में पाबन्दी से शिर्कत कीजिये और वहां पर अपने बच्चे के लिये दुआ भी मांगिये, اِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ आप का बेटा सिद्दहत याब हो जाएगा । चुनान्वे मैं ने 12 इज्तिमाआत में शिर्कत की पुख़्ता निय्यत कर

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर सुबह व शाम दस दस बार दुरूदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअत मिलेगी । (مُحَمَّدٌ الرَّوَاهِيُّ)

ली । जब मैं पहली मर्तबा सुन्नतों भरे इज्तिमाअ में शरीक हुई और जब वहां रिक्कत अंगेज़ दुआ हुई तो मैं ने भी अपने रब्बे दावर عَزَّوَجَلَّ से अपने लख्ते जिगर की सिद्दहत याबी की गिड़गिड़ा कर दुआ मांगी । इज्तिमाअ के बा'द जब घर वापस आई तो मुझे अपने बेटे की तबीअत पहले से बेहतर दिखाई दी । اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ वक़्त गुज़रने के साथ साथ मेरा बेटा मुकम्मल तौर पर सिद्दहत याब हो गया । यूँ डॉक्टरों के अन्देशे ग़लत साबित हुए और सुन्नतों भरे इज्तिमाअ में शर्कत की बरकत से मेरा बेटा चलने फिरने भी लगा । اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ ता दमे तहरीर हमारा सारा घराना दा'वते इस्लामी के मदनी माहौल से वाबस्ता हो कर जन्नत की तय्यारी में मसरूफ़ है ।

मेरे ग़ौस का वसीला रहे शाद सब क़बीला

इन्हें ख़ुल्द में बसाना मदनी मदीने वाले

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

इस्लामी बहनो ! देखा आप ने ! सुन्नतों भरे इज्तिमाअ की बरकत से किस तरह मन की मुरादें बर आती हैं ! उम्मीदों की सूखी खेतियां हरी हो जाती हैं, दिलों की पज़मुर्दा कलियां खिल उठती हैं और खानमां बरबादों की खुशियां लौट आती हैं । मगर येह ज़ेहन में रहे कि ज़रूरी नहीं हर एक की दिली मुराद लाजिमी ही पूरी हो । बारहा ऐसा होता है कि बन्दा जो त़लब करता है वोह उस के हक़ में बेहतर नहीं होता और उस का सुवाल पूरा नहीं किया जाता । उस की मुंह मांगी मुराद

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़ा उस ने जफ़ा की। (عبدالرزاق)

न मिलना ही उस के लिये इन्आम होता है। मसलन येही कि वोह औलादे नरीना मांगता है मगर उस को मदनी मुन्नियों से नवाज़ा जाता है और येही उस के हक़ में बेहतर भी होता है। चुनान्वे पारह दूसरा सूरतुल बक़रह की आयत नम्बर 216 में रब्बुल इबाद عَزَّوَجَلَّ का इशदि हकीकत बुन्याद है :

عَسَىٰ أَنْ تَجِبُوا شَيْئًا

وَهُوَ شَرٌّ لَّكُمْ
(ب ۲ البقرة २१६)

तरजमए कन्जुल ईमान : करीब है कि कोई बात तुम्हें पसन्द आए और वोह तुम्हारे हक़ में बुरी हो।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

﴿18﴾ इसी माहोल ने अदना को आ 'ला कर दिया देखो !

एक इस्लामी बहन के बयान का लुब्बे लुबाब है कि वालिदैन के बेहद इसरार पर मैं ने कुरआने पाक हिफ़ज़ करने की सआदत तो हासिल कर ली थी मगर बा'द में इस को दोहराना छोड़ दिया था जिस की वजह से वालिदैन को सख़्त तश्वीश थी। इतनी अज़ीम सआदत हासिल कर लेने के बा वुजूद अफ़सोस ! मेरी अमली कैफ़ियत येह थी कि मैं नमाज़ों की पाबन्दी से गाफ़िल थी। नित नए फ़ेशन अपनाने और फ़िल्मी गाने सुनने की तो इतनी शौकीन थी कि हेडफ़ोन लगा कर बा'ज़ अवकात तो सारी सारी रात गाने सुनने में बरबाद कर देती ! T.V. की तबाह कारियों ने मुझे बहुत बुरी तरह अपनी लपेट में लिया हुआ था, चुनान्वे मैं फ़िल्में डिरामे देखने की ख़ूब ही रसिया थी, बिल

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुझ पर रोजे जुमुआ दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअत करूंगा । (جمع الجوامع)

खुसूस एक गुलूकार के गानों की तो इस क़दर दीवानी थी कि मेरी सहेलियां मज़ाक़न कहा करती थीं कि येह तो मरते वक़्त भी उसी गुलूकार को याद करते हुए दम तोड़ेगी ! सद करोड़ अफ़सोस कि अगर मैं उस गुलूकार का कोई शो (प्रोग्राम) न देख पाती तो रो रो कर बुरा हाल कर लेती यहां तक कि खाना भी छूट जाता ! अल ग़रज़ मेरे सुब्हो शाम यूंही गुनाहों में बसर हो रहे थे । मेरी मुमानी दा 'वते इस्लामी के इस्लामी बहनों के सुन्नतों भरे इज्तिमाअत में शिर्कत किया करती थीं । वोह मुझे भी इज्तिमाअ में शिर्कत की दा 'वत देतीं मगर मैं टाल देती । उन की मुसल्लसल इन्फ़िरादी कोशिश के नतीजे में बिल आख़िर मुझे दा 'वते इस्लामी के हफ़तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ में शिर्कत की सअादत हासिल हो ही गई, इज्तिमाअ में होने वाले सुन्नतों भरे बयान, जिक्कुल्लाह عَزَّوَجَلَّ और रिक्कत अंगेज़ दुआ ने मुझ पर बहुत गहरा असर डाला । एक हल्का जिम्मादार इस्लामी बहन मुझ पर बड़ी शफ़क़त फ़रमातीं और मुझे घर से बुला कर सुन्नतों भरे इज्तिमाअ में शिर्कत करवातीं । उन की मुसल्लसल शफ़क़तों के सबब मेरी इस्लाह का सामान होने लगा हत्ता कि फ़िल्में डिरामे देखने, गाने बाजे सुनने और दीगर गुनाहों से मैं ने तौबा कर ली । मक्तबतुल मदीना के जारी कर्दा सुन्नतों भरे बयानात की केसिटें सुनती तो ख़ौफ़े खुदा से लरज़ कर रह जाती कि अगर यूंही गुनाह करते करते मुझे मौत आ गई तो मेरा क्या बनेगा ! इसी तरह मक्तबतुल मदीना से शाएअ होने वाली कुतुब

फ़रमाने मुस्त्फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा उस ने जन्नत का रास्ता छोड़ दिया। (طبرانی)

व रसाइल पढ़ कर मुझ में एहसासे ज़िम्मेदारी पैदा हुआ और मैं भी इस्लामी बहनों के साथ मिल कर नेकी की दा'वत आम करने में मसरूफ़ हो गई। ज़िम्मेदार इस्लामी बहन मुझे जो भी ज़िम्मेदारी देतीं मैं ब हुस्नो ख़ूबी निभाने की कोशिश करती। यूँ दा'वते इस्लामी का मदनी काम करते करते اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ ता दमे तहरीर अलाकाई मुशावरत की ख़ादिमा (ज़िम्मादार) की हैसियत से दा'वते इस्लामी के मदनी काम को बढ़ाने में कोशां हूँ। اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ मुफ़्तये दा'वते इस्लामी हाफ़िज़ मुहम्मद फ़ारूक अत्तारी मदनी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْعَمِي ك़ि जिन के अहदे तालिबे इल्मी का वाक़िआ है कि आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ कुरआने पाक की कुल सात मन्ज़िलों में से रोज़ाना एक मन्ज़िल तिलावत फ़रमाया करते थे मैं भी उन की पैरवी में रोज़ाना एक मन्ज़िल की दोहराई कर के हर सात दिन में एक बार ख़तमे कुरआन की सआदत हासिल कर रही हूँ। इलाही عَزَّوَجَلَّ इस्तिक़ामत दे।

اٰمِيْنَ بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْنَ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

इस्तिक़ामत दीन पर या मुस्त्फ़ा कर दो अता

बहरे ख़ब्बाबो बिलालो आले यासिर या नबी

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

दा'वते इस्लामी का मदनी माहोल कितना प्यारा प्यारा है।

इस के दामन में आ कर मुआशरे के न जाने कितने ही बिगड़े हुए अफ़राद बा किरदार बन कर सुन्नतों भरी बा इज़्ज़त ज़िन्दगी गुज़ारने लगे नीज़ इस्लामी बहनों के हफ़तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाआत की

फ़रमाने मुस्फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुझे पर दुरूदे पाक की कसरत करो बेशक तुम्हारा मुझे पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे लिये पाकीज़गी का बाइस है। (बोसल)

बहारें भी आप के सामने हैं। जिस तरह इज्तिमाअ में शिर्कत की बरकत से बा'जों की दुन्यवी मुसीबत रुख़सत हो जाती है। إِنَّ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ। इसी तरह ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, सरापा रहमत, शफ़ीए उम्मत صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की शफ़ाअत से मा'सियत की शामत के सबब आने वाली आख़िरत की आफ़त भी राहत में ढल जाएगी।

टूट जाएंगे गुनहगारों के फ़ौरन क़ैदो बन्द

हज़र को खुल जाएगी ताक़त रसूलुल्लाह की

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ وَعَلَىٰ مَحَبَّتِي

﴿19﴾ मैं पेन्ट शर्ट पहनती थी

एक इस्लामी बहन का बयान कुछ यूँ है कि मैं मगरिबी तहज़ीब की जुनून की हद तक दिलदादा थी हत्ता कि लड़कों की तरह पेन्ट शर्ट पहना करती, ना महरम मर्दों के साथ बिला झिजक गुफ़्तगू करती और बद तमीज़ किस्म के दोस्तों की सोहबत में रहा करती थी। मेरे वालिद साहिब होटल चलाते थे, मैं इतनी बेबाक थी कि वालिद साहिब के मन्अ करने के बा वुजूद होटल के काउन्टर पर बैठ जाया करती थी! मैं एक स्कूल में पढ़ती थी, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की शान कि अचानक मेरे दिल में दीनी मद्रसे में पढ़ने का शौक पैदा हुवा! मैं ने जब वालिद साहिब से इस का इज़हार किया तो उन्होंने ने मौक़अ ग़नीमत जाना और मुझे हाथों हाथ दा'वते इस्लामी के मद्रसतुल मदीना (लिल बनात) में दाख़िल करवा दिया। मैं ने वहां कुरआने पाक पढ़ना शुरूअ कर

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़े तो वोह लोगों में से कन्नूस तरीन शख्स है। (مسند احمد)

दिया। चन्द दिन बा'द हमारी मुअल्लिमा ने हमें दा'वते इस्लामी के सुन्नतों भरे इज्तिमाअ के बारे में बताया और घर घर जा कर नेकी की दा'वत के ज़रीए इस्लामी बहनों में इज्तिमाअ की दा'वत आम करने की तरगीब दी। हम ख़ूब जोशो ख़रोश के साथ इस सुन्नतों भरे इज्तिमाअ की दा'वत आम करने में मसरूफ़ हो गई। मुझे इज्तिमाअ के आख़िरी दिन की ख़ुसूसी निशस्त का बड़ी बेचैनी से इन्तिज़ार था क्यूं कि मैं ने पहले कभी भी इज्तिमाअ में शिर्कत नहीं की थी। बिल आख़िर इन्तिज़ार की घड़ियां ख़त्म हुईं और वोह दिन भी आ ही गया! मैं ने बड़े जज़्बे के साथ सुन्नतों भरे इज्तिमाअ की ख़ुसूसी निशस्त में शिर्कत की सअदत हासिल की। जिस में "गुनाहों का इलाज" के मौजूअ पर होने वाला टेलीफ़ोनिक बयान सुनने का शरफ़ हासिल हुवा, बयान सुन कर मैं ख़ौफ़े खुदा عَزَّوَجَلَّ से थर्रा उठी, मुझे एक दम एहसास हो गया कि हाए हाए! मैं अपने रब عَزَّوَجَلَّ की कैसी कैसी ना फ़रमानियों में मुब्तला हूं! आख़िर में रिक्कत अंगेज़ दुआ हुई, दौराने दुआ इज्तिमाअ में शरीक बे सुमार इस्लामी बहनों की गिर्या व ज़ारी देख कर मेरी आंखों से भी आंसू बह निकले, मेरा दिल नदामत के समुन्दर में गोते खाने लगा। اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ मैं ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में अपने हर गुनाह से तौबा की और अपनी इस्लाह का अज़्मे मुसम्मम कर लिया। मद्रसतुल मदीना के ज़रीए इज्तिमाअ में हाज़िरी और वहां लगी हुई मदनी चोट की बरकत से मैं दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल से

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : तुम जहाँ भी हो मुझ पर दुरूद पढ़ो कि तुम्हारा दुरूद मुझ तक पहुंचता है। (मुरान)

वाबस्ता हो गई, الْحَمْدُ لِلَّهِ عَزَّ وَجَلَّ मैं ने शरई पर्दा शुरू कर दिया और नमाज़ों की भी पाबन्द हो गई। आज मेरे वालिदैन मुझ से बहुत खुश और दा'वते इस्लामी के एहसान मन्द हैं कि जिस की बरकत से उन की फ़ेशन ज़दा बेटी सुन्नतों भरी ज़िन्दगी की शाहराह पर गामज़न हो गई।

सुन्नतें मुस्तफ़ा की तू अपनाए जा दीन को ख़ूब मेहनत से फैलाए जा
येह वसियत तू अत्तार पहुंचाए जा उस को जो उन के ग़म का तलब गार है

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

﴿20﴾ मैं रोज़ाना तीन, चार फ़िल्में देख डालती !

एक इस्लामी बहन के बयान का खुलासा है कि दा'वते इस्लामी के मुश्कवार मदनी माहोल से वाबस्ता होने से क़ब्ल मैं एक मोडर्न लड़की थी। दुन्यवी ता'लीम हासिल करने का जुनून की हृद तक शौक़ था, फ़िल्म बीनी का भूत तो कुछ ऐसा सुवार था कि मैं एक रात में तीन तीन चार चार फ़िल्में देख डालती ! और مَعَاذَ اللهِ عَزَّ وَجَلَّ गानों की भी ऐसी रसिया थी कि घर का कामकाज करते वक़्त भी टेप रिकोर्डर पर ऊंची आवाज़ से गाने लगाए रखती। मेरी एक बहन को (जो कि शादी हो जाने के बा'द दूसरे शहर में रिहाइश पज़ीर थीं) दा'वते इस्लामी से बड़ी महबूबत थी। वोह जब कभी आतीं तो इतवार के दिन दा'वते इस्लामी के मदनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना में होने वाले हफ़तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ में ज़रूर शिर्कत करतीं, रात में इश्के रसूल में

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो लोग अपनी मजलिस से अल्लाह के जिक्र और नबी पर दुरूद शरीफ़ पढ़े बिग़ैर उठ गए तो वोह बदबूदार मुर्दार से उठे। (شعب الایمان)

डूबी हुई पुरसोज़ ना'तें सुना करतीं, जिस की वजह से मुझे गाने सुनने का मौक़अ न मिलता चुनान्चे मुझे उन पर बहुत गुस्सा आता बल्कि कभी कभी तो उन से लड़ पड़ती ! एक मरतबा जब वोह आई तो करीब बुला कर निहायत शफ़क़त से कहने लगीं : “जो बेहूदा फ़िल्में और डिरामे देखता है वोह अज़ाब का हक़दार है।” मज़ीद इन्फ़िरादी कोशिश जारी रखते हुए बिल आख़िर उन्हीं ने मुझे फ़ैज़ाने मदीना में होने वाले सुन्नतों भरे इज्तिमाअ में शिक़त करने पर राज़ी कर लिया। मैं ने हफ़तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ में शिक़त की सअादत हासिल की। इत्तिफ़ाक़ से उस दिन वहां बयान का मौजूअ भी टी वी की तबाह कारियां¹ था येह बयान सुन कर मेरे दिल की कैफ़ियत बदलना शुरूअ हो गई, रिक्कत अंगेज दुआ ने सोने पर सुहागे का काम किया, दौराने दुआ मुझ पर रिक्कत तारी और आंखों से आंसू जारी थे, मैं ने सच्चे दिल से अपने तमाम साबिका गुनाहों से तौबा भी कर ली। अَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ जब मैं सुन्नतों भरे इज्तिमाअ से वापस घर की तरफ़ रवाना हुई तो मेरा दिल टी वी के गुनाहों भरे प्रोग्रामों और गानों बाजों से बेज़ार हो चुका था। इज्तिमाअ से वापसी पर अपने कमरे में मौजूद कार्टूनों की तसावीर उतार कर का'बए मुशर्रफ़ा और मदीनाए मुनव्वरह شَرَفًا وَتَعْظِيمًا کے प्यारे प्यारे तुग़रे आवेजां कर

داينته

1. अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه کی आवाज़ में ओडियो और विडियो केसेट और इसी बयान का रिसाला मक्तबतुल मदीना से हदिय्यतन त़लब कीजिये।

मजलिसे मक्तबतुल मदीना

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझे जुमुआ दो सो बार दुरूदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआफ़ होंगे। (جمع الجوامع)

दिये। اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ ता दमे तहरीर मैं जामिअतुल मदीना (लिल बनात) में दर्से निज़ामी की ता'लीम हासिल कर रही हूं नीज़ अपने अलाके में अलाकाई मुशावरत की खादिमा (जिम्मादार) की हैसियत से दा'वते इस्लामी का मदनी काम करने के लिये भी कोशां हूं।

सरकार ! चार यार का देता हूं वासिता

ऐसी बहार दो न ख़ज़ां पास आ सके

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْبُ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ عَلَى مُحَمَّدٍ

﴿21﴾ मैं 12 साल से औलाद से महरूम थी

एक इस्लामी बहन का बयान कुछ इस तरह है कि मेरी शादी को 12 साल का तवील अर्सा गुज़र चुका था लेकिन मैं औलाद की ने'मत से महरूम थी। एक मरतबा मैं ने दा'वते इस्लामी के हफ़तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ में शिर्कत की। इख़िताम पर मेरी मुलाक़ात एक मुबल्लिगा इस्लामी बहन से हुई। उन्होंने ने इन्फ़रादी कोशिश करते हुए मुझे मदनी माहोल की बरक़तें बताईं। मैं ने उन से अपनी महरूमि का तज़्किरा किया तो उन्होंने ने निहायत शफ़क़त से कहा : आप दा'वते इस्लामी के 12 सुन्नतों भरे इज्तिमाआत में मुसल्लसल शिर्कत की निय्यत कर लीजिये और दौराने इज्तिमाआत होने वाली दुआ में अपने लिये अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह से औलाद की भीक त़लब कीजिये। सरकारे नामदार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के सदके में ज़रूर करम होगा। चुनान्चे मैं ने निय्यत कर ली। اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ सुन्नतों भरे

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुझ पर दुरूद शरीफ़ पढ़ो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम पर रहमत भेजेगा । (अनसरी)

इज्तिमाअ में पाबन्दी से शिर्कत की बरकत से मेरी दुआएं क़बूल हुईं और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मुझे चांद सा मदनी मुन्ना अता फ़रमाया और इस तरह मेरे उजड़े चमन में भी बहार आ गई ।

बहार आए मेरे दिल के चमन में या रसूलल्लाह

इधर भी आ लगे छींटा कोई रहमत के बादल से

صَلُّوا عَلَيَّ الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

इस्लामी बहनो ! हो सकता है कि किसी के ज़ेहन में वस्वसा आए कि मैं भी तो अर्से से इज्तिमाअ में शिर्कत करती और ख़ूब रो रो कर दुआ मांगती हूं मगर मेरे मसाइल हल नहीं होते, मेरा बेटा बे औलाद है, बेटी का रिश्ता नहीं आता, बड़ी बेटी की तीन बेटियां हैं बेचारी औलादे नरीना के लिये तरस्ती है वगैरा वगैरा तो अर्ज़ यह है कि बिलफ़र्ज दुआ की क़बूलियत का असर ज़ाहिर न हो तब भी हफ़ें शिकायत ज़बान पर नहीं लाना चाहिये । हमारी भलाई किस बात में है इस को यकीनन अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हम से ज़ियादा बेहतर जानता है । हमें हर हाल में पाक परवर्द गार جَلَّ جَلَّ का शुक्र गुज़ार बन्दा बन कर रहना चाहिये । वोह बेटा दे तब भी उस का शुक्र, बेटी दे तब भी शुक्र, दोनों दे तब भी शुक्र और न दे तब भी शुक्र, हर हाल में शुक्र शुक्र और शुक्र ही अदा करना चाहिये । पारह 25 सूरतुशशूरा की आयत नम्बर 49 और 50 में इशादि बारी तअ़ाला है :

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग़फ़रत है । (ابن عساکر)

لِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ
يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ يَهَبُ لِمَن
يَشَآءُ اِنَّا وَاَيُّهَا لَمَن يَشَآءُ
الدُّكُوْرَ ﴿٣٩﴾

اَوْ يُرْوِّجُهُمْ ذُكْرًا وَّ اِنَاثًا
وَيَجْعَلُ مَن يَشَآءُ عَقِيْمًا اِنَّهٗ
عَلَيْمٌ قَدِيْرٌ ﴿٥٠﴾ (ب ٢٥ الشورى ٤٩, ٥٠)

तरजमए कन्जुल ईमान : अल्लाह ही के लिये है आस्मानों और ज़मीन की सल्तनत, पैदा करता है जो चाहे, जिसे चाहे बेटियां अता फ़रमाए और जिसे चाहे बेटे दे या दोनों मिला दे बेटे और बेटियां और जिसे चाहे बांझ कर दे बेशक वोह इल्म व कुदरत वाला है ।

सदरुल अफ़ज़िल हज़रते अल्लामा मौलाना सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी फ़रमाते हैं, वोह मालिक है अपनी ने'मत को जिस तरह चाहे तक्सीम करे जिसे जो चाहे दे । अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام में भी येह सब सूरतें पाई जाती हैं । हज़रते सय्यिदुना लूत عَلَى نَبِيّنا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के सिर्फ़ बेटियां थीं कोई बेटा न था और हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلَى نَبِيّنا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के सिर्फ़ फ़रज़न्द थे कोई दुख़्तर हुई ही नहीं और सय्यिदुल अम्बिया हबीबे ख़ुदा मुहम्मदे मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को अल्लाह तआला ने चार⁴ फ़रज़न्द अता फ़रमाए और चार साहिब ज़ादियां और हज़रते सय्यिदुना यह्या عَلَى نَبِيّنا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام और हज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह عَلَى نَبِيّنا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के कोई औलाद ही नहीं । (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, स. 777, फ़ैज़ाने सुन्नत, बाब : फ़ैज़ाने रमज़ान, जि. 1, स. 882)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने किताब में मुझे पर दुरुद पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फिरश्ते उस के लिये इस्तिफ़ार (या'नी बख़्शिश की दुआ) करते रहेंगे। (طبرانی)

﴿22﴾ गुनाह को गुनाह समझने का शुक्र मिल गया

एक इस्लामी बहन के बयान का लुब्बे लुबाब है कि मैं नमाज़ क़ज़ा कर डालने और बे पर्दगी जैसे गुनाहों में गिरिफ़्तार थी। अफ़सोस ! कि मुझे गुनाह को गुनाह समझने का एहसास तक न था। मैं फ़िक्रे आख़िरत से गाफ़िल और इस्लाम की बुन्यादी मा'लूमात से जाहिल थी। दुन्यावी आसाइशें मुयस्सर होने के बा वुजूद क़ल्बी सुकून नसीब न था। मैं अज़ीब बेचैनी और घुटन का शिकार रहती थी। मुझे सुकूने क़ल्ब मिल गया और इस का सबब यूँ हुआ कि चन्द इस्लामी बहनों की दा'वत पर मुझे दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ में शिर्कत की सआदत मिली। वहां मैं ने सुन्नतों भरा बयान सुना, अपने रब्बे क़दीर عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र किया इस के बा'द होने वाली रिक्कत अंगेज़ दुआ ने मुझे झन्झोड़ कर रख दिया और मैं ने रो रो कर अपने गुनाहों से तौबा की, मेरे बे करार दिल को चैन महसूस हुआ और ऐसा लगा गोया मेरे दिल से कोई बोझ उतर गया है। उसी इज्तिमाअ में शिर्कत की बरकत से मैं मदनी माहौल से वाबस्ता हो गई और ता दमे तहरीर दा'वते इस्लामी के मदनी कामों की तरक्की के लिये कोशिश कर रही हूँ।

प्यासो मुज़्दा हो कि वोह साकिये कौसर आए

चैन ही चैन है अब जाम अता होता है

(सामाने बख़्शिश)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

फ़रमाने मुस्त्फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुझ पर एक दिन में 50 बार दुरूदे पाक पढ़े (ابن بشكوال)। (या'नी हाथ मिलाऊँ)गा।

﴿23﴾ मैं मूवी बनवाया करती थी

एक इस्लामी बहन के बयान का खुलासा है कि मैं दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल से वाबस्ता होने से पहले गाने बाजे बड़े शौक से सुनती थी, मुझे मूवी बनवाने का जुनून की हद तक शौक था, जब किसी शादी में शरीक होती और वहां रक्स करती तो खुद कह कर खूब मूवी बनवाया करती थी। मेरा दिल गुनाहों की लज़्ज़तों में कुछ ऐसा गिरिफ़्तार था कि मुझे न नमाज़ क़ज़ा होने का ग़म होता न रोज़ा छूट जाने का। हलाकतों और बरबादियों की तरफ़ गामज़न मेरी गुनाहों भरी ज़िन्दगी का नेकियों की शाहराह की तरफ़ यूं रुख़ हुवा कि खुश किस्मती से बा'ज इस्लामी बहनों की इन्फ़िरादी कोशिश के नतीजे में मुझे दा'वते इस्लामी के हफ़तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ में शिर्कत की सअ़ादत मिल गई। अल्लाहु रब्बुल इज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ की रहमत से सुन्नतों भरे इज्तिमाअ में शिर्कत की हाथों हाथ बरकत येह मिली कि मैं ने वहीं बैठे बैठे अपने तमाम गुनाहों से तौबा की और पांचों वक़्त नमाज़ें पढ़ने और रमज़ानुल मुबारक के रोज़े रखने की पक्की निय्यत कर ली। اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल की बरकत से गुनाहों से कनारा कशी का ज़ेहन बना और फ़िक्रे मदीना के ज़रीए मदनी इन्आमात का रिसाला पुर करने की सअ़ादत भी नसीब हो रही है।

बढ़ा येह सिल्लिसला रहमत का दौरै जुल्फ़े वाला में
तसल्सुल काले कोसों रह गया इस्यां की जुल्मत का

(हृदाइके बख़िशाश)

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّد

مآخذ و مراجع

مطبوعه	نام كتاب	نمبر شمار	مطبوعه	نام كتاب	نمبر شمار
دارالفكر، بيروت	مجمع الزوائد	21	رضا اكيثمي، بمبئي، هند	قران پاك	1
دار الكتب العلمية، بيروت	كنز العمال	22	رضا اكيثمي، بمبئي، هند	ترجمة قرآن كنز الايمان	2
دار الكتب العلمية، بيروت	كتاب الدعاء	23	دارالفكر بيروت	تفسير درمنثور	3
مؤسسة الكتب الثقافية	البلور السافرة	24	رضا اكيثمي، بمبئي، هند	تفسير خزائن العرفان	4
دار الكتب العلمية، بيروت	الاحسان بترتيب صحيح ابن حبان	25	دار الكتب العلمية، بيروت	صحيح بخارى	5
دار الفكر بيروت	مسند امام احمد	26	دار ابن حزم، بيروت	صحيح مسلم	6
دار الكتب العلمية، بيروت	مشكاة المصابيح	27	دار الفكر، بيروت	سنن ترمذى	7
دار الفكر بيروت	مرقاة المفاتيح	28	دار الكتب العلمية، بيروت	سنن نسائى	8
	اشعة المعينات	29	دار احياء التراث العربى، بيروت	سنن ابو داؤد	9
شبهه قرآن بلو كيشن	مرآة المناجيح	30	دار المعرفة، بيروت	سنن ابن ماجه	10
	الهداية	31	دار الكتب العلمية، بيروت	شعب الايمان	11
	فتح القدير	32	دار المعرفة بيروت	موطا امام مالك	12
	خلاصة الفتاوى	33	مكتبة العلوم والحكم المنيرة المنورة	مسند البزار	13
	فتاوى قاضى حان	34	بيروت	تاريخ دمشق	14
	البحر الرائق	35	دار الكتب العلمية، بيروت	شرح السنة	15
	شرح الوقاية	36	دار احياء التراث العربى، بيروت	المعجم الكبير	16
	حاشية الطحطاوى على الدر	37	دار الكتب العلمية، بيروت	المعجم الاوسط	17
	فتاوى عالمگيرى	38	دار الكتب العلمية، بيروت	المعجم الصغير	18
دار المعرفة، بيروت	در مختار	39	دار الكتب العلمية، بيروت	السنن الكبرى	19
دار المعرفة، بيروت	رد المحتار	40	دار الكتب العلمية، بيروت	الجامع الصغير	20

نمبر شمار	نام کتاب	مطبوعه	نمبر شمار	نام کتاب	مطبوعه
41	جد الممتار	مکبة المدنہ	54	قانون شریعت	ضیاء القرآن پبلکشر
42	نور الايضاح		55	الميزان الکبری	بیروت
43	مراثی الفلاح		56	منح الروض الازهر	دار البشائر الاسلامیہ بیروت
44	الحوہرة النيرة		57	احیاء العلوم	دار صادر بیروت
45	غنیہ		58	القول البدیع	مؤسسة الريان بیروت
46	منیة المصلی	ضیاء القرآن پبلکشر	59	شرح الصدور	مركز اهل سنت بركات رضا
47	فتاوی تاتارخانیہ		60	تاریخ بغداد	دار الکتب العلمیہ بیروت
48	تبیین الحقائق	دار الکتب العلمیہ بیروت	61	مکاشفة القلوب	دار الکتب العلمیہ بیروت
49	النهر الفائق		62	راحة القلوب	
50	غمز عیون البصائر		63	الوظيفة الکرمیة	ادارة تحقیقات امام احمد رضا
51	فتاوی رضویہ	رضا فاؤنڈیشن	64	کتاب الکبائر	
52	فتاوی امجدیہ	مکبة رضویہ	65	مسائل القرآن	روس پبلکشر
53	بہار شریعت	مکبة المدنیہ	66	اسلامی زندگی	مکبة المدنیہ

اच्छी निस्यत इन्सान
को जन्त में दाखिल करेगी ।

(أَلْجَامِعُ الصَّغِيرُ، ص ۵۵۷ حدیث ۹۳۲۶)

इलमाए किराम फरमाते हैं : मुख्लिस वोह है जो
अपनी नेकियां ऐसे छुपाए जैसे अपनी बुराइयां छुपाता है ।

(أَلْزُّوْجُرُ عَنْ أَقْرَابِ الْكِبَائِرِ ج ۱ ص ۱۰۲)

आप भी म-दनी माहोल से वाबस्ता हो जाइये

इस्लामी बहनो ! तब्लीगे कुरआनो सुन्नत की गैर सियासी तहरीक दा'वते इस्लामी के म-दनी माहोल से वाबस्ता होने की ब-र-कत से अल्लाह और उस के रसूल ﷺ की मेहरबानी से बे वकअत पथर भी अनमोल हीरा बन जाता, खूब जगमगाता और ऐसी शान से पैके अजल को लब्बैक कहता है कि देखने सुनने वाला उस पर रश्क करता और ऐसी ही मौत की आरजू करने लगता है। आप भी दा'वते इस्लामी के म-दनी माहोल से वाबस्ता हो जाइये। अपने शहर में होने वाले दा'वते इस्लामी के इस्लामी बहनों के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ में शिकत कीजिये और शैखे तरीक़त अमीरे अहले सुन्नत دامت بركاتهم العالیه کے ایتا کدا म-दनी इन्आमात पर अमल कीजिये, اِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ आप को दोनों जहां की ढेरों भलाइयां नसीब होंगी।

**मक्बूल जहां भर में हो दा'वते इस्लामी
सदका तुझे ऐ रखे गुफ़फ़ार मदीने का**